प्रकाशक,
कोठारी विठ्ठलदास मगनलाल
गूजरात विद्यापीठ, अमदावाद

卐

: मुद्रणस्थान : साहित्यमुद्रणालय
: : एलिसब्रिज–अहमदाबाद. : :
मुद्रक : गजानन विश्वनाथ पाठक

विज्ञापन

गूजरातपुरातत्त्वमंदिरनी प्रबंध समितिना संवत १९७९ ना भादरवा वद १३ नी बेठकना ठराव १ (परिशिष्ट १) मुजब आ पुस्तक प्रसिद्ध करवामां आवे छे.

गूजरात विद्यापीठ कार्यालय,
अमदावाद.
आसो वद १२, सं० १९८१.
} प्रकाशक

प्रवेश

प्राकृतव्याकरणना शिक्षक अने शिष्य माटे आ पुस्तकना परिचय पूरती थोडी माहिती आ प्रमाणे छे:

अहीं नीचेना चार मुद्दाओ विषे क्रमवार लखवानुं छे–

१ रचनाशैली

२ प्राकृतभाषा

३ अर्धमागधी भाषा

४ प्राकृतभाषाना व्याकरणो

१ रचनाशैली

आचार्य हेमचंद्रना प्राकृतव्याकरणने सामे राखीने आ पुस्तक लखवामां आव्युं छे पण क्रमने फेरववामां आव्यो छे. हेमचंद्रना प्राकृतव्याकरणमां सौथी पहेलां प्राकृतभाषानुं व्याकरण आपेलुं छे अने पछी क्रमे शौरसेनी, मागधी, पैशाची–चूलिका पैशाची अने छेल्ले अपभ्रंशनुं व्याकरण आपवामां आवेलुं छे त्यारे प्रस्तुत पुस्तकमां ए बधां व्याकरणोने साथे साथे समाववामां आव्यां छे एटले आ पुस्तकमां प्राकृतनुं व्याकरण आपतां जे जे नियममां शौरसेनी, मागधी, पैशाची–चूलिका पैशाची अने अपभ्रंशनी विशेषता होय ते पण साथे साथे–प्राकृतभाषाना नियमनी साथे–ज आपवामां आवी छे. जेमके,

प्राकृतमां साधारण रीते क, ग, च, ज, त, द, प, ब, य अने व नो लोप थाय छे (जूओ पृ० १०) आ नियम आपवानी साथे ज तुलना थइ शके ए दृष्टिए एम पण जणाव्युं छे के, शौरसेनीमां 'त' नो 'द' थाय छे, मागधीमां 'ज' नो 'य' थाय छे, पैशाचीमां 'द' नो 'त' थाय छे अने अपभ्रंशमां 'क' नो 'ग' थाय छे (जूओ पृ० १२ अने १३)

आ रीते वर्णविकारने लगता बधा नियमोने आपवामां आव्या छे. नियमोमां सौथी पहेलां सर्व साधारण नियमोने आपवामां आव्या छे अने पछी विशेष (आपवादिक) नियमोने मूकवामां आव्या छे नाम अने आख्यातना प्रकरणमां प्राकृत, शौरसेनी वगेरेनां रूपोनी साधना बताव्या पछी क्रमवार प्राकृत, शौरसेनी वगेरेनां रूपोने मूकवामां आव्यां छे अने केटलेक ठेकाणे ए बधां रूपोने साथे साथ एक ज ओळमां पण मूकेलां छे (जूओ पृ० १२९–१२६–१२८–१२९–१३०–१३२–१३३ नामप्रकरण अने पृ० १३१ तथा पृ० २५१ आख्यात प्रकरण)

खास विशेषता (विशेषताओने टिप्पणमां मूकेली छे)

(१) पालिनी साथे सरखामणी

प्राकृतभाषाना वर्णविकारना नियमोने पालिभाषाना वर्णविकारना नियमोनी साथे सरखाववामां आव्या छे अने केटलेक स्थळे तो पालि शब्दोने पण मूकवामां आव्या छे (पालिशब्दो माटे जूओ पृ० ८–१९–१८ वगेरे)

नामनां, धातुनां, कृदंतनां अने तद्धितनां रूपोने पालिरूपोनी साथे मूकवामां आव्यां छे अने केटलांक सम्मान्य पालिना प्रत्ययो आपीने पण सरखामणी बतावी छे (प्रत्ययो माटे जूओ पृ० २४८ अने १२४) सन्धिप्रकरणमां अने बीजे पण सम्भवित स्थळे सरखामणी माटे पालिना नियमोने आपवामां आव्या छे एकंदर रीते पालिनी अने प्राकृतनी सरखामणी सविस्तर दर्शाववामां आवी छे अने ते एटला ज माटे के, प्राकृतनो अभ्यासी साथे साथे पालिने पण समजी शीखी शके.

(२) वैदिक संस्कृत अने प्राकृतनो संबंध

जूनामां जूना वररुचिथी छेक छेल्ला मार्कंडेय सुधीना बधा प्राकृतव्याकरणकारोए प्राकृतरूपोनी साधना माटे लौकिक (वैदिकेतर) संस्कृतनो ज उपयोग करेलो छे, तदनुसार आ पुस्तकमा पण ए ज शैलीने मान्य राखवामा आवी छे. परंतु अत्यारनां विपुल साधनोथी एम जणाय छे के, प्राकृतभाषानो सबध वैदिक सस्कृतनी साथे पण छे (जूओ आर्यविद्याव्याख्यानमाळा पृ० १९४–२०९) तेथी प्राकृत-रूपोनी साधना माटे वैदिक शब्दोने पण मूळभूत राखवा ए, सर-खामणीनी दृष्टिए विशेष अगत्यनुं छे. आ वातने सूचववा वैदिक संस्कृतने मुळभूत राखीने पण सरखामणी करवामा आवी छे. (जूओ पृ० ४९–९४–३०९)

प्राकृतना एवा तो घणा य नियमो छे जे वैदिक संस्कृतना रूपो साथे मळता आवे छे,

[जेमके, अंत्यव्यंजनलोप (जूओ पृ० १० नि० १)

वैदिकरूपो

पश्चा (पश्चात्)

उच्चा (उच्चात्)

नीचा (नीचात्)

युष्मा (युष्मान्)

देवकर्मेभि (देवकर्मभि:)

आ बधा वैदिक रूपोमा अत्यव्यंजननो लोप थएलो छे.

'र' 'य' नो लोप

(जूओ पृ० १६ नि० ५ तथा पृ० १५ नि० ४)

अपगल्भ (अप्रगल्भ)

तृच् (त्र्यृच्)

पेला रूपमा 'र' नो अने बीजामां 'य' नो लोप थएलो छे.

षष्ठुरूनी पूर्वे हृस्व (जुओ पृ ४ नि० १)

रोदसिप्रा (रोदसीप्रा)

अमत्र (अमात्र)

'ऋ' नो 'उ' (जुओ पृ० ७ नि० ८)

पुन्ध (पृथ)

'द' नो 'ड' (जुओ पृ १८-१९ ड-विकार)

पुडम, पूडम

पुरोडाश, पुरोडाश वगेरे.

उपर्युक्त उदाहरणोनां वैदिक स्थळो माटे अने विशेष उदाहरणो माटे जुओ आर्यविद्याव्याख्यानमाळा पृ २०१ थी २०८]

पण पुस्तक वधी जाय अने प्रवेश करनारने कठण लागे एथी ए बधा नियमोने अहीं नथी आपवामां आव्या

(३) आदेशो करवा करतां मूळ शब्द उपरथी ज विकृत शब्दने बतावयो

जूना वैयाकरणोए संस्कृत शब्दोना आदेशो करीने प्राकृत शब्दो बनाववानी रीत स्वीकारी छे पण भाषानु ऐतिहासिक अने शास्त्रीय दृष्टिए निरूपण करवु होय तो जे जे शब्दोमी सरखामणी करी शकाती होय त्यां आदेशो करवा करतां ए मूळ शब्दोमां ज उच्चारणजन्य वर्णविकारोने बताववा जोइए जेमके,

'ओल्ल' सूचक प्राकृत 'ओल्लि' शब्दनी साधना माटे भाषानु आळखु, निरर्थक प्रामाणिक पीळी, मधमाखी, खस्ती, श्रेणि, छीटे पुन्न रहो अने कुल एटला अर्थमां (अर्थो माटे जुओ आप्टेनो कोश) वपराता 'आलि' शब्द उपरथी 'पंक्ति' अर्थमां 'आलि' बनावनारी समासण करवी ए करतां 'पंक्ति' अपयाव्य

ज 'आवलि' शब्दना 'आउलि' 'ओलि' रूपो बतावीने 'ओलि' शब्द बनाववानी रीत ऐतिहासिक अने भाषाशास्त्रनी दृष्टिए वधारे सुसगत लागे छे.

'सूक्ष्म' ना 'ऊ' नो 'अ' करीने 'सण्ह' रूप बनाववा करता 'श्लक्ष्ण' नुं सहज भावे थतु 'सण्ह' रूप ज अधिक संगत लागे छे.

आम करवाथी उच्चारणोथी थता क्रमिक वर्णविकारो कळी शकाय छे अने व्याकरणमा आवतो गौरवदोष पण अटकी शके छे.

आ हकीकत अहीं मात्र एक उदाहरण द्वारा ज दर्शाववामा आवी छे (जूओ पृ० ९४)

(४) आगमोनां नहि सधाएलां रूपोनी साधना

जैन आगमोना केटलाक रूपो जे अत्यार सुधी अणसाध्या हता तेने पालिभाषाना रूपो द्वारा साधवानो प्रयत्न करवामा आव्यो छे (जूओ पृ० १३६ अने २६४)

२ प्राकृतभाषा

शौरसेनी अने मागधीनुं क्षेत्र एना नाम उपरथी ज जाणितुं छे. पैशाचीनुं क्षेत्र—

" पाण्डच–केकय–बाल्हीक–सिंह–नेपाल–कुन्तला· ।
सुधेष्ण–भोज–गान्धार–हैव–कन्नोजनास्तथा ॥
एते पिशाचदेशा. स्युस्तद्देश्यस्तद्गुणो भवेत् " ।

(षड्भाषाचंद्रिका पृ० ४ श्लो० २९–३०)

आ श्लोकमा जणावेलु छे साधारण प्राकृत अने अपभ्रंशनुं क्षेत्र व्यापक छे एटले ए माटे कोई देशने निर्देशी शकाय नहि.

वैयाकरणोए शब्दशास्त्रनी दृष्टिए प्राकृतना त्रण प्रकार जणावेला छे १ संस्कृतजन्यप्राकृत, २ संस्कृतसमप्राकृत अने ३ देश्यप्राकृत

[१ जेनी व्युत्पत्तिनो बधारे संबंध बन्ने प्रकारना संस्कृत साथे छे ते संस्कृतजन्यप्राकृत

२ संस्कृतनी जेवुं प्राकृत ते समसंस्कृतप्राकृत

नीचेना एक ज श्लोक द्वारा संस्कृतसमप्राकृतनो परिचय थई जाय छे

“ चारुसमीरणरमणे हरिणकलङ्ककिरणावलीसविलासा ।
आबद्धराममोहा वेलामूले विभावरी परिहीणा ” ॥ १ ॥

(भट्टिकाव्य १३ मो सर्ग)

३ देश्यप्राकृतनो नमूनो आ प्रमाणे छे

“ रे लेमाणुअ लोअण हसाण लोहीण मच्छमाणक्किमो ।
हुहिस्सचि कह व प्रमं मऊहिमो टक्कारि फुड ” ॥

(देशीनाममाला पृ ९८ श्लो १५]

प्रस्तुत व्याकरण पेला प्रकारने लगतुं छे बीजो प्रकार तो संस्कृत व्याकरणथी ज सिद्ध छे अने त्रीजा प्रकारनुं प्राकृत हजु सुधी शास्त्रीय गवेषणानो विषय न थयेलु होवाथी आमां तेनुं निरूपण करवुं योग्य धार्युं नथी एना बोध माटे देशीनाममाला वगेरे देश्य भाषाना कोशोथी ज समजी लेवु पडे एम छे.

३ अर्धमागधी भाषा

प्राकृत शौरसेनी वगेरे भाषाओनु व्याकरण लखतां आमां क्यांय *अर्धमागधी विषे लखवामां* नथी आव्युं, एथी कोइ एम तो न ज समजी ल्ये के, अर्धमागधी कोई भाषा ज नथी

* भट्टिकाव्यना आ सर्गमां समसंस्कृतप्राकृतना भाषां अनेक श्लोको छे आ सर्गनुं नाम ज 'भाषासमावेश' छे,

जैनसूत्रोमा केटलेक ठेकाणे अर्धमागधीने भाषा तरीके जणावी छे अने साथे एम पण कहेवामा आव्युं छे के, 'भगवान् महावीर अर्धमागधी भाषामा उपदेश करता हता.'

अर्धमागधीने लगता जैनसूत्रोना उल्लेखो आ प्रमाणे छे.

" भगवं च णं
अद्धमागहीए भासाए
धम्ममाइक्खइ "
(समवाय—अंगसूत्र
पृ० ६० समिति)

" भगवान् अर्धमागधीभाषा-
द्वारा धर्मने कहे छे."

प्र०—" देवा णं भंते कयराए
भासाए भासंति ?
कयरा व भासा
भासिज्जमाणी
विसिस्सति ?

" हे भगवन् । देवो कइ
भाषामा बोले छे ?
अथवा बोलाती भापामा
कइ भाषा विशिष्ट छे ?

उ०—गोयमा ! देवा णं अद्ध-
मागहाए भासाए भासति,
सा वि य णं अद्धमागही
भासा भासिज्जमाणी
विसिस्सइ "
(भगवती—अगसूत्र
श० ५ उ० ४
पृ० १८१ प्रश्न—
२० राय० अने
समिति पृ० २३१
सू० १९१)

हे गौतम ! देवो अर्ध-
मागधीभाषामा बोले छे
अने बोलाती भाषामा
पण ते ज भाषा—अर्ध-
मागधीभाषा—विशिष्ट छे."

" तए ण समणे भगवं महावीरे कूणिअस्स भभसारपुत्तस्स अद्धमागहाए भासाए भासति " (औपपातिक-उपांग-सूत्र पृ० ७७ समिति)	" त्यार पछी भगवान महावीर भभसारपुत्र कोणिकने अर्ध मागधीभाषामां धर्म कहे छे "
प्र०—" से किं त भासारिया ?	" भाषानी दृष्टिए आर्यो कोने कहेवा ?
उ०—भासारिया जे णं अद्धमागहाए भासाए भासेंति " (प्रज्ञापना—उपांगसूत्र पृ ९९ समिति)	जेओ अर्धमागधीभाषामां बोले छे तेओने भाषानी दृष्टिए आर्यो समजवा "

आ उपरथी 'अर्धमागधी' ने भाषा तरीके अने 'महावीर अर्धमागधीभाषामां उपदेश करता हता' ए बन्ने वातो स्वीकारी शकाय एवी छे पण 'अर्धमागधी' ना भाषा तरीकेना उल्लेख मात्रथी ज कांइ एनु व्याकरण रचवी शकाय नहि

व्याकरण रचवा माटे तो एना विपुल साहित्यने सामे राखवुं जोइए, जेथी बीजी भाषाओ करतां अर्धमागधीनी जे खास खास विशेषताओ होय ते बधी साधी शकाय कांइ बे चार रूपोनी विशे षताने लीधे कोइ एक भाषाने बीजी भाषाथी जुदी पाडी शकाय नहि तेम ज बे चार रूपोने साधवा माटे शुद्ध व्याकरण पण रची शकाय नहि जो फक्त बे चार रूपोनी ज विशेषताने लीधे एक

भापाने बीजी भापाथी जुदी गणावी शकाती होय अने एनुं व्याकरण पण लखी शकातु होय तो भापाओनो अने व्याकरणोनो अंत ज केम आवत ?

आ संबंधमां आचार्य हेमचद्रनुं ज उदाहरण वस छे: श्री हेमचंद्रे प्राकृत, शौरसेनी, मागधी, पैशाची अने अपभ्रंशना व्याकरणो लख्या छे तेम साथे साथे आर्पप्राकृतने पण लीधु छे. साधारण प्राकृत करता आर्पप्राकृतमा काइक विशेपता जरुर छे पण ते एटली नर्जीवी छे के, तेनुं जुदुं व्याकरण करवुं तेमने योग्य नथी जणायुं. आ ज कारणथी साधारण प्राकृतना पेटामा आर्पप्राकृतने पण एमणे भेळवी दीधुं छे.

हेमचद्र जेवा जैन वैयाकरण शौरसेनी, मागधी अने पैशाची जेवी प्रायः जैनेतर ग्रथोमा वपराएली के नाटकीय भाषाओनुं व्याकरण लखवा प्रेराय अने जैनआगमोनी भापानु व्याकरण न लखे ए काइ अर्थविनानी वात नथी.

जैनपरपरामां अर्धमागधीना साहित्य तरीके प्रसिद्धि पामेलुं समस्त आगमसाहित्य एमनी सामे ज हतु, ए विपेनो भाषानो अने भावनो एमनो अभ्यास पण गभीर हतो छता य एमणे ए साहित्यने लगतु एक जुदु व्याकरण केम न लख्युं ? ए प्रश्न एमने माटे थवो सहज छे

ए प्रश्ननो उत्तर आचार्य हेमचद्रे पोतानी कृतिद्वारा ज आपी दीधेलो छे. आपणे जेम आगळ जोइ गया के, आर्षप्राकृतमां जुदुं व्याकरण करवा जेवी खास विशेषता न जणायाथी जेम एने साधा-रण प्राकृतना पेटामा समावी दीधु छे तेम आगमसाहित्यनी भाषामा पण ए बन्ने प्राकृतो करता एवी विशिष्ट विशेषता न जणायाथी

एमणे ए भाषाने ए बने प्राकृतोमां भेळवी दीधी छे अने ए ज कारणथी एनुं जुदु व्याकरण करवा तेओ प्रेराया पण नथी

एमना समयनु वातावरण जोतां तो जरुर ए पाणिनिना वैदिक व्याकरणनी पेठे जैनआगमोनी भाषानु पण व्याकरण लखवाने प्रेराया होत

जैनपरपरामां आचार्य हेमचद्र ज एक एवा प्रतिष्ठापक पुरुष छे जेमणे जैनोनी साहित्यने ख्याती प्रतिष्ठा साधवघानो भगीरथ प्रयत्न सेव्यो छे नवु व्याकरण, नवु छंद शास्त्र, नवु अलंकारशास्त्र नवु धातुपारायण, नवा कोशो, नवो निघटु, नवु पुराण अने नवुं योगशास्त्र वगेरे ए बधुं जैनोनी विशेषताने खातर नवु नवुं रच्या छतां आगमोनी भाषाना ज प्रसंगमां एमणे वृद्धप्रवादनी सामे पण जे मौन धताव्युं छे ते ज आपणा ए प्रश्नना पूर्वोक्त उत्तर माटे पूरतु छे

वळी, आचार्य हेमचद्र पोते एम पण मानता लागे छे के, आगमोनी भाषा अर्धमागधी तो जरुर कही शकाय पण जो एमां ' अर्धमागधी ' नामने योग्य कटलीक विशेपताओ मागधी भाषानी पण मळेली होय आ विशेषताओ तपासतां एमने तो फक्त मागधीनी एक ज विशेपता मुख्यपणे गणाणी छे ते विशेपता-प्रथमाना एकवचनमां मागधीना ' ए ' प्रत्ययनो प्रयोग जेमके जीवे, अजीवे, छोए, अलोए, आसवे, संवरे, बंधे, मोक्खे वगेरे पण आ एक ज विशेपताने लीधे तेओ आगमोनी भाषाने अधमागधी कहेवी योग्य धारता नथी अने प्राकृत के आर्षप्राकृतथी जुदी पण गणी शकता नथी माटे ज एमणे आगमोनी भाषाने माटे पोताना व्याकरणमां कोई खास स्थान आपेलुं नथी साथे साथे एटलुं पण जणावी देवुं जोइए के, हेमचंद्रना

ध्यानमा आवेली ए एक विशेषता पण कांइ आगमोनी भाषामा व्यापक रीते आवेली नथी, एमा तो 'ए'ना प्रयोगनी पेठे प्राकृतना 'ओ' प्रत्ययवाळा पण घणा रूपो—ते पण आचाराग जेवा प्राचीन सूत्रमा य—मळी आवे छे. जेमके: निक्खंतो, उद्देसो, अप्पमाओ, निरामगंधो, उवरओ, उवेहमाणो, आलीणगुत्तो, सहिओ, नाणागमो, संथवो, दोसो, हव्ववाहो, दुरणुचरो, मग्गो वगेरे (आचाराग सूत्र पृ० ४१—१२४—१२७—१३०—१५५—१६८—१८३—१८४—१८५—१९०—१९२ समितिनुं). एमणे ज आ संबंधमा एम जणाव्यु छे के, "प्रायोऽस्यैव विधानात् न वक्ष्यमाणलक्षणस्य" (प्रा० व्या० पृ० १५९ सू० २८७) अर्थात् "आर्ष प्रवचनमा प्राय. मागधीना 'ए' प्रत्ययनु ज विधान छे, पण मागधीना बीजा बीजा लक्षणोनु नथी." आ उल्लेखमा वपराएलो 'प्राय.' शब्द आगमोमा 'ए' प्रत्ययनी वपराशनो पण सकोच बतावे छे अने एथी ज एम जणाय छे के उपर्युक्त 'ओ' प्रत्ययनी वपराशनु आगमिक क्षेत्र पण काइ हेमचंद्रना ध्यान बहार छे एम नथी

सार आ छे के, आचार्य हेमचंद्रे पोताने उद्भवेला जैन आगमोनी भाषाने लगता प्रश्नो खुलासो आम बे रीते करी बताव्यो छे:

एक तो जैन आगमोनी कहेवाती अर्धमागधीने पोतानी कृतिमा खास जुदु स्थान नहि आपीने बीजुं, एमा जोइए तेटला प्रमाणमा मागधीनी विशेषताओ न होवानुं जणावीने.

'आ आगमोनी भाषा अर्धमागधी नथी पण प्राकृत के आर्षप्राकृत छे' एम स्पष्ट शब्दोमा कहेवा जेवु जैन समाजनु वातावरण अत्यारे पण नथी तो संप्रदाय भक्तिना बारमा सैकामा तो शी रीते होय? छतां य एक जवाबदार अने प्रामाणिक वैयाकरण तरीके आचार्य

हेमचंद्रे उपर्युक्त सादी हकीकतने पण आगळ जणावेली मंगिध आबाद रीते जणावेली छे अने साथे वृद्धप्रवादना अनुसंधाननी युक्ति पण बतावेली छे. आ संबंधमां एमनो आखो उल्लेख आ प्रमाणे छे "यदपि 'पोराणमद्धमागहभासानिययं हवइ सुत्तं'[1] इत्यादिना आर्षस्य अर्धमागधभाषानियतत्वमाम्नायि वृद्धैस्तदपि प्रायोऽस्यैव विधानात् न वक्ष्यमाणलक्षणस्य"

(प्राकृत व्या० पृ० १५९ सू० २८७)

---

१ आ उल्लेख निशीथचूर्णिमां छे जुओ लिखित प्रति पा० १५ पूना मां प्रा वि म छे ए उल्लेखमांना 'अद्धमागह' शब्दनी व्याख्या करतां श्रीजिनदास महत्तरे जणाव्युं छे के; "मगहद्धविसयभासानिबद्धं अद्धमागहं" अथवा "अट्ठारसदेसीभासानियतं अद्धमागधं" अर्थात् एमने 'अर्धमागध' शब्दनी बे व्याख्या करी छे पहेली— मगध देशनी अडधी भाषामां नियत ते अर्धमागध बीजी—अढार जातनी देशी भाषामां नियत ते अर्धमागध.

वर्तमान आगमोनी भाषामां पहेली व्याख्या तो घटती नथी एम हेमचंद्र पोते कहे छे

बीजी व्याख्या पण जो आगमोनी भाषामां घटी शके तेवी होत तो जरूर तेने प्रमाणरूप मानी आचार्य हेमचंद्र ए विषे कांईक जरूर जणावत अने ए रीते वृद्धवादनुं ज समर्थन करत पण ए प्रकार तेमणे करेल ए व्याख्या तरफ उदासीन रह्या छे, एथी जणाय छे के, ए व्याख्या पण आगमोनी भाषामां घटती नहि होय अथवा ए व्याख्यामां कहेला अढार देशी क्या समजवा ? ए प्रश्न ज गुंचवाळो छे

राजकुमारोना विद्याध्ययनना प्रसंगमां 'अट्ठारसदेसीभासाविसारए' शब्द जैन सूत्रग्रंथोमां मळे छे त्यां तेनो अर्थ 'अढार (जातनी) देशी भाषामां विशारद' थाय छे. ए शब्दमां वर्णवेली ए भाषाओ बीजी

कशी वीगत टीकाकारोए आपी नथी तेम अढार जातनी देशी भाषाने अर्धमागधी तरीके ओळखावी पण नथी.

'अट्ठारसदेसीभासाविसारए' नो उल्लेख ज्ञातासूत्रमा अने औपपातिक सूत्रमा मळे छे

"तते णं से मेहे कुमारे बावत्तरिकलापंडिए*अट्ठारसविहिप्पगारदेसीभासाविसारए"

ज्ञातासूत्र पृ० ३८ समिति

ठीका पृ० ४२ ,,

"त्यार पछी ते मेघ कुमार बोतेर कळामा प्रवीण थयो अने अढार प्रकारनी देशी भाषामा निपुण थयो"

[टीकाकारना मत प्रमाणे 'अढार जातनी भाषामा नहि पण अढार जातनी लिपिमा' प्रवीण थयो. आ अढार जातनी लिपिनो उल्लेख प्रज्ञापना सूत्रमा अने नंदीसूत्रमा मळे छे]

"तए णं से दढपइण्णे दारए बावत्तरिकलापंडिए* अट्ठारसदेसीभासाविसारए"

औपपातिक सूत्र पृ० ९८ समिति

"त्यार पछी ते दृढप्रतिज्ञ नामनो कुमार बोतेर कळामा प्रवीण थयो अने अढार प्रकारनी देशी भाषामा निपुण थयो"

सूत्रना ए उल्लेखो जोतां अढार देशने लगती आपणी ए गुंच उकली शकती नथी पण एटलुं कल्पी शकाय छे के, कदाच आ उल्लेखोने जोइने ज श्रीजिनदास महत्तरे पोतानी चूर्णिमा अढार जातनी देशी भाषाने 'अर्धमागधी' नु नाम आप्यु होय.

श्रीहरिभद्रना विद्यार्थी अने समसमयी तथा श्रीशीलाक अपरनाम तत्त्वादित्यना शिष्य श्रीदाक्षिण्यचिह्नसूरिए बनावेली 'प्राकृत कुवलयमाला' ने जोता अढार देशने लगती आपणी ए गुंच कदाच उकली शके,

पण बाद रहलतुं जोइए के; प्रस्तुत अर्धमागधीनी कथा साथे कुवलय मालामां आवता अढार देशने वगता ए उल्लेखनो कशो ज संबंध नथी

कुवलयमालामां ए देशोनी गणना आ प्रमाणे करेली छे

"मालव कण्णाडा वि य
माळविया कण्णुअ-गोल्लया।
मरय मरहट्ठ य सोरट्ठा तक्का
किरि कग सेंधवया ॥"

कु मि प्रति पृ ७५
पेठी वाघु पं ५ पूना नो प्रा० मि मं से

" मरुदेश, कर्णाटकदेश, मालवदेश, कनोजदेश गोल्लदेश, मरय (मारवाड?) देश, महा राष्ट्रदेश, सोरठदेश, टक्कदेश, किरदेश अगदेश अने सिंधदेश"

आ उल्लेखमां मात्र चार देशोने गणावयामां आव्या छ परंतु आ पछीना एक बीजा उल्लेखमां (पृ ७६) नवी अढार देशोने मूकेला छे आ नीचेना उल्लेखमां देशोनां नामो साथे तेने देशना मनुष्योनो स्वभाव अने भाषाना एक वे शब्दोने पण मूकवामां आव्या छे अने छेवटे उपसंहारमां जणावेलु छे के,

"इय अट्ठारसदेसी-
भासाउ पुलइऊण सिरिदत्ते ।
अन्ने इ य पुलएती खस-पारस
बब्बरातीय ॥"

"ए प्रमाणे श्रीदत्त नामनो कोइ सहस्र अढार देशनी भाषा सामे जोइने (सांभळीने) बीजा ओनी पण-एटले खसोनों पैकी खस पारस अने बर्बर लोकोनी पण-भाषाने जुए छे (सांभळे छे)"

नमकारे उपसंहारमां आम अढार देशी भाषानो उल्लेख कर्यो छे अने देशोनी गणमाना प्रसंगमां मात्र सोळ देशो ज जणावेला छे तेनुं कारण समजातु नथी

वे उल्लेखमां ए देशोने जणावेला छे ते उल्लेख आ प्रमाणे छे-

" तत्थ य पविसमाणेण
दिट्ठा अणेयदेसभासालक्खिए
देसवणिए । त जहा–
कंसिणा निट्ठुरवयणे बहुकसमर (?)
भुजए अलज्जे य ।
'अरडे' त्ति उल्लवते अह
पेच्छइ गोल्लए तत्थ ॥
णयनीइसंधिविग्गहपडुए बहुज-
पए य पयईए ।
'तेरे मेरे आउ' त्ति जंपिरे
मज्झदेसे य ॥

त्या प्रवेश करता श्रीदत्ते
अनेक देशनी भाषाना जाणकार
ते ते देशना वणिकोने जोया.
ते जेमके, प्रथम गोल्ल देशना
लोकोने जोया, ए लोको निष्टुर
भाषी, काळा, समरभोगी (?)
अने निर्लज्ज होय छे तथा
'अरडे' एवुं बोलनारा होय छे.
पछी मध्यदेशना लोकोने जोया,
ए लोको नय, नीति, सधि अने
विग्रहमा चतुर, बहुबोला अने
'तेरे मेरे आउ' एवु बोलनारा
होय छे.

नीहरियपोट्ट–दुवन्न–
मडहए सुरयकेलितल्लिच्छे ।
'एसेले' जपुल्ले अह पेच्छइ
मागहे कुमरो ॥
कविले पिंगलनयणे लोयण–
कहदिन्नमेत्तवावारे (?) ।
'किं ते किं मो' पि य जपिरे
य अंतवेए य ॥

पछी मगधना लोकोने जोया,
ए लोको दुर्वर्ण, वधेला पेटवाळा,
ठिगणा, सुरतप्रिय अने 'एसेले'
एवुं बोलनारा होय छे.
पछी अतर्वेदिना एटले गगा
जमनानी वच्चेना प्रदेशमा रहे-
नारा लोकोने जोया, ए लोको
वर्णे कपिल, माजरी आखवाळा
अने 'किं ते किं मो' एवु बोल-
नारा होय छे

उत्तुगथूलघोणे कणयवन्ने य
भारवाहे य ।

पछी कीरदेशना लोकोने जोया,
ए लोको वर्णे कनकवर्णा, उंची

'हरि पारि' भणिरे कीरे
कुमारो पलोएइ ॥

अने चाडी नाचिकावाळा, मार बरनारा अने 'हरि पारि' एवुं बोलनारा होय छे.

दक्खिण्णदाणपोरुस–विण्णाण
दयाविवज्जियसरीरे ।
एह तेहं चवंते ढक्के
उण पेच्छइ कुमरो ॥

पछी ढक्क देशना लोकोने जोया, ए लोको दाक्षिण्य, दान, पौरुष, विज्ञान अने दया विनाना होय छे अने 'एहं तेहं एम बोलनारा होय छे

सललियमिउमद्दवए गंधव्व
पिए सदेसगयचित्ते ।
'चंसे वहमो' भणिरे सुहये
अह सिंधवे दिट्ठे ॥

पछी सिंधना लोकोने जोया, ए लोको ललित, मृदु, गांधर्वप्रिय, स्वदेशपरायण, सुमुखा अने 'चंसे वहमो' एम बोलनारा होय छे

कोंबरे (?) य जड्डे बहु
भोई कढिणपीणथूणंगे ।
'अप्पां तुप्पां' भणिरे अह
पेच्छइ कारुए तत्तो ॥

पछी कारुदेशना लोकोने जोया ए लोको कपिंजल (?) बहु बहु मोजी, कठण अने पुष्ट अंगवाळा तथा 'अप्पां तुप्पां' एम बोल-नारा होय छे

धयकोविणपुट्टंगे धम्मपरे
संधिविग्गहे णिउणे ।
न उ रे भल्लउं भणिरे
अह पेच्छइ गुज्जरे अवरे ॥

पछी गूर्जरलोकोने जोया, ए लोको घी अने माखणथी पुष्ट शरीरवाळा धर्मपरायण संधि-विग्रहमां निपुण अने न उरे भल्लउं एम बोलनारा होय छे

ण्हाओलित्तविलित्ते कयसीमंते
सोहियंगत्ते ।

पछी लाटना लोकोने जोया, ए लोको (माथामां) सेंथो

'अम्ह काउं तुम्हं' भणिरे
अह पेच्छइ लाडे ।

तणुसाममडहदेहे कोवणए
माणजीवणे रोद्दे ।
'भाइ य भइणी तुब्भे'
भणिरे अह मालवे दिट्ठे ॥

उक्कडदप्पे पियमोहणे य
रोद्दे पयगवित्ती य ।
'अडिपाडि रमरे' भणिरे
पेच्छइ कन्नाडए अण्णे ॥

कुप्पासपाउयगे मासणइ (?)
पाणमयणतल्लिच्छे ।
'असि किसि मणि' भण
माणे अह पेच्छइ ताइए अवरे ॥
सव्वकलापब्भट्ठे माणी पिय-
कोवणे कढिणदेहे ।
'जल तल ले' भणमाणे
कोसलए पुलइए अवरे ॥
दढमडहसामलगे सहिए
अह माणकलहसीले य ।
'दिन्नल्ले गहियल्ले' उल्ल-
विरे तत्थ मरहट्ठे ॥

पाडनारा, लेपन करनारा, सुशोभित शरीरवाळा अने 'अम्हं काउं तुम्ह' एम बोलनारा होय छे.

पछी माळवाना लोकोने जोया, ए लोको, काळा अने नाना शरीरवाळा, क्रोधी, अभिमानी, रौद्र अने 'भाइ य भइणी तुब्भे' एम बोलनारा होय छे.

पछी कर्णाटकना लोकोने जोया, ए लोको दर्पवाळा, मोहवाळा, रौद्र, चंचळ अने 'आडिपाडि रमरे' एम बोलनारा होय छे.

पछी ताइ लोकोने जोया, ए लोको कचुक पहेरनारा अने 'असि किसि मणि' एम बोलनारा होय छे.

पछी कोशलदेशना लोकोने जोया, ए लोको सर्वकलाहीन, मानी, कोपी अने 'जल तल ले' एम बोलनारा होय छे.

पछी महाराष्ट्रना लोकोने जोया, ए लोको शरीरे दृढ, नाना अने काळा होय छे तथा स्वहितमा मान--कलहशील अने

हवे ' वर्तमान जैन आगमोने महावीर भाषित समजीने कोई ए आगमोनी ज भाषाने अर्धमागधी कहे अने ए उपरथी ज एनां व्याकरण अने कोष बनावे तो न बनी शके ' ' ए प्रश्ननुं समाधान आचार्य हेमचन्द्रे पोतानी कृतिद्वारा अने उपर्युक्त उल्लेखद्वारा पण करी नांख्युं छे एथी आ आगमोनी भाषाने अर्धमागधी समजवी के एम समजवी ए विषेनां पुस्तको लखवां ए भाषाना इतिहासमां गोटाळो करवा सिवाय बीजुं शुं होई शके '

आचार्य हेमचन्द्रना पूर्ववर्ती अने अगसूत्रोना टीकाकार आचार्य अभयदेवे पण अर्धमागधी नाम धरावती भाषाने प्राकृत लक्षणनी बहुलतावाळी जणावी छे तेमणे लख्युं छे के

पियमाइभावंगामे सुंदरगोते य
मायपे रोद्दे ।
'भाडि मडि' भणंति भवरे
भचे कुमारे पओएद ॥

दिवसले गहियसले एम बोल-
नारा होय छे
बळी आंखना काळने बोधा,
ए लोकोने बी अने समाम बने
प्रिय होय छे, एमना गोत्रो सुंदर
होय छे अने ए लोको रौद्र तथा
भयंकर अने 'भाडि मडि' एम
बोलनारा होय छे

उपरना उल्लेखमां गोल्ल (गौड ?), मध्यदेश, मगध अन्तर्वेदि कीर, टक्क सिंध मरु (मारवाड), गुर्जर, लाट, मालव कर्णाटक, ताइय (?) कोशल महाराष्ट्र अने आंध्र एम सोळ देशोने जणावेला छे

कुवलयमाळामां आ उल्लेख अहीं एटला माटे आप्यो छे के, एमां ए देशोनी गणना ए रीते करेली छे (आचार्य जिनविजयजीनी एक नोंधमांथी आ उल्लेखने हुं कुवलयमाळा'मांथी मेळवी शक्यो छुं)

" ' र–सो–र्लशौ मागध्याम् ' इत्यादि यत् मागधभापालक्षणं तेन अपरिपूर्णा प्राकृतभापालक्षणवहुला अर्धमागधी "

(औपपातिक टीका पृ० ७८ समिति)

अभयदेवे आगमोनी भापा उपरथी नक्की करेलुं अर्धमागधीनुं स्वरूप जोता तो ' अर्धमागधी ' नाम ' देवादार 'ना ' रणछोड ' (ऋणने छोडनार) नाम जेवुं लागे छे. तेओ साफ साफ कहे छे के, आगमोनी भापा प्राकृतलक्षणनी वहुलतावाळी छे अने एक लक्षण सिवाय मागधीना बीजा खास लक्षणोने एमा काइ स्थान नथी, एथी ज वाचनार समजी शकशे के, वर्तमान आगमोनी भापाने अर्धमागधी कहेवी के प्राकृत कहेवी ?

' आगमो प्राकृत छे ' ए मत तो आज घणा समयथी चाल्यो आवे छे अने हेमचद्र अने अभयदेव करता य प्राचीन अने प्रामाणिक आचार्योए ए मतने स्वीकारेलो छे.

ए सवधमा आचार्य हरिभद्र जणावे छे के,

[1]" प्राकृतनिबन्धोऽपि बालादिसाधारण. " इति

---

१ दशवैकालिकनी टीकामा जे प्रसगे आचाय हरिभद्रे आ उल्लेख कर्यो छे ते प्रसग आ छे

" दर्शनाचारना आठ प्रकार छे, तेमा पेहेलो प्रकार निःशकित रहेवु ते, ' नि शकित 'नु विवरण करता कह्यु छे के शकाना वे प्रकार छे–सर्वशका अने देशशका. सर्वशका एटले सर्व प्रकारे शका अने देशशका एटले अगथी शका. तेमा ' सर्वशका 'नु स्वरूप बतावता जणाव्यु छे के,

" सर्वशङ्का तु प्राकृतनिबद्धत्वात् सर्वमेवेद परिकल्पित भविष्यतीति ।"

अर्थात् 'प्राकृत भाषामा रचेलु होवाथी आ बधु य बनावटी केम न होय ?' आवी जे जिनागम प्रत्ये शका करवी ते सर्वशका, आनु समाधान करता हरिभद्रे उपर्युक्त उल्लेखने टाकी बताव्यो छे.

माटेज मल्या पछी ए आचार्यश्री 'उक्तं च" कहीने पोताना उल्लेखना पोषणमां एक जूना संवादने टांकी बतावे छे—

"बालस्त्रीमूढमूर्खाणां नृणां चारित्रकाङ्क्षिणाम्।
अनुग्रहार्थं तत्त्वज्ञैः सिद्धान्तः प्राकृतः कृतः ॥"

(दशवैकालिक टीका पृ० ११३ आगमो०)

आ उपरथी आपणे मोई शकीए छीए के आपणो आ मत हरिभद्र करतां य जूनो ठरे छे

जे प्रसंगमां हरिभद्रे उपर्युक्त उल्लेखने मूकेलो छे ते ज प्रसंगमां वादिदेवसूरिना गुरु आचार्य मुनिचंद्र पण एज उल्लेखने (हरिभद्रना धर्मबिंदुनी टीकामां) मूके छे धर्मबिंदु पृ० ७७, द्वितीय अध्याय आत्मानंद सभानी आवृत्ति

आचार्य मलयगिरि पण प्रज्ञापनानी पोतानी टीकामां एवा ज प्रसंगमां एज वातने जणावे छे—प्रज्ञापनासूत्र टीका समितिनुं पृ ६०

हेमचंद्रनी पछी थयेला आचार्यो द्वारा पण एज मतने टेको आपवामां आव्यो छे—

आचार्य प्रभाचंद्रे बनावेला अने श्रीप्रद्युम्नसूरिए शोधेला प्रभावकचरित्रमां (पृ० ९८–९९) जणाव्युं छे के,

"अन्यदा लोकवाक्येन जातिप्रत्ययतस्तथा।
मा वास्यात् संस्कृताभ्यासी कर्मदोषात् प्रबो(धा)धितः॥१०९

---

१ उपरना बधा उल्लेखोमां वपरायेलो 'प्राकृत' शब्द प्राकृत भाषानो सूचक छे अनुयोगद्वारसूत्रमां प्राकृत शब्द प्राकृतभाषाना अर्थमां वपरायेला छे (पृ १३१ ब) वैयाकरण वररुचिना समयथी तो ए शब्द ए अर्थमां वपरातो आव्यो छे अने ए पछीना आचार्योए पण ए शब्दने एज अर्थमां वापर्यो छे माटे कोईए अहीं ए शब्दने भरमावो नहि

सिद्धान्तं संस्कृतं कर्तुमिच्छन् संघ न्यजिज्ञपत् ।
प्राकृते केवलज्ञानिभाषितेऽपि निरादरः ॥ ११०

\+ + +

यदि (इदं) विश्रुतमस्माभिः पूर्वेषां संप्रदायतः ।
चतुर्दशापि पूर्वाणि संस्कृतानि पुराऽभवन् ॥ ११४
प्रज्ञातिशयसाध्यानि तान्युच्छिन्नानि कालतः ।
अधुनैकादशाङ्गयस्ति सुधर्मस्वामिभाषिता ॥ ११५
बालस्त्रीमूढमूर्खादिजनानुग्रहणाय सः ।
प्राकृतां तामिहाऽकार्षीदनास्थाऽत्र कथं हि वः " ॥ ११६

अर्थात् " सिद्धसेन दिवाकर नामना सुप्रसिद्ध जैनाचार्ये प्राकृत जैन आगमोने संस्कृतमा करवानी इच्छा करी " आटलुं जणावी ग्रंथकार पोताना तरफथी वधु जणावता कहे छे के, " बाल, स्त्री, अने मूर्ख वगेरेनी सगवडताने माटे पूर्व पुरुषोए–सुधर्मस्वामिए–ए आगमोने प्राकृतमा रच्या छे, तो एमा आपणे शामाटे अनास्था करवी ?"

" यत उक्तमागमे " अर्थात् ' आगममा कह्युं छे के ' एम लखीने श्रीविजयानदसूरि पोताना तत्त्वनिर्णयप्रासादमा जणावे छे के,

मुत्तूण दिट्ठिवाय कालिय–उक्कालियंगसिद्धंत ।
थीबालवायणत्थ पाययमुइयं जिणवरेहिं ॥

अने साथे हरिभद्रे उद्धरेलो श्लोक पण टांके छे. (खरी रीते तो आ प्राकृत गाथाने हरिभद्रनी पहेला ज मूकवी जोइए पण मने एनुं मूळ स्थान न जडवाथी एना उध्धृत करनारना काळक्रममा एने मूकवामा आवी छे.)

अनुयोगद्वार सूत्रमा जणाव्यु छे के,

" सक्कया पायया चेव भणिइओ होंति दोण्णि वा "

(पृ. १३१ समिति)

अर्थात् 'संस्कृत अने प्राकृत बे भाषाओ छे'

आ उल्लेख गीतनी भाषाना प्रसंगमां छे आ उपरथी एटलुं तो जरुर तारवी शकाय के, अनुयोगद्वारना समयमां अर्धमागधीने प्राकृतथी जुदी ज गणवामां आवती होत तो सूत्रकार प्राकृतनी साथे ज पोतानी प्रिय अने देवभाषा तरीके प्रसिद्धि पामेली अर्धमागधीने पण सूचववी मूके खरा !

आ प्रमाणे एक नहिं पण अनेक जैनाचार्योए वर्तमान आगमोनी भाषाने स्पष्ट शब्दमां प्राकृत कहेली छे माटे अमे पण अहीं ए ज मतने स्वीकारेलो छे, अने तेथी ज प्रस्तुत व्याकरणमां पण जैन आगमोनां केटलांक विशिष्ट रूपोने प्राकृतना व्याकरण साथे ज नोंघेलां छे

आ तो जैनाचार्योनी ज दृष्टिए आगमोमां आवेली भाषाना संबंधमां चर्चा थइ, तदुपरांत बीजी त्रण दृष्टिए पण अर्धमागधी भाषानी चर्चा थइ शके छे तेमां—

पहेली दृष्टि भरतना नाट्यशास्त्रनी,
बीजी दृष्टि प्राकृत भाषानां व्याकरणोनी
अने त्रीजी दृष्टि अशोकनी धर्मलिपिओनी
भरतना नाट्यशास्त्रमां कह्युं छे के,
" चेटानां राजपुत्राणां श्रेष्ठिनां चार्धमागधी "

भरतना० अध्याय १७ श्लो० ५०

नाटकोमां पात्र तरीके आवता चेटो, राजपुत्रो अने शेठियाओ अर्धमागधी भाषा बोले छे भरतना आ उल्लेखथी आपणे नाटकोमां ते ते पात्रोनी भाषाद्वारा अर्धमागधीना स्वरूपने कळी शकीशुं

नाटकोनी भाषाना नमूना—

(भासनु प्रतिज्ञायौगंधरायण)

भटः—को काळो अहं भट्टिदारिआए वासवदत्ताए उदए कीळिदु-
कामाए भद्दवदीपरिचारअं गत्तसेवअं ण पेक्खामि। भाव पुप्फ-
दंतअ गत्तसेवअं ण पेक्खामि । किं भणासि एसो गत्तसेवओ
कण्डिळसुडिगिणीए गेह पविसिअ सुर पिवदि त्ति। पृ० १०२

भट.—सव्वं दाव चिट्ठदु राअउळे भद्दपीठिअं ण णिक्कामिअ कुदो
अअं आहिण्डदि त्ति। पृ० १०६

भट—कि णु खु एव + होदु, इमं वुत्तंत्त अमच्चस्स णिवेदेमि।
पृ० १०६

(भासनुं चारुदत्त)

चेट·—अम्मो अय्यमेत्तेओ।

चेट—अम्मो भट्टिदारओ। पृ० ६७

चेट—सुहोदेसु पादेसु भूमीए पळोट्टिदव्व। पृ० ६८

(भासनुं स्वप्नवासवदत्त)

भटौ—उस्सरह उस्सरह अय्या उस्सरह। पृ० ८

चेटी—एदु एदु भट्टिदारआ इदं अस्समपदं पविसदु। पृ० १९

चेटी—अत्थि राओ पज्जोदो णाम उज्जइणीए सो दारअस्स कारणादो
दूदसपादं करेदि पृ० १७

(शूद्रकनु मृच्छकटिक)

चेटः—अज्जुए चिश्ट, चिश्ट।

उत्ताशिता गच्छशि अंतिका मे
शंपुण्णपुच्छा विअ गिम्हमोरी।
ओवग्गदी शामिअ भश्टके मे।
वणे गडे कुक्कुरशावके व्व॥ पृ० २७

अर्थात् ' संस्कृत अने प्राकृत बे भाषाओ छे. '

आ उल्लेख गीतनी भाषाना प्रसंगमां छे आ उपरथी एटलुं तो जरुर तारवी शकाय के, अनुयोगद्वारना समयमां अर्धमागधीने प्राकृतथी जुदी ज गणवामां आवती होत तो सूत्रकार प्राकृतनी साथे ज पोतानी प्रिय अने देवभाषा तरीके प्रसिद्धि पामेली अर्धमागधीने पण सूचवी मूके खरा !

आ प्रमाणे एक नहि पण अनेक जैनाचार्योए वर्तमान आगमोनी भाषाने स्पष्ट शब्दमां प्राकृत कहेली छे माटे अमे पण अहीं ए ज मतने स्वीकारेलो छे, अने तेथी ज प्रस्तुत व्याकरणमां पण जैन आगमोनां केटलांक विशिष्ट रूपोने प्राकृतना व्याकरण साथे ज नोंधेलां छे

आ तो जैनाचार्योनी ज दृष्टिए आगमोमां आवेली भाषाना संबधमां चर्चा थइ, तदुपरांत बीजी त्रण दृष्टिए पण अर्धमागधी भाषानी चर्चा थइ शके छे तेमां—

पहेली दृष्टि भरतना नाट्यशास्त्रनी,
बीजी दृष्टि प्राकृत भाषानां व्याकरणोनी
अने त्रीजी दृष्टि अशोकनी धर्मलिपिओनी
भरतना नाट्यशास्त्रमां कह्युं छे के,
" चेटानां राजपुत्राणां श्रेष्ठिनां चार्धमागधी "

भरतना० अध्याय १७ श्लो० ५०

नाटकोमां पात्र तरीके आवता चेटो, राजपुत्रो अने शेठियाओ अर्धमागधी भाषा बोले छे भरतना आ उल्लेखथी आपणे नाटकोनां ते ते पात्रोनी भाषाद्वारा अर्धमागधीना स्वरूपने कल्पी शकीशुं

नाटकोनी भाषाना नमूना—

ए नाटकोनां पात्रोनी भाषामा अने आगमोनी भाषामा केटलो वधो तफावत छे ?

हवे आपणे जोईए के, प्राकृत व्याकरणोनी दृष्टिए आगमोनी भाषाने अर्धमागधीनुं नाम आपी शकाय के केम ?

प्राकृत व्याकरणो तो घणां छे, ए वधांना नामो पण हवे पछी आपवाना छे. वधा प्राकृत व्याकरणोमा वररुचिनो प्राकृतप्रकाश वधारे प्राचीन छे. एमा 'मागधी' नी प्रकृति तरीके शौरसेनीने कही छे अने शौरसेनी करता जे विशेषता छे ते आ प्रमाणे बतावी छेः—

१ मागधीमा 'ष' अने 'स' ने बदले 'श' बोलवो.
२ ,, 'ज' ने बदले प्रायः 'य' बोलवो.
३ ,, चवर्गना कोइ अक्षरनो लोप न करतां जेम होय तेम ज बोलवुं.
४ ,, 'र्य' अने 'द्य' नो 'य्य' बोलवो.
५ ,, 'क्ष' ने बदले 'स्क' बोलवो.
६ ,, अकारात शब्दना प्रथमाना एक वचनमा 'इ' अने 'ए' प्रत्यय वापरवो.
७ ,, मागधीमां अकारान्त भूतकृदंतना प्रथमाना एक वचनमा उपरना वे प्रत्ययो उपरांत 'उ' प्रत्यय पण वापरवो.
८ ,, षष्ठीना एकवचनमां 'ह' प्रत्यय वापरवो.
९ ,, संबोधनना एकवचनमा अन्त्य 'अ' नो 'आ' करवो.
१० ,, 'स्था' ने बदले प्राकृतमा वपराता 'चिट्ठ' ना स्थानमा 'चिष्ठ' धातु वापरवो.

चेटः—अमेहि अ लागअछइ तो साहिहिशी मच्छमराक ।

एदेहिं मच्छमेशकेहिं गुणभा मडभ ण शेवदि ॥ पृ० ११

आ बधी भाषा चेटोनी छे

राजपुत्रनी भाषा आ प्रमाणे छेः

(कालीदासनु शाकुतल)

बाळ –णिम णिम दंदाणि ते गणइस्सं पृ० २९९

बाळ—बलिअ मीद म्हि पृ० २९१

बाळ –इमिणा एव्व दाव कीळिस्स पृ० २९८

हवे शेठियाओनी भाषाओ नमुनो—

(शूद्रकनु मृच्छकटिक)

चन्दनदास—जेदु अज्जो

चन्दनदास —किं ण जाणादि अज्जो अह अणुचिदो उवआरो परिहवादो वि महत्तं दु खं उप्पादेदि । ता इह ज्जेव उचिदाए भूमीए उवविसामि ।

चन्दनदास—अह ई अज्जस्स प्पसाएण अक्खण्डिदा वणिज्जा । पृ० १४

चन्दनदास —आणवेदु अज्जो किं केत्तिअं इमादो जणादो इच्छीअदि त्ति ।

चन्दनदास—अज्ज अलिअ एद केणवि अणज्जेण अज्जस्स णिवेदिद । पृ० १५

चन्दनदास —फळेण संवादिदं सोहदि दे विकत्थिद । पृ० १७

मात्स्यालंकार भरतना उल्लेख प्रमाणे चट, राजपुत्र अने शेठनी भाषाने अर्धमागधी कहेवामां आवे छे एना नमुना उपर आपवामां आव्या छे उपरना नमुनानी भाषा साथे आपणे आगमोनी भाषाने सरखावीए तो केवळ सांभळवा मात्रथी ज ए भेद जणाई आवे के,

ए नाटकोना पात्रोनी भाषामा अने आगमोनी भाषामां केटलो बधो तफावत छे ?

हवे आपणे जोईए के, प्राकृत व्याकरणोनी दृष्टिए आगमोनी भाषाने अर्धमागधीनुं नाम आपी शकाय के केम ?

प्राकृत व्याकरणो तो घणां छे, ए बधाना नामो पण हवे पछी आपवाना छे. बधा प्राकृत व्याकरणोमा वररुचिनो प्राकृतप्रकाश वधारे प्राचीन छे. एमा 'मागधी' नी प्रकृति तरीके शौरसेनीने कही छे अने शौरसेनी करता जे विशेषता छे ते आ प्रमाणे बतावी छे:—

१ मागधीमा 'ष' अने 'स' ने बदले 'श' बोलवो.

२ ,, 'ज' ने बदले प्राय: 'य' बोलवो.

३ ,, चवर्गना कोइ अक्षरनो लोप न करता जेम होय तेम ज बोलवुं.

४ ,, 'र्य' अने 'द्य' नो 'य्य' बोलवो.

५ ,, 'क्ष' ने बदले 'स्क' बोलवो.

६ ,, अकारांत शब्दना प्रथमाना एक वचनमा 'इ' अने 'ए' प्रत्यय वापरवो.

७ ,, मागधीमां अकारान्त भूतकृदंतना प्रथमाना एक वचनमा उपरना बे प्रत्ययो उपरांत 'उ' प्रत्यय पण वापरवो.

८ ,, षष्ठीना एकवचनमा 'ह' प्रत्यय वापरवो.

९ ,, संबोधनना एकवचनमा अन्त्य 'अ' नो 'आ' करवो.

१० ,, 'स्था' ने बदले प्राकृतमा वपराता 'चिट्ठ' ना स्थानमा 'चिष्ठ' धातु वापरवो.

११ „ 'कृत' ने बदले 'कड' 'मृत' ने बदले 'मड' अने 'गत' ने बदले 'गड' रूपो वापरवां

१२ „ संबधक भूतकृदन्तने सूचववा 'त्वा' प्रत्ययने बदले 'दाणि' प्रत्यय वापरवो

१३ „ 'हृदय' ने बदले 'हडक,' 'अहं' ने बदले 'हके' 'हगे' 'अहके' अने 'शृगाल' ने बदले 'शिआल' तथा 'शिआलक' शब्दो वापरवा

वररुचिए बतावेलुं मागधीनुं स्वरूप उपर प्रमाणे छे, आ सिवाय शौरसेनीना जे नियमो वररुचिए आपेला छे तेमांना निरपवाद नियमो मागधीमां पण उतरी लेवाना छे. आगमोनी भाषाने जोतां तेमां फक्त वररुचिए बतावेला १ ली विशेषतानो य अमुक अंश ('ए' नी वपराश) जोवामां आवे छे, तो मागधीना एक ज अंशनी वपराशने लीधे आगमोनी भाषा अर्धमागधी कहेवाय के नहि? ए सारखो म विचारी ल

'वर्तमान आगमोनी भाषामां मागधभाषानुं स्वरूप केटले अंशे दखाय छे?' ए प्रश्ननी परीक्षा करतां आपणे भास वगेरेनां नाटको जोयां, प्राचीन वैयाकरण वररुचिने तपास्यो हवे अशोकनी धर्म लिपिओनी भाषाने पण आपणे जोइ लईए. ए लिपिओनी भाषाने 'कई भाषा कहेवी?' ए प्रश्न हजी विवादग्रस्त छे तो पण एने 'प्राचीनमागधी' कहेवामां कोइ दोष जणातो नथी—बौद्धोनां त्रिपि

१ मागधीने लगतुं स्वरूप अने उदाहरणो माटे जुओ प्राकृत प्रकाश पृ १२८ थी १३२ तथा १३९ थी १३७ अथवा ११ मो परिच्छेद अने बारमो परिच्छेद

२ आगमोनी भाषानां उदाहरणो माटे जुओ "जैन आगम साहित्यनी मूळ भाषा कइ ए लेख (जैन साहित्यसंशोधक पु १ अं १ पृ ११ थी १७)

टकनी भाषा ए लिपिओनी साथे सरखामणीमा आवी शके एवी छे. त्रिपिटकमा पण 'मागधी' भाषानो उपयोग थयानुं नीचेनी गाथा जणावे छे[1].

अशोकनी धर्मलिपिओमा वपराएली भाषानुं बंधारण तपासतां आ नीचे जणावेला मुख्य नियमो उपजी शके छे:

१ अद्विर्भाव (वर्णनुं नहि बेवडावुं)

'संयुक्त अक्षर अनादिमा होय अने सयुक्त अक्षरमांनो एक अक्षर लोपाय त्यारे जे शेष अक्षर होय छे ते बेवडाय छे अथवा सयुक्त अक्षरनी पहेलानो ह्रस्व स्वर दीर्घ थाय छे'

प्राकृत भाषाओनो आ एक साधारण नियम छे. अशोकनी धर्मलिपिओनी भाषामा ए नियम क्वचित् ज सचवाएलो जोवाय छे पण जैन आगमोनी भाषामा प्राकृतना नियम प्रमाणे ए नियम बराबर सचवाएलो छे

लिपिओनी भाषामा वपराएला एवा द्विर्भाव विनाना अने दीर्घस्वर विनाना रूपो[2] आ प्रमाणे छे:

लिपिओनी भाषा	आगमभाषा	सस्कृतरूप
अप	अप्प	अल्प
कप	कप्प	कल्प

१ "सा मागधी मूलभासा नरा याया ऽऽदिकप्पिका ।
ब्रह्मुना चस्सुतालापा संबुद्धा चापि भासरे" ॥

२ आमा अशोकनी धम्मलिपिमाथी जे रूपो आप्या छे ते उदाहरण रूपे छे, एने मळता बीजा अनेक रूपो छे. पण बधा अहीं विस्तार भयथी आप्या नथी. बीजी ए एक वात लक्ष्यमा राखवानी जरुर छे के, अशोकना प्रान्तीय पाठ भेद पण केटलेक ठेकाणे छे, जो के में बने त्या सुधी सर्व साधारण रूपो लेवानो प्रयत्न कर्यो छे.

युत	युत्त	युक्त
निखम	निक्खम	निष्क्रम
कलाण	कल्लाण	कल्याण

२ 'र' नो वैकल्पिक 'ल'

अशोकनी लिपिओमां 'र' ना स्थाने सर्वत्र 'ल' नो प्रयोग वैकल्पिक रीते थएलो देखाय छे त्यारे जैन आगमोमां प्राकृत भाषाना धोरणनी पेठे 'र' नो ज प्रयोग कायम रहेलो छेः

लि॰	आ॰	सं॰
आदिकले आदिकरे	आइकरे आइगरे	आदिकर
परिसा पलिसा	परिसा	पर्षद्
चरणं चलनं	चरणं	चरणम्
हिरंन हिलंन	हिरण्ण	हिरण्य
मरणं मलने	मरणं	मरणम्

३ अनादि—असंयुक्त व्यंजननो लोप

अशोकनी धर्मलिपिओमां अनादि—असंयुक्त क, ग, च, ज, त, द, प य, अने व लोपाता नथी त्यारे आगमोनी भाषामां प्राकृत भाषानी पेठे ए बधा अक्षरो लोपाएला छे

लि॰	आ॰	सं
सुकतं	सुकयं	सुकृतम्
मिगे	मिए	मृग

उचावुचछंदो	उच्चावयच्छदो	उच्चावचच्छन्दः
समाजसि	समायम्मि	समाजे
एते	एए	एते
विवादे	विवाओ	विवादः
पापुनाति	पाउणइ	प्राप्नोति
		वगेरे

४ श, स, ष नो उपयोग

अशोकनी धर्मलिपिओमां श, ष, अने स नो उपयोग थएलो छे त्यारे आगमनी भाषामा प्राकृत भाषानी पेठे मात्र एक 'स' नो ज उपयोग थएलो छे:

लि०	आ०	सं०
पशु षसु	पसु	पशु
शत सत	सय	शत
दोस दोष	दोस	दोष
ओषढिनि ओसधानि	ओसहाणि	औषधानि
सार शाल	सार	सार
पंचसु पंचषु	पंचसु	पञ्चसु

५ विजातीय संयुक्त व्यंजननी वपराश

अशोकनी धर्मलिपिओमां विजातीय संयुक्त व्यंजनोनी वै-कल्पिक वपराश घणो छे त्यारे जैन आगमोनी भाषामां प्राकृत भाषाना बंधारण प्रमाणे ए वपराश ज नथी

शि०	प्रा०	सं०
प्राण पान	पाण	प्राण
दिव्यानि दिवियानि	दिव्वाइं	दिव्यानि
सेठे सेस्टे	सेट्ठे	श्रेष्ठ
अस्ति अस्ति	अत्थि	अस्ति
सहसानि सहस्रानि	सहस्साइं	सहस्राणि
पुत पुत्र	पुत्त	पुत्र
मित मित्र	मित्त	मित्र
नास्ति नथि	नत्थि	नास्ति
समण श्रमण	समण	श्रमण वगेरे

६ 'स' 'ष' 'श' 'ज' नो ह

अशोकनी धर्मलिपिओमां 'स' 'ष' 'श' अने 'ज' अनुक्रम

रहे छे त्यारे जैन आगमोनी भाषामा प्राकृत भाषा प्रमाणे ए चारेने स्थाने 'ह' थएलो छे:

लि०	आ०	सं०
लिखित	लिहिअ	लिखित
सुख	सुह	सुख
यथा	जहा	यथा
तथा	तहा	तथा
बहुविध	बहुविह	बहुविध
वध	वह	वध
साधु	साहु	साधु
आलभितु	आलहिउ	आलभताम्
		वगेरे

७ 'न' नो 'ण'

अशोकनी धर्मलिपिओमा 'न' नो 'ण' नथी थएलो त्यारे जैन आगमोनी भाषामा प्राकृतना नियम प्रमाणे 'न' नो 'ण' थएलो छे

लि०	आ०	सं०
देवानं	देवाण	देवानाम्
पियेन	पियेण	प्रियेण
अनुदिवसं	अणुदिवसं	अनुदिवसं
बहूनि	बहूणि	बहूनि
दान	दाणं	दानम्
महानससि	महाणससि	महानसे

८ 'ण' नो न

अशोकनी धर्मलिपिओमां 'ण' ने स्थाने 'न' पण वपराएलो छे त्यारे आगमोनी भाषामां तेम नथी मणातु

लि॰	आ०	सं॰
गननासि / गणनसि	गणने	गणने

९ 'त' नो ट

अशोकनी धर्मलिपिओमां एकला 'त' नो के संयुक्त 'त' नो 'ट' थएलो छे त्यारे जैन आगमोनी भाषामां ए स्थळे प्राकृतनी प्रक्रिया प्रमाणे एकला 'त' नो 'ड' थएलो छे अने संयुक्त 'त' नो 'त' थएलो छे

लि॰	आ॰	सं०
पटिवेदना	पडिविभणा	प्रतिवेदना
पटिपाति	पडिवत्ति	प्रतिपत्ति
कट	कड, कय	कृत
मट	मड, मय	मृत
कटव / कटविय	कायव्व	कर्तव्य
किति / किटी	कित्ति	कीर्ति वगेरे

१० 'प' नो व

अशोकनी धर्मलिपिओमां 'प' नो 'व' नथी थएलो पण जैन आगमोनी भाषामां प्राकृतनी पेठे 'प' नो 'व' थएलो छे

लि०	आ०	स॰
लिपि	लिवि	लिपि
रूपा	रूवा	रूपा
पापं	पाव	पापम्

प्रेरक प्रक्रिया ना प्रत्ययो } आप, आपे | आव, आवे |
|---|---|---|
| सामीपं | सामीव | समीपम् |
| | | वगेरे |

११ ' द्य ' नो य

अशोकनी धर्मलिपिओमा ' द्य ' नो ' य ' थएलो छे त्यारे जैन आगमोनी भाषामा प्राकृतनी पद्धति प्रमाणे ' द्य ' नो ' ज्ज ' करवामा आवेलो छे:

लि०	आ०	स०
उयान	उज्जाण	उद्यान
उयाम	उज्जम	उद्यम

१२ ' ञ ' नो उपयोग

अशोकनी धर्मलिपिओमा ' न्य, ' ' ण्य ' अने ' ज्ञ ' ने स्थाने ' ञ ' नो पण उपयोग थएलो छे त्यारे जैन आगमोनी भाषामां ए त्रणेने स्थाने प्राकृतनी प्रमाणे ' न्न, ' ' ण ' के ' ण्ण ' नो ज व्यवहार थएलो छे:

लि०	आ०	सं०
हञति	हणंति, हन्नति	घ्नन्ति
मञति, मनति	मन्नइ	मन्यते
अञ, अन	अण्ण, अन्न	अन्य
हिरञ	हिरण्ण	हिरण्य
पुञ, पुन	पुन्न, पुण्ण	पुण्य

ञाति नाति	नाइ	ज्ञाति
रञो	रण्णो	राज्ञ वगेरे

१३ ति अने तु

अशोकनी धर्मलिपिओनां क्रियापदोमां 'ति' अने 'तु' प्रत्ययो वपराएला छे त्यारे आगमोनी भाषामां प्राकृतनी शैली प्रमाणे 'इ' अने 'उ' प्रत्ययो वपराएला छ

लि०	भा०	स०
भोतु होतु	होउ	भवतु
होति भाति	होइ	भवति
कलेति	करेइ	करोति वगेरे

१४ त्य नो च

अशोकनी धर्मलिपिओमां 'त्य' नो 'च' वैकल्पिक रीते वपराएलो छे त्यारे आगमोनी भाषामां प्राकृतना धोरण प्रमाणे 'त्य' ना 'च' ज करवामां आवेलो छे

लि०	भा०	स०
सातिय– सतिय–	सच	सत्य
आचायिक अतियायिक	अच्चाइअ	आत्ययिक
निच	निच्च	नित्य

चज तिज	} चय	त्यज
		वगेरे

१५ नामने लगता प्रत्ययो

प्रथमाना	लि०	आ
एकवचननो		
प्रत्यय--	ए	ए
	ओ	ओ
चतुर्थीना एकवचननो		
प्रत्यय--	य	
	ये	ए
स्त्रीलिंगी नामने लगता		
तृतीयाथी सप्तमी सुधीना		
प्रत्ययो--	य	
	या	
	ये	ए

१६ 'राजन्' ना रूपो

अशोकनी धर्मलिपिओमा 'राजन्' शब्दना जे
मळे छे तेमानु एक रूप पण आगमोनी भाषमा मळ
मळे छे ते बधा प्राकृतना धोरणे सधाएला छे·

लि०	आ०	सं०
लाजा	राया	राजा
लाजानो राजानो }	रायाणो	राजान

लाजिना राजा	रण्णा	राज्ञा
लाजिने लाजाने	रण्णो	राज्ञे
रञो राञो	रण्णो	राज्ञ

आ उपरांत—

ए धर्मलिपिओमां अनादि 'ट' नो 'ट' ज रहेलो छे (घटिते) त्यारे जैन आगमोनी भाषामां प्राकृत प्रमाणे 'ट' ने बदले 'ड' थएलो छे (घडिए)

ए धर्मलिपिओमां 'अह' ने बदले 'हकं' रूप पण वपराएलुं छे त्यारे आगमोनी भाषामां क्यांय ए रूपनो उपयोग ज थयो थएलो

आ रीते अशोकनी धर्मलिपिओनी प्राचीन मागधीनुं स्वरूप पण वर्तमान आगमोनी भाषामां एने अर्धमागधी कहेवरावता पूरतु य घटी शकतु नथी, ए हकीकत उपर जणावेलां उदाहरणोथी ज जाणी शकाय एम छे

ए आगमोनी छेल्ली संकलना थया पहेलां, एमां जेवी भाषा जळवाई छे तेवी नहि होय ए हकीकत तो आगमोमां रहेलां केटलांक जूनां रूपो उपरथी ज जाणी शकाय एवी छे

आगमोनी रचनासमयनी भाषाना अने देवर्धिगणिनी संकलना-समयनी भाषाना अंतरने समजवा माटे गूजराती भाषानुं नीचेनुं उदाहरण बस छे

सं. १७३९ नी भाषा	सं. १९४४ नी भाषा
" समवसरणनुं हुउं रे मंडाण,	समवसरणनो हुओ रे मंडाण,
माणिक हेम रजत सुप्रमाण ।	माणिक हेम रजत सुप्रमाण ।
सिंहासनी वईठा जिनवीर,	सिंहासन बेठा जिन वीर,
दिइ देशना अरथ गंभीर ॥	दीए देशना अर्थ गभीर ॥
विद्युनमाली सुर तिहा आवइ,	विद्युन्माली सुर तीहां आवे,
जिन वांदी आनद बहु पावइ ।	जिन वंदी आनंद बहु पावे ।
चरम केवली कुण प्रभु थास्यइ,	चरमकेवली कुण प्रुभ थाशे,
श्रेणिक पूछइं मन उल्लासइ ॥	श्रेणिक पूछे मन उल्लासे ॥
प्रभु कहइ सुणि श्रेणिक नृपचंद,	प्रुभ कहे सुण श्रेणिक नृपचद,
ब्रह्मलोक सामानिक इंद ।	ब्रह्मलोक सामानिक इद ।
चउदेवीयुत विद्युनमाली,	चउदेवीयुत विद्युन्माली,
सातमेइं दिनि ए चवी शुभशाली ॥	सातमे दिने ए चवी शुभशाली ॥
ऋषभदत्तसुत तुज पुर ठामइं,	ऋषभदत्तसुत तुज पुर ठामे,
चरम केवली जम्बू नामइ ।	चरम केवली जम्बू नामे ।
होस्यइ ते सुणि देव अनाढी,	होस्ये ते सुणी देव अनादी,
हरषइ परखइं निज कुल आढी[1] ॥"	हरखे परखी निजकुल आदी ॥"
(यशोविजयजीए रचेली अने तेमनी हस्तलिखित प्रतिमाथी उतारेली)	(यशोविजयजीए रचेली अने जंबुस्वामिना रासनी चोपडी-माथी उतारेली)

१ जूओ छट्ठी गूजराती साहित्यपरिषदनो रिपोर्ट पृ० ९२ मुनि कल्याणविजयजीनो निबंध.

उपर आपेली कविता एक ज कर्तानी छे, छतां एमां काळभेदने लीधे केवो फेरफार थएलो छे, ए, जाडा अक्षरोमां मूकेलां रूपो उपरथी जणाइ आवे छे

जो के १० मा सैकानी असरथी रूपांतर पामेली ए कवितामां १८ मा सैकानी कविनी भाषानां केटलां य रूपो मळवाइ रह्यां छे तो पण रूपांतर पामेली ए कवितानी भाषाने कांइ १८ मा सैकानी नहि कहेवाय तेम १८ मा सैकानी भाषाथी मिश्रित पण नहि कहेवाय ते ज रीते श्री वीरना १ ०० मा सैकामां रूपांतरने पामेला ए आगमोमां भगवान महावीरना समये रचाएला आगमोनी भाषानां केटलां य रूपो मळवाइ रह्यां होय तो पण ए वीरना १०० मा सैकामां रूपांतरने पामेला आगमोनी भाषाने कांइ वीरना समयनी भाषा नहि कहेवाय तेम वीरना समयनी भाषाथी मिश्रित पण नहि कहेवाय. तात्पर्य ए छे के, भास वगेरे प्राचीन कविओनी, वररुचिनी अने छेवट अशोकनी धर्मलिपिओनी मागधी भाषानुं थोडुं घणुं पण स्वरूप वर्तमान आगमोमां रहेलुं होय तेम जणातुं नथी तो पछी आगमोनी भाषाने 'अर्धमागधी' नाम कइ रीते अपाय?

अत्यार सुधी तो आपणे 'अर्धमागधी' ना संबंधमां पुरातन ग्रंथ लेख अने व्याकरणने आधारे विचार कर्या, पण हवे ए संबंधमां आधुनिक ग्रंथकारोनो अभिप्राय पण जोइ लइए

फक्त मार्कंडेय अने क्रमदीश्वर सिवाय बीजा कोइ अर्वाचीन वैयाकरण अर्धमागधीना स्वरूपने लगतो कांइ उल्लेख कर्यो जणातो नथी

मार्कंडेय कहे छे के —

" शौरसेन्या अदूरत्वाद् इयमेवार्धमागधी ॥

प्राकृतसर्वस्व पृ० १०१

आम लखीने ए ज ग्रथकार अर्धमागधीना उदाहरण तरीके आ वाक्य आपे छे—

" अज्ज वि णो शामिणीए हिलिम्बादेवीए पुत्तघड्डुक्कअशोए ण उवशमदि " (वेणीसंहार तृतीय अक)

अने साथे—

" राक्षसी–श्रेष्ठि–चेटाऽनुकम्प्यादेरर्धमागधी "

ए भरतनु वाक्य पण टाकी बतावे छे.

क्रमदीश्वर पोताना संक्षिप्तसारप्राकृतपादमा जणावे छे के.

" महाराष्ट्रीमिश्राऽर्धमागधी " ५–९८

आ उल्लेखनी व्याख्या करता आचार्य विधुशेखर भट्टाचार्य आ प्रमाणे जणावे छे—

" अर्धमागधी शब्द टि द्वाराई जानिते पारा याईते छे ये, ए भाषार शब्दप्रभृतिर अर्ध अंश ठीक मागधी अर्थात् प्राकृतमागधी। तबे ताहार अपर अपर अर्ध अश कि ? क्रमदीश्वर बलियाछेन ताहा महाराष्ट्री–प्राकृतमागधी महाराष्ट्री सहित मिश्रित हईया अर्धमागधी नाम धारण करे।

ताहार उदाहरण—

लभशवशनमिलशुलशिलविअलिदमदाललाजिदहिजुगे ।
वीलजिने पक्खालदु मम शयलमवज्जजवाल ॥ "

पालिप्रकाशनी प्रस्तावना पृ० १६–१७

उपर्युक्त बने वैयाकरणोए जणावेलु अर्धमागधीनुं स्वरूप आगमोनी भाषामा घटी शके खरु ? आ प्रश्ननो उत्तर आ० विधु-शेखरजीए जणावेली उपर्युक्त गाथा ज आपी रही छे.

आ उपरथी वाचको जाणी शकशे के, वैयाकरणोए अर्धमागधीनु जे लक्षण नक्की कर्यु छे ते आगमोनी भाषामां घटे छे के नहि ?

मार्कंडेय वगेरेए नक्की करेलुं अर्धमागधीनुं स्वरूप आ पुस्तकमां शौरसेनीमां अने मागधीमां आवी जाय छे, एथी पण अहीं अर्धमागधीने माटे जुदुं प्रकरण राखवामां नथी आव्यु

प्राकृतनां केटलांक व्याकरणोनां अने तेनी वृत्तिओनां नामो

	नाम	कर्ता	संवाद
१	प्राकृतप्रकाश	वररुचि	प्रसिद्ध छे
२	प्राकृतलक्षण	चंड	,,
३	प्राकृतव्याकरण	हेमचंद्र	,,
४	प्राकृतसंजीवनी	वसंतराज	आनो उल्लेख मार्कंडेयना 'प्राकृत सर्वस्व'मां छे पृ० १ श्लो० ३
५	प्राकृतकामधेनु	लंकेश्वर	
६	प्राकृतव्याकरण	समंतभद्र	
७	,, वृत्ति	त्रिविक्रमदेव	
८	प्राकृत प्रक्रियावृत्ति (दुंढिका)	उदयसौभाग्य	प्रसिद्ध छे
९	प्राकृतप्रबोध	नरचंद्र	
१०	प्राकृतकल्पतरु	रामतर्कवागीश	

११	प्राकृतचंद्रिका	कृष्णपंडित (शेषकृष्ण)	
१२	”	वामनाचार्य	
१३	प्राकृतमनोरमा	भामह	आनो उल्लेख मार्कंडेयना 'प्राकृत सर्वस्व'मां छे पृ० १ श्लो० ३.
१४	प्राकृरूतपावतार	सिंहराज	प्रसिद्ध छे
१५	प्राकृतदीपिका	चंडीवरशर्मा	
१६	प्राकृतमंजरी	कात्यायन	प्रसिद्ध छे
१७	प्राकृतसर्वस्व	मार्कंडेय	”
१८	प्राकृतानंद	रघुनाथशर्मा	
१९	प्राकृतप्रदीपिका	नरसिंह	
२०	प्राकृतमणिदीपिका	चिन्नबोम्मभूपाल	'षड्भाषाचंद्रिका'नी प्रस्तावना पृ० १७ टि० पृ० १८ टि०
२१	प्राकृतमणिदीप	अप्पयज्वन्	”
२२	षड्भाषामंजरी		
२३	षड्भाषावार्तिक		
२४	षड्भाषाचंद्रिका	लक्ष्मीधर	प्रसिद्ध छे
२५	षड्भाषाचंद्रिका	भामकवि	
२६	षड्भाषासुबंतादर्श		
२७	षड्भाषारूपमालिका	दुर्गणाचार्य	षड्भाषाचंद्रिका पृ० २२–२–२–९ सूत्रनी वृत्ति.

२८ संक्षिप्तसारप्राकृतपाद क्रमदीश्वर आ० विधुशेखरमीनी पालिप्रकाशनी प्रस्ता वना पृ० ११ टि०

२९ प्राकृतव्याकरण शुभचन्द्र मोएलु छे

आ उपरांत शाकल्य, भरत, कोहल (मार्कंडेयनु प्राकृत सर्वस्व पृ० १ श्लो० २) भोज अने पुष्पवननाथ (षड्भाषाचंद्रिकानी प्रस्तावना पृ १७ टि०) आ पंडितोए पण प्राकृत व्याकरणो रचेलां छे

जे व्याकरणोनां नाम अहीं आप्यां छे एमांना फक्त ६ के ७ जोवामां आव्या छे नामो तो घणां 'संगीत विश्वकोश' अने 'केटलोगस् केटलोगोरम'मांथी लईने मूकेलां छे

आ पुस्तकमां पालिप्रकाशनो उपयोग बहु करवामां आव्यो छे तेथी एना कर्ता आचार्य विधुशेखरजी तरफ मारी पूरी कृतज्ञता छे, ए सिवाय जे सज्जनोए मने बहु मूल्य सूचनो कर्यां छे तेओ सर्वा तरफ पण हु पूर्ण कृतज्ञ छु

आ पुस्तकमां खास करीने प्राकृतभाषा सबंधे ज सविशेष लक्ष आपवामां आव्यु छे अने बीजी बीजी भाषाओने लगता मात्र विशेष नियमो ज दर्शाव्या छे, उदाहरणो दर्शाव्यां छे खरां पण ते प्राकृत जेटला नहि अपभ्रंशने समजवा माटे सविशेष शब्दो अने उदाहरणो जरुर मूकवां जोइए पण स्थानाभावने लीधे अहीं तेम नथी बनी शक्यु

प्राकृत भाषाना प्रथम अभ्यासीए प्रथम प्राकृत भाषाना ज नियमो तरफ विशेष लक्ष्य राखवु अने पछी बीजा वाचन वखते बीजी बीजी भाषाओने साथे लेवी

आभार

बनारसमा अभ्यास करती वखते प्राकृतना प्राथमिक अभ्यास माटे 'प्राकृतमार्गोपदेशिका' नामे एक पुस्तक में आजथी १९ वर्ष पूर्वे लख्यु हतु ते पुस्तक करता वधारे विगतवाळु अने विस्तृत व्याकरण लखवा माटे मुबइनी जैनश्वेताबर कॉन्फरन्स ऑफीसे मने प्रेरणा करी, तेथी सं० १९७७–७८मा में कॉन्फरन्स ऑफीस माटे आचार्य हेमचद्रना ज क्रम प्रमाणे मूळ आ व्याकरण तैयार कर्यु हतु. पाछळथी ए पुस्तक रा० रा० केशवलाल प्रेमचद मोदी तरफथी पुरातत्त्वमदिरने छापवा माटे आपवामा आव्यु. मदिरे एने छपाववानो निर्णय कर्यो अने 'आखु पुस्तक हु फरी एकवार जोइ जाउं अने साथे साथे तुलनात्मक पद्धतिनो पण एमा उपयोग करु' एवी सूचना मने मंदिरना मत्री भाइ श्रीरसिकलाल परीख तरफथी करवामा आवी, जे मने एक रीते विशेष उपयोगी लागी अने तेना परिणामे पूर्वे लखेलुं आखुं पुस्तक फरी तपासी तेमा आवश्यक सुधारा वधारा करी हालना रूपमा ए प्रकट करवामा आवे छे. ए माटे ए बधा प्रेरकोने साभार धन्यवाद घटे छे

बेचरदास जीवराज दोशी

विषयानुक्रम

+ 'टि०' एटले टिप्पण

१०	ऌ	=	इलि	७
११	ऐ	=	ए	७
	ऐ	=	ए (पालि) टि० २	७
१२	औ	=	ओ	७
	औ	=	ओ (पालि) टि० ३	७
	अ	=	इ (अपभ्रंश)	८
	अ	=	ई ,,	८
	अ	=	उ ,,	८
	उ	=	अ ,,	८
	उ	=	आ ,,	८
	ऋ	=	अ ,,	८
	ऋ	=	आ ,,	८
	ऋ	=	इ ,,	८
	ऋ	=	उ ,,	८
	ऋ	=	ऋ ,,	८
	ऌ	=	इ ,,	९
	ऌ	=	इलि ,,	९
	ए	=	इ ,,	९
	ए	=	ई ,,	९
	औ	=	अउ ,,	९
	औ	=	ओ ,,	९

प्रकरण ३ जु पृ० १०–२८
सामान्य व्यंजनविकार

नियमांक	उद्देश्य	विधेय	पृष्ठ
१	अंत्यव्यंजन	= लोप	१०
	अन्त्यव्यंजन	= लोप (पालि) टि० १	१०
२	असंयुक्त 'कादि'	= लोप	१०
	(१) त	= द (शौरसेनी, अपभ्रंश)	१२
	त	= द (पालि) टि० १	१२
	(२) ज	= य (मागधी)	१२
	ज	= य (पालि) टि० २	१२
	(३) द	= त (पैशाची)	१२
	द	= त (,,)	१२
	द	= त (पालि) टि० ४	१२
	(४) ग	= क (चूलिकापैशाची)	१३
	ग	= क (पालि) टि० १	१३
	ज	= च (चूलिकापैशाची)	१३
	ज	= च (पालि) टि० २	१३
	(५) क	= ग (अपभ्रंश)	१३
	क	= ग (पालि) टि० ३	१३
३	संयुक्त 'कादि'	= लोप	१४
	क्त	= त्त* (पालि) टि० १	१४
	क्य	= क्य (,,) ,,	१४

* 'क्त' वगेरे संयुक्त अक्षरोने स्थाने 'त्त' वगेरेने स्थापित करवा माटे भारतव्याकरणमां आपेला लोपनी अने द्विर्भावनी प्रक्रिया दर्शावेली छे अने ए ज कामने माटे पालिप्रकाशमां 'क्त' वगेरेना 'त्त' वगेरे आदेशो करेला छे

	ट्फ	= प्फ (,,)	टि० ४	१४
	द्ग	= ग्ग (,,)	टि० ५	१४
	प्त	= त्त (,,)	टि० ६	१४
	श्छ	= च्छ (पालि)	टि० १	१५
	श्म	= म्म (,,)	टि० २	१५
	ष्ट	= ट्ठ (,,)	टि० ३	१५
	ष्ठ	= ट्ठ (,,)	,, ,,	१५
	ष्क	= क्क (,,)	,, ,,	१५
	ष्प	= प्प (,,)	,, ,,	१५
	स्ख	= क्ख (,,)	टि० ९	१५
	स्क	= क्ख (,,)	,, ,,	१५
	स्प	= प्प (,,)	,, ,,	१५
	स्थ	= थ (,,)	,, ,,	१५
	स्थ	= त्थ (,,)	,, ,,	१५
४	सयुक्त 'मादि'	= लोप		१५
	स्म	= स्स* (पालि)	टि० ७	१५
	ग्न	= ग्ग (,,)	टि० २	१६
	ड्य	= ड्ड (,,)	टि० ३	१६
५	सयुक्त 'लादि'	= लोप		१६
	क्ल	= क्क (पालि)	टि० ४	१६
	ध्व	= ध (,,)	टि० ५	१६
	ब्द	= द्द (,,)	टि० ६	१६
	र्क	= क्क (,,)	टि० १	१७
	क्र	= क्क (,,)	टि० २	१७

* जूओ आगला पृष्ठनु टिप्पण.

	(१) 'र'	= लोप (अपभ्रंश)	१७
६	'व्र'	= लोप	१८
	र	= लोप (पालि) टि० २	१८
७	'अत्यल्पमन' नो 'म'		१८
८	'कादि' नो 'य'		१८
	क	= य (पालि) टि० ४	१८
	म	= य (पालि) टि ५	१८
९	'खादि' नो 'ह'		१९
	घ	= ह (पालि) टि० २	१९
	ध	= ह (,,) टि ४	१९
	भ	= ह (,,) टि ५	१९
	(१) थ	= ध (शौरसेनी)	२०
	(२) घ	= ख (चूलिकापैशाची)	२०
	ध	= थ (,,)	२०
	भ	= फ (,,)	२०
	(३) [illegible]	= [illegible] (,,)	२१
१०	ट	= ड	२१
	ट	= ड (पालि) टि १	२१
	(१) टु	= तु (पैशाची)	२१
११	ठ	= ढ	२१
१२	ड	= ल	२२
	ड	= ळ (पालि) टि० १	२२
	(१) ड	= ट (चूलिकापैशाची)	२२
	(२) ढ	= ठ (,,)	२२
	(१) ण	= न (पैशाची)	२२

	ण	= न (पालि) टि० १	२३
१३	न	= ण	२३
	न	= ण (पालि) टि० २	२३
१४	न	= ण	२३
१५	प	= व	२३
	प	= व (पालि) टि० ३	२३
१६	प	= व	२४
	(१) प	= व (अपभ्रंश)	२४
१७	फ	= भ	२४
	फ	= ह	२४
	(१) फ	= भ (अपभ्रंश)	२४
	(१) ब	= प (चूलिकापैशाची)	२५
	ब	= प (पालि) टि० १	२५
१८	ब	= व	२५
	ब	= व (पालि) टि० २	२५
	(१) म	= वँ (अपभ्रंश)	२५
१९	य	= ज	२६
	य	= ज (पालि) टि० १	२६
	(१) य	= य (मागधी)	२६
	(१) र	= ल (मागधी, पैशाची)	२६
	(१) ल	= ळ (पैशाची)	२६
२०	श	= स	२७
	ष	= स	२७
	श	= स (पालि) टि० १	२७
	ष	= स (,,) ,, ,,	२७

(१)		स = श (मागधी)	२७
२१		ह = घ	२८

प्रकरण ४ थुं पृ० २९–४३
संयुक्त व्यंजनोना सामान्य फेरफारो

नियमांक	उद्देश्य	विधेय	पृष्ठ
२२	क्ष	= ख, क्ख	२९–३०
	क्ष	= छ, च्छ	२९–३०
	क्ष	= झ, ज्झ	२९–३०
	क्ष	= ख, क्ख (पालि) टि० १	२९–३०
	क्ष	= छ, च्छ (,,) ,,	२९–३०
	क्ष	= झ, ज्झ (,,) ,,	२९–३०
	क्ष	= ष (,,) टि २	२९
	(१) क्ष	= ≍ क (मागधी)	३०
२३	ष्क	= ख, क्ख	३०
	स्क	= ख, क्ख	३०
	ष्क	= ख, क्ख (पालि) टि० १	३०
	स्क	= ख, क्ख (पालि) टि० १	३०
	(१) संयुक्त 'ष'	= स (मागधी)	३१
	,,	,, (पालि) टि० १	३१
	संयुक्त 'स'	= स (मागधी)	३१
	,,	,, (पालि) टि० १	३१
२४	ष्प	= फ, प्फ	३१
	स्प	= फ, प्फ (पालि) टि० ४	३१
२५	स्फ	= फ, प्फ	३२
	स्फ	= प्फ (पालि) टि० १	३२

	थ्व	= छ, च्छ	३२
	द्व	= ज, ज्ज	३२
	ध्व	= झ, ज्झ	३२
२६	थ्य	= च्छ	३२
	थ्य	= च्छ (पालि) टि० ३	३२
	श्च	= च्छ	३२
	श्च	= च्छ (पालि) टि० ३	३२
	त्स	= च्छ	३२
	त्स	= च्छ (पालि) टि० ३	३२
	प्स	= च्छ	३२
	प्स	= च्छ (पालि) टि० ३	३२
	(१) च्छ	= श्च (मागधी)	३३
२७	द्य	= ज, ज्ज	३३
	य्य	= ज, ज्ज	३३
	र्य	= ज, ज्ज	३३
	द्य	= ज, ज्ज (पालि) टि० १	३३
	द्य	= य्य (,,) ,, ,,	३३
	र्य	= यिर, य्य, रिय (,,) टि० २	३३
	(१) र्य	= य्य (शौरसेनी)	३४
	र्य	= य्य (पालि (टि० १	३४
	(१) द्य	= य्य (मागधी)	३४
	द्य	= य्य (पालि) टि० २	३४
२८	ध्य	= झ, ज्झ	३४
	ध्य	= झ, ज्झ (पालि) टि० ३	३४
	ह्य	= झ, ज्झ	३४
	ह्य	= य्ह (पालि) टि० ५	३४

२९	र्त	= ट्ट	१५
	र्त	= ट (पालि) टि० २	१५
	(१) न्त	= न्द (शौरसेनी)	१५
३०	ज्ञ	= ण, ण्ण	१६
	ज्ञ	= ञ (पालि) टि० १	१६
	ण्ण	= ण, ण्ण	१६
	ज्ञ	= ण (पालि) टि० १	१६
	(१) ज्ञ	= ञ्ञ (मागधी)	१६
	ज्ञ	= ञ्ञ (पालि) टि० ४	१६
	(१) ण्ण	= ञ्ञ (मागधी)	१६
	(१) ण्य	= ञ्ञ 〃	१६
	ण्य	= ञ्ञ (पालि) टि० ४	१६
	(१) न्य	= ञ्ञ (मागधी)	१६
	न्य	= ञ्ञ (पालि) टि० ४	१६
३१	स्त	= थ, त्थ	१७
	स्त	= थ त्थ (पालि) टि० १	१७
	(१) र्थ	= स्त (मागधी)	१७
	स्थ	= स्त (〃)	१७
३२	ष्ट	= ठ, ट्ठ	१७
	ष्ट	= ट्ठ (पालि) टि० ३	१७
	ष्ठ	= ट्ठ (पालि) टि० ४	१७
	(१) ष्ट	= स्ट (मागधी)	१८
	ष्ठ	= स्ट (〃)	१८
	(१) ष्ट	= सट (पैशाची)	१८
३३	ष्म	= प, प्प	१८

	क्म	= प, प्प	३८
	ड्म	= डुम (पालि) टि० १-२	३८
	क्म	= कुम (,,) ,, ,,	३८
	त्म	= च्म (पालि) टि० ३	३८
३४	ष्प	= फ, प्फ	३९
	स्प	= फ, प्फ	३९
	ष्प	= प्फ (पालि) टि० १	३९
	स्प	= फ, प्फ (,,) ,, ,,	३९
	ष्प	= प्प टि० २	३९
	स्प	= प्प टि० २	३९
	ष्प	= प्प (पालि) टि० २	३९
	स्प	= प्प (,,) ,, ,,	
३५	ह्व	= भ, ब्भ	३९
	ह	= भ (पालि) टि० ३	३९
३६	न्म	= म्म	३९
	न्म	= म्म (पालि) टि० ४	३९
३७	ग्म	= म्म	३९
	ग्म	= गुम (पालि) टि० ५	३९
३८	श्म	= म्ह	४०
	ष्म	= म्ह	४०
	स्म	= म्ह	४०
	ह्म	= म्ह	४०
	क्ष्म	= म्ह	४०
	श्म	= म्ह (पालि) टि० १	४०
	ष्म	= म्ह (,,) ,, ,,	४०
	स्म	= म्ह (,,) ,, ,,	४०

	(१) म्ह	= म्म (अपभ्रंश)	४०
३९	स्न	= ण्ह	४०
	ष्ण	= ण्ह	४०
	स्न	= ण्ह	४०
	ह्न	= ण्ह	४०
	ह्ण	= ण्ह	४०
	क्ष्ण	= ण्ह	४०
	क्ष्म	= ण्ह	४०
	श्न	= ण्ह, म्ह (पालि) टि० ३	४०
	ष्म	= ण्ह („) „ „	४०
	स्न	= ण्ह (पालि) टि० १	४
	ह्न	= ण्ह („) टि० १	४०
	ह्ण	= ण्ह („) „ „	४०
	क्ष्ण	= ण्ह („) „ „	४०
	(२) स्न	= सिन (पैशाची)	४१
	स्न	= सिन (पालि) टि १	४१
४०	ह्ल	= ल्ह	४१
	ह्ल	= ल्ह (पालि) टि० २	४१
४१	ज्ञ	= ण	४१
	ज्ञ	= ञ (पालि) टि० १	४१
४२	र्ह	= रिह	४१
	र्ह	= ग्ह, रिह (पालि) टि० ४	४१
४३	र्श	= रिस	४२
	र्ष	= रिस	
	र्श	= रिस (पालि) टि० १	४२
	र्ष	= रिस („) „ „	४२

प्रकरण ५ मुं ४४–६२

स्वरना विशेष विकारो

४९ 'आ' विकार ४७–४९

(क) आ = अ
(ख) आ = इ
(ग) आ = ई
(घ) आ = उ
(ङ) आ = ऊ
(च) आ = ए
(छ) आ = ओ
आ = अ (पालि) टि० २ ४७
आ = ए (,,) टि० २ ४९

५० 'इ' विकार ४९–५१

(क) इ = अ
(ख) इ = ई
(ग) इ = उ
(घ) इ = ए
(ङ) इ = ओ
(च) नि = ओ
इ = अ (पालि) टि० १ ४९
इ = उ (,,) टि० २ ५०
इ = ए (,,) टि० १ ५१
इ = ओ (,,) टि० २ ५१

५१ 'ई' विकार ५१–५३

(क) ई = अ
(ख) ई = आ
(ग) ई = इ

(घ) ई = उ
(ङ) ई = ऊ
(च) ई = ए
ई = अ (पालि) टि० ४ ९१

९२ 'उ' विकार ९२–९५

(क) उ = अ
(ख) उ = आ
(ग) उ = इ
(घ) उ = ई
(ङ) उ = ऊ
(च) उ = ओ
उ = अ (पालि) टि० १ ९३
उ = इ (पालि) टि० २ ९३
उ = ओ (पालि) टि० १ ९४

९३ 'ऊ' विकार ९४–९६

(क) ऊ = अ
(ख) ऊ = इ
(ग) ऊ = ई
(घ) ऊ = उ
(ङ) ऊ = ए
(च) ऊ = ओ
ऊ = अ (पालि) टि० २ ९४
ऊ = अ (संस्कृत) टि० २ ९४
ऊ = ओ (पालि) टि० २ ९६

प्रकरण ६ ठ्ठुं पृ० ६३-७४

असंयुक्त व्यंजनोना विशेष फेरफारो

६७ 'त' विकार ६६–६७.

त = च

त = छ

त = ट

त = ड

त = ण

त = र

त = ल

त = व

त = ह

त = ट (पालि) टि० १ ६६

६८ 'थ' विकार ६७–६८

थ = द

थ = ध

थ = ठ (पालि) टि० २ ६७

६९ 'द' विकार ६८

द = ड

द = ध

(क) द = र

(ख) द = र

द = ल

द = व

द = ह

द = ड (पालि) टि० १ ६८

द = ळ (पालि) टि० ५ ६८

प्रकरण ७ मुं

संयुक्त व्यंजनोना विशेष फेरफार

नियमांक	उद्देश्य	विधेय	पृष्ठ
		क्क	
८६	(क) क्त	= क्क	७५
	(ख) ग्ण	= क्क	
	(घ) ष्ट	= क्क	
	क्त	= क्क (पालि) टि० १	७५
	ग्ण	= ग्ग (पालि) टि० २	७५
८७		क्ख, ख	७५-७६
	(क) क्ष्ण	= क्ख	
	(ख) स्त	= ख	
	(ग) स्थ	= ख	
	(घ) स्फ	= ख	
८८		ग्ग, ङ्ग	७६
	(क) क्त	= ग्ग	
	(ख) ल्क	= ङ्ग	
	ल्क	= ङ्ग (पालि) टि० २	७६
८९		च्च	७६
	(क) त्य	= च्च	
	(ख) थ्य	= च्च	
		च्छ, छ	
९०	(क) स्थ	= छ	
	(ख) स्प	= छ	
	(ग) स्प	= च्छ	

९१		ञ्ञ, ञ	
	न्य	= ञ	
	न्य	= ञ्ञ (पालि) टि० २	७६
९२		ज्ञा	७७
	ज्ञ	= ज्ञा	
९३		ञु	७७
	ञि	= ञु	
९४		ट्ट	७८
	(क) त्त	= ट्ट	
	(ख) र्त	= ट्ट	
	(ग) स्त	= ट्ट	
	त	= ट (पालि) टि० २	७७
९५		ड, ठ	७७–७८
	(क) र्थ	= ड	
	(ख) स्त	= ठ	
	(ग) स्थ	= ठ	
	स्थ	= ड	
	र्थ	= ड (पालि) टि० २	७७
	स्थ	= ठ (पालि) टि० ४	७८
	स्थ	= ड (,,) टि० ४	७८
९६		ड्ड	
	(क) र्त	= ड्ड	
	(ख) र्द	= ड्ड	
९७		ड्ढ, ढ	
	(क) र्ध	= ड्ढ	७९

द्ध = ड्ढ

ग्ध = ड्ढ

ब्ध = ड्ढ

(ख) र्ध = ढ

द्ध – ड्ढ (पालि) टि० १ ७९

र्ध = ड्ढ ,, ,, ,,

ग्ध = ड्ढ ,, ,, ,,

९८ ण्ट, ण्ड, ण्ण ७९–८०

न्त = ण्ट

न्द = ण्ड

(क) न्च = ण्ण

(ख) त्त = ण्ण

(ग) ह्न = ण्ण

न्त = ण्ट (पालि) टि० २ ७९

९९ त्थ ८०

(क) त्स = त्थ

(ख) त्म = त्थ

१०० द्ध ८०

ष्ट = द्ध

१०१ न्त, न्ध ८०

न्य = न्त

ह्न = न्ध

१०२ प्प, प्फ, फ ८०–८१

त्म = प्प

ष्म = प्फ

प्म = फ

स्म = प्प

त्म = तुम (पालि) टि० ४ ८०

१०३ ष्म, स्म, ह्म ८१

ष्म = क्म

स्न = म्ब

(क) श्म = म्म

(ख) ह्म = म्म

स्न = म्ब (पालि) टि० २ ८१

१०४ र ८१

(क) र्य = र

(ख) र्ह = र

(ग) त्र = र

१०५ ल ळ ८२

ल्ह = ळ

र्य = ळ

र्य = ळ (पालि) टि० १ ८२

१०६ स्स ८२

स्य = स्स

१०७ ह ८२–८३

(क) ख = ह

(ख) घ = ह

(ग) थ = ह

(घ) ध = ह

(ङ) भ = ह

संधि प्रकरण ८ मुं ९२–१०१

कारक–विभक्त्यर्थ प्रकरण ११ मुं पृ० २३९–२४१

शुद्धिपत्र

अशुद्ध–	शुद्ध–	पृष्ठ–	पंक्ति–
व्यञ्जनम्	व्यजनम्	१०	१९
त्प	प्त	१४	२१
न–धृष्टद्युम्नः धट्ठज्जुणो	आ उदाहरण अने ए उपरनुं टिप्पण पृ० ३६मा पं. ४ म्न–ना उदाहरणमा मूको	१६	१
	'र' लोप	१७	९ मी पंक्ति पछी मथाळुं वधारवुं.
(१) अपभ्रशमा	(१) अपभ्रंशमा	१७	७
	च्य, श्व, त्स प्स–च्छ	३२	१० मी पंक्ति पछी मथाळु वधारवुं.
स्म	ए 'म्ह'	४०	१०
टिप्पण	टिप्पण ३	४७	२८
पृ० ४४	पृ० ४५	४७	२८
६	३	५१	१२
	उ = आ विद्रुत विद्दाओ	९३	२१ मी पंक्ति पछी वधारवुं.
दश	दस	७३	१
न्त न्थ	१०१ न्त न्थ	८०	११ आ पछी बधा अंको सुधारीने वांचवा.

शुद्धिपत्र

अशुद्ध–	शुद्ध–	पृष्ठ–	पंक्ति–
व्यञ्जनम्	व्यजनम्	१०	१९
रप	स	१४	२१
न–धृष्टद्युम्नः धट्ठज्जुणो	आ उदाहरण अने ए उपरनु टिप्पण पृ० ३६मा प. ४ म्न–ना उदाहरणमा मूको	१६	१
	'र' लोप	१७	९ मी पंक्ति पछी मथाळु वधारवुं.
) अपभ्रशमा	(१) अपभ्रंशमा	१७	७
	व्य, श्च, त्स प्स–च्छ	३२	१० मी पंक्ति पछी मथाळु वधारवुं.
स्म	ए 'म्ह'	४०	१०
टिप्पण	टिप्पण ३	४७	२८
पृ० ४४	पृ० ४५	४७	२८
६	३	५१	१२
	उ = आ विद्युत विद्दाओ	५३	२१ मी पंक्ति पछी वधारवुं.
दश	दस	७३	१
न्त न्थ	१०१ न्त न्थ	८०	११ आ पछी वधा अंको सुधारीने वाचवा.

अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ठ	पंक्ति
अथात्	अर्थात्	९२	१५
ण	१ ण	९८	९
उपिष्टविश	उपविष्टोपविश	१०६	११
आ मिसानी	* आ निसानी	१२०	२१
		१२८	२२ मी
			पछी ×
			× × न जोइए
सौ०	शौ०	१४१	२
१ गामनी	गामनी	१६१	२२
यह	पह	२२४	११
तत्य	तत्व	३२०	१२

अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ठ	
पम्हह	पम्हुह	३३७	अक ७४
अम्प	अम्म	३३९	,, १००
विमुर	विसूर	३४१	,, ११२
उसिल	उम्मिल	३४४	, १४४
हक्सव	हक्सुव	३४४	,, ,,
थाह	आयम्ब	४४४	,, १४७

आ पुस्तकमां वपराएला ग्रंथो अने तेना संकेतोनो खुलासो

(१)

ग्रंथ	संकेत
जितशातिस्तव	
रकोश	अमरको०
चारागसूत्र	आ०
त्तराध्ययनसूत्र	
उपासकदशागसूत्रटीका	
काशिका	का०
चतुर्विशतिस्तव	
जीवविचार	
पाणिनीय अष्टाध्यायी	पाणि० पाणिनि०
नीय वैदिक प्रक्रिया	वैदिकप्र०
लिकोश	
लिप्रकाश	पालीप्र० पालिप्र० पा०प्र०
लिव्याकरण (कात्यायन)	
ाकृतकथासंग्रह	
ाकृतरूपावतार	
गवतीसूत्र	भगव० भग०
वंदनसूत्र	
ललितविस्तर (बौद्धग्रंथ)	ललितवि०
विसुद्धिमग्ग	
श्रमणसूत्र	

षड्भाषाचन्द्रिका	
सूत्रकृतांगसूत्र	सू० / सूत्र० / सूत्रकृ०
सूर्यप्रज्ञप्तिटीका	
हेमचंद्र प्राकृत व्याकरण	हे / हे० प्रा० व्या
हेमचन्द्र संस्कृत व्याकरण	हे० सं०

(२)

अ०	अध्ययन, अध्याय
उ०	उद्देश
गा०	गाथा
द्वि०	द्वितीय
नि०	नियम
पालि० सं	पालिप्रकाश सविकल्प
पृ०	पृष्ठ
प्र०	प्रथम
रा मि / राय०	रायचन्द्र मिनागमसंग्रह
श्रु	श्रुतस्कंध
सू०	सूत्र

—०॥०—

प्राकृत-व्याकरण.

प्रकरण १

वर्णपरिचय

प्राकृत भाषाओमा नीचे प्रमाणे स्वरो अने व्यजनो वपराय छे.

[1]स्वर—

अ, इ, उ (ह्रस्व)

आ, ई, ऊ, [2]ए, ओ, (दीर्घ)

---

१ प्राकृतमा 'ऋ' नो विकार अ, इ, के उ थाय छे अने 'ऌ' नो विकार 'इलि' थाय छे माटे ए बे स्वतत्र स्वर नथी 'ऐ' नो विकार 'ए' के 'अइ' थाय छे अने 'औ' नो विकार 'ओ' के 'अउ' थाय छे तेथी ए बे पण स्वतत्र स्वर नथी

२ 'एक्को 'सेव्वा 'सोत्त 'सो च्चिअ' वगेरे शब्दोमा आवेला 'ए' अने 'ओ' एकमात्रिक छे एम आचार्य शुभचद्र जणावे छे (–शुभचद्रनु प्राकृत व्याकरण अ० १–२–४०–लिखित पृ० ४) आ उपरथी 'ए' अने 'ओ नी एकमात्रिकता पण व्याजवी जणाय छे उच्चारणनी दृष्टिए तो द्विर्भावने पामेला व्यजननी पूर्वनो द्विमात्रिक स्वर एकमात्रिक ज होवो जोइए, अन्यथा एवे ठेकाणे आवेला द्विमात्रिकनो उच्चार ज द्विमात्रिकनी रीते थइ शकतो नथी आचार्य हेमचद्र जणावे छे के, कोइ वैयाकरणो प्राकृतमा पण 'ऐ अने 'औ'ना उपयोगने इष्ट गणे छे (८–१–१) आचार्य हेमचद्र पण 'अयि ना प्राकृतरूप 'ऐ' ने सम्मत गणे छे (८–१–१६९) तो पण तेमने ए सिवाय क्याय 'ऐ' अने 'औ' नो व्यवहार इष्ट नथी,

ट, ठ, ड, ढ, ण (टवर्ग)

त, थ, द ध, न (तवर्ग)

प, फ, ब, भ म (पवर्ग)

य र ल, व (अंतःस्थ)

स, ह (ऊष्माक्षर)

ं– अनुस्वार

पण क्याय स्वतंत्र ' ञ ' प्रयोजातो नथी कञ्चुक , लाञ्छनम्, जञ्ज
पूक –वगेरे प्रयोगोनी पेठे प्राकृतमा कञ्चुओ, लञ्छण, जञ्जवूओ
वगेरे प्रयोगो सुव्यवहृत छे मात्र पालीमा ञाति (ज्ञाति),
ञात (ज्ञात), ञाण (ज्ञान) वगेरे प्रयोगो संस्कृतना ' जुहुवे '
जेवा पण मळी आवे छे संस्कृतमा अने प्राकृतमा एकलो ' ञ ' करता
स्ववर्ग्यसंयुक्त 'ञ' नो प्रयोग विशेष प्रचलित छे अहिमञ्जु (अभिमन्यु)
पुञ्ञ (पुण्य), अवञ्ञा (अवज्ञा), अञ्जली (अञ्जलि)–मागधी
अने ञ्ञान (ज्ञान) विञ्ञान (विज्ञान)–पैशाची ' ञ्ञ 'ना
प्रयोगमा पाली, मागधी अने पैशाची विशेष समानता धरावे छे –
(८–४–२९३ तथा ३०३) तथा (पालिप्र० पृ० २३–२४)

१ पालीमा ' अनुस्वार 'ने व्यंजनमा गणावीने ' निगृहीत 'नी
संज्ञा आपेली छे अने ललितविस्तरमहापुराणमा तो एने (अनुस्वारने)
अने विसर्गने स्वरोनी साथे ज गणावेला छे आ ग्रंथमा वर्णवेली
बाराक्षरी आपणी गुजराती बाराखडी जेवी छे (जूओ ललितवि० पृ० १२७)

प्रकरण २

सामान्य स्वरविकार

दीर्घस्वर=ह्रस्वस्वर[1]

१ संस्कृतना संयुक्त व्यंजननी पूर्वे आवेला दीर्घस्वरो प्राकृतमां प्राय ह्रस्व थई जाय छे अर्थात् संयुक्त व्यंजननी पूर्वे आवेला 'आ'नो अ, 'ई' नो इ, 'ऊ'नो उ, 'ए' नो इ अने 'ओ' नो उ थई जाय छे जेमके —

आ=अ—आम्रम् अम्ब । आम्यम् अम्म । ताम्रम् तम्ब । विरहाग्नि विरहग्गी ।

ई=इ—तीर्थम् तित्थ । मुनीन्द्र मुणिंदो ।

ऊ=उ—गुरूल्लापा गुरुल्लावा । चूर्ण चुण्णो ।

ए=इ—नरेन्द्र नरिंदो । म्लेच्छ मिलिच्छो ।

ओ=उ—अधरोष्ठ अहरुट्ठ । नीलोत्पलम् नीलुप्पल ।

ह्रस्वस्वर=दीर्घस्वर

२ संस्कृतना श्य, श्र, र्श, श्व, श्श, ष्य, ष्र, र्ष, ष्व, ष्ष; स्य स्र र्स, स्व, अने स्सनी पूर्वे रहेलो ह्रस्वस्वर प्राकृतमां प्राय दीर्घभाव पामे छे उदाहरणो नीचे प्रमाणे छे —

श्य—आवश्यकम् आवासय । कश्यप कासवो । पश्यति पासइ ।

श्र—मिश्रम् मीस । विश्राम वीसामो । विश्राम्यति वीसमइ ।

र्श—सम्पर्श संफासो ।

---

१ जूओ पालीप्रकाश पृ ८ नियम—११ (दीर्घस्वर=ह्रस्वस्वर) तथा पृ (ए=इ) अने (ओ=उ) अने पृ ५ (ओ=उ)

२ जूओ पालीप्र पृ ११—(परामर्श=परामासो) टिप्पण

श्व—अश्व आसो। विश्वसिति वीससइ। विश्वास वीसासो।

श्श—दुश्शासनः दूसासणो। मनश्शिला मणासिला।

ष्य—पुष्य॰ पूसो। मनुष्य. मणूसो। शिष्यः सीसो।

र्ष— कर्षक कासओ। वर्ष वासो। वर्षा वासा।

ष्व—विष्वक् वीसु। विष्वाण.—वीसाणो।

ष्प—निष्पिक्त नीसित्तो।

स्य—कस्यचित् कासइ। सस्यम् सास।

स्र—उस्र ऊसो। विस्रम्भ वीसभो।

स्व—निस्व नीसो। विकस्वर विकासरो।

स्स—निस्सहः नीसहो।

आ=अ.

३ संस्कृतना भाववाचक अकारान्त पुलिंगी शब्दना आदिना 'आ'नो प्राकृतमा विकल्पे 'अ' थाय छे जेमके.—

प्रकार पयारो, पयरो। प्रचार पयारो, पयरो। प्रहार॰ पहारो, पहरो। प्रवाह पवाहो, पवहो। प्रस्ताव पत्थावो, पत्थवो।

इ=ए

४ संस्कृतना संयुक्त व्यंजननी पूर्वे आवेला 'इ' नो विकल्पे 'ए' थाय छे जेमके—

[1]डिण्डिम—डेण्डिमो, डिण्डिमो। धम्मिल्लम् धम्मेल्लं, धम्मिल्लं। पिष्टम् पेट्ठ, पिट्ठ। पिण्डम् पेंड, पिंड। बिल्वम् बेल्लं, बिल्ल। विष्णु वेण्हू, विण्हू। सिन्दूरम् सेंदूर, सिंदूर।

१ जुओ पालीप्र० पृ० ५३–(इ=ए)

उ=ऊ

९ संस्कृत शब्दोमां रहेला 'त्स अने च्छ नी पूर्वना 'उ'नो 'ऊ' थाय छे —

त्स—उत्सरति ऊसरइ । उत्सव ऊसवो ।
उत्सिक्त ऊसित्तो । उत्सुक ऊसुओ ।
च्छ—उच्छ्वासति ऊससइ । उच्छ्वास ऊसासो ।
उच्छुक ऊसुओ ।

उ=ओ

६ संस्कृतना संयुक्त व्यंजननी पूर्वे रहेल 'उ' ना प्राकृतमां 'ओ' थाय छे जेमके —

[1]कुट्टिमम् कोट्टिमं । कुण्ठ कोंठो । कुन्त कोंतो ।
तुण्डम् तोंडं । पुद्गलम् पोग्गलं । पुष्करम् पोक्खरं ।
पुस्तक पोत्थओ । मुण्डम् मोंडं । मुद्गर मोग्गरो । मुस्ता मोत्था ।
लुब्धक लोद्धओ । व्युत्क्रान्तम् वोक्कंतं ।

[2]ऋ=अ

७ संस्कृत शब्दना आदिभागमां आवता 'ऋ' नो प्राकृतमां अ थाय छे

कृतम् कयं । घृतम् घयं । घृष्ट घट्ठो ।
तृणम् तणं । मृग मओ । मृष्टम् मट्ठं । वृषभ वसहो ।

---

[1] आ नियम आ बे शब्दोमां लागतो नथी—उत्सवः उच्छवो । उत्साह उच्छाहो ।

मूळो पामीप्र [illegible] —(उ=ओ)

[2] —आ पामीप्र [illegible] —(ऋ=अ)

ऋ=उ

८ सामासिक अने गौण सम्कृत शब्दना अत्य 'ऋ' नो प्राकृतमा 'उ' थाय छे

पितृगृहम् पिउघर। पितृपति पिउवई।
पितृवनम् पिउवण। पितृष्वसा पिउसिआ। मातृगृहम् माउघर।
मातृष्वसा माउसिआ। मातृमण्डलम माउमडल।

ऋ=रि[1]

९ सम्कृतना केवल—व्यजन वगरना—'ऋ' नो प्राकृतमा 'रि' थाय छे.

ऋक्ष रिच्छो। ऋद्धि रिद्धी। ऋषभ रिसहो।

ऌ=इलि.

१० सम्कृतना 'ऌ'नो प्राकृतमा 'इलि' थाय छे—
क्लृन्न किलिन्नो। क्लृप्त किलित्तो।

ऐ=ए[2]

११ सम्कृतना 'ऐ' नो प्राकृतमा 'ए' थाय छे—
ऐरावण एरावणो। कैटभ केढवो। कैलास. केलासो।
त्रैलोक्यम तेलुक्क। वैद्य वेज्जो। वैधव्यम् वेहव्व।
शैला सेला।

औ=ओ.[3]

१२ सम्कृतना 'औ'नो प्राकृतमा 'ओ' थइ जाय छे—

---

१ जूओ पालीप्र० पृ० ३—(ऋ=रि) टिप्पण
२ जूओ पालीप्र० पृ० ३—(ऐ=ए)
३ जूओ पालीप्र० पृ० ५—(औ=ओ)

क्रौञ्च कोंचो । कौमुदी कोमुई । कौशाम्बी कोसम्बी ।
कौशिक कोसिओ । कौस्तुभ कोत्थुहो । यौवनम् जोव्वण।

उपर जणावेला बधा स्वरविकारो शौरसेनी, मागधी, पैशाची अने चूलिकापैशाचीमां पण एक सरखी रीते लागु थाय छे, अपभ्रंशमां ए नियमोनुं प्रवर्तन नियत रीते नथी के जे रीते जणाव्युं छे ते रीते थतुं नथी तेमां क्यांय क्यांय 'अ'नो इ, ई, उ, 'उ'नो अ, आ, 'ऋ' नो अ, आ, इ, उ, ऋ, 'लृ'नो इ इलि, 'ए'नो इ ई, अने ओ'नो अउ अने ओ थाय छे [स्वरविकारनी दृष्टिए आ प्रवर्तन सरखुं छे, पण अनियतताने लीधे एने प्राकृतथी जुदुं पाडी शकाय छे]

अ–इ, ई, उ—

सं० प्रा अ
वचनम् वअण (वइणं) वेण ।
(वईण) वीण ।
शयनम् सअण (सइन) सेनं' ।
नयनम् नअण नइणं (नइनं) नेनं ।
नवनीतम् नअणीअं (नउणीअ) लोणीअं ।

[वस्तुत आ रूपो 'य' अने 'व' ना सम्प्रसारणथी बनेलां छे]

उ–अ आ—

बाहु —बाहा (स्त्री) बाहा बाह, बाहु ।

ऋ–अ, आ इ उ ऋ–
कृत्यम किच्च कच्चु ।

सुभा [सिद्धहेम] पा ४ ३८

तृणम् तण तिणु, तणु, तृणु ।

सुकृतम् सुकय सुकिउ, सुकिदु, सुकृदु ।

ऌ—इ, इलि—

क्लृप्त किलिन्नो किन्नो, किलिन्नओ ।

ए—इ, ई—

रेखा लेहा लिह, लीह, लेह ।

औ—अउ, ओ—

गौरी गोरी गउरी, गोरी ।

व्यजनविकारोना प्रसगमा तो ज्या ज्या प्राकृत करता शौरसेनी, मागधी, पैशाची, चूलिकापैशाची अने अपभ्रशमा विशेषता छे तेने ते ते स्थळे जणाववाना छीए

क—तीर्थंकर तित्थयरो। लोक लोओ।

ग—नग नओ। नगरम् नयर। मृगाङ्क मयंको।

च—कचग्रह कयग्गहो। शची सई।

ज—गज गओ। प्रजापति पयावई। रजतम् रयय।

त—धात्री धाती—धाई। यति जई। रसातलम् रसायल।
  रात्रि, राति—राई। वितानम् विआण।

द—गदा गया। मदन मयणो।

प—रिपु रिऊ। सुपुरुष सुउरिसो।

ब—विबुध विउहो।

य—वियोग विओओ।

व—वडवानल वलयाणलो। लावण्यम् लायण्ण।

(आ बीजो नियम अने एवा बीजा असंयुक्त व्यंजनना विकारने लगता सामान्य के विशेष नियमो पैशाची भाषामा लागता नथी. जेमके,

स०	प्रा०	पै०
मकरकेतु —	मयरकेऊ—	मकरकेतू।
सगरपुत्रवचनम्—	सयरपुत्तवयण—	सगरपुत्तवचन।
विजयसेनेन लपितम्-	विजयसेणेण लविय—	विजयसेनेन लपित।
पापम्—	पाव—	पाप—
आयुधम्—	आउह—	आयुध।)

पूर्वोक्त नियम द्वारा प्राकृतमा 'क' 'ज' 'त' अने 'द' नो लोप जणावेलो छे तो पण प्राकृतना पेटाभेदरूप शौरसेनी, मागधी, पैशाची, चूलिकापैशाची अने अपभ्रंशमा ते वर्णो लोपाता नथी. किंतु बीजा बीजा वर्णोना रूपमा फेरवाइ जाय छे

'त–द

(१) 'शौरसेनीमां अने क्यांय अपभ्रंशमां ' त ' नो ' द ' थाय छे

स	प्रा०	शौ० अप०	स	प्रा०	शौ , अप०
कथितम्	कहिअ	कथिद ।	प्रतिज्ञा	पइण्णा	पदिण्णा ।
तत	तओ	तदो ।	मारुति	मारुई	मारुदी ।
पूरित	पूरिओ	पूरिदो ।	मन्त्रित	मंतिओ	मंतिदो ।

ज–य

(२) मागधीमां आदिस्थित के अनादिस्थित ' ज ' नो ' य ' थाय छे

स०	प्रा	मा	सं	प्रा	मा०
जनपद	जणवओ	यणवदे ।	दुर्जन	दुज्जणो	दुय्यणे ।
जानाति	जाणइ	याणदि ।	वर्जित	वज्जिओ	वय्यिदे ।
गर्जित	गज्जिओ	गय्यिदे ।			

त, द–त

(३) पैशाचीमां अने चूलिकापैशाचीमां ' त ' कायम रहे छे अने ' द ' नो पण ' त ' थाय छे

---

१ जुओ पा प्र पृ ९ (तन्दर)

शौरसेनीने लगता दरेक नियमो मागधी पैशाची, चूलिकापैशाची अने अपभ्रंशमा पण लागु पडी शके छे

३ जुओ पा प्र पृ ७ (जन्य)

४ जुओ पा प्र पृ ९ (तन्न)

सं०	प्रा०	पै०,—चू० पै०	सं०	प्रा०	पै०,—चू० पै०
भगवती	भगवई	भगवती।	प्रदेश	पदेसो	पतेसो।
पार्वती	पव्वई	पव्वती।	मदनः	मदणो	मतनो।
शतम्	सय	सत।	वदनकम्	वदणय	वतनक।
दामोदर	दामोदरो	तामोतरो।	सदनम्	सदण	सतन।

ग[1]—क, ज—च.[2]

(४) चूलिकापैशाचीमा 'ग' नो 'क' थाय छे अने 'ज' नो 'च' थाय छे

सं०	प्रा०	चू० पै०	सं०	प्रा०	चू० पै०
गिरितटम्	गिरितड	किरितड।	जर्जरम्	जज्जर	चच्चर।
नगरम्	नयर	नकर।	जीमूत.	जीमूओ	चीमूतो।
मार्गण	मग्गणो	मक्कनो।	नियोजितम्	नियोजिअ	नियोचित।
राजा	राया	राचा।			

क[3]—ग

(५) अपभ्रशमा क्याय 'क' नो 'ग' थाय छे

स०	प्रा०	अ०
विक्षोभकर	विच्छोहयरो	विच्छोहगरो।

---

१ जूओ पा० प्र० पृ० ५६ (ग=क)

२ जूओ पा० प्र० पृ० ५७ (ज=च)

३ जूओ पा० प्र० पृ० ५५ (क=ग)

संयुक्त 'कादि' लोप

३ संयुक्त व्यंजनमां पूर्ववर्ती क, ग, ट, ड, त, द, प, श, ष अने स—एटला व्यंजनोनो प्राकृतमां प्राय लोप थई जाय छे अने लोप थया पछी बाकी रहेला अनादिना व्यंजननो द्विभाव थाय छे जेमके,

क—भुक्तम् भुत—भुत्त। ड—खड्ग खगो—खग्गो।
मुक्त मुत—मुत्तो। षड्ज सजो—सज्जो।
शक्त सत—सत्तो। त—उत्पलम् उपल—उप्पलं।
[१]सिक्थम् सिथ्य—सित्थ। उत्पाद उपाओ—उप्पाओ।
ग—दुग्धम् दुध्ध—दुद्ध। द—मद्गु मगु—मग्गू।
मुग्धम् मुध—मुद्ध। [१]मुद्गर —मुगरो—मुग्गरो।
[२]ट—कैटफलम् कफफल—कप्फलं। प—गुप्त गुत—गुत्तो।
षट्पद छपओ—छप्पओ। सुप्त —सुत—सुत्तो।

---

१ जुओ पाशीम पृ ४१ (क्त=त्त) (क्थ=त्थ)

२ ट्फ छक इ, ष्प अने ष्फ ना स्थानमां अनुक्रमे ष्फ प्फ इ ष्ट तथा प्फ थाय छे

३ ष्प इक इ ष्प अने ष्म ना स्थानमां अनुक्रमे ष्प प्प इ अने म्म थाय छे

४ जुओ पाशीम पृ २४ (नियम—१)

जु पा प्र पृ २५ (नियम—११)

१ पृ पा प्र पृ ४१—(त्स=त्त

श—आश्लिष्ट आलिद्धो । निष्ठुर निठुर—निठ्ठुरो ।
[1]निश्चल निचल—निच्चलो । निष्पुंसनम् निपुंसन—निप्पुंसण ।
श्च्योतति चुअइ । [4]शुष्कम् सुक—सुक्कं ।
[2]श्मश्रु मस्सू । षष्ठ छठ—छट्ठो ।
श्मशानम् मसाण । स—[5]निस्पृह· निपह—निप्पहो ।
हरिश्चन्द्र हरिअन्दो । [6]स्कन्द कंदो ।
श्लक्ष्णम् लण्ह । स्खलित खलिओ ।
ष—[3]गोष्ठी गोठी—गोट्ठी । स्तव तवो ।
तुष्ट तुठ—तुट्ठो । स्नेह नेहो ।

संयुक्त 'मादि' लोप.

४. सयुक्त व्यंजनमां परवर्ती म, न अने य नो प्राकृतमां प्राय. लोप थई जाय छे अने लोप थया पछी बाकी रहेला अनादिना व्यंजननो द्विर्भाव थाय छे जेमके—

म—युग्मम् युग—युग्ग । स्मर सरो ।
रश्मि रसि—रस्सी[7] । स्मेरम् सेर ।

---

१ जु० पा० प्र० पृ० ३८—(श्च=च्छ)—निच्छलो।

२ श्मश्रु मस्सु पा० प्र० पृ० ५१ टिप्पण

३ जु० पा० प्र० पृ० ३६—नि० ३०—(ष्ट=ट्ठ ष्ठ=ठ्ठ)
पृ० ३७ (ष्क=क्ख—नि० ४५) पृ० ३९ (ष्प=प्फ नि० ४८)

४ शुष्कम् सुक्ख (पा० प्र० पृ० ३७)

५ जु० पा० प्र० पृ० ३६ (स्त=त्थ) पृ० ३७ (स्क=क्ख)
पृ० ३९ (स्प=प्फ—नि० ४८) पृ० ३८ (स्थ=थ स्थ=त्थ)

६ स्कन्द खंदो, खंधो—पालीप्र० पृ० ३६ *टिप्पण

७ जु० पा० प्र० पृ० ५०—(स्म = स्स)

¹र—अर्क अक—अक्को । ²रे—क्रिया किया ।

वर्ग वग—वग्गो । ग्रहः गहो ।

दीर्घ. दिघ—दिग्घो । चक्रम् चक—चक्क ।

वार्ता वता—वत्ता । रात्रिः राति—रत्ती ।

सामर्थ्यम् सामथ्थ—सामत्थं । धात्री धति—धत्ती ।

अपभ्रंशमा प्रायः परवर्ती ' र ' नो लोप विकल्पे थाय छे.

प्रिय पिओ प्रिउ, पिउ ।

[सूचना——ज्या पूर्ववर्ती अने परवर्ती एम बे जातना व्यजननो लोप प्राप्त होय त्या प्रयोगो प्रमाणे लोपनु विधान करवुं जोईए. जेमके,

पूर्ववर्तीनो लोप— परवर्तीनो लोप—

द——उद्विग्नः उविग—उव्विग्गो। य—काव्यम् कव—कव्व ।

द्विगुणः बिउणो । माल्यम् मल—मल्लं ।

द्वितीय बीओ । व—द्विजाति दुआई ।

ल—कल्मषम् कमस—कम्मस । द्विप· दिओ ।

शुल्वम् सुव—सुव्व ।

र—सर्वम् सव—सव्वं ।

पूर्ववर्ती अने परवर्तीनो वारा फरती लोप—

न—उद्विग्न —उव्विग—उव्विग्गो । द—द्वारम् वार ।

ग—उद्विग्न उव्विण—उव्विण्णो । व—द्वारम् दारं ।

आ बधा उदाहरणोमा त्रीजो, चोथो अने पाचमो, ए त्रणमाथी कोइ एक नियम द्वारा लोपनो सभव छे.]

---

¹ जू० पा० प्र० पृ० १० (नि० १२)

² जू० पा० प्र० पृ० १२–१३ (नि० १५–१६)

'द्र' लोप

६ 'द्र'वाळा संस्कृत शब्दना 'द्र' ना 'र' नो लोप प्राकृतमाँ विकल्पे थाय छे

चन्द्र चन्द्रो, चदो । द्रव[1] द्रवो, दवो । द्रह द्रहो, दहो । द्रुम द्रुमो, दुमो । भद्रम् भद्रं, भद्द । रुद्र रुद्रो, रुदो । समुद्र समुद्रो, समुद्दो ।

'अल्पव्यंजन' नो 'अ'

७ केटलाक संस्कृत शब्दोना छेवटना व्यंजननो 'अ' थाय छे—
शरत् सरओ । भिषक्[2] भिसओ । इत्यादि

'कादि' नो 'य'

८ अवर्णथी पर आवेला, एक ज पदमां रहेला, असंयुक्त अने अवर्णान्त क, ग, च, ज, त, द, प, य अने व-एटला व्यंजनोनो प्राकृतमां सामान्य रीते 'य' थाय छे उदाहरणो आ प्रमाणे छे

क—तीर्थंकर तित्थयरो । शकटम् सयढं ।

ग—नगरम् नयर । मृगाङ्क मयंको ।

च—कचग्रह कयग्गहो । काचमणि कायमणी ।

ज—प्रजापति पयावई । रजतम् रययं ।

---

[1] आ नियम एक चन्द्र' शब्दने लागतो नथी: चन्द्रम् चन्द्रं ।
[2] सू था प्र पृ १२ (नि १५)
[3] भिषक्—भिसक्को (पार्श्वकोष)
[4] प्राभो था प्र पृ ५६—(बन्ध)
प्र था प्र ग ५७—(बन्ध)

त—पातालम् पायाल । रसातलम् रसायल ।

द—गदा गया । मदनः मयणो ।

य[1]—नयनम् नयण । दयालुः दयालू ।

व[2]—लावण्यम् लायण्णं ।

खादिनो 'ह'

९. स्वरथी पर आवेला, एक ज पदमा रहेला अने असंयुक्त ख, घ, थ, ध, अने भ–एटला व्यंजनोनो प्राकृतमा 'ह' थाय छे. जेमके

ख—मुखम् मुहं । मेखला मेहला । लिखति लिहइ । शाखा साहा

घ[3]—जघनम् जहणं । माघः माहो । मेघ मेहो । श्लाघते लाहइ ।

थ—कथयति कहइ । आवसथ आवसहो । नाथ नाहो । मिथुनम् मिहुणं ।

ध[4]—इन्द्रधनु इन्दहणू । बधिर बहिरो । बाधते बाहइ । व्याध• वाहो । साधु साहू ।

भ[5]—स्तनभर थणहरो । नभस् नह । सभा सहा । स्वभाव सहावो । शोभते सोहइ ।

---

१ आ विधान ('य' नो पण 'य' करवानु विधान) बीजा नियमनो बाध करे छे

२ क्याय कोई एकाद शब्दमा इकारथी पर आवेला 'व' नो पण 'य थई जाय छे ––पिबति पियइ ।

३ जू० पा० प्र० दृ० ५८ (घ=ह)

४ ,, ,, ,, ,, ६० (ध=ह)

५ ,, ,, ,, ,, ६२ (भ=ह)

[प्राकृतमां ख, घ, थ, ध अने भ नो 'ह' थवानु जणाव्यु छे तो पण शौरसेनी, चूलिकापैशाची अने अपभ्रंशमां तेम थतुं नथी]

थ—ध

(१) शौरसेनीमां विकल्पे अने अपभ्रंशमां क्वचित् क्वचित् शब्द मध्यस्थित 'थ' नो 'ध' थाय छे

सं	प्रा०	शौ०—अ०	
कथम्	कह	कध,	कधं।
कथयति	कहेइ	कधेदि,	कधेइ, कहेइ
कथितम्	कहिअं	कधिद्	कधिदम्।
नाथ	नाहो	नाधो	नाहो।
राजपथ	रायपहो	रायपधो	रायपहो।

घ—ख, ध—थ, भ—फ[1]

( ) चूलिकापैशाचीमां 'घ' नो 'ख', 'ध' नो 'थ' अने 'भ' नो 'फ' थाय छे

	सं	प्रा०	चू० पै०
घ—	घर्म	घम्मो	खम्मो।
	मेघ	मेहो	मेखो।
	व्याघ्र	वग्घो	वक्खो।
ध—	मधुरम्	महुरं	मथुरं।
	साधव	साहवा	सथवो।
	धूली	धूली	थूली।

[1] कटलाक वैयाकरणोने मते शब्दनी आदिमां आ नियम लागतो नथी

	सं०	प्रा०	चू०पै०
भ—	रभसः	रहसो	रफसो।
	रम्भा	रभा	रंफा।
	भगवती	भगवई	फकवती

झ—छ

(३) केटलाकने मते चूलिकापैशाचीमा 'झ' नो 'छ' थाय छे

झर्झर	अज्झरो	छच्छरो।
निर्झर	निज्झरो	निच्छरो।

ट—ड

१०. स्वरथी पर आवेला, एक ज पदमा रहेला अने असंयुक्त 'ट' नो प्राकृतमा ड थाय छे[१]

ट—घटः घडो। घटते घडइ। नटः नडो। भटः भडो।

टु—तु

(१) पैशाचीमा 'टु' नो 'तु' पण थाय छेः

सं०	प्रा०	पैशाची.	
कुटुम्बकम्	कुडुंबक	कुतुंबक, कुटुंबक।	
कटुकम्	कडुअ	कतुअं, कटुअ।	
पटु	पडु	पटु	पतु।

ठ—ढ

११. स्वरथी पर आवेला, एकपदस्थित अने असंयुक्त 'ठ' नो प्राकृतमा 'ढ' थाय छे

१ पालीमा तो क्याय संयुक्त 'ट' नो पण 'ड' थाय छे'—
लेष्टुः लेड्डु। निघण्टु निघण्डु। पा० प्र० पृ० ५८ (ट=ड)

ठ—कमठः कमढो। कुठार कुढारो। पठति पढइ। मठ मढो। शठः सढो।

ड—ळ

१२ स्वरथी पर आवेला, एकपदअन्वित अने असंयुक्त 'ड नो 'ळ' थाय छे

ड—क्रीडति कीलइ। गरुड गरुळो। तडागम् तळाय। वडवामुखम् वळयामुह।

ट—ट

(१) चूलिकापैशाचीमां 'ड' नो 'ट' थाय छे एम कटलाक वैयाकरणो माने छे

सं	प्रा०	चू पै०
डमरुकः	डमरुओ	टमरुको।
तडागम्	तळाय	तटाक।
प्रतिमा	पडिमा	पटिमा।
मण्डलम्	मडल	मटल।

ढ—ठ

( ) केटलाक मते चूलिकापैशाचीमां 'ढ' नो 'ठ' थाय छे

सं	प्रा	चू०पै	सं	प्रा	चू पै०
गाढम्	गाढ	काठ।	ढक्का	ढक्का	ठक्का।
दंष्ट्रा	दाढा	दाठा	षण्ढ	संढो	सठो।

---

१ पालीभाषामां प्राय सर्वत्र ट नो ळ थाय छे (पा प्र १ ६१ (टळ)

[1]ण—न

(३) पैशाचीमा 'ण' नो 'न' थाय छे.

स०	प्रा०	पै०
गण	गणो	गनो ।
गुणः	गुणो	गुनो ।

[2]न—ण

१३. स्वरपरवर्ती, एकपदस्थित अने असंयुक्त 'न' नो 'ण' थाय छे

कनकम् कणयं । नयनम् नयण । मदनः मयणो । मानते माणइ । वचनम् वयण । वदनम् वयणं ।

न—ण

१४. संस्कृतमा शब्दनी आदिमा रहेला असयुक्त 'न' नो विकल्पे 'ण' थाय छे.

नदी णई, नई । नर. णरो, नरो । नयति णेइ, नेइ ।

[3]प—व

१५. स्वरपरवर्ती, असयुक्त अने एकपदस्थित 'प' नो प्राकृतमा 'व' थाय छेः

उपमा उवमा । उपसर्ग उवसग्गो । गोपतिः गोवई । प्रदीपः पईवो । महिपाल. महिवालो ।

---

१. जूओ० पा० प्र० पृ० ५८ (ण=न)

२. जू० पा० प्र० पृ०६१ (न=ण)

३. ,, ,, ,, ,, ६१ (प=व)

प—व

१६ अवर्णथी पर आवेला, असंयुक्त अने एकपदस्थित 'प' नो प्राकृतमां 'व' ज थाय छे

कलाप कलावो। कपालम् कवालं। कपिलम् कविलं। काश्यप कासवो। कुणपम् कुणवं। तपति तवइ। पापम् पावं। शपथ सवहो। शाप सावो।

प—ब

(१) अपभ्रंशमां तो 'प' ने स्थाने 'ब' पण बोलाय छे

सं॰	प्रा॰	अ॰
शपथ[1]	सवहो	सबधु, सवधु।

फ—भ, ह

१७ स्वरथी पर आवेला, असंयुक्त अने एकपदस्थित 'फ' नो प्रयोगानुसार 'भ' अने 'ह' थाय छे

फ—भ—रेफ रेभो। शिफा सिभा।

फ—ह—मुक्ताफलम् मुत्ताहलं।

फ—भ, ह—गुफति गुभइ, गुहइ। शफरी सभरी, सहरी। सफलम् सभलं, सहलं। शेफालिका सेभालिआ सेहालिआ।

फ—भ

(१) अपभ्रंशमां पण 'फ' नो 'भ' थाय छे

स	प्रा	अ
सफलम्	सभलं सहलं	सभलु

[1] आ नियम स्वरमां नियमनो अपवाद छे

ब—प

(१) केटलाक वैयाकरणोने मते चूलिकापैशाचीमां 'ब' ने स्थाने 'प' थाय छे:

सं०	प्रा०	चू०पै०
बालकः	बालओ	पालओ।
बान्धव	बन्धवो	पन्धवो।

[1]ब—व

१८. स्वरपरवर्ती, एक पदस्थित अने असंयुक्त 'ब' नो 'व' थाय छे·

अलाबू· अलावूं[2]। शबलम् सवल।

म—वॅ

(१) अपभ्रंशमां 'म' ने बदले 'वँ' पण बोलाय छे·

स०	प्रा०	अ०	
कमलम्	कमल	कवँलु,	कमलु।
तथा	तह तहा,	तिवँ,	तिम।
भ्रमर·	भमरो, भसलो,	भवँरु,	भमरु।
यथा	जह जहा,	जिवँ,	जिम।

---

१ जू० पा० प्र० पृ० ६२ (ब=प)

२ ,, ,, ,, ,, ,, (ब=व)

३ ,, ,, ,, ,, ,, अलाबु· अलापु।

'यं=मं

१९। संस्कृत शब्दनी आदिमां आवेला 'य'नो प्राकृतमां 'म' थाय छे '

यम ममो। यश मसो। याति माइ।

य—य

(१) मागधीमां 'य' नो 'ज' न थतां 'य' ज रहे छे

सं०	प्रा०	मा०
याति	जाइ	यादि।
यथास्वरूपम्	महासरूव	यथाशलूव।
यानपात्रम्	जाणवत्त	याणवत्त।

र—ल

(१) मागधीमां 'र' नो 'ल' थाय छे, अने पैशाचीमां तो ए विकल्पे थाय छे

सं०	प्रा०	मा	पै०
कर	करो	कलो	करो कलो।
नर	नरो	नलो	नरो नलो।
विचार	विभारो	विआलो	विचालो विचारो।

ल—ळ

(१) पैशाचीमां 'ल' नो 'ळ' थाय छे

कमलम्	कमलं	कमळं।
कुलम्	कुल	कुळं।

१ गवयः गवओ गवमो पाली म पृ १२

२ आ नियम केटलेक ठेकाणे तो लागतो पण नथी: यथाख्यातम् अहक्खाय। यथाजातम् अहाजायं। पृ ' मां जणावेल्ये बीजो नियम यकार शब्दनी आदिमां पण लागे छे एथी अहीं यथाख्यात ' अने यथाजात नी आदिनो य लोपायलो छे

३ मुमो वा म पृ ४१ (र=ल)

जलम्	जलं	जळ ।
शीलम्	सील	सीळं ।
सलिलम्	सलिल	सळिळं ।

[1]श—स ष—स

२०. संस्कृतमा वपराता 'श' अने 'ष' नो प्राकृतमा 'स' थाय छे:

श—कुशः कुसो । दश दस । नृशंसः निसंसो ।

विंशति विसइ । वंशः वंसो । शब्दः सद्दो ।

श्यामा सामा । शुद्धम् सुद्ध । शोभते सोहइ ।

ष—कषायः कसायो । घोषति घोसइ । निकषः निहसो ।

षण्डः संडो ।

श, ष—विशेष. विसेसो । शेषः सेसो ।

स—श

(१) मागधीमा तो 'स' नो 'श' थाय छे अने पैशाचीमा तो प्राकृतनी प्रमाणे छे

सं०	प्रा०	मा०
पुरुषः	पुरिसो	पुलिशे ।
सारस.	सारसो	शालशे ।
श्रुतम्	सुअ	शुद ।
शोभनम्	सोहणं	शोभणं ।
हंस	हंसो	हंशे ।

---

१ जू० पा० प्र० पृ० ६ (श=स, ष=स)

'ह–घ

२१ संस्कृतमां अनुस्वारथी पर आवेला 'ह' नो प्राकृतमां विकल्पे 'घ' थाय छे

सहार —सघारो, सहारो। सिंह—सिंघो, सीहो।

---

१ एवो पण एकाद प्रयोग मळे छे ज्यां स्वरथी पर आवेला 'ह' नो पण 'घ' थाय छे: दाह –दाघो दाहो।

प्रकरण ४

संयुक्त व्यजनोना सामान्य फेरफारो

२२ संस्कृतना 'क्ष' नो विशेषे करीने प्राकृतमा 'ख' थाय छे अने क्याय क्याय तो प्रयोगानुसारे 'क्ष'नो 'छ' अने 'झ' पण थाय छे तथा पदमध्यस्थित 'क्ष' नो 'क्ख' 'च्छ' अने 'ज्झ' थाय छे:

[1]क्ष=ख क्ष=छ [2]क्ष=झ

क्षय. खओ। क्षीणम् खीण। क्षीरम् खीर। क्ष्वेटक. खेडओ। क्ष्वोटक. खोडओ।

क्षण.[3] छणो, [खणो]। क्षतम् छय। [4]क्षमा छमा [खमा]। क्षार छारो। क्षीणम् छीण। क्षीरम् छीर। क्षुण्ण. छुण्णो। क्षुतम् छीअं। क्षुध् छुहा। क्षुर. छुरो। क्षेत्रम् छेत्त।

[5]क्षीयते झिज्जइ। क्षीणम् झीणं।

---

१ जु० पा० प्र० पृ० १७ (क्ष=ख, क्ष=छ) क्ष=झ—टिप्पण पृ० १६.

२ पालीभाषामा 'क्ष' नो 'च' पण थाय छे'—(जु० पा० प्र० पृ० १७ क्ष=च)

३ 'क्षण' शब्दनो 'उत्सव' अर्थ होय त्यारे तेनु रूप 'छण' थाय छे अने समय अर्थ होय तो 'खण' रूप थाय छे जु० पा० प्र० पृ. १७—(क्ष=छ, क्षण खणो छणो)

४ 'क्षमा' शब्दनो 'पृथिवी' अर्थ होय त्यारे तेनु 'छमा' रूप थाय छे अने खमवु—क्षमाकरवी—अर्थमा तो 'खमा' रूप ज वपराय छे.

[1]क्ष=क्ख, क्ष=च्छ, क्ष=झ

इक्षु इक्खु । ऋक्ष रिक्खो[1] । ऋक्षम्-रिक्खं । मक्षिका मक्खिआ । लक्षणम् लक्खण । प्रक्षीणम् पक्खीण । प्रक्षेप पक्खेवो । सादृक्ष्यम् सारिक्खं ।

अक्षि अच्छि । इक्षु उच्छू । उक्षा उच्छा । ऋक्ष रिच्छो । ऋक्षम् रिच्छं । कक्ष कच्छो । कक्षा कच्छा । कुक्षिः कुच्छी । कौक्षेयकम् कुच्छेअयं । दक्ष दच्छो । प्रक्षीणम् पच्छीण । मक्षिका मच्छिआ । लक्ष्मी लच्छी । वक्ष वच्छं । वृक्ष वच्छो । सदृक्ष सारिच्छो । सादृक्ष्यम् सारिच्छं ।

प्रक्षीणम् पज्झीण ।

क्ष=ᳵक

(१) मागधीमां तो 'क्ष' नो ᳵक थाय छे

यक्ष यक्खो यᳵके ।
राक्षस रक्खसो लᳵकशे ।

(२) संस्कृतना वस्तुवाचक शब्दना 'ष्क' अने 'स्क' नो प्राकृतमां 'ख' थाय छे तथा पदमध्यस्थित ष्क अने 'स्क' नो 'क्ख' थाय छे

ष्क=ख, क्ख स्क=ख, क्ख

निष्कम् निक्खं । पुष्करम् पोक्खरं । पुष्करिणी पोक्खरिणी । अवस्कन्द अवक्खन्दो । स्कन्द खन्दो । स्कन्धो खंधो । स्कन्धावार खंधावारो ।

---

१ मू पा म॰ पृ १७–([illegible]—टिप्पण) [illegible] अच्छो, [illegible] । [illegible] । [illegible] । पा म पृ १८

२ मू पा म पृ १६–१७ ([illegible])

संयुक्त ष, स=स[1]

(१) मागधीमा संयुक्त 'ष' के 'स' ने स्थाने 'स' थाय छे.[2]

उष्मा	उम्हा	उस्मा ।
कष्टम्	कट्ठ	कस्ट ।
धनुष्खण्डम्	धणुक्खड	धनुस्खडं ।
निष्फलम्	निप्फल	निस्फलं ।
विष्णु.	विण्हू	विस्नू ।
शष्पम्	सप्फ	सस्प ।
शुष्कम्	सुक्क	सुस्क ।
प्रस्खलति	पक्खलइ	पस्खलदि ।
बृहस्पति	बुहप्फई	बुहस्पदी ।
मस्करी	मक्खरी	मस्कली ।
विस्मय	विम्हयो	विस्मये ।
हस्ती	हत्थी	हस्ती ।

२४ संस्कृत शब्दना 'त्य' नो प्राकृतमा 'च' थाय छे अने पदमध्य-स्थित 'त्य' नो च्च थाय छे[3]

त्य=च[4]

त्याग चाओ । त्यागी चाई । त्यजति चयइ ।

त्य=च्च

प्रत्यय पच्चओ। प्रत्यूष पच्चूसो। सत्यम् सच्च।

---

१ जूओ० पा० प्र० पृ० ५१ नि० ६८

२ एक 'ग्रीष्म' शब्दने आ नियम नथी लागतो

३ आ नियम 'चैत्य' शब्दने लागतो नथी चैत्यम चइत्त, चेइअ–(ऐ=अइ अने अन्त स्वरवृद्धि)

४ जू० पा० प्र० पृ० ७०–(त्य=च त्य=च्च)

त्स—उत्सव· उच्छवो। उत्साह: उच्छाहो। उत्सुक· उच्छुओ। चिकित्सति चिइच्छइ । मत्सर: मच्छरो। संवत्सर संवच्छरो।

प्स—अप्सरा: अच्छरा। जुगुप्सति जुगुच्छइ। लिप्सति लिच्छइ।

च्छ—श्च

(१) प्राकृतमा 'श्च' नो 'च्छ' थाय छे त्यारे मागधीमा तो एथी उलटु थाय छे एटले 'च्छ' नो 'श्च' थाय छे

उच्छलति	उच्छलइ	उश्चलदि।
गच्छ	गच्छ	गश्च।
तिर्यक्	तिरिच्छि	तिरिश्चि।
पिच्छिल.	पिच्छिलो	पिश्चिले।
पृच्छति	पुच्छइ	पुश्चदि।
वत्सल	वच्छलो	वश्चले।

[1]द्य, य्य, [2]र्य—ज

२७. पदनी आदिमा रहेला 'द्य', 'य्य' अने 'र्य' नो 'ज' थाय छे तथा पदमध्यस्थित 'द्य' 'य्य' अने 'र्य' नो 'ज्ज' थाय छे·

द्य—द्युति—जुई। द्योत—जोओ।

द्य—अवद्यम् अवज्ज। मद्यम् मज्ज। वैद्य वेज्जो।

य्य—जय्य जज्जो। शय्या सेज्जा।

र्य—कार्यम् कज्ज। पर्याप्तम् पज्जत्त। पर्याय पज्जाओ। भार्या भज्जा। मर्यादा मज्जाया। वर्यम् वज्ज।

---

१ जू० पा० प्र० पृ० १८–(द्य=ज, द्य=ज्ज) पालीमा केटलेक ठेकाणे 'द्य' नो 'य्य' पण थाय छे–पृ० १९–(द्य=य्य, टिप्पण)

२ पालीमा तो 'र्य'नो 'रिय' 'य्य' के 'रिय' थाय छे–(जू० पा० प्र० पृ० १५–१६)

र्य–य्य

(१) शौरसेनीमां 'र्य' नो विकल्पे 'य्य' थाय छे

आर्यपुत्र	अज्जउत्तो	अय्यउत्तो, अज्जउत्तो ।
कार्यम्	कज्जं	कय्य, कज्ज ।
पर्याकुल	पज्जाउलो	पय्याकुलो, पज्जाकुलो ।
सूर्य	सुज्जो	सुय्यो, सुज्जो ।

द्य–य्य[1]

(१) मागधीमां 'द्य' नो 'य्य' थाय छे

अद्य	अज्ज	अय्य ।
मद्यम्	मज्जं	मय्य ।
विद्याधर	विज्जाहरो	विय्याहले ।

ध्य, ह्य–झ

२८ पदादिभूत 'ध्य' अने 'ह्य' नो 'झ' थाय छे अने पदमध्यस्थित 'ध्य' तथा 'ह्य' नो 'ज्झ' थाय छे

ध्य–ध्यानम् झाण । ध्यायति झायइ ।
उपाध्याय उवज्झायो । बध्यते बज्झइ । विन्ध्य विंझो ।
साध्यम् सज्झ । स्वाध्याय सज्झाओ ।

ह्य–गुह्यम् गुज्झ । नह्यति नज्झइ । मह्यम् मज्झं ।
सह्य सज्झो ।

---

१ जुओ टिप्पण २ मु पृ ३१ ।

२ जुओ टिप्पण १ मु पृ ३१ ।

३ मू पा म पृ १ –(पाम्स प्रकाश)

४ अनुस्वारथी अने गुरु के दीर्घस्वरथी पर आवेला कोई पण व्यंजनना स्थानमां अहीं आवेला द्विरुक्त(ज्झ ज्ज वगेरे) विधानो बतावेलां मार्या मारे ज विन्ध्य नु विंझो नहि पण विंझो ' थयुं छे जुओ पा प्र पृ १ टि [illegible] ।

पालीमां ह्य नो य्ह थाय छे–(पा प्र पृ २२–[illegible])

र्त–ट्ट

२९ संस्कृतना ‘र्त’[1] नो प्राकृतमा सामान्य रीते ‘ट्ट’[2] थाय छे.

कैवर्तः केवट्टो। जर्त जट्टो। नर्तकी नट्टई। प्रवर्तते पयट्टइ। राजवर्तकम् रायवट्टय। वर्ती वट्टी। वर्तुलम् वट्टुलं। वार्ता वट्टा। संवर्तितम् संवट्टिअ।

न्त=न्द

(१) शौरसेनीमा क्यांय क्याय ‘न्त’ नो ‘न्द’ थाय छे·

अन्त.पुरम्	अन्तेउर	अन्देउर।
निश्चिन्त.	निच्चिंतो	निच्चिंदो।
महान्	महंतो	महंदो।

---

१ २९मो नियम नीचे जणावेला शब्दोमा लागतो नथी अर्थात् नीचेना शब्दोमा ‘र्त’ नो ‘ट्ट’ थतो नथी

आवर्तकः आवत्तओ।	प्रवर्तक· पवत्तओ।
आवर्तनम् आवत्तण।	प्रवर्तनम् पवत्तण।
उत्कर्तितम् उक्कत्तिअं।	मुहूर्त मुहुत्तो।
कर्तरी कत्तरी।	मूर्त मुत्तो।
कार्तिक कत्तिओ।	मूर्ति मुत्ती।
कीर्ति कित्ती।	वर्तिका वत्तिआ।
धूर्त धुत्तो।	वार्तिकम् वत्तिअ।
निवर्तक. निवत्तओ।	सवर्तक सवत्तओ।
निवर्तनम् निवत्तण।	सवर्तनम् सवत्तण।
निर्वर्तक निव्वत्तओ।	

(जूओ पृ० १६ नि० ५, सयुक्त ‘लादि’ लोप)

२ जू० मा० प्र० पृ० ५८ (त=ट)

म्न, ज्ञ—ण

१० संस्कृतना 'म्न' अने 'ज्ञ' नो प्राकृतमां 'ण' थाय छे अने पदमध्यस्थित 'म्न' अने 'ज्ञ' नो 'ण्ण' थाय छे

म्न—निम्नम् निण्ण। प्रद्युम्नः पज्जुण्णो।

ज्ञ—प्रज्ञा पण्णा। विज्ञानम् विण्णाणं। आज्ञा आणा[1]।

ज्ञानम् णाण। संज्ञा सणा।

ज्ञ, न्य, ण्य, न्य—ञ्ञ

(१) प्राकृतमां 'ज्ञ' नो 'ण' थाय छे त्यारे मागधीमां 'ज्ञ' नो 'ञ्ञ' थाय छे अने 'न्य,' 'ण्य' अने 'न्य' नो पण 'ञ्ञ' थाय छे

ज्ञ—अवज्ञा	अवण्णा	अवञ्ञा।
प्रज्ञा	पण्णा	पञ्ञा।
सर्वज्ञ	सव्वण्णू	शव्वञ्ञे।
न्य—अन्यजाति	अन्नजाती	अञ्ञजाती।
धनन्जय	धणंजयो	धणञ्जए।
प्राञ्जल	पंजलो	पञ्जले।
ण्य—अब्रह्मण्यम्	अबम्हण्णं	अबम्हञ्ञं।
पुण्यम्	पुण्ण	पुञ्ञं।
पुण्यवान्	पुण्णवंतो	पुञ्ञवंते।
न्य—अभिमन्यु	अहिमन्नू	अहिमञ्ञू।
कन्यका	कन्नगा	कञ्ञका।
सामान्यम्	सामन्नं	शामञ्ञं।

१ हे. प्रा. व्या. ८।२।४८ (म्न=ण) टिप्पण सू. प्रा. व्या. ८।१।(...)।२।४२

२ हे. प्रा. व्या. ८।४।२९३ टिप्पण ८।

३ हे. प्रा. व्या. ८।४।२९३-२९४ (...)

[1]स्त—थ

३१ संस्कृतना 'स्त'नो प्राकृतमा 'थ' थाय छे अने पदमध्यस्थित 'स्त' नो 'त्थ' थाय छे[2]

स्तव. थवो । स्तम्भ थंभो । स्तब्ध थद्धो [ठद्धो] स्तुति थुई । स्तोकम् थोअं । स्तोत्रम् थोत्तं । स्त्यानम् थीणं ।

अस्ति अत्थि । पर्यस्त. पल्लत्थो । प्रशस्तः पसत्थो । प्रस्तर पत्थरो । स्वस्ति सत्थि । हस्त. हत्थो ।

र्थ, स्थ—स्त

(१) 'र्थ' अने 'स्थ' नो मागधीमा 'स्त' थाय छे।

अर्थपति	अत्थवई	अस्तवदी ।
सार्थवाह.	सत्थवाहो	शस्तवाहे ।
उपस्थित	उवट्ठिओ	उवस्तिदे ।
सुस्थित	सुट्ठिओ	सुस्तिदे ।

[3]ष्ट—ठ

३२ संस्कृतना 'ष्ट' नो प्राकृतमा 'ठ' थाय छे अने पदमध्यस्थित 'ष्ट' नो 'ट्ठ' थाय छे:[4]

---

१ जू० पा० प्र० पृ० २७–(स्त=थ, स्त=त्थ)

२ 'समस्त' अने 'स्तम्ब' शब्दना 'स्त' नो 'थ' थतो नथी. समस्तम् समत्तं । स्तम्ब तम्बो ।

३ जू० पा० प्र० पृ० २६ (ष्ट=ट्ठ)

४ इष्टा, उष्ट्र अने संदष्ट शब्दना 'ष्ट' नो 'ठ' थतो नथी. इष्टा इट्टा । उष्ट्र उट्टो । संदष्टम् संदट्टं । जूओ पा०प्र० पृ० २६ टिप्पण।

अनिष्टम् अणिट्ठ । इष्ट इट्ठो । कष्टम् कट्ठ । काष्टम् कट्ठं । दष्ट दट्ठो । दृष्टि दिट्ठी । पुष्ट पुट्ठो । मुष्टि मुट्ठी । यष्टि लट्ठी । सुराष्ट्रा सुरट्ठा । सृष्टि सिट्ठी ।

ट्ठ, ष्ठ—स्ट

(१) 'ट्ठ' अने 'ष्ठ' नो मागधीमां 'स्ट' थाय छे

ट्ठ—पट्ट पट्ठो पस्टे । भट्टारिका भट्टारिया भस्टालिका

भट्टिनी भट्टिणी भस्टिणी ।

ष्ठ—कोष्ठागारम् कोट्ठागार कोस्टागाल ।

सुष्ठु सुट्ठु शुस्टु ।

ष्ट—सट

(१) पैशाचीमां 'ष्ट' ना स्थाने 'सट' बोलाय छे

कष्टम् कट्ठ कसटं ।

दृष्टम् दिट्ठं दिसटं ।

[1]ड्म, [2]क्म—प

११ संस्कृतना 'ड्म' अने 'क्म'नो[3] प्राकृतमां 'प' थाय छे अने पछी व्यञ्जित 'ड्म' अने 'क्म' नो 'प्प' थाय छे

कुड्मलम् कुपल ।

रुक्मिणी रुप्पिणी ।

१-२ पालीमां तो 'ड्म' ना 'मुम' अने 'क्म' नो 'कुम' थाय छे— (म० पा० २ ८)

३ क्यांक एक प्राकृत 'क्म' ना 'म्म' पण थाय छ—रुक्मी रुम्मी रुप्पी

४ कुड्मलम्—कुड्मल (पा० म० २ ८१ टिप्पण)

[1]ष्प, स्प—फ

३४ संस्कृतना 'ष्प' अने 'स्प' नो 'फ' थाय छे अने पदमध्यस्थित 'ष्प' तथा 'स्प' नो 'प्फ' [2]थाय छे

ष्प—निष्पावः निप्फावो । निष्पेष: निप्फेसो । पुष्पम् पुप्फ ।
शष्पम् सप्फ ।

स्प—स्पन्दनम् फदण । प्रतिस्पर्धी पाडिप्फद्धी ।
बृहस्पति. बुहप्फई ।

[3]ह्व—भ

३५ प्राकृतमा 'ह्व' नो 'भ' अने पदमध्यस्थित 'ह्व' नो 'ब्भ' विकल्पे थाय छे.

जिह्वा जिब्भा जीहा । विह्वल. विब्भलो, विहलो ।

[4]न्म—म्म

३६ संस्कृतना 'न्म' नो 'म्म' थाय छे.

जन्म जम्मो । मन्मथ वम्महो । मन्मनः मम्मणं ।

[5]ग्म—म्म

३७ संस्कृतना 'ग्म' नो 'म्म' विकल्पे थाय छे

तिग्मम् तिम्म, तिग्ग । युग्मम् जुम्म, जुग्ग ।

---

१ जूओ पा० प्र० पृ० ३९ (स्प=फ, स्प=प्फ, ष्प=प्फ)

२ पदमध्यस्थित 'स्प' अने 'ष्प' नो प्राय 'प्प' पण थाय छे

निष्पुंसनम् निप्पुंसण । परस्परम् परोप्पर ।
निष्प्रभ: निप्पभो । बृहस्पति बुहप्पई ।
निस्पृह निप्पिहो । जू० पाली प्र० पृ० ३९

३ जूओ पा० प्र० पृ० ३५–(ग ह्वर=गब्भर) टिप्पण तथा पृ० ६४–ह्व=भ)

४ जूओ पा० प्र० पृ० ४६–(न्म=म्म)

५ पालीमा प्राय 'ग्म' नो 'गुम' थाय छे –(जू० पा० प्र० पृ० ४९)

[1]श्म, ष्म, स्म, ह्म, क्ष्म—म्ह

१८ सस्कृतमां प्रयोजाता 'श्म', 'ष्म', 'स्म', 'ह्म' अने पक्ष्मना 'क्ष्म'नो प्राकृतमां 'म्ह' [2]थाय छे

श्म—कश्मीरा कम्हारा । कुश्मान कुम्हाणो ।

ष्म—ऊष्मा उम्हा । ग्रीष्म गिम्हो ।

स्म—अस्मादृश अम्हारिसो । विस्मय विम्हओ ।

ह्म—ब्रह्मा बम्हा । ब्राह्मण बम्हणो । ब्रह्मचर्यम् बम्हचेर सुह्मा सुम्हा ।

क्ष्म—पक्ष्मलम् पम्हलं । पक्ष्माणि पम्हाइं ।

(१) अपभ्रंशमां 'स्म' ना स्थाने 'म्म' पण बोलाय छे

ग्रीष्म गिम्हो गिम्मो, गिम्हो ।

श्लेष्मा सिम्हो सिम्मो, सिम्हो ।

[3]श्न, ष्ण, स्न, ह्न, ह्ण, क्ष्ण—ण्ह

१९ सस्कृतमां प्रयोजाता 'श्न', 'ष्ण', 'स्न', 'ह्न', 'ह्ण', 'क्ष्ण' अने सूक्ष्मना 'क्ष्म'नो 'ण्ह' थाय छे

श्न—प्रश्न पण्हो । शिश्न सिण्हो ।

ष्ण—उष्णीषम् उण्हीसं । कृष्ण कण्हो । जिष्णु जिण्हू विष्णु विण्हू

स्न—ज्योत्स्ना जोण्हा । प्रस्नुत पण्हुओ । स्नात ण्हाओ ।

ह्न— जह्नु जण्हू । वह्नि वण्ही ।

---

१ जुओ पा म पृ ७ —(स्म=म्ह, ष्म=म्ह स्म=म्ह)

२ आ नियम केटलेक ठेकाणे लागतो नथी।—रश्मिः रस्सी । स्मर सरो—जुओ पाठ्ठी म पृ ७ —(स्म=स)

३ जुओ पा म पृ ४६ (नियम—६१) तथा पृ ४७ स्न=ण्ह ष्ण=ण्ह पृ ४८ तिष्ण तीक्ष्ण तिक्खिणो, तिक्खो तिण्हो। पृ ४ द्विष्ण पूर्वाह्ण पुब्बण्हो ।

ह्ण — अपराह्णः अवरण्हो। पूर्वाह्णं पुव्वण्हो।
क्ष्ण— तीक्ष्णम् तिण्हं। श्लक्ष्णम् सण्हं।
क्ष्म— सूक्ष्मम् सण्हं।

[1]स्न—सिन

(१) प्राकृतमां 'स्न' नो 'ण्ह' थाय छे त्यारे पैशाचीमां तो क्याय क्याय 'स्न' ने बदले 'सिन' बोलाय छे.

स्नातम् ण्हायं सिनात।
स्नुषा सुण्हा, ण्हुसा सिनुसा, सुनुसा।

[2]ह्ल—ल्ह

४० संस्कृतना 'ह्ल'नो प्राकृतमां 'ल्ह' थाय छे:

कह्लारम् कल्हारं। प्रह्लादः पल्हाओ।

[3]ज्ञ—ज

४१ संस्कृतना 'ज्ञ' नो प्राकृतमां 'ज' विकल्पे थाय छे अने पदमध्यस्थित 'ज्ञ' नो 'ज्ज' थाय छे

अभिज्ञ अहिज्जो, अहिण्णू। आज्ञा अज्जा, आणा। आत्मज्ञ अप्पज्जो, अप्पण्णू। इङ्गितज्ञ इङ्गिअज्जो, इङ्गिअण्णू। दैवज्ञ देवज्जो, देवण्णू। प्रज्ञा पज्जा, पण्णा। प्राज्ञ पज्जो, पण्णो। मनोज्ञम् मणोज्जं, मणुण्णं। सर्वज्ञ सव्वज्जो, सव्वण्णू। संज्ञा सजा, सणा।

[4]र्ह—रिह

४२ 'र्ह' व्यंजननो प्राकृतमां 'रिह' थाय छे

अर्हति अरिहइ। अर्ह अरिहो। गर्हा गरिहा। बर्ह. बरिहो।

---

१ जूओ प्रा० प्र० पृ० ४६ (नि० ६३) स्नानम् सिनान। स्नुषा सुणिसा, सुण्हा, (हुसा)

२ पालीमां 'ह्ल'नो 'हिल' थाय छे ह्लाद हिलादो—पा० प्र० पृ० ३२

३ जु० पाली प्र० पृ० २४ टिप्पण—प्रज्ञानम् पजान।

४ जूओ पा० प्र० पृ० ११ (नियम १३)

र्श, र्ष-रिस

४१ सम्कृतना 'र्श' अने 'र्ष' नो प्राकृतमां 'रिस' विकल्पे थाय छे

र्श—आदर्श आयरिसो, आयसो। दर्शनम् दरिसण, दसण।

सुदर्शन सुदरिसणो, सुदसणो।

र्ष—वर्षम् वरिस, वास। वर्षशतम् वरिससय, वाससयं।

वर्षा वरिसा वासा।

क्ल-इल

४८ संस्कृतना संयुक्त 'क्ल' नो 'इल' थाय छे

अम्लम् अमिल। क्लाम्यति किलम्मइ। क्लाम्यत् किलतं। क्लिष्टम् किलिट्ठ। क्लिन्नम् किलिन्न। क्लेश किलेसो। ग्लायति गिलाइ। ग्लानम् गिलाण। प्लुष्टम् पिलुट्ठ। प्लोष पिलोसो। म्लायति मिलाइ। म्लानम् मिलाण। श्लेष सिलेसो। श्लेष्मा सिलिम्हा। श्लोक सिलोओ। श्लिष्टम् सिलिट्ठ। शुक्लम् सुइल।

र्य-रिअ

४९ सस्कृतना 'र्य' व्यमननो प्राकृतमां 'रिअ' थाय छे

आचार्य आयरिआ। गाम्भीर्यम् गभीरिअ। गाम्भीर्यम् गहीरिअ। चौर्यम् चोरिअ। धैर्यम् धीरिअ। ब्रह्मचर्यम् बम्हचारिअं। भार्या भारिआ। वर्यम् वरिअ। वीर्यम् वीरिअं। स्थैर्यम् थेरिअ। सूर्य सूरिओ। सौन्दर्यम् सुदरिअ। शौर्यम् सोरिअं।

---

१ ग धा प्र पृ ११ टिप्पण—अर्थ अरिसो। आर्षम् आरिस।

२ ११ (नि २७)

३ आ नियम क्याय क्याय लागतो पण नथी —रश्म कमो। प्लप पयो।

४ जुओ पृ ११—२७ मा नियम उपरनुं टिप्पण

र्य—रिय

(१) प्राकृतनी पेठे पैशाचीमा पण क्यांय क्यांय 'र्य' ने बदले 'रिय' बोलाय छे:

भार्या भज्जा भारिया, भज्जा।

[1]ह्य—म्ह

४६ 'ह्य' नो 'म्ह' प्राकृतमा विकल्पे थाय छे.

गुह्यम् गुम्ह, गुज्झं[2]।
सह्य: सम्हो, सज्झो।

[3]वी—उवी

४७ स्त्रीलिङ्गि पदने अते वर्तता सयुक्त 'वी'नो प्राकृतमा 'उवी' थाय छे.

गुर्वी गुरुवी। तन्वी तणुवी। पृथ्वी पुहुवी। बह्वी बहुवी। लघ्वी लहुवी। मृद्वी मउवी।

---

१ जूओ पृ० ३४—५मु टिप्पण।

२ जूओ नि० २८—पृ० ३४

३ पड्ड पड्डनी (पालि प्र० पृ० २६२ स्त्रीप्रत्यय)

प्रकरण ५

उपर एटले प्रकरण २-३-४मां आपेला नियमो सामान्य नियमो कहेवाय छे एटले ज्यां कोई बीजो खास नियम न लागतो होय त्यां ए ज नियमो लागू थाय छे आ नीचे जे नियमो आपवामां आवे छे ते विशेष नियमो छे एटले ज्यां आ नियमोनी प्राप्ति थती होय त्यां सामान्य नियमो न लगाडतां प्रथम आ ज नियमो लगाडवाना छे

स्वरना विशेष विकारो

४८ 'अ' विकार

(क) [1]अ=आ—

नीचे जणावेला शब्दोमां आदिना 'अ' नो विकल्पे 'आ' थाय छे.

अभियाति आहिआई, अहिआई। प्रतिस्पर्धी पाडिप्फद्धी, पडिप्फद्धी।
अस्पर्श आफंसो, अफंसो। प्रवचनम् पावयणं, पवयणं।
चतुरन्तम् चाउरंत, चउरंत। प्ररोह पारोहो, परोहो।
दक्षिण दाहिणो, दक्खिणो। प्रवासी पावासू, पवासू।
परकीयम् पारकेर, परकेर। प्रसिद्धि पासिद्धी, पसिद्धी।
परकीयम् पारक्कं, परक्कं। प्रसुप्त पासुत्तो, पसुत्तो।
पुन पुणा पुण। मनस्वी माणंसी, मणंसी।
प्रकटम् पायडं, पयडं। मनस्विनी माणसिनी, मणसिणी।
प्रतिपत् पाडिवआ पडिवआ। समृद्धि सामिद्धी, समिद्धी।
प्रतिसिद्धि पाडिसिद्धी, पडिसिद्धी। सदृक्ष सारिच्छो, सरिच्छो
इत्यादि।

---

१ प्रा० प्र० पृ० ६०-(अम्मा)

(ख) [1]अ=इ—

नीचे जणावेला शब्दोमां चिह्नित 'अ' नो 'इ' थाय छे—ते क्यांय नित्ये थाय छे अने क्याय विकल्पे थाय छे:

ईषत् इसि। उत्तम उत्तिमो। कतम कइमो। कृपण किविणो। दत्तम् दिण्ण। मरिचम् मिरिअ। मध्यम मज्झिमो। मृदङ्ग मुइगो। वेतस वेडिसो। व्यजनम् विअण। व्यलीकम् विलीअं। स्वप्न. सिविणो।

वैकल्पिक उदाहरणो —

अङ्गार:	इगारो, अगारो।	ललाटम्	णिडाल, णडाल।
पक्वम्	पिक्क, पक्क।	सप्तपर्ण	छत्तिवण्णो, छत्तवण्णो।

(ग) अ=ई—

नीचे आपेला शब्दना आद्य 'अ' नो विकल्पे 'ई' थाय छे·

हर. हीरो, हरो।

(घ) [2]अ=उ—

नीचे सूचवेला शब्दोमा चिह्नित 'अ' नो 'उ' थाय छे—ते क्यांय नित्य थाय छे अने क्याय विकल्पे थाय छे:

अभिज्ञ:	अहिण्णू।	गवय:	गउओ।
आगमज्ञ:	आगमण्णू।	गवया:	गउआ
कृतज्ञ:	कयण्णू।	ध्वनि.	झुणी।
विज्ञ:	विण्णू।	विष्वक्	वीसुं
सर्वज्ञ·	सव्वण्णू।		[3]इत्यादि।

---

१ पाली प्र० पृ० ५२-(अ=इ)

२ पाली प्र० पृ० ५२-(अ=उ)

३ बीजा पण प्रयोगानुसारी शब्दो 'आदि' शब्दथी समजवाना छे.

वैकल्पिक उदाहरणो

खण्डित	खुण्डिओ,	खंडिओ।
स्फुटम्	फुटं,	फ॰।
प्रथमम्	पुढम, पढुम, पुढुम,	पढमं।
स्वपिति	सुवइ,	सोवइ।

(ङ) [1]अ=ए—

नीचे जणावेला शब्दोमां विहित 'अ' नो 'ए' थाय छे–ते क्यांय नित्ये थाय छे अने क्यांय विकल्पे थाय छे

अत्र	एत्थ।	मधाचयम्	मम्हचेरं।
अन्तःपुरम्	अन्तेउर।	[2]शय्या	सेज्जा।
अन्तश्चारी	अंतेआरी।	सौन्दर्यम्	सुन्देरं।
कन्दुकम्	गेन्दुअ।		

वैकल्पिक उदाहरणो—

आश्चर्यम् अच्छेरं, अच्छरिअं। पर्यन्तः पेरंतो, पज्जतो। उत्कर उक्केरो, उक्करो। वल्ली वेल्ली, वल्ली।

(च) अ=ओ—

नीचे जणावेला शब्दोमां विहित 'अ' नो 'ओ' थाय छे—ते क्यांय नित्ये थाय छे अने क्यांय विकल्पे थाय छेः

नमस्कार नमोक्कारो। पद्मम् पोम्मं। परस्परम् परोप्परं।

वैकल्पिक उदाहरणो—

अर्पयति ओप्पेइ, अप्पेइ। स्वपिति सोवइ, सुवइ। अर्पितम् ओप्पिअ, अप्पिअ।

---

१ पाली प्र॰ पृ ५२–(अन्तर)

२ शय्या सेय्य (पाली)

(छ) अ=अइ—

'मय' प्रत्ययांत शब्दमां आवेला 'म' ना 'अ' नो विकल्पे 'अइ' थाय छे:

जलमयम्	जलमइअं,	जलमयं ।
विषमयम्	विसमइअ,	विसमअ ।
दु खमयम्	दुहमइअ,	दुहमय ।
सुखमयम्	सुहमइअ,	सुहमय ।

(ज) अ=आइ—

न पुनः–न [1]उणाइ, न उणो ।
पुनः–पुणाइ, पुणो ।

(झ) 'अ' लोप—

अरण्यम्–रण्ण, अरण्णं ।
अलाबु–लाऊ, अलाऊ ।

४९ 'आ' विकार—

(क) आ[2]=अ—

नीचे सूचवेला शब्दोमा अने अव्ययोमा चिह्नित 'आ' नो 'अ' थाय छे–ते क्याय नित्ये अने क्याय विकल्पे थाय छे

[3]आचार्य	आयरिओ ।	महाराष्ट्र	मरहट्टो ।
कासिक	कसिओ ।	मांसम्	मस ।
कांस्यम्	कसं ।	वांशिक	वसिओ ।
पाण्डव	पडवो ।	श्यामाक	सामओ ।
पांसन	पसणो ।	सांयात्रिक	सजत्तिओ ।
पांसु	पसू ।	सांसिद्धिकः	ससिद्धिओ [4]इत्यादि ।

---

१ अहीं 'पुन ' शब्दना आदि ' प 'नो लोप थएलो छे– जुओ पृ० २६ टिप्पण २ जु।

२ पाली प्र० पृ० ५२ [आ=अ]

३ जुओ पृ० ८ नि० १।

४ जुओ टिप्पण (अ=उ) पृ० ४४

वैकल्पिक उदाहरणो—

उत्खातम् उक्खयं, उक्खाय। पुन्नाग[१] पुन्नागो, पुन्नागो।
कालक कलमो, कालमो। बलाका बलया, बलाया।
कुमार कुमरो कुमारो। ब्राह्मण बम्हणो, बाम्हणो।
खादिरम् खइरं, खाइरं। स्थापित ठविओ, ठाविओ।
चामर चमरो, चामरो। (परिष्ठापित परिट्ठविओ, परिट्ठाविओ।
तालवृन्तम् तलवेंटं, तालवेंटं। संस्थापित संठविओ, संठाविओ।)
नाराच नराओ, नाराओ। हालिक हलिओ, हालिओ इत्यादि
प्राकृतम् पययं, पाययं।

अव्ययो—

अथवा अहव, अहवा। तथा तह, तहा।
यथा जह, जहा। वा व, वा। हा ह, हा इत्यादि।

(ख) आ=इ—

नीचेना शब्दोमां चिह्नित 'आ' नो विकल्पे 'इ' थाय छे
आचार्य आइरिओ आयरिओ।
कूर्पासः कुप्पिसो, कुप्पासो।
निशाकरः निसिअरो, निसाअरो।

(ग) आ=ई —

खल्वाट खल्लीडो।
स्त्यानम् ठीणं (थीणं[२])।

(घ) आ=उ—

आर्द्रम् उल्लं। सास्ना सुण्हा। स्तावक थुवओ।

---

१ आ बधे रूपो 'नाथार्थ' (सच्चप्रने समय नथी प्रा व्या अ ८ १–६७–पृ ११

२ जुओ पृ १७ नि ११

(ज) आ=ऊ—

आर्या अज्जू[1] ।

आसारः ऊसारो, आसारो (वैकल्पिक)

(ज) आ[2]=ए—

ग्राह्यम्[3] गेज्झं ।

वैकल्पिक—

असहार्यः असहेज्जो, असहज्जो ।
एतावन्मात्रम् एत्तिअमेत्त, एत्तिअमत्त ।
भोजनमात्रम् भोअणमेत्त, भोअणमत्तं ।
द्वारम् देरं, दारं ।
पारापतः पारेवओ, पारावओ ।
पश्चात्कर्म पच्छेकम्मं, पच्छाकम्म ।
पुराकर्म पुरेकम्मं, पुराकम्म ।

(झ) आ=ओ—

आर्द्रम् ओल्लं । आली ओली[5] ।

९० इ—विकार

(क) [4]इ=अ—

इति[7] इअ । तित्तिरि तित्तिर–तित्तिरो । पथिन् पह–

---

१ आ शब्दनो प्रयोग 'सासू' अर्थमा ज थाय छे ।

२ पाली प्र० पृ० ५३ [आ=ए]

३ वैदिक 'गृह्यम्' (का० ३–१–११८) उपरथी प्रा० 'गिज्झ गेज्झ' विशेष सुकर जणाय छे

४ जूओ पृ० ३३ नि० २७

५ आ शब्दने 'पङ्क्ति' अर्थमा ज वापरवानो छे.—ओली—गू० ओळ, ओळखु ।

६ पाली प्र० पृ० ५३– (इ=अ)

७ आ अव्ययने वाक्यनी आदिमा ज वापरवानु छे

पहो । पृथिवी पुहई । प्रतिश्रुत् पडंसुआ । बिभीतकः बहेडओ । मूषिकः मूसओ । हरिद्रा हलद्दा ।

वैकल्पिक—

इङ्गुदम् अगुअं, इंगुअं ।
शिथिलम् सढिलं, सिढिलं ।
[प्रशिथिलम् पसढिलं, पसिढिलं ।]

(ख) [1]इ=ई—

जिह्वा जीहा । त्रिंशत् तीसा ।
विंशति वीसा । सिंह सीहो ।

वैकल्पिक—

निस्सरति नीसरइ, निस्सरइ ।
निस्सहम् नीसहं, निस्सहं ।

(ग) [2]इ=उ—

इक्षुः [3]उच्छू । द्विविध दुविहो ।
[4]द्वि दु । नि णु
द्विजाति दुआई । नि नु ।
द्विधा दुहा । निमज्जति णुमज्जइ ।
द्विमात्र दुमत्तो । निमग्न णुमन्नो ।
द्विरेफ दुरेहो । प्रवासिन् पावासु–पावासू ।
द्विवचनम् दुवयणं । प्रवासिक पावासुओ ।

---

१ धमास्पष्ट शब्दोमां आ नियम लागतो नथी —छिद्रक छिद्दओ । छिद्राम छिद्दामो ।

२ पाली प्र. पृ. ५१–(इत्व)

३ इक्षु =उच्छु (पाली)

४ दु. पाली प्र. पृ. १२–(द्वित्व)

नभो पृ. १ टिप्पण १–(दुनओ)

वैकल्पिक—

युधिष्ठिरः जहुट्ठिलो, जाहिट्ठिलो।
द्विगुणः दुउणो, बिउणो।
द्वितीयः दुइओ, बिइओ।

(घ) [1]इ=ए—

मिरा मेरा

वैकल्पिक—

किंशुकम् केसुअं, किंसुअ।

(ङ) [2]इ=ओ—

द्विवचनम् दोवयण।

वैकल्पिक—

द्विधा [3]दोहा, दुहा।

(च) नि=ओ—

वैकल्पिक—

निर्झरः ओज्झरो, निज्झरो।

९१ ई—विकार

(क) [4]ई=अ—

हरीतकी [5]हरडई।

---

१ पाली प्र० पृ० ५३–(इ=ए)

२ पाली प्र० पृ० ५३– (इ=ओ)

३ साधारण रीते आ बन्ने शब्दनो प्रयोग 'कृ' धातुनी पूर्वे थाय छे.– द्विधा क्रियते दुहा किज्जइ, दोहा किज्जइ। द्विधा कृतम् दुहा इ(कि) अ, दोहा इ(कि) अं।

४ पाली प्र० पृ० ५३– ई=अ)

५ हरीतकी हरीटकी (पाली)

(ख) ई=आ—

कश्मारा कम्हारा ।

(ग) ई=इ—

नीचेना शब्दोमां 'ई' नो 'इ' थाय छे—ते क्यांय नित्ये अने क्यांय विकल्पे थाय छे —

अवसीदत् ओसिअत ।	द्वितीयम् दुइअं ।—
आनीतम् आणिअ ।	प्रदीपितम् पलिविअ ।
गभीरम् गहिर ।	प्रसीद पसिअ ।
जीवतु जिवउ ।	वल्मीक वम्मिओ ।
तदानीम् तयाणिं ।	व्रीडितम् विलिअं ।
तृतीयम् तइअं ।	शिरीष सिरिसो ।

वैकल्पिक—

अलीकम्	अलिअं,	अलीअ ।
उपनीतम्	उवणिअ,	उवणीअं ।
करीष	करिसो,	करीसो ।
जीवति	जिवइ,	जीवइ ।
पानीयम्	पाणिअं,	पाणीअं ।

(घ) ई=उ—

जीर्णम् जुण्ण,[1] जिण्ण ।

(ङ) ई=ऊ—

तीर्थम् तूह[2]

---

१ जुण्ण (जीर्ण)

२ तीर्थ शब्दनुं तूह रूप हेना 'थ' नो 'ह' थया पछी ज थाय छे, अन्यथा- तित्थ ।

वैकल्पिक—

विहीनः विहूणो, विहीणो।
हीन. हूणो, हीणो।

(च) ई=ए—

आपीड. आमेलो। ईदृश एरिसो।
कीदृश. केरिसो। पीयूषम् पेऊस।
विभीतक. वहेडओ।

वैकल्पिक—

नीडम् नेडं, नीडं।
पीठम् पेढ, पीढ।

५२ उ-विकार

(क) [1]उ=अ—

नीचेना शब्दोमां चिह्नित 'उ' नो 'अ' थाय छे–ते क्यांय नित्ये अने क्याय विकल्पे थाय छे:

अगुरु अगरु।
गुडूची गलोइ। मुकुल मउलो।
गुर्वी गरुई। मुकुलम् मउल।
मुकुटः मउडो। युधिष्ठिर, जहुट्ठिलो।
मुकुरम् मउर। सौकुमार्यम् सोअमल्लं।

वैकल्पिक—

उपरि अवरिं, उवरिं। गुरुकः गरुओ, गुरुओ।

(ख) उ=इ—

[2]पुरुष पुरिसो। पौरुषम् पउरिस। भ्रुकुटि. भिउडी।

---

१ मुकुलम् मकुल (पाली प्र० पृ० ५३–उ=अ)
२ पाली प्र० पृ० ५४ (उ=इ)

(ग) उ=ई—

मुतम् छीअ।

(घ) उ=ऊ—

दुर्भग दूहवो, दुहओ। दुस्सह दूसहो, दुस्सहो।
मुसलम् मूसलं मुसलं। सुभग सूहवो, सुहओ।

(च) उ=ओ—

कुतूहलम् कोउहल्लं, कुऊहल्लं।

१२ ऊ–विकार

(क) ऊ=अ—

दुकूलम् दुअल्लं, दुऊल्लं। सूक्ष्मम् [३]सण्हं, सुण्हं।

(ख) ऊ=इ—

नूपुरम् निउरं, नूउरं।

(ग) ऊ=ई—

उद्व्यूढम् उव्वीढं, उव्वूढं।

(घ) ऊ=उ—

नीचेना शब्दोमां 'ऊ' नो 'उ' थाय छे–ते क्यांय नित्ये अने क्यांय विकल्पे थाय छे

कण्डूयते कंडुअइ। भ्रू भुमया।
कण्डूया कंडुया। वातूल वाउलो।
कण्डूयनम् कंडुयण। हनूमान् हणुमंतो।

---

१ पाली प्र० पृ ८४ (उव्वीढो)

२ पाली प्र० पृ० ८८ (ऊ=अ) सरखावो भ्रूकुटिः भ्रुकुटिः। भ्रूकुटिः भ्रकुटिः।

३ सूक्ष्म अर्थने सूचवता 'श्लक्ष्ण' शब्द उपरथी 'सण्ह' रूपने उपजावु विशेष सरल लागे छे–(श्लक्ष्णं सूक्ष्मं दभ्रं कृशं तनु ६१ अमरकोश तृतीयकाण्ड)

४ अही 'कण्डूय' धातुना बधां रूपो समजवानां छे

वैकल्पिक—

कुतूहलम् कोउहल्लं, कोऊहल।

मधूकम् महुअं, महूअ।

(ङ) ऊ=ए—

नूपुरम् नेउर, नूउरं।

(च) ऊ=ओ—

नीचेना शब्दोमां 'ऊ' नो 'ओ' थाय छे–ते क्याय नित्ये अने क्यांय विकल्पे थाय छे:—

[1]कूर्परम् कोप्पर। ताम्बूलम् तंबोलं।
कूष्माण्डी कोहण्डी। तूणीरम् तोणीर।
[2]गुडूची गलोई। मूल्यम् मोल्ल।
स्थूलम् थोर।

वैकल्पिक—

तूणम् तोण, तूणं। स्थूणा थोणा, थूणा।

९४ ऋ—विकार

(क) ऋ=आ—

कृशा कासा, किसा। मृदुत्वम् माउक्कं, मउत्तण।
मृदुकम् माउक्क, मउअ।

(ख) [3]ऋ=इ—

नीचेना शब्दोमा 'ऋ' नो 'इ' थाय छे–ते क्याय नित्ये अने क्याय विकल्पे थाय छे:

उत्कृष्टम् उक्किट्ठ। ऋद्धिः इद्धी। ऋषि इसी।

---

१ कूर्पर कप्परो (पाली)

२ गुडूची गोळोची—पाली प्र० पृ० ५५ (उ=ओ)

३ पाली प्र० पृ० २ (ऋ=इ)

कृच्छ्रम् किच्छं । कृति किई । कृसि किसी । कृत्या किच्चा । कृपः किवो । कृपण किविणो । कृपा किवा । कृपाणम् किवाणं । कृश किसो । कृशानु किसाणू । कृपितः किसिओ । कृसरा किसरा । गृष्टि गिट्टी । गृद्धि गिद्धी । घुसणम् घुसिणं । घृणा घिणा । तृणम् तिणं । दृष्टम् दिट्ठं । दृष्टि दिट्ठी । धृति धिई । नप्तृक नत्तिओ । नृप निवो । नृशंस निसंसो । पृथक् पिहं । पृथ्वी पिच्छी । भृशित भिसिओ । भृङ्ग भिंगो । भृङ्गार भिंगारो । भृगु भिऊ । मातृ माई (मातृणाम् माईणं) मृदङ्ग मिइंगो । मृष्टम् [1]मिट्ठं । वितृष्ण, विइण्हो । वृश्चिक विछुओ । वृषम् विसं । वृषि विसी । वृद्धकवि विद्धकई । वृष्ट विट्ठो । वृष्टि विट्ठी । वृसी विसी । व्याहृतम् वाहिअं (च) । शृगाल सिआलो । शृङ्गार सिंगारो । सकृत् सइ । समृद्धि समिद्धी । सृष्टम् सिट्ठं । सृष्टि सिट्ठी । स्पृहा छिहा । हृतम् हिअं । हृदयम् हिअयं । ८

वैकल्पिक—

घृष्ट घिट्ठो, घट्टो । पृष्टम् [1]पिट्ठं, पेट्ठं । [पृष्टि पिट्ठी, पट्ठी] बृहस्पति बिहप्फई, बहप्फई । मसृणम् मसिणं, मसणं । [2]मातृगृहम् माइहरं, माउहरं । मातृमण्डलम् माइमण्डलं, माउमंडलं । मातृष्वसा माइसिआ, माउसिआ । मृगाङ्क मिअंको । मयंको ।

---

[1] आ शब्दो, रहने सूचवे छे कीते रुप एस सिवाय बीजा प्रथमा ए रूप बरायर नथी।

२ आ शब्द समासमां पूर्वपद पारिके मराया छे, उत्तरपद वारिके नवी बरावर्र मतिगृहम्—मईहरं(च) छे।

३ त्यारे मातृ शब्द गौण होय त्यारे त्यारे मनेरां रुपां शबदोमां तेमां ऋ नो उ अने इ थाय छे

मृत्यु· मिच्चू, मच्चू । वृद्धः विद्धो, वुड्ढो । वृन्तम् विंटं, वेंट । शृङ्गम् सिंग, सग ।

(ग) [1]ऋ=उ—

नीचेना शब्दोमा 'ऋ' नो 'उ' थाय छेः

ऋजु उज्जू । ऋतु उऊ । ऋषभः उसहो । जामातृक. जामाउओ । नप्तृक· नत्तुओ । निभृतम् निहुअ । निवृतम् निउअ । निर्वृतम् निव्वुअ । निर्वृति निव्वुई । परभृतः परहुओ । परामृष्ट. परामुट्ठो । पितृकः पिउओ । पृथक् पुहं । पृथिवी पुहई । पृथ्वी पुहुवी । प्रभृति पहुडि । प्रवृत्तिः पउत्ती । प्रवृष्ट पउट्ठो । प्राभृतम् पाहुड । प्रावृत· पाउओ । प्रावृष् पाउसो । भृति भुई । भ्रातृक भाउओ । मातृक. माउओ । मातृका माउआ । मृणालम् मुणाल । मृदङ्ग मुइंगो । वृत्तान्त वुत्तंतो । वृद्ध· वुड्ढो । वृद्धि वुड्ढी । वृन्दम् वुंद । वृन्दावन वुंदावणो । विवृतम् विउअ । वृष्ट वुट्ठो । वृष्टि वुट्ठी । स्पृष्ट पुट्ठो । संवृतम् संवुअ । इत्यादि ।

वैकल्पिक—

निवृत्तम् निउत्तं, निअत्तं । बृहस्पतिः बुहप्फई, बहप्फई । मृषा मुसा, मोसा । वृन्दारका. वुंदारया, वंदारया । वृषभ, उसहो, वसहो ।

(घ) ऋ=ऊ—

मृषा मूसा, मुसा । (वै०)

(ङ) [2]ऋ=ए—

वृन्तम् वेंट, विंट । (,,)

---

१ पाली प्र० पृ० २ (ऋ=उ)

२ पाली प्र० पृ० ३ (ऋ=ए) टिप्पण ।

(च) ऋ=ओ—

मृषा मोसा, मुसा। वृन्तम् वोंट विंट। (वै०)

(छ) ऋ=अरि—

दृप्त दरिओ।

(ज) ऋ=ढि—

आदृत आढिओ।

(झ) ऋ=रि—

नीचेना शब्दोमां 'ऋ' नो 'रि' थाय छे—ते क्यांय नित्ये अने क्यांय विकल्पे थाय छे

[1]अन्यादृश अन्नारिसो। अन्यादृक्ष अन्नारिच्छो। अन्यादृक् अन्नारि। अमूदृश अमूरिसो। अमूदृक्ष अमूरिच्छो। अमूदृक् अमूरि। अस्मादृश अम्हारिसो। अस्मादृक्ष अम्हारिच्छो। अस्मादृक् अम्हारि। ईदृश एरिसो। ईदृक्ष एरिच्छो। ईदृक् एरि। एतादृश एआरिसो। एतादृक्ष एआरिच्छो। एतादृक् एआरि। कीदृश केरिसो। कीदृक्ष केरिच्छो। कीदृक् केरि। तादृश तारिसो। तादृक्ष तारिच्छो। तादृक् तारि। भवादृश भवारिसो। भवादृक्ष भवारिच्छो। भवादृक् भवारि। यादृश जारिसो। यादृक्ष जारिच्छो। यादृक् जारि। युष्मादृश तुम्हारिसो। युष्मादृक्ष तुम्हारिच्छो। युष्मादृक् तुम्हारि। सदृश सरिसो। सदृक्ष सरिच्छो। सदृक् सरि।

[illegible]—

ऋजु रिजु उजु। ऋणम् रिण, अण। ऋतु रिउ, उउ। ऋषभ रिसहो उसहो। ऋषि रिसी इसी।

१ [illegible]

ऋ=इ—

(१) उपर्युक्त 'अस्मादृश' थी माडी 'सदृक्' सुधीना बधा शब्दोना 'दृ' ना 'ऋ' नो पैशाचीमा 'इ' थाय छे:

अस्मादृशः	अम्हारिसो	अम्हादिसो–अम्हातिसो ।
अन्यादृश	अन्नारिसो	अञ्ञातिसो ।
ईदृश	एरिसो	एतिसो ।
कीदृशः	केरिसो	केतिसो ।
तादृशः	तारिसो	तातिसो ।
भवादृशः	भवारिसो	भवातिसो ।
यादृशः	जारिसो	जातिसो ।
युष्मादृश.	तुम्हारिसो	तुम्हातिसो
सदृशः	सरिसो	सतिसो

५५ ए—विकार

(क) ए=इ—

केसरम् किसर, केसर । चपेटा चविडा, चवेडा । देवरः दिअरो, देवरो । वेदना विअणा, वेअणा । (वै०)

(ख) ए=ऊ—

स्तेनः थूणो, थेणो । (वै०)

५६ ऐ–विकार—

(क) ऐ=अअ—

उच्चैस् उच्चअ । नीचैस् नीचअ ।

---

१ जूओ पृ० १२ (त, द–त)

२ पालीमा कोइ ठेकाणे 'ए' नो 'ओ' थाय छे. द्वेषः=दोसो– (पा० प्र० पृ० ५५–ए=ओ)

(ख) [1]ऐ=इ—

शनैश्चर सणिच्छरो। सैन्धवम् सिंधव।

सैन्यम् सिन्न, सेन्न। (वै०)

(ग) [2]ऐ=ई—

धैर्यम् धीरं।

चैत्यवन्दनम् चीवन्दण चेइयवंदण। (वै०)

(घ) ऐ=अइ—

नीचेना शब्दोमां 'ऐ' नो 'अइ' थाय छे

ऐश्वर्यम् अइसरिअ। कैतवम् कइअव। चैत्यम् चइत्त। दैत्य दइच्चो। दैन्यम् दइन्न। दैवतम् दइअव। भैरव भइरवो। वैश्रवण वइसमणो। वैतालीयम् वइआलीअ। वैदर्भ वइदब्भो। वैदेश वइएसो। वैदेह वइएहो। वैशाख वइसाहो। वैशाल वइसालो। वैश्वानरः वइस्साणरो। स्वैरम् सइरं। इत्यादि

वैकल्पिक—

कैरवम् कइरव, केरव। कैलास कइलासो, केलासो। चैत्र चइत्तो, चेत्तो। दैवम् दइव्वं, देव्वं। वैतालिकः वइआलिओ, वेआलिओ। वैरम् वइरं, वेरं। वैशम्पायन वइसंपायणो, वेसपायणो। वैश्रवण वइसवणो, वेसवणो। वैशिकम् वइसिअ, वेसिअं। इत्यादि

५७ ओ-विकार—

(क) ओ=अ—

वैकल्पिक—

अन्योन्यम् अन्नुन्नं, अन्नुन्न। आतोद्यम् आवज्ज, आउज्ज। प्रकोष्ठ पवट्ठो, पउट्ठो। मनोहरम् मणहरं, मणोहरं।

---

१ पाली प्र पृ ४ (ऐ=इ) २ पाली प्र पृ ४ (ऐ=ई)

१ ज्यारे आ बे शब्दमां [illegible] नो अ थाय छे त्यारे ज तेमां त अने 'क' नो 'व' पण थाय छे

शिरोवेदना	सिरविअणा,	सिरोविअणा।
सरोरुहम्	सररुहं,	सरोरुहं।

(ख) ओ=ऊ—

सोच्छ्वास' सूसासो।

(ग) ओ=अउ, आअ—

ओ=अउ—गोकः गउओ। गोकाः गउआ। गो गउ-गऊ।

ओ=आअ—गो गाअ-गाओ (पुंलिंग)

गो गाअ-गाई (स्त्रीलिंग)

५८ औ-विकार—

(क) औ=अउ—

नीचेना शब्दोना 'औ' नो 'अउ' थाय छे:

कौक्षेयकम्	कउच्छेअयं।	पौरः	पउरो।
कौरव	कउरवो।	पौरुषम्	पउरिसं।
कौलः	कउलो।	मौनम्	मउण।
कौशलम्	कउसल।	मौलिः	मउली।
गौडः	गउडो।	सौधम्	सउह।
गौरवम्	गउरवं।	सौराः	सउरा।

(ख) [1]औ=आ—

गौरवम् गारवम्

---

१ पाली प्र० पृ० ५ (औ=आ) टिप्पण. पालीमा कोई कोई ठेकाणे 'औ' नो 'अ' पण थाय छे: (औ=अ)-पाली प्र पृ० ५ टिप्पण.

(ग) [1]औ=उ

नीचेना शब्दोमां 'औ' नो 'उ' थाय छे

दौवारिक दुवारिओ। पौलोमी पुलोमी । मौञ्जायन मुंजायणो । शौण्ड सुडो । शौद्धोदनि सुद्धोअणी । सौगन्ध्यम् सुगन्धत्तण । सौन्दर्यम् सुंदेर । सौवर्णिक सुवण्णिओ ।

कौक्षेयकम् कुच्छेअय, कोच्छेअय । (वै०)

(घ) औ=आव—

नौ नावा ।

---

१ जुओ प्र० पृ० ४-(आ=उ)

प्रकरण ६

असंयुक्त व्यंजनोना विशेष फेरफारो

५९ क-विकार—

[1]क=ख—

कर्परम् खप्पर । कील: खीलो ।
कीलक: खीलओ । [2]कुब्ज. खुज्जो ।

[3]क=ग—

अमुकः अमुगो । [2]कन्दुकम् गेंदुअं ।
असुक. असुगो । तीर्थंकर· तित्थगरो ।
आकर्ष: आगरिसो । दुकुलम् दुगुल्लं ।
आकार आगारो । मदकल. मयगलो ।
उपासक. उवासगो । मरकतम् मरगयं ।
एक. एगो । श्रावकः सावगो ।
एकत्वम् एगत्त । लोक. लोगो ।

क=च—

[4]किरात. चिलाओ ।

क=भ—

शीकर सीभरो, सीअरो । (वै०)

क=म—

चन्द्रिका चंदिमा ।

---

१ पाली प्र० पृ० ५५ (क=ख)

२ 'खुज्ज' शब्द 'कुबडा' अर्थमा ज वपराय छे

३ पाली प्र० पृ० ५५ (क=ग)

४ 'चिलाअ' शब्द 'भिल्ल' अर्थमा ज वपराय छे.

क=व—

[1]प्रकोष्ठ पवट्ठो, पउट्ठो।

क=ह—

चिकुर चिहुरो। निकष निहसो। स्फटिक फलिहो।

शीकर सीहरो, सीअरो। (वै०)

६० ख–विकार—

ख=क—

शृङ्खलम् सकलं। शृङ्खला सकला।

६१ ग–विकार—

ग=म—

पुंनागानि पुंनामाइं। भागिनी भामिणी।

ग=ख—

छाग छालो। छागी छाली।

ग=व—

दुर्भग [2]दूहवो। सुभग सूहवो।

६२ घ–विकार—

घ=ज—

पिशाची पिसाजी, पिसाई। (वै०)

च=ल—

आकुञ्चनम् आउण्टणं।

च=ज—

पिशाच पिसल्लो, पिसाओ। (वै०)

---

१ जुओ पृ. ९ –टिप्पण ३।

२ ज्यारे 'दु'नो 'दू' अने 'सु'नो 'सू' थतो नथी त्यारे 'ग'नो 'व' पण थतो नथी–जुओ उ–विकार (५) उ=ऊ पृ. ५४

३ पाली प्र. पृ. ५६ (च=ज)

च=स—

खचितः खसिओ, खइओ। (वै०)

६३ ज-विकार

ज=झ—

जटिलः झडिलो, जडिलो। (वै०)

६४ ट-विकार

ट=ड—कैटभः केढवो। शकटः सयढो। सटा सढा।

[1]ट=ल—स्फटिकः फलिहो।

चपेटा चविला, चविडा। (वै०)

[2]पाटयति फालेइ, फाडेइ। „

६५ ठ-विकार

ठ=ल—अङ्कोठ. अंकोल्लो।

अङ्कोठतैलम् अकोल्लतेल्लं।

ठ=ढ—पिठर पिहडो, पिढरो (वै०)

६६ ण-विकार

[3]ण=ल—वेणु. वेलू, वेणू। (वै०)

६७ त-विकार

त=च— तुच्छम् चुच्छ।

त=छ— तुच्छम् छुच्छ।

त=ट—तगर. टगरो। तूबर टूबरो। त्रसर टसरो।

---

१ पाली प्र० पृ० ५८–(ट=ल) पालीमा केटलेक ठेकाणे 'ट'नो 'ळ' पण थाय छे –(ट=ळ पृ० ५८)

२ अहीं 'पाटि' धातुना बधा रूपो समजवाना छे

३ पाली प्र० पृ० ५८ (ण=ळ) वेणु =वेळु–पाली

त=ड—

नीचेना शब्दोमां 'त' नो 'ड' थाय छे—ते क्यांय नित्य अने क्यांय विकल्पे थाय छे —

पताका पडाया।
¹प्रति पडि।

[प्रतिकरोति पडिकरइ। प्रतिनिवृत्तम् पडिनिअत्तं। प्रतिपत् पडिवया। प्रतिपन्नम् पडिवन्न। प्रतिभास पडिहासो। प्रतिमा पडिमा। प्रतिश्रुत् पडंसुआ। प्रतिसारः पडिसारो। प्रतिस्पर्धी पाडिप्फद्धी। प्रतिहासः पडिहासो। प्रतिहार पडिहारो।]

प्रभृति पहुडि। मृतकम् मडयं।
प्राभृतम् पाहुड। व्यापृत वावडो।
बिभीतक बहेडओ। सूत्रकृतम् सुत्त (सूअ) गड।
हरीतकी हरडई। इत्यादि

वैकल्पिक—

अवहृतम्	अवहडं,	अवहयं।
अपहृतम्	ओहड,	ओहय।
आहृतम्	आहड,	आहयं।
कृतम्	कड,	कय।
दुष्कृतम्	दुक्कड	दुक्कयं।
मृतम्	मडं,	मय।
वेतस	वेडिसो	वेअसो।
सुकृतम्	सुकड	सुकयं।

¹ [illegible] पृ. ५८

त=ण—

अतिमुक्तकम् अणिउँतय। गर्भितः गब्भिणो।

त=र—

सप्ततिः सत्तरी।

त=ल—

अतसी अलसी। सातवाहन. सालवाहणो।

सातवाहनी सालआहणी— सालाहणी।

वैकल्पिक—

पलितम् पलिलं, पलिअ।

त=व— आतोद्यम् आवज्ज, आउज्ज।

पीतलम् पीवल, पीअल।

त=ह—

[2]वितस्ति. विहत्थी।

वैकल्पिक—

कातर काहलो, कायरो।

भरत भरहो, भरओ।

मातुलिङ्गम् माहुलिंग, माउलिंग।

वसति. वसही, वसई।

६८ थ-विकार

थ=ढ—

प्रथमः पढमो। मेथि मेढी। शिथिरः (लः) सिढिलो।

वैकल्पिक—

निशीथ. निसीढो, निसीहो।

[3]पृथिवी पुढवी, पुहवी।

---

१ जुओ पृ० ६०, २ टिप्पण।

२ वितस्ति विदत्थि—(त=द) पाली प्र० पृ० ५९

३ पृथिवी पठवी—(थ=ठ) पाली प्र० पृ० ५९

थ=ध—

पृथक् पिधं, पिहं।

१९ द-विकार

[1]द=ड—

[2]दश डस इत्यादि

दह डह इत्यादि

वैकल्पिक—कदनम् कडण, कयण। दग्ध डड्ढो, दड्ढो। दण्ड डंडो, दंडो। दम्भ डम्भो, दम्भो। दर्भ डमो, दब्भो। दष्ट डट्ठो दट्ठो। दर डरो, दरो। दशनम् डसण, दसणं। दाह डाहो, दाहो। दोला डोला, दोला। दोहद डोहलो, दोहलो।

द=ध—दीप्[3] धीप् दीप्। दीप्यते धिप्पइ, दिप्पइ। (वै०)

(क) द=र—संख्यावाचक शब्दना अनादिभूत, असंयुक्त अने एकपदस्थित एवा 'द' नो 'र' थाय छे

एकादश एआरह। द्वादश बारह। त्रयोदश तेरह।

(ख) द=ल—कदली करली। गद्गदम् गग्गरं।

[4]द=ल—प्रदीपयति पलीवेइ। प्रदीप्तम् पलित्तं। दोहद दोहलो।

कदम्ब कलम्बो, कयम्बो। (वै०)

द=व—कदर्थित कवट्टिओ।

द=ह—ककुदम् कउहं।

---

१ पा। प्र पृ ७९-(द=ड)

२ अहीं आ बन्ने धातुना बधां रूपो समजवानां छे

३ अहीं दीप् धातुना बधा रूपो समजवानां छे

४ आ शब्दनो अग कठ थयो नथी

पासी प्र पृ १ -(द=ल-दोहद: दोहला)

५ अहीं प्रदीप् धातुनां बधां रूपो समजवानां छे

७० ध-विकार

ध=ढ— निषधः निसढो ।

औषधम् ओसढ, ओसह । (वै०)

७१ न-विकार

न=ण्ह—नापित. ण्हाविओ, नाविओ । (वै०)

[1]न=ल—निम्ब. लिंबो, निंबो । (वै०)

७२ प-विकार

[2]प=फ—पनसः फणसो । परिघ. फलिहो । परिखा फलिहा । परुष फरुसो । [3]पाटि फाडि । [पाटयति फाडेइ इत्यादि] पारिभद्र फालिहद्दो ।

प=म—आपीडः आमेलो, आवेडो । नीपः नीमो, नीवो । (वै०)

प=व—प्रभूतम् वहुत्त ।

प=र—पापर्द्धिः पारद्धी ।

७३ ब-विकार

[4]ब=भ—बिसिनी भिसिणी ।

ब=म—कबन्धः कमन्धो ।

ब=य—कबन्धः कयन्धो । (वै०)

७४ भ-विकार.

भ=व—कैटभः केढवो ।

---

१ पाली प्र० पृ० ६१—(न=ल)

२ पाली प्र० पृ० ४०—(प=फ) परुष.—फरुसो (पाली)

३ अहीं 'पाट' धातुना बधा रूपो समजवाना छे.

४ पाली प्र० पृ० ६२—(ब=भ)

७१ म-विकार

म=व—विषम विसवो, विसमो। (वै०)

म=व—मन्मथ वम्महो।

अभिमन्यु अहिवन्नू, अहिमन्नू। (वै०)

म=स —भ्रमर भसलो, भमरो। (वै०)

७६ म-अनुनासिक

नीचेना शब्दोमां 'मु' ना 'म' नो लोप थाय छे अने 'म'नो लोप थया पछी शेष रहेल ('मु' ना) 'उ' ने स्थाने अनुनासिक 'उ' (उँ) थाय छे

अतिमुक्तकम अणिउँतयं। कामुक काउँओ।

चामुण्डा चाउँण्डा। यमुना जउँणा।

७७ य-विकार

य=आह—कतिपयम् कइवाहं।

य=ज्ज—उत्तरीयम् उत्तरिज्जं, उत्तरीअं। (वै०)

तृतीय तइज्जो, तइओ। द्वितीय बिइज्जो, बीओ। (वै०)

य=ह—युष्मदीयः तुम्हकेरो। युष्मादृश —तुम्हारिसो। 'युष्मद्–तुम्ह। इत्यादि।

'य=ल—यष्टि लट्ठी।

ये-व—कतिपयम्–कइअव (वै)

---

१ कतिपयादि शब्दमां य नो [illegible] पण थइ जाय छेः [illegible] —[illegible]— [पाली [illegible]]

२ आ [illegible] युष्मद् शब्दना य नो [illegible] स्थाने [illegible] छेः [illegible]—[illegible] [illegible]

३ पाली प्र० पृ० ६३–(य=ल)

४ पाली प्र० पृ० ६१–(य–व)

य=ह—छाया [1]छाही, छाया । सच्छायम् सच्छाहं, सच्छायं (वै०)

७८ र-विकार

र=ड—किरि किडी । [2]पिठर. पिहडो । भेर भेडो ।

र=डा—पर्याणम् पडायाणं, पल्लाण ।

र=ण —करवीर· कणवीरो ।

[3]र=ल—नीचेना शब्दोमां 'र' नो 'ल' थाय छे-ते क्याय नित्ये अने क्याय विकल्पे थाय छे.

अपद्वारम् अवद्दालं ।	भ्रमर[4]. भसलो ।
अङ्गार इगालो ।	मुखर मुहलो ।
करुण कलुणो ।	युधिष्ठिर जहुट्ठिलो ।
कातर काहलो ।	रुग्ण लुक्को ।
किरात चिलाओ ।	वरुणः वलुणो ।
चरणः चलणो ।	शिथिर सिढिलो ।
दरिद्र दलिद्दो ।	सत्कार सक्कालो ।
दरिद्राति दलिद्दाइ ।	सुकुमार सोमालो ।
दारिद्र्यम् दालिद्दं ।	स्थूर थूलो ।
परिखा फलिहा ।	स्थूरभद्र थूलभद्दो ।
परिघ फलिहो ।	हरिद्र. हलिद्दो ।
पारिभद्र फालिहद्दो ।	हरिद्रा हलिद्दा । इत्यादि

---

१ आ शब्दनो अर्थ 'शोळे के 'छायो ' ज थाय छे

२ 'पिठर' शब्दनु रूप 'पिहड थाय छे, पण 'पिढड' थतु नथी —जुओ पृ० ६५ (ठ=ड)

३ सरखावो मागधी र--ल (पृ० २६)

४ 'भ्रमर शब्दनु रूप ' भसल ' थाय पण ' भमल ' न थाय.

वैकल्पिक—

मठरम्	मढरं,	मढर।
निष्ठुर	निठ्ठुरो,	निट्ठुरो।
मत्सर	मच्छलो,	मच्छरो।

७९ ल-विकार

[1]ल=ण—नीचेना शब्दोमां आदिना 'ल'नो नित्ये अने विकल्पे ण' थाय छे
ललाटम् णलाडं, [2]णिलाड।

वैकल्पिक—

लाङ्गलम्	णङ्गलं,	लंगलं।
लाङ्गूलम्	णङ्गूलं,	लंगूलं।
लाहल	णाहलो,	लाहलो।

ल=र—स्थूलम् थोर।

८ व-विकार

व=भ—विह्वल भिब्भलो, विब्भलो, विहलो[4]। (वै०)
व=म—शबर समरो। वैश्रवण वेसमणो
नीवी नीमी, नीवी। स्वप्न सिमिणो, सिविणो (वै०)

८१ श-विकार

श=छ—शमी छमी। शाव छावो।
शिरा छिरा, सिरा (वै०)

---

१ पाली प्र पृ ६१ (ल=न)—ललाटम् नलाटं।
२ सरखावो पृ ४५ (अ=इ)
३ लाङ्गलम नाङ्गल पाली [पृ १०
४ विह्वल शब्दनुं विहल रूप पण नथी—जुओ ह्व=भ पाली प्र पृ ६२—(ह=ज) थाय छे।

श=ह—एकादश एआरह, एआरस। दश दह, दश। दशबल: दहबलो, दसबलो। दशमुख. दहमुहो, दसमुहो। दशरथ दहरहो, दसरहो। द्वादश बारह, बारस। त्रयोदश तेरह, तेरस इत्यादि।

८२ ष–विकार

[1]ष=छ—[2]षट् छ [षट्पद. छप्पओ। षण्मुहो छमुहो। षष्ठ छट्ठो। षष्ठी छट्ठी]

ष=ण्ह—स्नुषा सुण्हा, सुसा[3]। (वै०)

ष=ह—पाषाण. पाहाणो, पासाणो। प्रत्यूष. पच्चूहो, पच्चूसो (वै०)

८३ स–विकार

स=छ—सप्तपर्ण छत्तिवण्णो। सुधा छुहा।

स=ह—दिवस दिवहो, दिवसो। (वै०)

८४ ह–विकार

ह=र—उत्साह[4]. उत्थारो, उच्छाहो।

८५ लोप

नीचेना शब्दोमा नीचे जणावेला व्यजनोनो लोप विकल्पे थाय छे:

'क' लोप—प्राकार पारो, पायारो।

व्याकरणम् वारण, वायरण।

'ग' लोप—आगत आओ, आगओ

---

१ पाली प्र० पृ० ६४–(ष=छ) षट् छ।

२ अहीं 'षट्' शब्दना बधा रूपो समजवाना छे

३ जूओ पृ० ४१ 'स्न-सिन' अने एनु टिप्पण।

४ 'उत्साह' शब्दनु 'उच्छार' रूप थाय नहि

'म' लोप—दनुम दणू, दणुभो । दनुजवध दणुवहो, दणुभवहो।
भाजनम् भाण, भायण । राजकुलम् राउलं, रायउलं ।
'द' लोप—उदुम्बर उम्बरो उउंबरो । दुर्गादेवी दुग्गावी,
दुग्गादे (ए) वी । पादपतनम् पावडण, पायवडण ।
पादपीठम् पावीढ, पायवीढ ।
'य' लोप—किसलयम् किसल किसलय।
कालायसम् कालास, कालायसं ।
हृदयम् हिअ, हिअय। सहृदय सहिओ, सहिअयो ।
'व' लोप—

अवट अडो, अवडो । आवर्तमान अत्तमाणो, आवत्तमाणो । एवमेव एमेव, एवमेव। जीवितम् जीअ, जीविअ। तावत् ता, ताव। देवकुलम् देउल, देवउल । प्रावारक पारओ, पावारओ । यावत् जा, जाव ।

लोप—

केटलेक ठेकाणे शब्दना आदि व्यञ्जननो पण लोप थई जाय छे

च भ । चिह्नम् इंध । पुन उणो इत्यादि ।

प्रकरण ७

संयुक्त व्यंजनोना विशेष फेरफार

[सूचना —आ नीचे संयुक्त व्यंजनोना विशेष फेरफारोने आपवामां आवे छे अने साथे जे जे शब्दोना वैकल्पिक बब्बे रूपो थाय छे तेओनुं बीजुं रूप लक्ष्यमां रहे ए माटे तेने पण अहीं आवा [ ] कौंसमां जणावी दीधुं छे.]

८६ क्क

(क) [1]क्त=क्क—

मुक्त मुक्को [मुत्तो]। शक्त सक्को [सत्तो]।

(ख) ग्ण=क्क —

[2]रुग्ण लुक्को [लुग्गो]।

(ग) त्व=क्क—

मृदुत्वम् माउक्कं [माउत्तणं]।

(घ) ष्ट=क्क—

दष्टः डक्को [डट्ठो]।

८७ क्ख, ख

(क) क्ष्ण=क्ख—

तीक्ष्णम् तिक्खं, [तिण्हं]।

(ख) स्त=ख—

स्तम्भ खंभो [थंभो]

---

१ पाली प्र० पृ० ४१ (टिप्पण)

२ रुग्ण. लुग्गो (पाली प्र० पृ० ४९ टिप्पण ग्ण=ग्ग)

३ जुओ पृ० ४०—३ टिप्पण

(ग) स्थ=स्थ—

स्थाणु　　साणू।

(घ) स्फ=स्व—

स्फेटक　　खेडओ।

स्फेटिक　　खेडिओ।

स्फोटक　　खोडओ।

८८ स्म, ह्म

(क) स्म=म्ह—

स्मर　　रम्हो　　[रम्भो]

(ख) ल्क=ङ्क—

शुल्कम्　　सुङ्कं,　　(चुंगी हिं०) [सुक्क]

८९ च्छ

(क) त्स=च्छ—

कृत्सि　　किच्छी।

(ख) थ्य=च्छ—

तथ्यम्　　तच्छ　　[तच्च]

९० त्थ, छ

(क) स्थ=छ—स्थगितम् छइअं [थइअ]

(ख) स्प=छ—स्पृहा छिहा।

(ग) स्प=च्छ—निस्पृह निच्छिहो [निप्पिहो]।

९१ ज्ज, झ

[1]न्य=ज्ज, झ—

अभिमन्य अहिमन्झ अहिमन्नू [अहिमञ्जू]

---

१ [illegible] महादय म सुलदता हाप त्यारे सेम्रु णाणु में घदल पातु रूप पाय ८।

२ [illegible] (पाली प्र [illegible] १ —टिप्पण)

१ [illegible] ([illegible]—पाली प्र० पृ० ११)

९२ ज्झा

न्ध=ज्झा—

(धातु) इन्ध् इज्झा (समिन्ध् समिज्झाइ। वि+इन्ध् विज्झाइ)

९३ ञ्चु

श्चि=ञ्चु--

[1]वृश्चिक. विञ्चुओ, [विछिओ]

९४ ट्ट

(क) [2]र्त=ट्ट—पत्तनम् पट्टण। मृत्तिका मट्टिआ।

वृत्त वट्टो।

(ख) र्थ=ट्ट—कदर्थित कवट्टिओ।

(ग) स्त=ट्ट—पर्यस्त. पल्लट्टो।

९५ ट्ठ, ठ

(क) र्थ=ट्ठ—

[3]अर्थ [4]अट्ठो [अत्थो]

चतुर्थ चउट्ठो [चउत्थो]

(ख) स्त=ठ—

स्तम्भ्यते ठंभिज्जइ।

[5]स्तब्धः ठड्ढो [थद्धो]

---

१ वृश्चिक विच्छिको (पाली)

२ पाली प्र० पृ० ५८–(त=ट)

३ अर्थः अत्थो, अट्ठो, अट्ठो–(पाली प्र० पृ० १० टिप्पण)

४ 'अट्ठ' शब्दनो प्रयोग 'प्रयोजन' अर्थमा थाय छे अने 'अत्थ' शब्दनो 'धन' अर्थमा थाय छे.

५ स्तब्धः थद्धो। स्तम्भः थम्भो–(स्त=थ पाली प्र० पृ० २७)

स्तम्भ[1]	ठभ	(पाइ)
स्तम्भ[2]	ठभो।	
स्त्यानम्	ठीण।	[थीण]

(ग) [3]स्थ=ठ—विसंस्थुलम् विसंठुल।

स्थ=ट्ठ— अस्थि[4] अट्ठि।

९६ ड्ड

(क) र्त=ड्ड—

गर्त	गड्डो।

(ख) र्द=ड्ड—

कपर्द	कवड्डो।	
गर्दभ	गड्डहो	[गद्दहो]
छर्द	छड्ड	(पाइ)
छर्दयति	छड्डेइ।	
छर्दि	छड्डी।	
मर्दित	मड्डिओ।	
विच्छर्द	विच्छड्डो।	
वितर्दि	विअड्डी।	
संमर्द	समड्डो।	

---

१ आ 'स्तम्भ' धातुनो अर्थ स्तम्भवाचक ज लेवानो छे

२ 'स्तम्भ' शब्दनो अर्थ पण 'स्तम्भ' धातुनी जेवो ज समजवानो छे

३ पाली प्र० पृ० २८–(स्थम्भ)

४ अट्ठि नहि (पाली प्र० पृ० २९–अट्ठि)

९७ [1]ड्ढ, ढ

नीचे जणावेला शब्दोमा सयुक्त 'ध' नो ड्ढ अने ढ थाय छे:—

(क) र्ध, द्ध, ग्ध, ब्ध=ड्ढ —

अर्धम्   अड्ढ   [अद्ध]

ऋद्धि.   इड्ढी,   [इद्धी]

दग्ध   दड्ढो ।

विदग्ध.   विअड्ढो

वृद्धः   वुड्ढो,   [विद्धो]

वृद्धिः   वुड्ढी ।

श्रद्धा   सड्ढा,   [सद्धा]

स्तब्धः   ठड्ढो ।

(ख) र्ध=ढ—मूर्धा मुढा, [मुद्धा]

९८ ण्ट, ण्ड, ण्ण

न्त=ण्ट—

[2]वृन्तम् वेण्ट (तालवृन्तम् तालवेण्ट)

न्द=ण्ट—

कन्दरिका कण्डलिआ ।

भिन्दिपाल भिण्डिवालो ।

(क) ञ्च=ण्ण—

पञ्चदश पण्णरह ।

पञ्चाशत् पण्णासा ।

---

१ पाली प्र० पृ० ४२—(द्ध=ड्ढ, र्ध=ड्ढ, ग्ध=ड्ढ)

२ वृन्तम्=वण्ट—(पाली प्र० पृ० ५८, न्त=ण्ट)

ष्म=प्फ, फ—

भीष्म भिप्फो।

श्लेष्मा[1] सेफो [सिलिम्हो]

स्म=प्प—

भस्म भप्पो [भस्सो]

१०२ ब्भ, म्ब, म्भ

र्ध्व=ब्भ—

ऊर्ध्वम् उब्भ [उद्ध]

म्र=म्ब—

आम्रम् अम्ब।

ताम्रम् तम्ब।

(क) श्म=म्भ—

कश्मीरा कम्भारा [कम्हारा]

(ख) ह्म=म्भ—

ब्राह्मण बम्भणो [बम्हणो]

ब्रह्मचर्यम् बम्भचेर [बम्हचेर]

१०३ र

(क) र्य=र—

आश्चर्यम् अच्छेर। तूर्यम् तूरं। धैर्यम् धीर, [धिज्ज] पर्यन्त पेरतो। [पज्जतो] ब्रह्मचर्यम् बम्हचेर। शौण्डीर्यम् सोंडीर। सौन्दर्यम् सुन्देर।

(ख) र्ह=र—

दशार्हः दसारो।

(ग) त्र=र—

धात्री धारी।

---

१ श्लेष्मा=सिलेसुमा, सेम्हो—(पाली प्र० पृ० ४९, म=उम्)

२ पाली प्र० पृ० १५—(म्र=म्ब नि० १८)

१०४ ल, ह

ष्ट=ह—

कूष्माण्डी कोहण्डी [कोहण्डी]

र्य=ह—

[1]पर्यस्तम् पल्हट्ट, [पल्हत्थ]

पर्याणम् पल्हाण।

सौकुमार्यम् सोअमल्ह।

१०५ स्स

[2]स्प=स्स—

बृहस्पति बहस्सई [बहप्फई]

वनस्पति वणस्सई [वणप्फई]

१०६ ह

(क) क्ष=ह— दक्षिण दाहिणो [दक्खिणो]

(ख) ख=ह — दुःखम् दुह [दुक्ख]

दुःखित दुहिओ [दुक्खिओ]

(ग) र्थ=ह— तीर्थम् तूह [तित्थ]

(घ) र्घ=ह— दीर्घ दीहो [दिग्घो]

(ङ) ष=ह— कार्षापण काहावणो।

(च) ष्प=ह— बाष्प बाहो

---

[1] पर्यस्तिका पल्हत्थिका—(पाली प्र पृ १६—टिप्पण)

[2] वनस्पति वनप्पति—(पाली प्र पृ ३ —स्प=प्प)

[3] पाली प्र पृ ८—नियम १ (ख)

[4] आ शब्द बे अर्थमां प्रसिद्ध छे—एक तो आंसु अने बीजो भाफ—बेमां ज्यारे ए भाफ—गरमी—नो वाचक होय त्यारे तेनुं बाह ने बदले बप्फ रूप थाय छे।

(छ) ष्म=ह– कुष्माण्डी कोहण्डी ।

कुष्माण्डम् कोहण्ड ।

१०७ द्विर्भाव

(क) नीचे जणाव्या प्रमाणे चिह्नित व्यंजनोनो द्विर्भाव थाय छे– ते क्याय नित्ये अने क्याय विकल्पे थाय छे —

ऋजु उज्जू । यौवनम् जुव्वंण ।
तैलम् तेल्ल । विचाकिलम् वेइल्ल ।
प्रभूतम् वहुत्त । व्रीडा विड्डा इत्यादि ।
प्रेम पेम्म ।
मण्डूक. मड्डूको ।

वैकल्पिक.—

अस्मदीयम्	अम्हक्केरं अम्हक्केर,	अम्हकेर ।
एक.	एक्को,	एओ ।
कर्णिकार	कण्णिआरो,	कणिआरो ।
कुतूहलम्	कोउहल्ल,	कोउहल ।
चिअ	[1]च्चिअ,	च्चिअ (एव)
चेअ	च्चेअ,	चेअ (एव)
तूष्णीक.	तुण्हिक्को,	तुण्हिओ ।
दैवम्	दइव्वं,	दइवं ।
नख	नक्खो,	नहो ।
निहितम्	निहित्तं,	निहिअ ।
नीडम्	नेड्ड,	नीड ।

---

१ 'चिअ' अने 'चेअ' ए बन्ने अवधारण सूचक अव्यय छे (हे० ८–२–१८४) अने संस्कृतमां वपराता 'चैव' साथे विशेष समानता धरावे छे–उच्चारना कारणने लीधे ए बन्ने 'चैव' माथी पण थइ शके छे।

मूक	मुक्को,	मूओ।
मृदुकम्	माउक्क,	माउअं।
व्याकुल	वाउल्लो,	वाउलो।
व्याहृत	वाहित्तो,	वाहिओ।
सेवा	सेव्वा,	सेवा।
स्रोतस्	सोत्त,	सोअ।
स्त्यानम्	थिण्णं,	थीण।
स्थूल	थुल्ल	थोरो।
स्थाणु	खण्णू	खाणू।
हृतम्	हुत्त,	हूअ इत्यादि।

(ख) समासमां आवेला उत्तरपदना आदिना व्यञ्जननो द्विर्भाव विकल्पे थाय छे –

आलान-स्तम्भ	आणाल-खम्भो,	आणाल-क्खम्भो।
कुसुम प्रकर	कुसुम-पयरो,	कुसुम प्पयरो।
दु-सह	दु-सहो,	दु-स्सहो।
देव-स्तुति	देव-थुई,	देव-त्थुई।
नदी-ग्राम	नइ-गामो,	नइ-ग्गामो।
नि -सहम्	नि सह,	नि-स्सहं।
हर-स्कन्दा	हर-खंदा,	हर-क्खंदा।

१०८ शब्द विशेष विकार

जे शब्दोमां कोई पण सामान्य के विशेष नियम न लागु पडतां विशिष्ट मागना केटलाक विशेष विकारो थाय छे ते आ नीचे आपवामां आवे छे —

अपस्मार पम्हारो।

आश्चर्यम् अच्छअरं अच्छरिअं, अच्छरिज्ज अच्छरीअ।

---

१ जुओ पृ १-टिप्पण २ पु।

२ आश्चर्यम्=अच्छ्अरं, अच्छरिअं, अच्छेरं– (जुओ प्र० १०४४ टिप्पण)

उदूखलः	ओहलो	[उऊहलो]
उलूखलम्	ओक्खल	[उलूहलं]
कदलम्	केल,	[कयलं]
कदली	केली,	[कयली]
कर्णिकारः	कण्णेरो,	[कण्णिआरो]
कुतूहलम्	कोहल,	[कोउहल्ल]
चतुर्गुण	चोग्गुणो,	[चउग्गुणो]
चतुर्थः	चोत्थो,	[चउत्थो]
चतुर्थी	चोत्थी,	[चउत्थी]
चतुर्दश	चोद्दह,	[चउद्दह]
चतुर्दशी	चोद्दसी,	[चउद्दसी]
चतुर्वारः	चोव्वारो,	[चउव्वारो]
त्रयस्त्रिंशत्	तेत्तीसा ।	
त्रयोदश	तेरह ।	
त्रयोविंशतिः	तेवीसा ।	
त्रिंशत्	तीसा ।	
नवनीतम्	नोणीअं, लोणीअं ।	
[1]नवफलिका	नोहलिआ ।	
नवमालिका	नोमालिआ ।	
निषण्णः	णुमण्णो,	[णिसण्णो]
पूगफलम्	पोप्फलं ।	
पूगफली	पोप्फली ।	
पूतर.	पोरो ।	
प्रावरणम्	पङ्गुरण, पाउरण,	[पावरण]

१ अव=ओ-पाली प्र० पृ० ४४ नि० ५७

पदरम्	बोर ।	
बदरी	बोरी ।	
मयूख	मोहो,	[मऊहो]
रुदितम्	रुण्णं ।	
लवणम्	लोणं	[लवण]
विचकिलम्	वेइल्लं ।	
विंशति	वीसा ।	
सुकुमार[1]	सोमालो	[सुकुमालो]
स्थविर	थेरो ।	

१०९ सन्ध्य—सर्वथाविकार—

आ नीचे ते शब्दो आपवामां आवे छे जे केटलेक अंशे के सर्वथा (पोताना मूळ रूपथी) अन्य रूपवाळा थई जाय छे —

अधस् हेट्ठं ।	अस्तम् हित्थ, तट्ठं [तत्थं]
अप ओ, [अव]	श्मिश् मिसा ।
अप्सरस अच्छरसा, अच्छरा ।	दुहिता धूआ, [दुहिआ]
अयि ऐ[2] ।	दंष्ट्रा दाढा ।
अव ओ, [अव]	द्रह दहो ।
आयुः आउसं, [आऊ]	द्रहक दरभा ।
आरब्ध आढत्तो, [आरद्धो]	धनुष् धणुहं, [धणू]
इदानीम् एण्हिं एत्ताहे, दाणि[इआणिं]	धृति दिही, [धिइ]
ची दाणिं ।	

---

१ स्थ धा:—मेरो—(पाली)

२ आ सिवाय बाजे बर्णोने ऐ ना प्रयोग इष्ट नथी—(जुओ १ १—टिप्पण)

ईषत्[1] कूर, [ईसि]
उत ओ, [उअ]
उप ऊ, ओ, [उव]
उभयम् अवह, उवह, [उभयं]
ककुभ् कउहा ।
क्षिप्तम् छूढ [खित्त]
क्षुध् छुहा ।
गृहम्[2] घर ।
छुप्त छिक्को [छुत्तो]
तिर्यक्[3] तिरिआ, तिरिच्छि ।
पदाति पाइक्को [पयाई]
प्रावृष् पाउसो ।
पितृष्वसा[4] पिउच्छा, पिउसिआ।
पूर्वम् पुरिम पुव्व । शौ० पुरव ।

बहिस् बाहिं, बाहिर ।
बृहस्पति. भयस्सई [बहस्सई]
भगिनी बहिणी, [भइणी]
मलिनम् मइल[मलिण]
मातृष्वसा माउच्छा, माउसिआ ।
मार्जारः मजरो, वंजरो [मज्जारो]
वनिता विलया, [वणिआ]
विद्रुत. विदाओ ।
वृक्षः रुक्खो, [वच्छो]
वैडुर्यम् वेरुलिअ, वेउज्ज ।
शुक्ति सिप्पी, [सुत्ती]
स्तोकम्[5] थेव, थोव, थोक्क [थोअ]
स्त्री इत्थी [थी]
श्मशानम्[6] सीआण, सुसाण [मसाण]
हृदयम् हिअयं पै० हितप, हितपक ।

---

१ विशेषणसूचक 'ईषत्' शब्दनु ज 'कूर' रूप थाय छे, कितु विशेष्यसूचकनु नहि

२ 'गृहपति' शब्दनु 'घरवइ' ने बदले 'गहवइ' रूप थाय छे

३ तिर्यक्=तिरियो–(पाली) पा० प्र० पृ० १६ नि० १९)

४ पितृष्वसा पितुच्छा- (पा० प्र० पृ० ३४ टिप्पण)

५ स्तोकम् थोक–(स्त=थ–पा० प्र० पृ० २७)

६ श्मशानम् मसान मुसान–(पा० प्र० पृ० ५१–टिप्पण)

११० अन्त्य स्वरवृद्धि—

नीचेना शब्दोमां चिह्नित संयुक्त व्यंजननी वच्चे नीचे जणाव्या प्रमाणे स्वरो उमराय छे —

			उमेरातो स्वर
[1]अग्नि	अगणी	[अग्गी]	अ
अर्हन्	अरहन्तो अरिहंतो, अरुहंतो ।		अ, इ, उ
[2]अर्ह	अरह अरिह, अरुह ।		,,
[3]कृत्स्न	कसिणो ।		इ
कृष्ण [4]	कसणो, कसिणो	[किण्हो]	अ, इ
क्रिया [5]	किरिया	[किया]	इ
क्ष्मा	छमा ।		अ
चैत्यम्	चेइअं ।		इ
छद्म	छउमं	[छम्म]	उ
[5]ज्या	जीआ ।		ई
तप्त	तविओ	[तत्तो]	इ
[6]द्वारम्	दुवारं	[दारं]	उ
द्वादश	दुवालस ।		,,
दिष्ट्या	दिट्ठिआ ।		इ
[7]पद्मम्	पउम	[पोम्मं]	उ

---

१ अग्नि अग्गि अगणि गिनि—(पा प्र पृ ४९)

२ अर्ही अर्ह धातुनां बधां रूपो समजवानां छे

३ कृत्स्न कसिणो कि॰णो सिण्णो—(पा प्र पृ ८७)

४ आ बधे पो वर्ण के रंग अथवा व अपराध छे

५ ज्या जिया—(पा प्र पृ ४८—म=इ)

६ द्वार दुवारं दारं (पा प्र पृ १२ टिप्पण)

७ पा प्र॰ पृ ४९—(मध्यम—पद्मम् पदुमं)

उमेरातो स्वरः

[1]प्लक्षः	पलक्खो।		अ
भव्य·	भविओ।	[भव्वो]	इ
मूर्ख	मुरुक्खो,	[मुक्खो]	उ
रत्न	रयण।		अ
[2]वज्रम्	वइरं	[वज्ज]	इ
शार्ङ्गम्	सारग।		अ
[3]श्री	सिरी।		इ
[4]श्वः	सुवे।		उ
[5]श्लाघा	सलाहा।		अ
[6]स्निग्धम्	सणिद्ध, सिणिद्धं,	[निद्ध]	अ, इ
स्नुषा	[7]सुनुसा	[सुण्हा, ण्हुसा सुसा]	उ
[8]सूक्ष्मम्	सुहुम, सुहम।		उ, अ
[9]स्नेह·	सणेहो नेहो।		अ
स्याद्	सिआ		इ

१ प्लक्ष' पिलक्खो–(प्रा० प्र० पृ० ३१ नि० ३७)

२ वज्र' वजिरो–(पा० पृ० १३ टिपण)

३ श्री· सिरी–(पा० पृ० १३ टिप्पण)

४ श्व सुवे, स्वे–(पा० पृ० ३३ टिप्पण) श्व' सुव=सुवे–जूओ पृ० ४६ अ=ए

५ श्लाघा सिलाघा–(पा० पृ० ३१)

६ स्निग्धम् सिनिद्धो, निद्धो–(पा० पृ० ४६ नि० ५३)

७ जूओ पृ० ७३ तथा ४१

८ सूक्ष्मम्= सुखुम–(पा० पृ० १८ टिप्पण)

९ स्नेह सिनेहो, स्नेहो, सनेहो–(पा० पृ० ४६ नि० ५३)

उमरावो स्वर

स्याद्वादः सिआवाओ । इ
सूक्ष्मम् सुहुम । उ
[1]स्व सुवो । ,,
स्वे सुवे । ,,
स्वप्न सिविणो । इ
[2]ह्म हिमो [ह्मो] ,,
[3]ह्री हिरी इ

१११ अक्षर-व्यत्यय—

आ नीचे जे शब्दोमां चिह्नित अक्षरोनो परस्पर व्यत्यय—पूर्वापरभाव—थइ जाय छे ते आपवामां आवे छे —

अचलपुरम् अलचपुरं ।
आलान आणालो
करेणू कणेरू ।
महाराष्ट्रम् मरहट्ठ ।
लघुकम् हलुअं [लहुअ]
ललाटम् णडालं [णलाडं]
वाराणसी वाणारसी ।
हरिताल हलिआरो [हरिआलो]
ह्रद द्रहो [हरो]

१ समासान्तर्गत 'स्व' ना बदले 'सुव' ने बदले 'स रूप थाय छे:
स्वजन: सजणो

२ ह्म दीपो हिम्मो–(१ पृ २२ टिप्पण)

३ ह्री हिरी–(पा पृ १३ टिप्पण)

४ जुओ पृ ७० ए=५

अपभ्रंश–आदेशो

(१) नीचे जणावेला शब्दोना अपभ्रंश रूपो आ प्रमाणे छे.

अन्यादृश	([1]अन्नादि (इ) स)	अन्नाइस । [2]अवराइस ।
ईदृक्		एह ।
ईदृश	(ईदि (इ) स)	अइस ।
कीदृक्		केह ।
कीदृश	(कीदि (इ) स)	कइस ।
तादृक्		तेह ।
तादृश	(तादि (इ) स)	तइस ।
यादृक्		जेह ।
यादृश	(जादि (इ) स)	जइस ।
वर्त्म		विच्च ।
विषण्ण		वुन्न ।

अपभ्रंशनां उमेरणो

(१) अपभ्रंशमा कोइ कोइ शब्दमा कोइ कोइ अक्षरनो वधारा तरीके उमेरो थइ जाय छेः—

उक्तम्'	उत्तं	वुत्तं	('व' नो वधारो)
परस्पर	परोप्पर	अपरोप्परं	('अ' नो वधारो)
व्यासः	वासो	व्रासु, वासु	('र' नो वधारो)

---
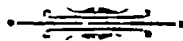
१ आ ( ) कौउसमा आपेला रूपो अपभ्रंशरूपोनी पूर्वावस्थाना सूचक छे. आ शब्दोना प्राकृतरूपो जोवा माटे जूओ पृ० ५८ ऋ=रि पृ० ५९ ऋ=इ ।

२ जेम ' अन्य ' शब्दनु ' अन्यादृश ' रुप थाय छे तेम आ ' अवराइस ' शब्द जोता तेना मूळरूप तरीके ' अपरादृश ' रूप पण कल्पी शकाय ।

संधि प्रकरण ८

१ प्राकृतमां जूदां जूदां बे [1]पदोना स्वरोनो संधि थाय छे अने ते पण प्रयोगानुसारे विकल्पे थाय छेः—

स्वरसंधि—

अ+अ=आ—मगह+अहिवई=मगहाहिवई, मगहअहिवई [मगधाधिपति]
दंड+अहीसो=दंडाहीसो, दण्डअहीसो [दण्डाधीश]
अ+आ=आ—विसम+आयवो=विसमायवो,विसमआयवो [विषमातप]
आ+अ=आ—रमा+अहीणो=रमाहीणो, रमाअहीणो [रमाधीन]
आ+आ=आ—रमा+आरामो=रमारामो रमाआरामो [रमाराम]
इ+इ=ई —मुणि+इणो—मुणीणो, मुणिइणो [मुनीन]
इ+ई=ई—मुणि+ईसरो—मुणीसरो, मुणिईसरो [मुनीश्वर]
दहि+ईसरो—दहीसरो, दहिईसरो [दधीश्वर]

---

१ जे बे पदोना स्वरोमां संधि थवाना छे ते बे पदो सामासिक होय के असामासिक होय अर्थात् कोई प्रकारे जूदां जूदां होवां जोईए जेमके; सामासिक—दंड+अहीसो दंडाहीसो दंडअहीसो।
असामासिक—दंडस्स+ईसो—दंडस्सेसो, दंडस्स ईसो।

प्राकृत साहित्यमां विशेषे करीने सामासिक पदोना स्वरोमां संधि थएलो जणाय छे अने असामासिक पदोमां तो तेनो प्रयोग घणो ज विरल थएलो छे असामासिक पदोमां संधि करवा जतां घणे ठेकाणे अर्थबोध दुर्लभ थई जाय छे माटे ज असामासिक करतां सामासिक पदोमां संधि-प्रयोगनो प्रचार बहु थएलो लागे छे अने ए अनुसारे अहीं उदाहरणोमां पण सामासिक पदोनो ज नाम निर्देश करेलो छे कोई ठेकाणे तो फक्त एक ज पदमां पण संधि थएलो छे —

काहि+इ—काही काहिइ [करिष्यति]
बि+इओ—बीओ बिइओ [द्वितीय]

१ जुओ पाकिप्र० लपिकास्स सि १-१० ५८

ई+इ=ई—गामणी+इइहासो–गामणीइहासो, गामणी इइहासो [ग्रामणीतिहासः]

ई+ई=ई—गामणी+ईसरो–गामणीसरो, ग्रामणीईसरो [ग्रामणीश्वरः]

उ+उ=ऊ–भाणु+उवज्झायो–भाणूवज्झायो, भाणुउवज्झायो [भानूपाध्यायः]

साउ+उअयं–साऊअय, साउउअय [स्वादूदकम्]

उ+ऊ=ऊ—साहु+ऊसवो,–साहूसवो, साहुउसवो [साधूत्सवः]

ऊ+उ=ऊ—वहू+उअर–वहूअर, वहूउअर [वधूदरम्]

ऊ+ऊ=ऊ–कणेरु+ऊसिअं–कणेरूसिअ,कणेरूऊसिअ[करेणूच्छ्रितम्]

अ+इ=एँ—वास+इसी–वासेसी, वासइसी [व्यासर्षिः]

आ+इ=ए—रामा+इअरो,–रामेअरो रामाइअरो [रामेतरः]

अ+ई=ए—वासर+ईसरो–वासरेसरो, वासरईसरो [वासरेश्वरः]

आ+ई=ए—विलया+ईसो–विलयेसो, विलयाईसो [वनितेश.]

अ+उ=ओ–गूढ+उअर–गूढोअर, गूढउअर [गूढोदरम्]

आ+उ=ओ–रमा+उवचिअ–रमोवचिअ,रमाउवचिअं [रमोपचितम्]

अ+ऊ=ओ–सास+ऊसासा–सासोसासा,सासऊसासा,[श्वासोच्छ्‌वासौ]

आ+ऊ=ओ–विज्जुला+ऊसुभिअ–विज्जुलोसुंभिअ,विज्जुलाऊसुभिअं [विद्युदुल्लसितम्]

ह्रस्व–दीर्घ विधान—

२ प्राकृतमा सामासिक शब्दोमा प्रयोगानुसारे (क्यांय नित्ये अने क्याय विकल्पे) ह्रस्व स्वरनो दीर्घ स्वर थाय छे अने दीर्घ स्वरनो ह्रस्व स्वर थाय छे·—

---

१ जूओ पालि प्र० सधि० नि० २ पृ० ५७

[1]ह्रस्वनो दीर्घ—अन्त+वेई—अन्तावेई	[अन्तर्वेदि]
सत्त+वीसा—सत्तावीसा	[सप्तविंशति]
पइ+हरं— पईहर, पइहर	[पतिगृहम्]
मुअ+यत्त—मुआयत, मुअयंत	[भुजायन्त्रम्]
वारि+मई—वारीमई, वारिमई	[वारिमती]
वेलु+वण—वेलूवण, वेलुवण	[वेणुवनम्]
दीर्घनो ह्रस्व—गोरी+हर—गोरिहर, गोरीहर	[गौरीगृहम्]

---

१ सरखावो वैदिक प्रयोग—

अष्ट+कपालम्—अष्टाकपालम् ।

अष्ट+हिरण्या—अष्टाहिरण्या ।

अष्ट+पदी—अष्टापदी (काशिका—६—३—१२६)

सरखावो संस्कृत प्रयोग—

दात्र+कर्णः—दात्राकर्णः ।

उप+नह्—उपानह् ।

केश+केशि—केशाकेशि । वगेरे(काशिका—६—३—११५ थी ११९)

सरखावो पाली प्रयोग—

सम्म+धम्मो—सम्माधम्मो ।

सम्मं+सम्बुद्धो—सम्मा संबुद्धो । (पा. प्र. पृ० ७४ संधिप्रकरण, नि. ११ तथा आ नियमनुं टिप्पण)

२ सरखावो वैदिक प्रयोग—

अजा+क्षीरेण—अजक्षीरेण ।

ऊर्णा+म्रदा—ऊर्णम्रदा ।

मघा+त्वस्—मघत्वम् ।—(का. ६—३—६३—६४)

सरखावो संस्कृत प्रयोग—

शिला+वहम् —शिलवहम्

ग्रामणी+पुत्रः—ग्रामणिपुत्रः ।

ब्रह्मबन्धू+पुत्रः—ब्रह्मबन्धुपुत्र ।

(का. ६—३—६१ थी ६६ तथा ४३—४५)

जउँणा+यड–जउणयड, जउंणायडं [यमुनातटम्]
नई+सोत्त–नइसोत्तं, नईसोत्तं [नदीश्रोतः]
मणा+सिला–मणसिला, मणासिला [मनःशिला]
वहू+मुह–वहुमुह, वहुमूह [वधूमुखम्]
सिला+खलिअं–सिलखलिअं, सिलाखलिअं [शिलास्खलितम्]

संधिनिषेध—

३ 'इ' 'ई' के 'उ' 'ऊ' पछी कोई विजातीय स्वर आवे तो संधि थतो नथी अने 'ए' के 'ओ' पछी कोई पण स्वर आवे तो संधि थतो नथी.

पहावलि+अरुणो–पहावलिअरुणो [प्रभावल्यरुणः]
वहू+अवऊढो–वहुअवऊढो [वध्ववगूढः]
वणे+अडइ–वणे अडइ [वनेऽटति]
अहो+अच्छरिअं—अहो अच्छरिअ [अहो आश्चर्यम्]

४ स्वर पर रहेता क्रियापदमा स्वरनो संधि थतो नथी.–

होइ+इह–होइ इह [भवति इह भवतीह]

५ उद्वृत्त[1] स्वर पर रहेता प्रायः पूर्वना स्वरनो संधि थतो[2] नथी:

निसा+अरो–निसाअरो [निशाक (च) र·]

---

१ स्वरनी साथे रहेलो व्यंजन लोपाया पछी जे स्वर शेष रहे छे तेनु नाम उद्वृत्त स्वर छे –(असंयुक्त 'कादि' लोप–पृ० १०)

२ केटलेक ठेकाणे तो उद्वृत्त स्वर पर रहेता पण संधि थई गएलो छे —

कुम्भ+आरो=कुम्भारो (कुम्भकार)
चक्क+आओ=चक्काओ (चक्रवाक)
साल+आहणो=सालाहणो (सातवाहन)
सु+उरिसो=सूरिसो (सुपुरुष·)इत्यादि

'स्वरलोप —

६ स्वर पर रहेतां पूर्ववर्ती स्वरनो प्रयोगानुसार लोप थाय छे

तिअस+ईसो—तिअसीसो [त्रिदशेश]

नीसास+ऊसासा—नीसासूसासा [निश्वासोच्छ्वासौ]

७ पदथी पर आवेला 'अपि' शब्दना 'अ' नो लोप विकल्पे थाय छे

केण+अपि—केणावि, केणावि [केनापि]

कह+अपि—'कहपि, कहमवि [कथमपि]

किं+अपि—किं पि, किमवि [किमपि]

तं+अपि—त पि, तमवि [तदपि]

८ स्वरांत पदथी पर आवेला 'इति' शब्दना 'इ' नो लोप थइ 'ति' ने स्थाने 'त्ति' थाय छे

तहा+इति—तहात्ति, तहत्ति [तथेति]

पिओ+इति—पिओ त्ति, पिउत्ति [प्रिय इति]

पुरिसो इति पुरिसोत्ति, पुरिसुत्ति [पुरुष इति]

९ व्यजनांत पदथी पर आवेला 'इति' शब्दना 'इ'नो लोप थाय छे

किं+इति—किंति [किमिति]

मे+इति—जति [यदिति]

दिट्ठं+इति—दिट्ठंति [दृष्टमिति]

न जुत्त+इति—न जुत्त ति [न युक्तमिति]

१ त्यदादि अने अव्ययथी पर आवेला ²यदादि अने अव्ययना आदि स्वरनो प्राय लोप थई जाय छे —

त्यदादि—त्यदादि एस+इमो—एसमो [एषोऽयम्]

---

१ हुमो प्राकृ व्या नि १ (क) पृ ५५।

२ हुमो „ २६ पृ ८१।

त्यदादि-अव्यय: अम्हे' एत्थ अम्हेत्थ [वयमत्र]
अव्यय-अव्यय: जइ एत्थ जइत्थ [यद्यत्र]
अव्यय-त्यदादि: जइ अहं जइहं [यद्यहम्]
जइ इमा जइमा [यदीयम्]

व्यजनसंधि

विसर्ग=ओ

११ अकारथी पर आवेला 'विसर्ग'नो ओ थाय छे:—

अग्रत:=अग्गओ।
अन्त:+विस्रम्भ:=अतोवीसंभो।
पुरत:=पुरओ।
मन:शिला=मणोसिला।
मार्गत:=मग्गओ।
सर्वत:=सव्वओ।

म[2]=अनुस्वार

१२ पदने अंते रहेला मकारनो अनुस्वार थाय छे:—
गिरिम्=गिरिं। जलम्=जलं। फलम्=फलं। वृक्षम्=वच्छं।

१३ स्वर पर रहेता अन्त्य 'म' नो अनुस्वार विकल्पे थाय[3] छे:
उसभम्+अजिअ=उसभं अजिअ, उसभमजिअ [ऋषभमजितम्]

---

१ पालि प्र० स० नि० १-(ख) पृ० ६५—ते+अहं=तेहं।

२ कोई ठेकाणे डबल 'म्म' नी आदिमां रहेला 'म्' नो पण अनुस्वार थई जाय छे. जेमके—वणम्मि=वणंमि (वने)

३ जूओ पालि प्र० स० पृ० ७७—यं+आहु=यमाहु (यंदाहु)
धनं+एव=धनमेव।

१६ नीचे जणावेला शब्दोना प्रथम स्वर उपर, द्वितीय स्वर उपर अने तृतीय स्वर उपर प्रयोगानुसारे (विकल्पे के नित्ये) अनुस्वार थाय छे:

प्रथम स्वर उपर—अश्रु अंसु। कर्कोटः कंकोडो। कुड्मलम् कुंपलं।
गुच्छम् गुंछ। गृष्टिः गिंठी, गिट्ठी। त्र्यस्रम् तंसं।
दर्शनम् दसणं। पुच्छम् पुंछं। पर्शुः पंसू।
बुध्नम् बुंधं। मार्जारः मजारो, मज्जारो। मूर्धा मुंढा।
वक्रम्—वक। वृश्चिकः[1]—विंछिओ। श्मश्रु मंसू।

द्वितीय स्वर उपर—इह इहं [इहमेगेसिं] प्रतिश्रुत् पडंसुआ।
मनस्वी—मणंसी। मनास्विनी मणंसिणी।
मनःशिला मणंसिला, मणासिला। वयस्यः वयंसो।

तृतीय स्वर उपर—अतिमुक्तकम्—अणिउँतयं, अइमुंतय, अइमुत्तयं।
उपरि—अवरिं।

कोइ स्थळे मात्र छंदनी पूरवणी माटे पण अनुस्वार थाय छे:
देवनागसुवन्नाकिन्नरगणस्सब्भूअभावच्चिए—
देवंनागसुवन्नकिन्नरगणस्सब्भूअभावच्चिए[2]।
[देवनागसुवर्णकिन्नरगणसद्भूतभावार्चिते]

१७ जे स्थळे स्वरथी शरु थतुं पद बेवडायुं होय त्या वच्चे 'म' विकल्पे उमेराय छे:

एक+एक्कं एक्कमेक्कं, एक्केक्कं (एकैकम्)
एक्क+एक्केण एक्कमेक्केण, एक्केक्केण (एकैकेन)
अंग+अगम्मि अंगमंगम्मि, अंगअगम्मि (अङ्गेअङ्गे) इत्यादि।

---

१ जूओ पा० प्र० स० नि० १८ पृ० ७८, नि० २४—पृ० ८१

२ 'श्रुतस्तव'ना छेल्ला श्लोकनुं त्रीजुं चरण छे—
जूओ पुक्खरवरदीवड्ढे—(प्रतिक्रमण)

अनुनासिकविधान—

१८ कवर्ग, चवर्ग, टवर्ग, तवर्ग अने पवर्ग पर रहेलां अनुस्वारने
स्थाने अनुक्रमे ङ, ञ, ण, न अने म विकल्पे थाय छे[1]

कवर्ग—अङ्गणम् अंगणं, अङ्गणं । पङ्कः पंको, पङ्को ।
लङ्घनम् लंघणं, लङ्घणं । शङ्खः संखो, सङ्खो ।

चवर्ग—कञ्चुकः कंचुओ, कञ्चुओ । लाञ्छनम् लंछणं, लञ्छणं ।
अञ्चितम् अंचिअं, अञ्चिअं । सन्ध्या संझा, सञ्झा

टवर्ग—कण्टकः कंटओ, कण्टओ । उत्कण्ठा उकंठा, उक्कण्ठा ।
काण्डम् कंडं, काण्डं । षण्ढः संढो, सण्ढो ।

तवर्ग—अन्तरम् अंतरं, अन्तरं । पन्थः पंथो, पन्थो ।
चन्द्रः चंदो, चन्दो । बान्धवः बंधवो, बन्धवो ।

पवर्ग—कम्पते कंपइ, कम्पइ । वंफइ, वम्फइ [काङ्क्षति]
कलम्बः कलंबो, कलम्बो । आरम्भः आरंभो, आरम्भो ।

'अनुस्वार' लोप

१९ नीचे जणावेला शब्दोमां प्रयोगानुसारे (विकल्पे के नित्ये)
अनुस्वारनो लोप[2] थाय छे
त्रिंशत्–तीसा । विंशति वीसा । संस्कृतम्–सक्कयं ।
संस्कार —सक्कारो । इत्यादि ।

वैकल्पिक —
इदानीं इआणिं इआणि । एवं एव, एवं ।

---

१ आ नियमने बाद [illegible] विकल्पे स्वीकारे छे
२ प्रा. व्या. प्र. पा. नि. १-२ ७५ ।
३ प्रा. व्या. प्र. पा. नि. २-२ ८२ ।
४ [illegible]

कथम् कह, कहं ।
कास्यम् कासं, कसं ।
किं कि, किं ।
किंशुकम् केसुअ, किंसुअ ।
दाणिं दाणि, दाणिं [इदानीम्]
नूनं नूण, नूणं ।

पांसुः-पांसू, पंसू ।
मांसलम् मासलं, मंसलं ।
मांसम् मासं, मंसं, ।
संमुखम्—समुह, संमुहं ।
सिंहः—सीहो, सिंघो ।

इत्यादि ।
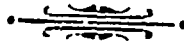
प्रकरण ९

उपसर्ग—अव्यय निपात

उवसग्गा—

प—प्र—पत्थेइ (प्रस्थापयति) पभासेइ (प्रभाषते)

परा—परा—पराभाओ (पराभात) परामिणइ (परामयते)

ओ, अव—अप— ओसरइ, अवसरइ (अपसरति)

ओसरिअं, अवसरिअं (अपसृतम्)

सं—सम्—संखिवइ (संक्षिपति) संखित्तं (संक्षिप्तम्)

अणु, अनु—अनु—अणुमाणइ (अनुमानाति) अनुमई (अनुमति)

ओ, अव—अव—ओअरइ (अवतरति) ओआरो (अवतारः)

ओआसो, अवयासो (अवकाश)

ओ, नि, नी—निर्[1]—ओमल्ल, निम्मल्ल (निर्माल्यम्)

निग्गओ (निर्गतः) नीसहो (निस्सह)

दु, दू—दुर्—दुन्नयो (दुर्नयः) दूहवो (दुर्भग)

अभि, अहि—अभि—अभिहणइ (अभिहन्ति) अहिप्पाओ (अभिप्राय)

वि—वि—विकुव्वइ (विकुर्वति) विणओ (विनय) वेणइआ (वैनयिकी)

अधि, अहि—अधि—अज्झायो (अध्याय) अहीइ (अधीते)

सु, सू—सु—सुकरं (सुकरम्) सूहवो (सुभग)

उ—उत्—उग्गच्छइ (उद्गच्छति) उग्गओ (उद्गतः) उप्प त्तिआ (औत्पत्तिकी)

अइ, अति—अति—अईओ (अतीत) वइक्कंतो (व्यतिक्रान्तः)

अतिसओ (अतिशय) अच्चन्त (अत्यन्तम्)

णि, नि—नि—णिवेसो (निवेश) संनिवेसो (संनिवेश) निवि सइ (निविशते)

---

[1] फक्त मात्र शब्दनी पूर्वना ज निर्'नो 'ओ' थाय छे

पडि, पति, परि–प्रति—पडिमा (प्रतिमा), पतिट्ठा (प्रतिष्ठा)
परिट्ठा (प्रतिष्ठा)

परि, पलि–परि—परिवुडो (परिवृतः) पलिहो (परिघः)

इ, पि, वि, अपि अवि–अपि—पिहेइ (पिदधाति) पिहित्ता (पिधाय)
किंपि, किमवि, किमपि (किमपि) कोइ, कोवि (कोऽपि)

ऊ, ओ, उव–उप—ऊज्झायो, ओज्झायो, उवज्झायो (उपाध्यायः)

आ–आ—आवासो (आवास) आयंतो (आचान्तः)

धात्वर्थं बाधते कश्चित् कश्चित् तमनुवर्तते।
तमेव विशिनष्ट्यन्योऽनर्थकोऽन्यः प्रयुज्यते ॥

अव्वयाइं (अव्ययानि)

अहो, हंहो, हा, हे, नाम, अहह, हीसि, अहह अने अरिरिहो विगेरे अनेक अव्ययो छे अने ते बधानो प्रयोग संस्कृतनी पेठे प्राकृतमां पण थाय छे. तो पण अहीं नीचे केटलाक विशेष अव्ययोनी नोंध करीए छीए:—

अइ	अति	अतिशय.
अइ	अयि	संभावना.
अईव	अतीव	विशेष.
अओ	अतः	आथी, एथी.
अकट्टु	अकृत्वा	नहि करीने.
अग्गओ	अग्रत	आगळथी.
अग्गे	अग्रे	आघे, आगळ.
अंग	अङ्ग	सम्बोधन
अज्ज	अद्य	आज

---

१ फक्त 'स्था' धातुनी पूर्वना ज 'प्रति' नो 'परि' थाय छे.

अण (नञ्)	अन	निषेध
अण्णमण्ण	अन्योऽन्यम्	अन्योन्य
अण्णहा	अन्यथा	विपरीत
अणंतर	अनन्तरम्	आंतरा विना
अतीव	अतीव	
अत्थं	अस्तम्	अदर्शन, आथमवु
अत्थि	अस्ति	सत्तासूचक
अत्थु	अस्तु	विधिसूचक, निषेधसूचक
अदु	अद्	
अदुवा अदुव	अथवा	पक्षांतर
अद्धा	अद्धा	समय
अतर	अन्तरम्	आंतरु
अंतो	अन्तर्	अंदर, वच्च
अन्नहा	अन्यथा	विपरीत
अन्नु अन्नह (अप०)	अन्यथा	
अप्पणो	आत्मन	आपणे आते-पोते
अपरज्जु	अपरेद्यु	परमदिवसे
अप्पेव	अप्येवम्	संशय
अभिक्खं	अभीक्ष्णम्	वारंवार
अभितो	अभित	चारे बाजु
अम्मो		आश्चर्य
अम्महे (शौ)		'ए हे ह' हर्षनुं सूचन
अरे	अरे	संभाषण

अरे	अरति (अरइ)	रतिकलह.
अल	अलम्	सामर्थ्य, निषेध, पूर्तु.
अलाहि	अलहि	निवारण, निषेध.
अवस्स	अवश्यम्	अवश्य.
अवसें (अप०)	अवशेन	,,
अवस	अवश्यम्	,,
अवरिं	उपरि	उपर.
अव्वो		सूचना, पश्चात्ताप, सभाषण, विस्मय, संताप, आदर, भय, अपराध, खेद, दुःख, आनंद.
असइ	असकृत्	अनेकवार.
अह	अथ	आरंभ.
अहत्ता	अधस्तात्	नीचे.
अहवइ (अप०)	अथवा	पक्षांतर
अहव / अहवा	अथवा	,,
अहा	यथा	जेम.
अहे	अध.	नीचे
अहो	अहो	ओहो (आश्चर्य)
आम	ओम्	स्वीकार
आवि	आवि	प्रकट
आहच्च	आहत्य	बलात्कार.
आहरजाहर(अप०)	एहिरेयाहिरे	आवरोजावरो
इ		पादपूरक
इओ	इतः	अहींथी, एथी, वाक्यारंभ.

इक्कसरिअं	एकसृतम् (?)	सम्प्रति
इत्थत	इत्थत्वम्	ए प्रकारे
इचत्थो	इत्यर्थ	ए अथ
इयाणिं	इदानीम्	हमणां
एम्बहिं(अप०)	,	,,
इर	किल	निश्चय
इह	इह	अहीं
इह	ऋधक्	सत्य
इहय	ऋधकक्	,,
इहरा	इतरथा	अन्यथा
इ	किम्	प्रश्न, गर्हा
ईसिं	ईषत्	थोडुं
ईसि	,	,
उ	तु	तो
उअ	उत	पक्ष—जो
उद्धमइस (अप)	उविद्यविश	ऊठबेश
उवरभो	उत्तरत	उत्तरथी, उत्तरमां
उत्तरसुवे	उत्तरश्व	आवती काल पछी
उद	उत	विकल्प, अपि
उदाहु	उदाहो	विकल्प
उप्पिं	उपरि	उपर
उवरिं	,	,,
उवरि	,	,,
उ		गर्हा, क्षेप, विस्मय, सूचना
एअ	एतत्	ए

एक्कइआ एक्कइआ एक्कया	एकदा	एक वखत.
एक्कसरिअं	एकसृतम् (?)	संप्रति.
एक्कसि इक्कसि	(अप०) एकशः	एकवार.
एक्कसि इक्कसि	एकदा	एक वखत.
एक्कसिअं इक्कसिअं	,,	,,
एगइआ एगया	एकदा	एक वखत
एगयओ	एकैकतः	एक एक
एगततो	एकान्ततः	एक तरफी.
एगज्झ	ऐकध्यम्	एक प्रकार.
एतावता एयावया	एतावता	एटले.
एत्थं एत्थ	अत्र	अहीं.
एत्थु एत्तहे	(अप०) अत्र	,,
एत्तहे (अप०)	इतः	आथी, एथी, वाक्यारंभ.
एव	एव	नक्की, ए ज प्रमाणे.
य्येव[1] (शौ०)	,,	,,

---

१ जूओ पा० प्र० पृ० ७८ नि० १७

वा + एव= वा येव । तेसु + एव=तेसु येव ।

न + एव=न येव । ते + एव=ते येव ।

बोधि + एव=बोधि येव । सो + एव=सो येव ।

किणा क्किणा किणो	किन्तु	प्रश्न. "
किर	किल	नक्की
किल	"	"
केवच्चिर	कियच्चिरम्	केटला लांबा समय सुधी.
केवच्चिरेण	कियच्चिरेण	"
केवल		एकलुं.
केहि (अप०)		तादर्थ्यसूचन "सग्गहो केहिं" स्वर्गने माटे.
खलु		नक्की.
खाइअ (यं)		वळी.
खाइं (अप०)		अनर्थक-स्थलपूरणे.
खेत्तओ	क्षेत्रत	क्षेत्रमां, क्षेत्रथी.
खु		नक्की
गंधओ	गन्धत.	गंधे.
गुणओ	गुणत.	गुणे.
घइ (अप०)		अनर्थक-स्थलपूरक.
घुग्घ (अप०)		घुघु—चेष्टानु अनुकरण.
च	च	अने.
च्च		नक्की.
चिअ च्चेअ	चैव	"
जइ	यदि	जो.
जुइ (अप०)	"	"
जओ	यत	जेथी, कारणके.

जणि, जणु (अप०)		जाण्ये, 'इव'नुं सूचन
जत्थ	यत्र	ज्यां–जेमां
जेत्थु, जत्तु (अप०)	यत्र	ज्यां–जेमां
जति	यदि	जो
जदि	यदि	,,
जह, जहा	यथा	जेम, जे रीते.
जेम, जेम्ब, जिम, जिम्ब, जिह, जिव (अप०)	,,	,,
जहेव	यथैव	,,
ज	यत्	जे, के
जाव	यावत्	ज्यांसुधी
जाम, जाउं, जामहिं (अप०)	,,	,,
जावज्जीव	यावज्जीवम्	जीवतां सुधी
जुअंजुअं	युतंयुतम् (?)	पृथक्पृथक्–जूदंजूदुं
जेण	येन	जे तरफ
जे	ये	पादपूरक
झगिति		संप्रति
झत्ति	झटिति	शीघ्र–झट
ण	न	निषेध
णइ		अवधारण,

णं		वाक्यालंकार.
ण (शौ०)	ननु	वितर्क.
णमो	नमः	नमस्कार.
णवर		केवल.
णवरि		अनतर.
णवर	नवरम्	विशेष.
णवि		विपरीतता.
णाइ	नैव (?)	निषेध.
णाइं	,,	,,
णाणा	नाना	जूदुंजूदुं.
णिच्च	नित्यम्	नित्य.
णूण	नूनम्	नक्की. तर्क.
णूण	,,	,,
णो	नो	निषेध.
त	तत्	वाक्यारभ, ते.
तजहा	तद्यथा	जेमके.
तए	तदा	त्यारे, त्यारपछी.
तओ	ततः	तेथी.
ततो	,,	,,
तत्तो	,,	,,
तणेण (अप०)		तादर्थ्यसूचन.
तत्थ	तत्र	त्या, तेमा.
तेत्तहे (अप०)	,,	,,
तप्पभिइ	तत्प्रभृति	त्यारथी.
तह } तहा }	तथा	तेम, तेवी रीते.

तेम, तेम्व तिम तिम्व, तिह, तिध (अप०)	तथा	तेम, तेवी रीते
तहेव	तथैव	तेम, तेवी रीते
तहि	तत्र	त्यां–तेमां
तहिं	,,	,,
ताव	तावत्	त्यांसुधी, वाक्यारंभ
ताउ ताम तामहिं (अप०)	तावत्	,,
तिरिय	तिर्यक्	वांकुं
तिरो	तिर	छूपावुं
तीअ	अतीतम्	अतीत
तु	तु	तो
तेण	तेन	ते तरफ
तेत्थु तत्तु (अप०)	तत्र	त्यां–तेमां
तेहि (अप०)		तदर्थ सूचक
तो	तु	तो
तो (अप०)	ततः तदा	तेथी, त्यारे
थु	थूत्	तिरस्कार
दर	दर	अडधुं ओछुं
दिवारत्त	दिवारात्रम्	रात–दिवस
दिवा दिआ दिवा	दिवा	दिवस
दिव (अप०)		
द्दु	दद्रु	रुद्र मराव

दुहओ	द्विधा	बन्ने बाजुथी.
दुहा	,,	बन्ने रीते, बे भाग.
दे	,,	संमुखीकरण, सम्बोधन.
धणियं		बाढ
धुव	ध्रुवम्	ध्रुव, चोक्कस
ध्रुवु (अप०)	,,	,,
न	न	निषेध.
नउ (अप०) नाइ नावइ नं	ज्ञायते (?)	गू० नो. जाण्ये, 'इव' अर्थनु सूचन. हिं० नाइ.
नत्थि	नास्ति	नथी.
नहि	नहि	निषेध
नाहिं (अप०)	,,	,,
निच्च	नित्यम	नित्य
नूनं नूण	नूनम् ,,	वितर्क
नेव	नैव	नहि ज
नो	नो	निषेध
पच्चुअ	प्रत्युत	उलटु.
पच्चलिउ (अप०)	,,	
पगे	प्रगे	प्रातःकाले
पच्छा	पश्चात्	पछी
पच्छइ (अप०)	,,	,,

पडिरूवं (प) पडिरूव (प) पग्डिरूव (पं)	प्रतिरूपम्	सरखु
परज्जु	परेद्युः	परम दिवसे
परं	परम्	परंतु
पर (अप०)	,	,,
परमुह	पराङ्मुखम्	पराङ्मुख, विमुख
परसवे	परश्व	आवता परम दिवसे
परिता	परित	चारे बाजु
परोप्पर परुप्पर	परस्परम्	परस्पर
अवरोप्पर अवरुप्पर (अप)	,,	,,
पसज्झ	प्रसह्य	हठात्
पाडिक्क पाडिएक्क	प्रत्येकम्	एकएक
	,,	,,
पातो	प्रात	सवारे
पाया पाओ	प्राय	प्राय, घणु करीने
प्राउ प्राइव प्राइम्व पगिम्व (अप)	,	,,
पिव	अपि+इव	मारगु जवु
पि	अपि	पण
पुण	पुन	फरीन वळी

पुणरुत्त	पुनरुक्तम्	,, कृतकरण.
पुणो	पुन.	फरीने, वळी.
पुणु (अप०)	,,	,,
पुणरवि	पुनरपि	फरीपण, वळीपण.
पुरओ	पुरत:	आगळ
पुरत्था	पुरस्तात्	,,
पुरा	पुरा	पहेला, भूतकाळ
पुह	पृथक्	जूदु
पिह	,,	,,
पेच्च	प्रेत्य	परलोके.
बले	बले	निर्धारण—चूटी काढवु, निश्चय.
बहिद्धा	बहिर्धा	बहार.
बहिया	बहिर्	,,
बहिं	,,	,,
भुज्जो	भूय	फरीने.
भो !	भो	आमत्रण.
मग्गतो	मार्गत:	पाछळ.
मणय	मनाक्	थोडु
मणाउ (अप०)	,,	,,
मणे	मने	विमर्श
माइ	माऽति	निषेध
मामि		सखीनु सबोधन.
मिव	मा+इव	जेवु.
मुसा	मृषा	खोटु.

मुहु	मुहु	वारवार
मूसा	मृषा	खोटुं
मा	मा	निषेध
म (अप०)	मा	,,
मोरउल्ला	मुधा,	फोकट
मोसा	मृषा	खोटुं
य	च	अने
म्हो	स्म	गई काले
र	र	पादपूरक
रहो	रह	गुप्त
रे	रे	संभाषण
रे	रति+रइ=रे	रतिकलह
रेसि, रेसिं (अप०)	,,	तादर्थ्यसूचन
ल्हु	ल्घु	शीघ्र
व	वा	विकल्प, जेवुं
व्व	इव	जेवु
वणे	वने	अनुकंपा, निश्चय, विकल्प, संभावना
वहिल्लु (अप)	शीघ्रम् पडमिल्ल(?)	वहेलु
वा	वा,	विकल्प जेवु
वि	अपि	पण
विअ	इव	जेवुं
विणा	विना	वगर
विणु (अप)		,
विव	इव	जेवुं
वीसुं	विष्वक्	व्याप्ति

वे	वै	निश्चय,
वेव्व		आमंत्रण.
वेव्वे	,,	भय, वारण, विषाद, आमंत्रण.
सइ	सदा	सदा.
सइ	सकृत्	एकवार
सक्ख	साक्षात्	प्रत्यक्ष
सज्जो	सद्य	शीघ्र
सणियं	शनैः	धीरे
सद्धिं	सार्धम्	साथे.
सपक्खि	सपक्षम्	बराबर सामे
सपडिदिसिं	सप्रतिदिग्	,,
सम	समम्	साथे.
समाणु (अप०)	समानम्	,,
सम्म .	सम्यक्	ठीक, साचु.
सयं	स्वयम्	जाते, पोते
सया	सदा	सदा
सव्वओ	सर्वतः	बधे, बधेथी
सव्वत्थ	सर्वत्र	बधे.
सव्वेत्तहे (अप०)	,,	,,
सह	सह	साथे.
सहु (अप०)	,,	,,
सहसा	सहसा	अविमर्श, शीघ्र, त्वरा.
साय	सायम्	संध्या, साज.
सिय (अ)	स्यात्	कदाच

सिया (आ)	,,	,,
सुवत्थि	स्वस्ति	कल्याण
सुवे	श्व	आवती काले
से		अथ, वाक्यारम
सेव	सदैव	समाधि, स्वीकार
हञ्जे (शौ०)	,,	दासीनु आमत्रण
हता	हन्त	कोमलआमत्रण-हा
हद	हन्त	गृहाण–ले
हंदि	हन्त	खेद, विकल्प, पश्चात्ताप, निश्चय, सत्य, गृहाण
हद्धी	हाधिक्	खेद, निर्वेद
हरे	हारे	क्षेप, सभाषण, रतिकलह
हला		एला–सखीनु सबोधन.
हले	हाऽऽले !	एली–,,
हम्भ	हम्यम्	शीघ्र
हाहा	हाहा	खेद
हिर		निश्चय
हीमाणहे (शा)		विस्मय, निर्वेद
हीही (शौ०)		मीगी (विदूषकनु हसवु)
हु		निश्चय, वितर्क, विस्मय, सभावना
हुहुरु (अप)		'हुरुरु' के 'सरर' भवा सनु भनुकरण
ह		दान पृच्छा, निवारण
हद्दा	भव	मीन

आ उपरात ते बीजा सर्वादिशब्दजन्य (यदा, कदा विगेरे) अव्ययो छे, तेनो उल्लेख तद्धित प्रकरणमा आवनारो छे. खरु विचारिए तो—

" इयन्त इति संख्यान निपाताना न विद्यते "

निपात

आगळ जणाव्या प्रमाणे देश्यप्राकृत ए, प्रस्तुत प्राकृतनु एक अंग छे तेमा जे जे शब्दोनो प्रयोग थएलो छे ते बधा शब्दो 'निपात' ने नामे ओळखाय छे. कारण के, ए शब्दोनी रचना, कोई जातनी व्युत्पत्ति के वर्णविकारनी अपेक्षा राखती नथी. किंतु ए, लौकिक संकेत अने उच्चारण उपर निर्भर छे. अहीं एवा—देश्यप्राकृतमा वपराता केटलाक—निपातो आपीए छीए:

	अर्थ—	
अगया	असुरा	
अत्थ (च्छ) क्क	अकाण्डम्	अकाले
अल्ल		दिन,
*आऊ	आप.	पाणी.
*आसीसा	आशी.	आशिष
*उज्जलो	उज्ज्वल —बली	बलवान्.
कड्ड	कुतूहलम्	कोड
*कत्थइ	क्वचित्	
*कन्दुट्ट	कन्दोत्थम	उत्पल
*ककुध	ककुदम्	खुंध.
करसी	श्मशानम	
*खुड्डुओ	क्षुल्लक	
*खेड्ड	खेलम्	क्रीडा

सिया (आ)	,,	,,
सुवत्थि	स्वस्ति	कल्याण
सुवे	श्व	आवती काले
से		अथ, वाक्यारम्भ
सेव	सदैव	समाप्ति, स्वीकार
हञ्जे (शौ०)	,,	दासीनुं आमन्त्रण
हंता	हन्त	कोमलामंत्रण हा
हंद	हन्त	गृहाण—ले
हंदि	हन्त	खेद, विकल्प, पश्चात्ताप, निश्चय, सत्य, गृहाण
हद्धी	हाधिक्	खेद, निर्वेद
हरे	हारे	क्षेप, संभाषण, रतिकलह
हला		एला—सखीनु संबोधन.
हले	हाऽऽले !	एली—,,
हव्व	हव्यम्	शीघ्र
हाहा	हाहा	खेद
हिर		निश्चय
हीमाणहे (शौ०)		विस्मय, निर्वेद
हीही (शौ०)		खीखी (विदूषकनुं हसवुं)
हु		निश्चय, वितर्क, विस्मय, संभावना
हुडुरु (अप)		'हुरुरु' के 'सरर' अवा जनुं अनुकरण
हे		दान, पृच्छा, निवारण
हहा	अव	नीचे

भवंतो	भवान्	तमे.
बहिद्धा	बहिर्धा	मैथुन, बहि.
मघोणो	मघवा	इन्द्र
महन्तो	महान्	
मुव्वहइ	उद्वहति	
लज्जालुइणी	लज्जावती	लाजवतीनो छोड.
विउसग्गो	व्युत्सर्ग	त्याग
वोसिरण	व्युत्सर्जनम्	,,
वम्हलो	अपस्मार	रोगविशेष—वाई.
वड्डयर	बृहत्तरम्	वडेरु.
वढो	वटः	
सक्खिणो	साक्षी	
साहुली	शाखा	

अपभ्रंशमां आवता केटलाक निपातो—

देश्य शब्दो

अप्पण	आत्मीय	आपणु.
कोड्ड	कौतुक	कोड.
खेड्ड	क्रीडा	खेल, रमत
जाइट्ठिआ	यद्दृष्टिका	जे जे जोयु.
अक्कट		
ढक्करि	अद्भुत	
ढडवड	अवस्कन्द	ढडवडवु.
द्रवक्क	भय	
द्रेहि	दृष्टि	

*गोणो	गौ	
*गावी	,,	
*गायणो	गायन	
थासिक	स्थासक	कुमारनुं एक मातनु उपकरण
छिच्छि	छिकछिक्	
छिच्छई	पुंश्चली	छिनाळ
*मम्मणं	मन्म	
समुरं	ताम्बूलम्	
सामुच्छसिअं	कार्यम्	
सेमच्छो	पण्डक	नपुंसक, हीमडो
*तेआलीसा	त्रयश्चत्वारिंशत्	तेंताळीश
*तेवण्णा	त्रिपञ्चाशत्	ते (त्रे) पन
तिंगिच्छि	पौष्प रसः	पुष्पनी रस
*धिद्धि	धिक्धिक	
*धिरत्थु	धिगस्तु	
*निहेलण	निलयनम्	घर
*पच्चलो	पत्यल	समर्थ
*पञ्चावण्णा	पञ्चपञ्चाशत्	पञ्चावन
*पणपन्ना	,,	,,
पम्हड़ी	कर्पास	कपास
*पडिसिद्धी / पाडिसिद्धी	प्रतिस्पर्धा	
* भिमोरो	हिमोर	
*बइल्लो	बलीवर्द	बळद
*भट्टिआ	भर्तृक	विष्णु

* आ निशानीवाळा शब्दो संस्कृत शब्दो साथे समानता धरावे छे

नाम प्रकरण १०

नामना प्रकारो

संस्कृत भाषामा नामोना बे विभाग छे. जेमके—स्वरांत नाम अने व्यजनात नाम. पण प्राकृतभाषामा तेम नथी. कारण के, व्यंजनात नाममात्र कोइ रीते स्वरात थया सिवाय प्राकृतभाषामा प्रयोजातुं ज नथी, एथी प्राकृतमा बधा नामो स्वरात होय छे माटे प्राकृत नामोनो विभाग आ प्रमाणे छे.

अकारात, आकारात, इकारात. ईकारात, उकारात, ऊकारात, एकारात अने ओकारात. [सस्कृत ऋकारान नामो प्राकृतमा रूपाख्यानने प्रसगे अकारात, आकारात, इकारात के उकारात थता होवाथी एने उपरनी गणत्रीमा जूदा गण्या नथी]

नामना अन्त्यस्वरनो फेरफार.

१ 'ग्रामणी,' 'खलपू' ए ज प्रकारना बीजा अनेक शब्दो (सेनानी, सुधी, कारभू, कटप्रू वगेरे) नो अन्त्य स्वर रूपाख्यानने प्रसगे ह्रस्व थाय छे.

२ नान्यतरजातिमा वपराता नामोनो अन्त्य दीर्घ स्वर ह्रस्व थाय छे

नामनी जातिओ

प्राकृत नामोनी जातिओ सस्कृत नामोनी जेवी छे. जे विशेषता छे ते आ प्रमाणे छे

१ नकारात अने सकारांत नामो प्राकृतमां नरजातिना गणाय छे.

२ तरणि, प्रावृष् अनें शरत् ए त्रण नामो प्राकृतमां नरजातिमां रहे छे.

नवम	नवक	नोखु, नवु हिं० अनोखा
नाडिम	मूढ	
निबद्ध	(निस्यम्प–निबद्ध) गाढ	
मब्भीस	मा भैषी	मा बीस–भय न पाम
रवण्ण	रमण	रम्य
बढ	(बढ ?)	मूढ
विट्टाल[1]		वटाळ, वटलावु
सङ्कड		असाधारण
हेल्लि	(हे आले !)	हे सखी

आ उपरांत बीजा पण देश्यप्राकृत शब्दो छे अने ते अनेक छे ते माटेनी विशेष माहिती, हेमचंद्रकृत 'देशीनाममाळा' ने जोवाथी मळी शके तेम छे आवा केटलाक शब्दो 'षड्भाषाचंद्रिका' मां पण नोंधाएला छे

---

[1] आ शब्दनो विशेष संबंध ... विपर्यास ... परिवर्त ... होइ शके बटलावु बगडावु अने बटलावु ... नी उत्पत्ति एना साथी लागे छे

नाम प्रकरण १०

नामना प्रकारो

संस्कृत भाषामा नामोना बे विभाग छे. जेमके—स्वरांत नाम अने व्यंजनांत नाम. पण प्राकृतभाषामा तेम नथी. कारण के, व्यंजनांत नाममात्र कोइ रीते स्वरांत थया सिवाय प्राकृतभाषामा प्रयोजातुं ज नथी, एथी प्राकृतमा बधा नामो स्वरांत होय छे माटे प्राकृत नामोनो विभाग आ प्रमाणे छे.

अकारांत, आकारांत, इकारांत. ईकारांत, उकारांत, ऊकारांत, एकारांत अने ओकारांत. [संस्कृत ऋकारांत नामो प्राकृतमा रूपाख्यानने प्रसंगे अकारांत, आकारांत, इकारांत के उकारांत थता होवाथी एने उपरनी गणत्रीमा जूदा गण्या नथी]

नामना अन्त्यस्वरनो फेरफार.

१ 'ग्रामणी,' 'खलपू' ए ज प्रकारना बीजा अनेक शब्दो (सेनानी, सुधी, कारभू, कटप्रू वगेरे) नो अन्त्य स्वर रूपाख्यानने प्रसंगे ह्रस्व थाय छे.

२ नान्यतरजातिमा वपराता नामोनो अन्त्य दीर्घ स्वर ह्रस्व थाय छे.

नामनी जातिओ

प्राकृत नामोनी जातिओ संस्कृत नामोनी जेवी छे. जे विशेषता छे ते आ प्रमाणे छे

१ नकारांत अने सकारांत नामो प्राकृतमां नरजातिना गणाय छे.

२ तरणि, प्रावृष् अने शरत् ए त्रण नामो प्राकृतमां नरजातिमां रहे छे.

नवक्ख	नवक	नोमु, नवु हिं० अनोखा
नाहिअ	मूढ	
निब्बट्ट	(नित्यम्य--निबद्ध) गाढ	
मब्भीस	मा भैषी	मा बीश--भय न पाम
रवण्ण	रमण	रम्य.
वड	(वट ?)	मूढ
विट्टाल[1]		वटाळ, वटलावुं
सढुल		असाधारण
हेल्ले	(हे आले!)	हे सखी

आ उपरांत बीजा पण देश्यप्राकृत शब्दो छे अने ते अनेक छ ते माटेनी विशेष माहिती, हेमचन्द्रकृत 'देशीनाममाला' ने जोवाथी मळी शके तेम छे आवा केटलाक शब्दो 'पाइयलच्छीनाममाला' मां पण नोंधायला छे

❦

[1] आ शब्दनो विशेष संबंध छ 'विपरिवर्त' के परिवर्त साथे होइ शके वटलावुं पलटावुं अने वटलावुं ए बन्नेनी उत्पत्ति एक सरखी लाग छे

प्रत्ययो

नीचे जणावेला प्रत्ययो नरजातिना अने नान्यतरजातिनां दरेक अकारांत नामोथी योजी शकाय छे.

प्राकृत भाषाना प्रत्ययो

विभक्ति.	एकवचन.	बहुवचन.
पढमा	०	०.
बीआ	म्	०.
तइआ	ण	हि, हिं, हिँ.
चउत्थी } छट्ठी }	स्स, ०	ण.
पंचमी	त्तो, ओ, उ, हि, हिंतो, ०	त्तो, ओ, उ, हि, हिंतो, सुंतो.
सत्तमी	सि, म्मि, ०	सु
संबोहण (संबोधन)	०	०.

शौरसेनी, मागधी, पैशाची अने अपभ्रंशमा प्रत्ययोनी विशेषता आ प्रमाणे छे

शौरसेनी

पंचमी	दो, दु.

मागधी

पढमा	०	
चउत्थी } छट्ठी }	ह	हं.

---

३ नेत्रवाचक शब्दो तेनी खास जाति उपरांत नरजातिमां पण वपराय छे

४ वचन, विद्युत्, कुल, छन्दस् माहात्म्य, दुःख अने भाजन वगेरे शब्दो पोत पोतानी खास जाति उपरांत नरजातिमां पण रहे छे

५ गुण, देव बिंदु, खड्ग, मण्डलाग्र, कररुह अने वृक्ष वगेरे शब्दो पोतानी जाति उपरांत नान्यतरजातिमां पण वपराय छे

६ गरिमन्, महिमन् वगेरे 'इमन्' छेडावाळां नामोने अने पीणिमा (पीनत्व), पुष्फिमा (पुष्पत्व) वगेरे 'इमा' छेडावाळां नामोने तेओनी खास जाति उपरांत नारीजातिमां पण समजवानां छे

७ अञ्जलि, पृष्ठ, अक्षि, प्रश्न, चौर्य, कुक्षि, नाभि, निधि, विधि, रश्मि अने ग्रन्थि वगेरे नामो पोत पोतानी जाति उपरांत नारी-जातिमां पण वपराय छे

वचन—विभक्तिओ

१ गूजरातीनी पेठे प्राकृतमां द्विवचननो प्रयोग ज नथी, तेने बदले सर्वत्र बहुवचनथी काम चलावाय छे अने 'द्वित्व' अर्थनी विशेष स्पष्टता माटे बहुवचनांत नामनी साथे तेना विशेषणरूप बिवक्स्थग 'द्वि' शब्दनो व्यवहार थाय छे

२ चतुर्थी अने षष्ठी ए बन्ने विभक्तिना प्रत्ययो एक सरखा होवाथी चतुर्थी विभक्ति, षष्ठी विभक्तिमां समाई जाय छे तो पण कोइ स्थळे अर्थविशेषमां नाममात्रनुं चतुर्थीनुं एकवचन संस्कृतनी जेवु पण थतु होवाथी ए बन्ने विभक्तिओने जूदी जूदी गणावेली छे एथी विभक्तिओनी संख्यामां प्राकृत अने संस्कृतनी समानता छे

पचमी—अकारात नामनुं पचमीनु एकवचन आकारांत पण थाय छे.

सत्तमी—अकारात नामनु सप्तमीनुं एकवचन एकारात पण थाय छे.

सबोहण—पुंलिंगी अकारात नामनु सबोधननु एकवचन आकारात अने ओकारात थाय छे तथा संबोधनमा विभक्ति विनानुं ए अकारात नाम पण वपराय छे अने संबोधनना बहुवचनना रूपो प्रथमा (पढमा) नी जेवा थाय छे.

प्रत्ययो लागतां नामना मूळ अंगमां थता फेरफारो

तइया—तृतीया विभक्तिना प्रत्ययो पर रहेता अकारात नामना अन्त्य 'अ' नो 'ए' थाय छे

पंचमी—पचमीना एकवचननी पूर्वना अकारात नामना अन्त्य 'अ' नो 'आ' थाय छे अने बहुवचनना स्वरादि प्रत्ययो पर रहेता पण अंत्य 'अ' नो 'आ' थाय छे.

पचमीना बहुवचनना 'स' अने 'ह' थी शरु थता प्रत्ययो पर रहेता अकारात नामना अन्त्य 'अ' नो 'आ' अने 'ए' थाय छे.

तइया, छट्ठी, सत्तमी } तृतीयाना एकवचनना 'ण' उपर अने षष्ठीना तथा सप्तमीना बहुवचन उपर अनुस्वार विकल्पे थाय छे

छट्ठी—छट्ठीना बहुवचननो प्रत्यय पर रहेता पूर्वना नामनो कोइ पण अन्त्य स्वर दीर्घ थाय छे

सत्तमी—सप्तमीना एकवचननो 'सि' प्रत्यय लागता मूळ अगना छेवटना स्वर उपर अनुस्वार थाय छे आ 'सि' प्रत्ययवाळु रूप विशेषे करीने [1]आर्षप्राकृतमा वपरायु छे.

---

१ "एयावती सव्वावती लोगसि"—आ० प्र० श्रु० प्र० अ० उ० १, "लोगसि परमदसी आ० प्र० श्रु० तृ० अ० उ० ?

पैशाची

पचमी	तो, दु	

अपभ्रंश

पढमा	उ, ०	०
बीआ	उ, ०	०
तइआ	ण, म्	हिं
चउत्थी / छट्ठी	सु, स्सु, हो, ०	ह, ०
पचमी	हु, हे	हु
सत्तमी	०	हिं
सबोहण	उ,	हो,०

प्राकृत प्रत्ययोने लगता नियमा

ज्यां ज्यां प्राकृत प्रत्ययोमां ० छे त्यां आ प्रमाणे समजवानुं छे

पढमा—पुलिंगी प्रत्येक अकारांत नामनुं प्रथमानुं एकवचन ओकारांत थाय छे, अने बहुवचन आकारांत थाय छे

बीआ—पुलिंगी अकारांत नामनु द्वितीयानुं बहुवचन आकारांत अने एकारांत थाय छे

चउत्थी—मात्र तादर्थ्यने सूचववा माटे अकारांत नामनु चोथीनु एकवचन सस्कृतनी जेवु पण थाय छे मात्र एक 'वध' शब्दथी तादर्थ्य अर्थमां सस्कृतना 'आय' प्रत्ययनी जेवा वधारानो 'आइ' प्रत्यय पण लागे छे आपप्राकृतमां तो कोइ कोइ स्थळे आ 'आइ' प्रत्ययने बदले 'आए' प्रत्यय पण वपराय छे अने ते हरकोइ शब्दने लागी शके छे

पंचमी—अकारात नामनु पचमीनु एकवचन आकारांत पण थाय छे.

सत्तमी—अकारात नामनुं सप्तमीनुं एकवचन एकारात पण थाय छे.

सबोहण—पुंलिंगी अकारात नामनु संबोधनमु एकवचन आकारात अने ओकारात थाय छे तथा संबोधनमा विभक्ति विनानुं ए अकारात नाम पण वपराय छे अने संबोधनना बहुवचनना रूपो प्रथमा (पढमा) नी जेवा थाय छे.

प्रत्ययो लागता नामना मूळ अगमां थता फेरफारो

तइया—तृतीया विभक्तिना प्रत्ययो पर रहेता अकारात नामना अन्त्य ' अ ' नो ' ए ' थाय छे

पंचमी—पंचमीना एकवचननी पूर्वना अकारात नामना अन्त्य ' अ ' नो ' आ ' थाय छे अने बहुवचनना स्वरादि प्रत्ययो पर रहेता पण अत्य ' अ ' नो ' आ ' थाय छे.

पचमीना बहुवचनना ' स ' अने ' ह ' थी शरु थता प्रत्ययो पर रहेता अकारात नामना अन्त्य ' अ ' नो ' आ ' अने ' ए ' थाय छे.

तइया, छट्ठी, सत्तमी — तृतीयाना एकवचनना ' ण ' उपर अने षष्ठीना तथा सप्तमीना बहुवचन उपर अनुस्वार विकल्पे थाय छे

छट्ठी—छट्ठीना बहुवचननो प्रत्यय पर रहेता पूर्वना नामनो कोइ पण अन्त्य स्वर दीर्घ थाय छे

सत्तमी—सप्तमीना एकवचननो ' सि ' प्रत्यय लागता मूळ अगना छेवटना स्वर उपर अनुस्वार थाय छे आ ' सि ' प्रत्ययवाळु रूप विशेषे करीने [1]आर्षप्राकृतमा वपरायु छे.

---

१ " एयावती सव्वावती लोगसि "—आ० प्र० श्रु० प्र० अ० उ० १, " लोगसि परमदसी " आ० प्र० श्रु० तृ० अ० उ० २,

सप्तमीना बहुवचननो प्रत्यय पर रहेतां अकारांत नामना अन्त्य 'अ' नो 'ए' थाय छे

शौरसेनी—प्रत्ययने लगता नियमो

पंचमी—प्राकृतमां पंचमीना एकवचनना प्रत्ययो लागतां मूळ अंगनो जे फेरफार जणाव्यो छे ते शौरसेनीमां पण लागु थाय छे बाकी बधां शौरसेनीनां रूपाख्यानो प्राकृतनी प्रमाणे छे

मागधी—प्रत्ययने लगता नियमो

प्रथमा—ज्यां शून्य छे त्यां मागधीमां पुंलिंगी अकारांत नामनु प्रथमानुं अने संबोधननुं एकवचन 'एकारांत' थाय छे माग धीनु आ एकारांत रूप आर्षप्राकृतमां पण वपराएलु छे अने आ एक ज रूपनी वपराशने लीधे ए आर्षप्राकृतने पण 'अर्धमागधी' तरीके जणाववामां आवेलुं छे*

चतुर्थी } षष्ठी } मागधीमां चोथी अने छठ्ठी विभक्तिमां अकारांत के आकारांत नामथी एकवचनमां 'ह' अने बहुवचनमां 'हँ' प्रत्यय विकल्पे लागे छे अने ए बन्ने प्रत्ययो लागतां पूर्वना स्वरनो दीर्घ थाय छे बाकीनां बधां मागधी रूपो शौरसेनी प्रमाणे समजी लेवानां छे उपर जणावेला बहुवचननो 'हँ' प्रत्यय प्राकृतमां पण वापरी शकाय छे

पैशाची—प्रत्ययने लगता नियमो

पंचमी—शौरसेनीमां पंचमीना एकवचनमां जे फेरफार जणाव्यो छे ते पैशाचीमां पण समजवाना छे बाकी बधां पैशाचीनां

× × × × ×

रूपाख्यानो शौरसेनी प्रमाणे समजवानां छे

---

* जुओ टि प्रा० व्या० अ ८ पा० ४ सू २८७

अपभ्रंश—प्रत्ययने लगता नियमो

पढमा }
बीआ } ज्या शून्य छे त्या अपभ्रशमा प्रथमा अने द्वितीया विभक्तिमा (एकवचन अने बहुवचनमां) अकारात नाम आकारात थइने वपराय छे अने एमने एम पण वपराय छे. तथा प्रथमाना एकवचनमा पुलिंगी अकारांत नाम प्राकृतनी पेठे ओकारात थइने पण वपराय छे

चउत्थी }
छट्ठी } ज्या शून्य छे त्या मूळ अंग जेमनु तेम वपराय छे अने दीर्घात थइने पण वपराय छे

सत्तमी—ज्या शून्य छे त्या मूळ अग इकारात अने एकारात थइने वपराय छे

सबोहण—ज्या शून्य छे त्या संबोधनना बधा रूपाख्यानो प्रथमा विभक्ति जेवा समजवाना छे.

अपभ्रंश–प्रत्यय लागता अंगमा थता फेरफारो

तइया—तृतीया विभक्तिना प्राकृत प्रत्ययो लागता मूळ अगमा के प्रत्ययोमा जे फेरफार थाय छे ते ज फेरफार अपभ्रशना ए प्रत्ययो लागता पण समजवानो छे अने ए उपरात तृतीयाना बहुवचननो प्रत्यय लागता मूळ अग आकारात थाय छे अने एमनु एम पण वपराय छे

चउत्थी }
पंचमी }
छट्ठी }
सत्तमी } चोथी, पाचमी अने छट्ठी विभक्तिना एकवचनना अने बहुवचनना प्रत्ययो लागता मूळ अगना अत्यस्वरनो दीर्घ विकल्पे थाय छे तथा सातमीना बहुवचननो ज प्रत्यय लागता पण मूळ अगमा पूर्वोक्त फेरफार थाय छे.

संबोहण—अपभ्रशनु (एकवचन अने बहुवचननु) संबोधनी रूप प्रथमानी पेठे समजवानु छे अने बहुवचननो 'हो' प्रत्यय लागता मूळ अगना अत्य स्वरनो दीर्घ विकल्पे थाय छे

पुंलिंग अने नपुंसकलिंग

अकारांत शब्दनां मागध रूपाख्यानो (पुंलिंग—नरजाति)

वीर[1]

	एकव०	बहुव०
प०	वीरो, (वीरे)[2]	वीरा
बी	वीर	वीरे, वीरा
त०	वीरेण, वीरेण	वीरेहि, वीरेहिं, वीरेहिँ
च०छ	वीरस्स	वीराण, वीराणं, (वीराहँ)
ता	च० वीराय, वीरस्स	,, ,,

---

१ 'वीर'नां पालिरूपो

१	वीरो	वीरा (वीरसे)
२	वीरं	वीरे
३	वीरेन	वीरेहि वीरेभि
४	वीराय	वीरानं
	वीरस्स	
	वीरा वीरस्मा, वीरम्हा	वीरेहि वीरेभि
६	वीरस्स	वीरानं
७	वीरे	वीरेसु
	वीरस्मिं	
	वीरम्हि	
८ स	हे वीर	वीरा

[illegible] नामरूप अकारांत पुरुष शब्द [illegible] रूपो [illegible]

( ) [illegible] निशानमां आपेला रूपो [illegible]

[illegible]

पं०	वीरत्तो,	वीरत्तो,
	वीराओ, वीराउ,	वीराओ, वीराउ,
	वीराहि,	वीराहि, वीरेहि,
	वीराहिंतो,	वीराहिंतो, वीरेहिंतो,
	वीरा	वीरासुंतो, वीरेसुंतो.
स०	वीरंसि, वीरम्मि,[2] वीरे	वीरेसु, वीरेसुं
संबो०	वीरो, (वीरे) वीर, वीरा	वीरा.

'वह' (वध) शब्दना रूपो 'वीर' शब्दनी जेवा ज समजी लेवा जे विशेष छे ते आ प्रमाणे

ता० च० वहाय, वहाइ, वहस्स (एकवचन)

आर्षप्राकृतमा जे शब्दने ता० चतुर्थीनो सूचक 'आए' प्रत्यय लागेलो छे तेनु रूप आ प्रमाणे छे:

ता० च० मोक्ख—मोक्खाए,[3] मोक्खाय, मोक्खस्स (एकवचन)
,, हिअय—हिअयाए[4] हिअयाय, हिअयस्स ,,

---

१ जूओ प्रकरण २, दीर्घस्वर=ह्रस्वस्वर–१

२ जूओ प्रकरण ८, म=अनुस्वार–१० (टिप्पण)

३ जूओ सूत्रकृतागसूत्र प्र० श्रु० तृ० अ० तृ० उ० गा० ११— "उवसग्गे नियामित्ता आमोक्खाए परिव्वएज्जा" इत्यादि

४ जूओ आचारागसूत्र प्र० श्रु० प्र० अ० उ० ६—"से बेमि अप्पेगे अजिणाए वहंति, मसाए * सोणियाए * ... हिययाए" इत्यादि.

ता० च० मस—ममाए ममाय ममम्स (एकवचन)
, अग्गिण—अग्गिणाए अग्गिणाय, अग्गिणम्स ,,

ए प्रमाणे अरिहंत (अर्हत्), धम्म (धम), गधव्व (गन्धर्व) मणुस्स (मनुष्य), पिसाअ (पिशाच), नायपुत्त (ज्ञातपुत्र) सुगत, गोण, गउअ, गाअ (गो), भिसअ (भिषज्), सरअ (शरद्), सम, मर, सुर, असुर, उरग (—ग), नाग (—ग), जक्ख (यक्ष), किंनर वगेरे बधा अकारांत पुलिंग शब्दोना रूपो समजी लेवां

वीर (शौरसेनीरूपो[1])

प० ए० वीरादो वीरादु

बाकी बधां प्राकृत प्रमाणे

वीरु[1] (वीर) (मागधीरूपो)

प० ए वीले

छ० वीलाह वालस्स वीलाहँ, वीलाण, वीलाण

बाकी बधां शौरसेनी प्रमाणे

वीर (पैशाचीरूपो[2])

प ए० वीरातो, वीरातु

बाकी बधां शौरसेनी प्रमाणे

---

[1] शौरसेनी मागधी वगेरेनां जे रूपो प्राकृतथी जुदां थाय छे
ते ज अहीं बताव्यां छे
[illegible]
[2] पैशाचीमां [illegible] उपयोग [illegible] (पृ २२)
[illegible] [1] वीर+अ—वीरअ
[2] वीर+अ वीरअ

वीर (अपभ्रंशरूपो)

	एकव०	बहुव०
१	[1]वीरु, वीरो, वीर, वीरा	वीर, वीरा.
२	वीरु, वीर, वीरा,	वीर, वीरा.
३	वीरेण, वीरेणं, वीरें.	वीरेहिं, वीराहिं, वीरहिं
४–६	वीरस्सु, वीरासु, वीरसु वीराहो, वीरहो, वीर, वीरा	वीराह, वीरह, वीर, वीरा
५	वीराहु, वीरहु, वीराहे, वीरहे	वीराहु, वीरहु
७	वीरि वीरे	वीराहिं, वीरहिं
८ (स०)	वीरु ! वीरो ! वीर ! वीरा !	वीराहो ! वीरहो ! वीर ! वीरा !

'वीर' शब्दना उपर जणावेला बधी जातना रूपो प्रमाणे प्रत्येक पुलिंगी अकारांत शब्दना शौरसेनी रूपो, मागधीरूपो, पैशाची रूपो अने अपभ्रंश रूपो समजी लेवाना छे

अकारांत शब्दनां प्राकृत रूपाख्यानो (नपुंसकलिंग—नान्यतरजाति)

अकारांत नपुंसक नामोना बधी जातना रूपाख्यानो बनाववानी सघळी प्रक्रिया उपर प्रमाणे छे जे काइ खास भेद छे ते आ प्रमाणे छे

[1] वीर+उ=वीरु—जओ स्वरलोप—२ पृ० ९२

प्रत्ययो

प०	म्	णि, इँ, ई
बी०	,,	,, ,, ,,
स०	०	,, ,, ,,

१ अकारांत नान्यतरजातिना नामने लगता उपर गणावेला बधा प्रत्ययो कोई पण नान्यतरजातिना नामने लगाडवाना छे

२ शौरसेनी[1], मागधी अने पैशाचीमां पण प म प्रत्ययोनो उपयोग थाय छे

३ 'णि, इँ, इ' प्रत्ययोनी पूर्वना अंगनो अन्त्य स्वर दीर्घ थाय छे

४ संबोधनमां—ज्यां शून्य छे त्यां—एकवचनमां नान्यतर नामोनु मूळ रूप ज वपराय छे अने बहुवचन, प्रथमानी जेवु थाय छे

कुल

	एकव	बहुव
प०	कुलं[2]	कुलाणि कुलाइँ, कुलाइ
बी	,,	,, ,,
स	कुल !	,, ,, ,,

१ शौरसेनी मागधी पैशाची अने अपभ्रंशना रूपाख्यानो करती वखते ते ते भाषाना स्वरविकार अने व्यञ्जनविकारना नियमो तरफ लक्ष्य राखवु जोईए

२ नपुंसकलिंगी अकारांतनां पालिरूपी

कुल

प	कुलं	कुला कुलानि
बी	कुलं	कुले, कुलानि

शेष बीजा ना पालिरूपोनी जेवा—जुओ पालिप्र पृ ११२ स्त्रीलिंग चित्त प्रकरण

३ कुल+म्=कुलं—अहीं म=अनुस्वार ' प्र ५

बाकी बधा रूपो ते ते भाषा प्रमाणे 'वीर' नी जेवा थाय छे.

ए रीते गुण, ढेव, सोमव (सोमपा), गोव (गोपा), कररुह, [1]सिर (शिरस्), नभ, नह (नभस्), दाम (दामन्), सेय (श्रेयस्), वय (वचस्–वयस्), सुमण (सुमनस्), सम्म (शर्मन्), चम्म (चर्मन्) वगेरे शब्दोना रूपो जाणी लेवाना छे.

अपभ्रंश

नान्यतरजातिना रूपाख्यानोनी अपभ्रंशमा जे खास विशेषता छे ते आ प्रमाणे·

१ प्रथमा अने द्वितीयाना बहुवचनमा प्राकृतनी पेठे त्रण प्रत्ययो न लागता मात्र एक 'इ' प्रत्यय लागे छे अने एनी पूर्वनो स्वर विकल्पे दीर्घ थाय छे

२ जे नान्यतर शब्दने छेडे 'क' प्रत्यय लागेलो होय तेने प्रथमा अने द्वितीयाना एकवचनमा 'उ' प्रत्यय लागे छे.

---

१ जे शब्दो 'अस्' अने 'अन्' छेडावाळा छे ते प्राकृतमा नरजातिना गणाय छे (पृ० १२३–नामनी जातिओ) पण पालिमा एवा 'अस्' छेडावाळा शब्दोने (मनोगणने) नरजातिना अने नान्यतरजातिना गणवामा आव्या छे पालिप्र० पृ० १३३–१३४ अने तेनु टिप्पण

प्राकृतमा अने पालिमा ए 'अस्' अने 'अन्' छेडावाळा शब्दोना बधा रूपो 'वीर' अने 'कुल' नी जेवा थाय छे तो पण आर्षप्राकृतमा अने पालिमा ए शब्दोना केटलाक रूपो 'वीर' अने 'कुल' थी जुदा थाय छे जेमके,

मण, मन (मनस्)

पालि	आर्षप्रा०	संस्कृत
तृ० प० ए० मनसा	तृ० ए० मणसा	(मनसा)
	प० ए० मणसो	(मनस)

रूपाख्यानो

कुल

१	कुलु, कुल, कुला	कुलाइं, कुलइं
२	,, , ,,	, ,,

च छ ए मनसो	च छ ए मणसो	(मनसः)
स ए मनसि	स ए मणसि	(मनसि)

कम्म (कर्मन्)

पालि	आर्षप्रा	संस्कृत
तृ ए कम्मना कम्मुना	तृ ए कम्मणा कम्मुणा	(कर्मणा)
च छ ए कम्मुनो	च छ ए कम्मुणो	(कर्मणः)
पं ए कम्मना कम्मुना	पं ए कम्मणा कम्मुणो	(कर्मणः)
स ए कम्मनि	स ए कम्मणि	(कर्मणि)

उदाहरण— सिरसा मणसा मत्थएण वंदामि '—मुनिवंदनसूत्र

मणसि काउं गरुयं भारं ' प्राकृतकथासंग्रह—उदायननी कथा पृ १२ प २२

कम्मुणा बंभणो होइ कम्मुणा होइ खत्तिओ "—

उत्तराध्ययन अ २ गा ३३

आ आर्ष रूपोनी सिद्धिने माटे आ हेमचंद्रे आर्षं संस्कृतवत् सिद्धम् ' (८-४-४४८) ए सूत्रने रचेलु छे

'स्थामन्' वगेरे शब्दनां पालिरूपोनी विचारणा माटे जुओ पालि प्र पृ ११ अ १-१२

आर्षप्राकृतमां पण केटलेक स्थळे स्थामन् वगेरे शब्दनां रूपो ए पालिरूपोनी जेवां वपरायेलां छे

जुओ अपभ्रंश—प्रकरण लगता नियमो—पत्रमा बीजा—पृ १२९

कुलअ (कुलक)

१ [1]कुलउ कुलआइ, कुलअइ.

२ ,, ,, ,,

बाकी बधा रूपो 'वीर' ना अपभ्रंश रूपोनी पेठे समजी लेवाना छे.

अकारांत–सर्वादि–शब्द

नीचेना शब्दोने 'सर्वादि' तरीके गणवामा आवे छे: सव्व–अप० साहु, सव्व (सर्व), वीस (विश्व), उह, उभ (उभ), अवह, [2]उवह, उभय (उभय), अण्ण, अन्न (अन्य), अण्ण (न्न) यर (अन्यतर), इअर (इतर), कयर (कतर), कइम (कतम), णेम, नेम (नेम), सम, सिम, [3]पुरिम, पुव्व (पूर्व) अवर (अपर), दाहिण, दक्खिण (दक्षिण), उत्तर, अवर, अहर (अधर), स,सुव (स्व), अतर, त[4] (तद्), ज (यद्) [5]अमु (अदस्), इम (इदम्), एत

---

१ कुलअ + उ = कुलउ–जूओ स्वरलोप–६ पृ० ९६.

२ 'उवह' रूप आ० हेमचद्रने समत नथी–हे० प्रा० व्या० ८–२–१३८ पृ० ६५. आर्षप्राकृतमा 'उभयोकाल' प्रयोगमा 'उभय' ने बदले 'उभयो' के 'उभओ' ("उभओकाल पि अजिअसतिथय"– आजितशातिस्तवन गा० ३९) रूप पण वपराएलु छे

३ जूओ पृ० ८७ शब्द–सर्वथा विकार.

४ जेम सस्कृतमा 'तद्' नी जेवु 'त्यद' पण एक सर्वनाम छे तेम ए सर्वनाम पालिमा पण छे, एना रूपो 'त' नी जेवा थाय छे

स्यो त्ये

त्य त्ये –पालिप्र० पृ० १४३ नु छेल्लु टिप्पण. प्राकृतमा तो आ 'त्य' सर्वनाम मळतु नथी

५ आ शब्दना रूपो उकारात शब्दोना प्रसगे आवनारा छे.

(एतद्), इक, एक, एग, एअ (एक), दु (द्वि) तुम्ह (युष्मद्), अम्ह (अस्मद्)कि, अप० काइ, कवण (किम्), भवन्त (भवत्)

१ सर्वादि शब्दो विशेषणरूप होवाथी त्रणे लिंगे वापरी शकाय छे

२ 'अमु' अने 'तु' शब्द सिवाय ए बधा सर्वादि शब्दो अकारांत छे, तेथी तेनां बधी जातनां बधां रूपाख्यानो पुंलिंगमां ' वीर ' अने नपुंसकमां 'कुल' नी जेवां समजवानां छे ज्यां जे विशेषता छे ते आ प्रमाणे छे

३ प्रथमाना बहुवचनमां सर्वादि शब्दोना अन्त्य ' अ ' नो ' ए ' थाय छे अने ए एक ज रूप प्रथमाना बहुवचनमां वपराय छे

४ सर्वादि शब्दोने छट्ठीना बहुवचनमां ' एसिं ' प्रत्यय विकल्पे लागे छे

५ सर्वादि शब्दोने सप्तमीना एकवचनमां 'स्स' 'स्सिं' 'हिं' अने 'म्मि' प्रत्यय लागे छे

रूपाख्यानो (नरजाति)

सव्व (प्राकृत)

	एकव०	बहुव०
प०—	सव्वो (सव्वे)	सव्वे
बी०—	सव्वं	सव्वे, सव्वा

---

१ संख्यावाचक शब्दोना प्रकरणमां उभ अने ' तु शब्दनां रूपो आवशे

२ जुओ पृ १२१ भवतो ।

३ सव्व शब्दना पालि रूपो माटे जुओ पृ ११ उपरनु वेलु टिप्पण त्यां भेद था छे

४ तथा स बहुव सव्वे

५ सव्वेस सव्वेसान

तथा पचमीना एकवचनमां वीरा नी पेठे सव्वा अने सप्तमीना एकवचनमा वीरे नी पेठे सव्वे रूप थतां नथी

त०—सव्वेण, सव्वेण	सव्वेहि, सव्वेहिं, सव्वेहिँ.
च० छ०—सव्वस्स	सव्वेसिं, सव्वाण, सव्वाण, (सव्वाहँ)
प०—सव्वत्तो,	सव्वत्तो,
सव्वाउ, सव्वाओ,	सव्वाउ, सव्वाओ,
सव्वाहि,	सव्वाहि, सव्वेहि,
सव्वाहिंतो,	सव्वाहिंतो, सव्वेहिंतो
सव्वा	सव्वासुंतो, सव्वेसुंतो
स०—सव्वत्थ, सव्वस्सि, सव्वहिं, सव्वम्मि	सव्वेसु, सव्वेसुं.

सव्व (शौरसेनी)

शौरसेनीमा 'सव्व' शब्दना बधा रूपो 'सव्व' ना प्राकृत रूपो जेवा छे. पचमीना एकवचनमा विशेषता छे ते '[1]वीर' ना शौरसेनीरूप प्रमाणे समजवी.

शव्व (मागधी)

प्रथमाना एकवचनमा अने छट्ठी विभक्तिमा 'शव्व' ना मागधी रूपो 'वीर[2]'ना मागधी रूपो जेवा जाणवा अने बाकी बधा 'सव्व' ना शौरसेनी रूपो प्रमाणे समजवा.

---

१ जूओ पृ० १२२, २ जूओ पृ० १३२

(एतद्), इक, एक, एग, एअ (एक), दु (द्वि) तुम्ह (युष्मद्), अम्ह (अस्मद्) कि, अप० काइं, कवण (किम्), भवन्त (भवत्)

१ सर्वादि शब्दो विशेषणरूप होवाथी त्रणे लिंगे वापरी शकाय छे

२ 'अमु' अने 'दु' शब्द सिवाय ए बधा सर्वादि शब्दो अकारांत छे, तेथी तेनां बधी जातनां बधां रूपाख्यानो पुल्लिंगमां 'वीर' अने नपुंसकमां 'कुल' नी पेठे समजवानां छे ज्यां जे विशेषता छे ते आ प्रमाणे छे

३ प्रथमाना बहुवचनमां सर्वादि शब्दोना अन्त्य 'अ' नो 'ए' थाय छे अने ए एक ज रूप प्रथमाना बहुवचनमां वपराय छे

४ सर्वादि शब्दोने छट्ठीना बहुवचनमां 'एसिं' प्रत्यय विकल्पे लागे छे

५ सर्वादि शब्दोने सप्तमीना एकवचनमां 'स्स' 'स्सिं' 'हिं' अने म्मि' प्रत्यय लागे छे

रूपाख्यानो (नरजाति)

[1]सव्व (मारुष)

एकव	बहुव०
प०—सव्वो (सव्वे)	सव्वे
बी०—सव्व	सव्वे, सव्वा

१ सव्वावाचक शब्दोना प्रकरणमां 'उभ' अने 'दु' शब्दमां रूपो आवशे.

२ जुओ पृ १२१ भवत्‌ ।

१ सव्व शब्दनां पालि रूपो माटे जुओ पृ० ११ उपरनुं बेसुं टिप्पण ज्यात भेद आ छे।

प तथा स बहुव माटे

छ सब्बेसं, सब्बेसान

तथा पञ्चमीना एकवचनमां 'वीरा' नी पेठे 'सव्वा' अने सप्तमीना एक वचनमां 'वीरे' नी पेठे 'सव्वे' रूप थतां नथी

त०—सव्वेण, सव्वेण	सव्वेहि, सव्वेहि, सव्वेहिँ
च० छ०—सव्वस्स	सव्वेसिं, सव्वाण, सव्वाण, (सव्वाहँ)
प०—सव्वत्तो,	सव्वत्तो,
सव्वाउ, सव्वाओ,	सव्वाउ, सव्वाओ,
सव्वाहि,	सव्वाहि, सव्वेहि,
सव्वाहिंतो,	सव्वाहिंतो, सव्वेहिंतो
सव्वा	सव्वासुंतो, सव्वेसुंतो.
स०—सव्वत्थ, सव्वस्सिं, सव्वहिं, सव्वम्मि	सव्वेसु, सव्वेसुं.

सव्व (शौरसेनी)

शौरसेनीमां 'सव्व' शब्दना बधा रूपो 'सव्व' ना प्राकृत रूपो जेवा छे. पंचमीना एकवचनमा विशेषता छे ते 'वीर[1]' ना शौरसेनीरूप प्रमाणे समजवी

शव्व (मागधी)

प्रथमाना एकवचनमा अने छट्ठी विभक्तिमा 'शव्व' ना मागधी रूपो 'वीर[2]' ना मागधी रूपो जेवा जाणवा अने बीजां बधा 'सव्व' ना शौरसेनी रूपो प्रमाणे समजवा.

---

१ जूओ पृ० १२२, २ जूओ पृ० १३२

सव्व (पैशाची)

पंचमीनुं एकवचन ' वीर ' ना पैशाचीरूप प्रमाणे अने बाकी बधां ' सव्व ' नां शौरसेनी रूपो प्रमाणे

सव्व, साह (अपभ्रंश)

	एकव	बहुव०
१	सव्वु सव्वा, सव्व, सव्वा	सव्वे, सव्व सव्वा
२	सव्वु सव्व, सव्वा	सव्व, सव्वा
३	सव्वेण, सव्वेण, सव्वें	सव्वेहिं, सव्वाहिं सव्वहिं
४–६	सव्वस्सु सव्वासु सव्वसु सव्वहो, सव्वाहो सव्व, सव्वा	सव्वेसिं, सव्वह, सव्वाहं, सव्व, सव्वा
५	सव्वहां सव्वाहां	सव्वहु सव्वाहु
७	सव्वहिं, सव्वाहिं	सव्वहिं सव्वाहिं

बाकी बीजा बधा सर्वादिओनां रूपो पण ए ' सव्व ' (प्राकृत, शौरसेनी) शव्व (मागधी) अने सव्व (अपभ्रंश) नी पेठे करी लेवानां छे तो पण केटलांक प्रसिद्ध प्रसिद्ध सर्वादिनां रूपो नीचे प्रमाण आपीए छीए

---

* जुओ ७० ११

अपभ्रंशमां सव्व ने स्थाने साह शब्द पण वपराय छे अने एना बधां रूपो सव्व ना अपभ्रंश रूपानी पेठे थाय छे

त, णं (तत्)

१	स, सो (मा० शे)	ते, णे.
२	त, ण	ते, ता, णे, णा.
३	तेण. तेण, तिणा	तेहि, तेहिं, तेहि.
	णेण, णेणं	णेहि, णेहिं, णेहि.
	(पै० नेन)	
४–६	तस्स, तास (मा० ताह)	तास, तेसिं, ताण, ताणं,.
	णस्स	णेसिं, णाण, णाण,
	से	सिं (मा० ताहँ).
५	तो, तम्हा, तत्तो,	तत्तो,
	ताओ, ताउ	ताओ, ताउ,
	ताहि,	ताहि, तेहि,
	ताहिंतो	ताहिंतो, तेहिंतो,
	ता	तासुंतो, तेसुंतो,
	(शौ० मा० तादो, तादु)	
	(पै० तातो, तातु)	

---

१ केटलाक प्रयोगोने अनुसारे 'त' ने बदले 'ण' पण वपराय छे –हे० प्रा० व्या० ८–३–७०–पृ० ९५

'त' ना पालिरूपो माटे जुओ पालिप्र० पृ० १४१–१४२ त (तद्) शब्द

प०	सो	ते
बी०	त, न	ते, ने.
त०	तेन, नेन	तेहि, तेभि,
		नेहि, नेभि इत्यादि

२ आ 'तास' ने बदले 'से' रूप पण कोइ वैयाकरण वापरे छे हे० प्रा० व्या० ८–३–८१–पृ० ९७

सव्व (पैशाची)

पंचमीनुं एकवचन ' 'वीर ' ना पैशाचीरूप प्रमाणे अने बाकी बधां ' सव्व ' नां शौरसेनी रूपो प्रमाणे

सव्व, साह (अपभ्रंश)

	एकव	बहुव०
१	सव्वु सव्वो सव्व, सव्वा	सव्वे, सव्व सव्वा
२	सव्वु, सव्व, सव्वा	सव्व, सव्वा
३	सव्वेण, सव्वेण, सव्वें	सव्वेहिं, सव्वाहिं सव्वहिं
४-६	सव्वस्सु सव्वासु सव्वसु सव्वहो, सव्वाहो सव्व, सव्वा	सव्वेसिं, सव्वह, सव्वाहं, सव्व, सव्वा
५	सव्वहां सव्वाहां	सव्वहुं, सव्वाहु
७	सव्वहिं, सव्वाहिं	सव्वहिं सव्वाहिं

बाकी बीजा बधा सर्वादिओमां रूपो पण ए ' सव्व ' (प्राकृत, शौरसेनी) शव्व (मागधी) अने सव्व (अपभ्रंश) नी पेठे करी लेवानां छ तो पण केटलाक प्रसिद्ध प्रसिद्ध सर्वादिनां रूपो नीचे प्रमाण आपीए छीए

---

१ जुओ पृ ११०

२ अपभ्रंशमां सव्व ने स्थाने ' साह ' शब्द पण वपराय छे अने एना बधां रूपो ' साह ' नां अपभ्रंश रूपोनी पेठे थाय

त, ण (तत्)

	एकवचन	बहुवचन
१	स, सो (मा० शे)	ते, णे.
२	त, ण	ते, ता, णे, णा.
३	तेण. तेणं, तिणा णेण, णेणं (पै० नेन)	तेहि, तेहिं, तेहिँ णेहि, णेहिं, णेहिँ
४–६	तस्स, तास (मा० ताह) णस्स से	तास, तेसिं, ताण, ताणं, णेसिं, णाण, णाणं, सिं (मा० ताहँ)
५	तो, तम्हा, तत्तो, ताओ, ताउ ताहि, ताहिंतो ता (शौ० मा० तादो, तादु) (पै० तातो, तातु)	तत्तो, ताओ, ताउ, ताहि, तेहि, ताहिंतो, तेहिंतो, तासुंतो, तेसुंतो,

१ केटलाक प्रयोगोने अनुसारे 'त' ने बदले 'ण' पण वपराय छे.–हे० प्रा० व्या० ८–३–७०–पृ० ९५.

'त' ना पालिरूपो माटे जुओ पालिप्र० पृ० १४१–१४२ त (तद्) शब्द

प०	सो	ते.
बी०	त, न	ते, ने.
त०	तेन, नेन	तेहि, तेभि, नेहि, नेभि इत्यादि

२ आ 'तास' ने बदले 'से' रूप पण कोइ वैयाकरण वापरे छे. हे० प्रा० व्या० ८–३–८१–पृ० ९७

णत्तो,	णत्तो,
णाओ, णाउ,	णाओ, णाउ,
णाहि,	णाहि, णेहि,
णाहिंतो,	णाहिंतो, णेहिंतो,
णा	णासुंतो, णेसुंतो
७ ताहे, ताला, तइआ	तेसु, तेसु,
तम्मि, तस्सिं तहि, तत्थ,	
णम्मि, णस्सिं, णहिं, णत्थ	णेसु, णेसु

त ' शब्दनां प्राकृतरूपो साथे शौरसेनी, मागधी अने पैशाचीनां पण विशेष रूपो जणावेलां छे

' सव्व ' नां अपभ्रंशरूपोनी पेठे ' त ' शब्दनां अपभ्रंशरूपो पण समजी लेवां जे फेर छे ते आ प्रमाणे

प० ए	सु, सो स सा, भ्रं
बी ए	सु, स, सा, भ्र

ज (यत्)

प	जो (मा० जे)	जे
बी०	जं	जा, जे
त	जेण, जेणं जिणा	जेहि, जेहिं, जेहिँ
च० छ०	जस्स, जास (मा जाह)	जेसिं जाण, जाण, (मा जाहँ)

१ आ बधां रूपो तदा ना अर्थमां ज वपराय छे

२ आ ' त्र रूप बधे लिंगमा काम आवे छे

३ ज नां पालिरूपो माटे जुओ पालिप्र पृ १४१ य (यद्) शब्द

पं०	जम्हा, जत्तो.	जत्तो,
	जाओ जाउ	जाओ, जाउ.
	जाहि, जाहितो, जा	जाहि, जेहि,
	(शौ० मा० जादो. जादु)	जाहितो. जेहितो,
	(पै० जातो जातु)	जासुतो. जेसुतो.
स०	जम्मि, जम्मि. जहि, जत्थ	
	जाहे जाला. जइआ.	जेसु. जेसु.

'ज' ना अपभ्रंशरूपो 'सव्व' ना अपभ्रंशरूपोनी पेठे करी लेवा. विशेषता आ प्रमाणे.

प० ए०–जु, जो. ज, जा, ध्रुं[2]

बी० ए०–,, ,, ,, ,,

---

[3](क) किम्

प०–को (मा० के)	के
बी०–क	क, का.
त०–केण, केण, किणा	केहि, केहिं, केहिँ.
च० छ०–कस्स, कास (मा० काह)	कास, केसि, काण, काण (मा० काहँ)

---

१ आ त्रणे रूपो 'यदा' ना अर्थमा ज वपराय छे.

२ आ रूप त्रणे लिंगमा सरखु छे

३ जेवा 'सव्व' ना पालिरूपो छे तेवा 'क' ना पण छे. विशेषता एटली छे के, च० छ० ए० किस्स स० ए० किस्मि, किम्हि–आ रूपो वधाराना थाय छे–पालिप्र० पृ० १४९

प०—कम्हा, किणो, कीस, कत्तो, — कत्तो,
कओ, काउ, — काओ, काउ,
काहि, काहिंतो, का — काहि, केहि,
(शौ० मा० कादो, कादु) — काहिंतो, केहिंतो,
(पै० कातो, कातु) — कासुंतो, केसुंता
स० कम्मि, कस्सिं, कहिं, कत्थ
काहे, काला, कइआ — केसु, केसुं

क, कवण, काइं (किम्) अपभ्रंश

अपभ्रंश रूपाख्यानने प्रसंगे 'क' ने स्थाने 'कवण' अने 'काइं' शब्द पण वपराय छे

'क' नां अपभ्रंशरूपो अने 'सव्व' नां अपभ्रंशरूपो बन्ने सरखां छे मे विशेषता छे ते आ प्रमाणे

प० ए० कु, को, क का
कवणु कवणो, कवण, कवणा
बी ए० कु क, का
कवणु, कवण, कवणा
प० ए० किहे कहां, काहां
कवणिहे कवणहा, कवणाहा

आ बधां रूपो कहा ना अर्थमां ज वपराय छे

(मद्) काइं (काइं) ना रूपाख्यानो इकारांत नामना अपभ्रंश आपवानां छे

इम (इदम्)[1]

प०—अयं, इमो (मा० इमे)	इमे
बी०—इम, इणं, णं	इमे, इमा, णे, णा.
त०—इमेण, इमेणं, इमिणा	इमेहि, इमेहिं, इमेहिँ.
णेण, णेणं	(एहि, एहिं, एहिँ)
(पै० नेन)	णेहि, णेहिं, णेहिँ.
च० छ०—इमस्स, अस्स, से	सिं, इमेसि,
(मा० इमाह)	इमाण, इमाणं.
	(मा० इमाहँ)
पं०— इमत्तो, इमाउ, इमाओ	इमत्तो, इमाउ, इमाओ,
इमाहि, इमाहिंतो	इमाहि, इमेहि,
इमा	इमाहिंतो, इमेहिंतो
(शौ० मा० इमादो, इमादु)	इमासुंतो, इमेसुंतो.
(पै० इमातो, इमातु)	
स०— इमस्सिं, इमम्मि, अस्सिं, इह	इमेसु, इमेसुं,
	(एसु, एसुं).

---

१ 'इम' ना पालिरूपो 'सव्व' ना पालिरूपो जेवा छे 'सव्व' ना रूपो करता जे विशेष छे ते आ छे

प०—अय	
त०—अनेन, इमिना	एहि, एभि, इमेहि, इमेभि.
च० छ०—अस्स, इमस्स	एस, एसान, इमेस, इमेसान,
प०—अस्मा, अम्हा	एहि, एभि, इमेहि, इमेभि
इमस्मा, इमम्हा	
स०—अस्मिं, अम्हि	एसु, इमेसु
इमस्मिं, इमम्हि	

—पालिप्र० पृ० १४४–१४५ इम (इदम्) शब्द

आय (इदम्) अपभ्रंश

'सव्व' नां अपभ्रंश रूपोनी पेठे 'आय' नां अपभ्रंश रूपो समजी लेवां

प०—आयु, आयो   आये, आय, आया
   आय, आया

बी०—आयु, आय, आया   आय, आया
   आयेण, आयेण,   आयेहिं, आयहिं, आयाहिं
   आयें   वगेरे

---

[1]एअ (एतद्)

प०—एस, एसो,   एए (शौ० मा० एदे)
   इण, इणमो
   (मा० एशे, एश)   (पै० एते)

बी०—एअ   एए, एआ
   (शौ० मा० एद)   (शौ० मा० एदे, एदा)
   (पै० एतं)   (पै० एते, एता)

त०—एएणं, एएणं, एइणा   एएहि, एएहिं, एएहिँ

---

१ आ 'एअ' शब्दने शौरसेनी अने मागधीमां व्याख्यानने प्रसंगे 'एद' शब्द समजवानो छे अने पैशाचीमां 'एत' शब्द समजवानो छे

एत ना पालिरूपो 'तम्' नां पालिरूपोनी जेवां छे:

प० एसो   एते

बी० एत   एते वगेरे

शेष भाषाओमां अन्यादेश सूचवता 'एत' ने बदले 'एन' रूप [illegible] (एतद्) [illegible]

१ [illegible] १०

(शौ० मा० एदेण, एदेण, एदिणा)	(शौ० मा० एदेहि, एदेहि, एदेहिँ)
(पै० एतेन, एतिना)	(पै० एतेहि, एतेहिं, एतेहिँ)
च० छ०—से, एअस्स	सिं, एएसिं, एआण, एआणं.
(शौ० एदस्स)	(शौ० एदेसिं, एदाण, एदाण)
(मा० शे, एदाह)	(मा० शिं, एदाहँ,
(पै० एतस्स)	एदाण, एदाण)
	(पै० एतेसिं, एतान)
प०—एत्तो, एत्ताहे, एअत्तो	एअत्तो,
एआउ, एआओ,	एआउ, एआओ,
एआहि, एआहिंतो, एआ	एआहि, एएहि,
(शौ० मा० एदादु, एदादो)	एआहिंतो, एएहिंतो,
(पै० एतातु, एताती)	एआसुंतो, एएसुंतो
स०—एत्थ, अयम्मि, ईअम्मि	एएसु, एएसुं.
एअम्मि, एअस्सिं	

एद, एअ (एतत्) अपभ्रंश

' सव्व ' ना अपभ्रंश रूपोनी पेठे ' एद ' के ' एअ ' ना अपभ्रंश रूपो करी लेवा. जे फेरफार छे ते आ प्रमाणे.

प०—एहो	एइ
बी०—,,	,,

अकारांत–सर्वादि–शब्द (नान्यतर जाति)

सर्वादि शब्दनां बधी जातनां नपुंसकलिंगी रूपास्यानो पुंलिंगी सर्वादि प्रमाणे छे मात्र प्रथमा अने द्वितीयामां जे विशेष छे ते 'कुल' नी पेठे समजी लेवानो छे जेमके,

सव्व (सर्व)

प०—	सव्व	सव्वाणि, सव्वाइँ, सव्वाइ
बी —	"	" " "

बाकीनां, 'सव्व' नां प्राकृत, शौरसेनी, मागधी अने पैशाची रूपो प्रमाणे

सव्व (अपभ्रंश)

प०—	सव्वु, सव्व, सव्वा	सव्वाइ, सव्वाइँ
बी०—	" " "	" "

सव्वअ (सर्वक–अपभ्रंश)

प —	सव्वउ	सव्वआइँ, सव्वआइ
बी —	,	"

बाकीनां 'सव्व' नां अपभ्रंश रूपो प्रमाणे

त (तत्)

प०—	तं णं	ताणि ताइँ, ताइ णाणि, णाइँ, णाइ
बी०—	त ण	,

बाकी बधां पुंलिंगी त प्रमाणे

१ प्रा० व्या० ३१८ २ प्रा० व्या० ३८–१४ ३ अपभ्रं ० १४ ४ प्रा० ७ ...

त (अपभ्रंश)

प०—	[1]त्र, तु, त, ता	ताइ, तइ.
बी०—	,, ,, ,, ,,	,, ,,

तअ (तक–अपभ्रंश)

प०—	त्र, तउ	तआइ, तअइ
बी०—	,, ,,	,, ,,

बाकी बधा, '[2]त ' नां अपभ्रंश रूपो प्रमाणे.

ज (यत्)

प०—	ज	जाणिं, जाइँ, जाइ
बी०—	जं	जाणि, जाइॅ, जाइ.

बाकीना, पुलिंगी '[3]ज ' प्रमाणे.

ज (अपभ्रंश)

प०—	[4]ध्रु, जु, ज, जा	जाइ, जइ.
बी०—	,, ,, ,, ,,	,, ,,

जअ

प०—	ध्रु, जउ	जआइ, जअइ
बी०—	,, ,,	,, ,,

बाकीना, '[5]ज ' ना अपभ्रंश रूपो प्रमाणे

---

१ जूओ पृ० १४२ २ जूओ पृ० १४२ ३ जूओ पृ० १४२–१४३, ४ जूओ पृ० १४३, ५ जूओ पृ० १४३,

किं

प०— किं काणि, काइँ, काइ
नी०— ,, ,, , ,,

बाकीनां, पुंलिंगी 'क' नी पेठे

किं (अपभ्रंश)

प — किं, काइं, कवणु, कवण, कवणा काइ, कइं
कवणाइ, कवणइं,
कइंइ काइइ,
कीइं, किइ

नी०— किं, काइ, कवणु, कवण, कवणा , ,,
,, ,,
,, ,,
,, ,,

बाकी बधां, 'क' नां अपभ्रंश रूपो प्रमाणे

इम (इदम्)

प — इण, इणमो, इद इमाणि, इमाइँ, इमाइं
नी०— ,, , , , ,, ,,

शेष, पुंलिंगी 'इम' नी जेवां

इम, इमअ (अपभ्रंश)

प०— इमु आयाइं, आयइ
नी०— ,, ,,

बाकीनां 'इम' नां अपभ्रंश रूपोनी पेठे

---

१ गुओ पृ १४१–१४४ २ जुओ पृ १४४ ३ का + इइं=कीइं–जुओ पृ ५ स्वरलोप ४ जुओ पृ १४४ जुओ पृ १८० ६ जुओ पृ १४६

एअ (एतत्)

प०— एस, एअं, इणं, इणमो एआणि, एआइँ, एआइं.
बी०— एअ " " "
शेष, पुंलिंगी '[1]एअ' नी पेठे

एह, एअ (अपभ्रंश)

प०— एहु एईइ, एइइ.
बी०— " " "
शेष 'एअ' ना [2]अपभ्रंश रूपोनी पेठे.

'युष्मद्' अने 'अस्मद्' ना रूपो त्रणे लिंगमा एक सरखा थाय छे अने ए आ प्रमाणे छे.

[3]तुम्ह (युष्मद्)

प— एकव०—त, तु, तुव, तुह, तुम (त्वम्)

---

१ जूओ पृ० १४६. २ जूओ पृ० १४७.

३ **तुम्ह (युष्मद्)-पालिरूपो**

१ त्व तुम्हे (वो)
तुव
२ त्व (तुम्ह) तुम्हे, तुम्हाक (तुम्ह)
तुव (वो)
तव
त
३–५ त्वया, तया (प०—त्वम्हा) तुम्हेहि, तुम्हेभि (त०—वो)
(त०—ते)
४–६ तव, तुय्ह, तुम्ह (ते) तुम्हाक (वो)
७ त्वयि, तयि तुम्हेसु
—जूओ पालिप्र० पृ० १५१

बहुव०—मे, तुब्भे, तुज्झ, तुम्ह, तुय्हे, उय्हे (यूयम्)

द्वि– एकव०—त, तु, तुमं, तुव, तुह, तुमे, तुए (त्वाम्)

बहुव०—वो, तुज्झ, तुब्भे, तुय्हे, उय्हे, मे (युष्मान्–व)

तृ– एकव०—मे, दि, दे, ते, तइ, तए, तुम, तुमइ, तुमए तुमे, तुमाइ (त्वया)

बहुव०—भे, तुब्भेहिं, उज्झेहिं, उम्हेहिं, तुय्हेहिं, उय्हेहिं–(युष्माभि)

प– एकव०—तुम्ह, तुब्भ, तहिंतो (त्वत्)

तइत्तो, तइओ, तइउ, तईहिंतो

तुवत्तो, तुवाओ, तुवाउ, तुवाहि, तुवाहिंतो, तुवा

तुमत्तो, तुमाओ, तुमाउ, तुमाहि, तुमाहिंतो, तुमा

तुहत्तो, तुहाओ तुहाउ, तुहाहि, तुहाहिंतो, तुहा

तुब्भत्तो, तुब्भाओ, तुब्भाउ, तुब्भाहि, तुब्भाहिंतो, तुब्भा

बहुव०—तुब्भत्तो, तुब्भाओ, तुब्भाउ, तुब्भाहि, तुब्भेहि, तुब्भाहिंतो, तुब्भेहिंतो, तुब्भासुंतो, तुब्भेसुंतो (युष्मत्)

तुय्हत्तो, तुय्हाओ, तुय्हाउ, तुय्हाहि, तुय्हेहि, तुय्हाहिंतो, तुय्हेहिंतो, तुय्हासुंतो, तुय्हेसुंतो

उय्हत्तो उय्हाओ, उय्हाउ, उय्हाहि, उय्हेहि, उय्हाहिंतो, उय्हेहिंतो, उय्हासुंतो, उय्हेसुंतो

उम्हत्तो, उम्हाओ, उम्हाउ, उम्हाहि, उम्हेहि, उम्हाहिंतो, उम्हेहिंतो उम्हासुंतो, उम्हेसुंतो

---

* युष्मद्–शब्दना रूपोमां आवेला ब्भ नो विकल्प ...

... पाय ए तु भे तुमा तुम्हे ...

च० छ०-एकव०—तइ, तु, ते तुम्ह, तुह, तुहं, तुव, तुम, तुमे, तुमो, तुमाइ, दि, दे, इ, ए, तुब्भ, उब्भ, उय्ह (तुभ्यम्-तव-ते)

वहुव०—तु, वो, भे, तुब्भ, तुब्भ, तुब्भाण, तुब्भाणं, तुवाण, तुवाण, तुमाण, तुमाणं, तुहाण, तुहाणं, उम्हाण, उम्हाणं. तुम्हाहँ (युष्मभ्यम्—युष्माकम्—व.)

स०- एकव०—तुमे, तुमए, तुमाइ, तइ, तए (त्वयि)
तुम्मि, तुवम्मि, तुमम्मि, तुहम्मि, तुब्भम्मि

वहुव०—तुसु, तुवेसु, तुमेसु, तुहेसु, तुब्भेसु (युष्मासु)
[1]तुवसु, तुमसु, तुहसु, तुब्भसु, [2]तुब्भासु.

---

[3]अम्ह (असद्)

प- एकव०—म्मि, अम्मि, अम्हि, ह, अह, अहय (अहम्) (मा० हगे)

१-२ आ रूपो आ० हेमचद्रना मते थता नथी—हे० प्रा० व्या० ८-३-१०३, पृ० १०२.

३ **अम्ह (अस्मद्)—पालिरूपो**

१ अह	मय, अम्हे (अस्मा) (नो)
२ म, मम (अम्ह)	अम्हाक, अम्हे (अम्ह) (अस्मा) (नो)
३-५—मया (त०—मे)	अम्हेहि, अम्हेभि (त०—नो)
४-६—मम, मम (मे) मय्ह, अम्ह	अस्माक, अम्हाक (च०—नो)
७ मयि	अम्हेसु (अस्मासु)

—जूओ पालिप्र० पृ० १५३-१५४

बहुव०—अम्ह, अम्हे, अम्हो, मो, मए, मे (वयम्)
(मा० हगे)

द्वि— एकव०—णे णं, मि, अम्मि, अम्ह, मम्ह, म, ममं, मिमं,
अह—(माम्—मा)

बहुव०—अम्हे, अम्हो, अम्ह, णे (अस्मान्—न)

त— एकव०—मि, मे, मम, ममए, ममाइ, मइ, मए, मयाइ, णे (मया)

बहुव०—अम्हेहि, अम्हाहि, अम्ह, अम्हे, णे (अस्माभि)

पं— एकव०—मइत्तो, मइओ, मइउ, मईहिंतो (मत्)
ममत्तो ममाओ, ममाउ, ममाहि ममाहिंतो, ममा
महत्तो, महाओ, महाउ, महाहि, महाहिंतो, महा
मज्झत्तो, मज्झाओ, मज्झाउ, मज्झाहि, मज्झाहिंतो,
मज्झा

बहुव०—ममत्तो, ममाओ ममाउ, ममाहि ममेहि—(अस्मत्)
ममाहिंतो, ममेहिंतो, ममासुंतो, ममेसुंतो
अम्हत्तो, अम्हाउ, अम्हाओ, अम्हाहि अम्हेहि,
अम्हाहिंतो अम्हेहिंतो, अम्हासुंतो अम्हेसुंतो

च, छ— एकव —मे, मइ, मम, महं, मज्झ, मज्झं, अम्ह, अम्ह
(मह्यम्—मे—मम)

बहुव०—णे णो, मज्झ, अम्ह, अम्ह अम्हे, अम्हो,
अम्हाण,-ण ममाण,-णं, महाण,-ण, मज्झाण-ण,
अम्हाहं (अस्मभ्यम्—अस्माकम्-न)

स— एकव०—मि मइ, ममाइ मए, मे (मयि)
अम्हम्मि, ममम्मि, महम्मि, मज्झम्मि

बहुव०— [1]अम्हेसु, ममेसु, महेसु, मज्झेसु (अस्मासु)
[2]अम्हसु, ममसु, महसु, मज्झसु, [3]अम्हासु.

तुम्ह (युष्मद्) अपभ्रंश

प०—तुहु	तुम्हइ, तुम्हे.
बी०—पइं, तइ	"
त०—" "	तुम्हेहिं.
च० छ०—तउ, तुज्झ, तुध्र	तुम्हह
पं०—" " "	"
स०—पइ, तइ	तुम्हासु, तुम्हासुं

अम्ह (अस्मद्) अपभ्रंश

प०—हउ	अम्हइ, अम्हे.
बी०—मइ	" "
त०—मइ	अम्हेहिं.
च० छ०—महु, मज्झु	अम्हह
पं०—" "	"
स०—मइं,	अम्हासु, अम्हासु

आकारांत शब्दनां प्राकृत रूपाख्यानो (नरजाति)

आकारात नामोना रूपाख्यानोनो प्रयोग विशेष विरल छे तो पण प्रसगवशे तेना रूपाख्यानोनी प्रक्रिया जणावीए छीए

---

१ जूओ पृ० १२७—तइया छ ी सत्तमी

२–३ जूओ पृ० १५३ नु टिप्पण. हे० प्रा० व्या० ८–३–११७, पृ० १०४.

१ अकारांत नामने लागता प्रत्ययो आकारांत नामने लगाडवाथी तेनां रूपाख्यानो तैयार थाय छे

२ मात्र एक पंचमीनो 'हि' प्रत्यय आकारांत नामने लागतो नथी

३ प्रत्यय विनाने स्थळे एटले ज्यां शून्य छे त्यां मूळ अंगने ज रूपाख्यान तरीके समजवु

४ संबोधनना रूपो प्रथमानी जेवां थाय छे.

हाहा

प०—हाहा	हाहा
बी०—हाहं	"
त —हाहाण, हाहाण	हाहाहि, हाहाहिं, हाहाहिँ
च० छ०—हाहस्स	हाहाण हाहाणं
[ता च० हाहे, हाहस्स	, "]
पं०—हाहत्तो हाहाओ	हाहत्तो हाहाओ,
हाहाउ हाहाहिंतो	हाहाउ, हाहाहिंतो
	हाहासुंतो
स०—हाहा (ह) म्मि	हाहासु हाहासुं
स —हे हाहा !	हे हाहा !

ए रीते किलामपा ('किलामपा) गोवा (गोपा) अने सोमवा (सोमपा) वगेरे शब्दोनां रूपो समजवां

---

१ पङ्भाषार्चद्रिकाने मते इ्र्तथी बनेला नामनो अंत्य स्वर ह्रस्व थाय छे एथी किमालपा 'गोपा' अने सोमपा मुं प्राकृत

नान्यतर जातिमा तो कोइ शब्द आकारांत होतो ज नथी (जूओ पृ० १२३–नामना अन्त्यस्वरनो फेरफार–नि० २)

आकारांत शब्दना शौरसेनी, मागधी अने पैशाचीना रूपो 'हाहा'ना प्राकृत रूपो जेवा थाय छे, ज्यां जे विशेष छे ते 'वीर' नी पेठे समजवानो छे.

आकारांत शब्दना अपभ्रंशना रूपो 'वीर'ना अपभ्रंश रूपोनी जेवा प्रायः बनाववाना छे.

इकारांत, उकारांत शब्दनां प्राकृत रूपाख्यानो (नरजाति) प्रत्ययो.

नरजातिना अने नान्यतरजातिना दरेक इकारांत अने उकारांत नामोने नीचे जणावेला प्रत्ययो लगाडवाना छे

प्राकृत भाषाना प्रत्ययो.

	एकवचन	बहुवचन
प०—	०	अउ, अओ, णो, ०
वी०—	+	णो, ०

रूप 'किलालप' 'गोप' अने 'सोमप' बने छे अने आम थतु होवाथी ए त्रणे शब्दोना रूपो बराबर 'वीर' नी जेवा थाय छे: "क्विप" २–२–४७, पृ० ८५ षड्भाषाच०

षड्भा०	हे०
प० ए० किलालवो	प० ए० किलालवा.
,, गोवो	,, गोवा.
,, सोमवो	,, सोमपा.

षड्भाषा०ना उपर्युक्त नियमने बदले आ० हेमचंद्र जे नियम करे छे ते माटे जूओ पृ० १२३–नामना अत्यस्वरनो फेरफार–नि० १.

स०—	णा	+
प० छ०—	णा, +	+
पं०—	णो, +	+
स०—	+	+
स०—	*	अउ, अओ, णो, ०

प्राकृत प्रत्ययोने लगता नियमो

१ ज्यां ज्यां ० छे त्यां मूळ अगने, अते दीर्घ करीने वाप रवानुं छे

२ ज्यां ज्यां + छे त्यां अकारांत नामने लागता [1]प्रत्ययो पण समजवाना छे मात्र पंचमीनो एक 'हि' प्रत्यय लेवानो नथी

३ ज्यां * छे त्यां (संबोधनना एकवचनमां) मूळ अगने अते विकल्पे दीर्घ करवानो छे

४ पंचमीना स्वरादि सकारादि अने हकारादि प्रत्ययो पर रहेतां अत्य इ' अने उ'नो दीर्घ थाय छे.

५ तृतीया, षष्ठी अने सप्तमीना बहुवचनना प्रत्ययो पर रहेतां अत्य 'इ' अने उ'नो दीर्घ थाय छे

६ उकारांत नामोने प्रथमाना बहुवचनमां एक अवो' प्रत्यय पण वधारे लागे छे –भाणु + अवो=भाणवो (स मानव)

---

१ जुओ पृ ' पाकृत प्रत्ययोने लगता नियमो 'मा मथाळा नीचे (पृ १२६ मा) जणावेल प्रत्यय अदि–इकारांत अने उकारांतमां–पण मळी

रूपाख्यानो

इसि (ऋषि)

प०	[1]इसी	इसउ, इसओ, इसिणो, इसी.
बी०	इसिं	इसिणो, इसी.
त०	इसिणा	इसीहि, इसीहिं, इसीहिँ.
च०, छ०	इसिणो, इसिस्स	इसीण, इसीणं.

१ कोईने मते इकारात अने उकारात शब्दोनु प्रथमानु एकवचन द्वितीयाना एकवचननी जेवु पण थाय छे'—जेमके—इसी, इसिं। विहू, विहु। हे० प्रा० व्या० ८-३-१९, पृ० ८४.

इकारांतनां पालिरूपो

इसि

१	इसि	इसी, इसयो.
२	इसिं	इसी, इसयो.
३	इसिना	इसीहि, इसीभि.
४-६	इसिनो, इसिस्स	इसीनं
५	इसिना, इसिस्मा, इसिम्हा	इसीही, इसीभि.
७	इसिस्मिं, इसिम्हि	इसिसु, इसीसु.
स०	इसि !, इसे !	इसी !, इसयो !

प्राकृतना 'णो' प्रत्ययनी पेठे पालिमा पण प्रथमाना अने द्वितीयाना बहुवचनमा 'नो' प्रत्यय वपराएलो छे "सारमतिनो, सम्मादिट्ठिनो, मिच्छादिट्ठिनो, वजिरबुद्धिनो, अधिपतिनो, जानिपतिनो" वगेरे

पालिमा अग्गि (अग्नि), मुनि, आदि, गिरि, रस्सि (रश्मि) सख (सखि) अने गामनि (ग्रामणी) शब्दोना रूपोमा विशेषता छे ते आ प्रमाणे'

[सा० ब० इसये, इसिणो, इसिस्स इसीण, इसीणं]
ष छ०– (माग० इशिह) (मा० इशिहँ)
पं० इसिणो, इसित्तो, इसीओ, इसित्तो इसीओ, इसिउ,
इसीउ, इसीहिन्तो इसीहिन्तो, इसीसुंतो

अग्गि

एकव०	बहुव०
प –अग्गिनि गिनि	अग्गियो (बधारानां रूपो)
स –अग्गिनि	„
सं –अग्गि !	

मुनि

स –मुने (मुने)	(बधारानां रूपो)

आदि

स –आदो (आदौ)	(बधारानां रूपो)
आदु	
आदि	
आदिनि	

गिरि

स – गिरे	(बधारानां रूपो)

रंसि

त – रंसेन	(बधारानां रूपो)

सखि

प —सखा	सखायो सखानो
	सखिनो, सखा
बी –सखारं	
सखानं	सखानो, सखिनो,
सखाय	सखायो, सखी
सखं	

पं०—(शौर० इसिदो, इसिदु)
(माग० इशिदो, इशिदु)
(पैशा० इसितो, इसितु)

स० [1]इसिंसि, इसिम्मि	इसीसु, इसीसु.
स० हे इसि ! हे इसी !	हे इसउ ! हे इसओ ! हे इसिणो ! हे इसी !

त० प०—सखिना (प०—सखारा, सखारस्मा) सखेहि,	सखेभि, सखारेहि, सखारेभि.
च० छ०—सखिस्स	सखीन, सखारान
सखिनो	
स०—सखे	सखेसु, सखारेसु.
स०—सख !, सखे !,	सखायो !
सखा !, सखि !	सखानो !,
सखी !	सखिनो !

गामनी

प० गामनी	गामनी, गामनिनो
बी० गामनीन, गामनि	,, ,,
प०—गामानिना	
स०—	गामनीसु
स०— गामनि !	गामनी !, गामनिनो !

बाकीना 'इसि' प्रमाणे

ए बधा रूपो माटे जूओ पालिप्र० पृ० ८७-९१ अने ते उपरना टिप्पणो.

१ जूओ पृ० १२७, सत्तमीना 'सि' प्रत्ययने लगतु लखाण—"तिसलाए खत्तियाणीए कुच्छिसि गब्भे" आचारांग सूत्र, त्रीजी चूलिका—महावीरनो अधिकार

खास विशेषताः

[शौरसेनी, मागधी, पैशाची अने अपभ्रंशमां 'इन्' छेडा-वाळां 'इकारांत' नामोना अंत्य 'न्' नो संबोधनना एकवचनमां विकल्पे 'आ' थाय छे

हे दण्डिआ ! हे दंडि !

हे सुहिआ ! हे सुहि (सुखिन्)

हे तवस्सिआ ! हे तवस्सि !

हे कंचुइआ ! हे कंचुइ ! (कञ्चुकिन्)

हे मणस्सिआ ! हे मणस्सि ! (मनस्विन्)]

ए प्रमाणे अग्गि (अग्नि) मुणि (मुनि), बोहि (बोधि), साधि, रासि (राशि) गिरि रवि कइ (कवि) कवि, (कपि-कवि), अरि, तिमि, समाहि (समाधि), निहि (निधि), विहि (विधि), [1]दंडि (दण्डिन्), करि (करिन्), तवस्सि (तपस्विन्),

---

१ प्राकृतमां अने पालिमां 'दंडि' वगेरे 'इन्' छेडावाळा शब्दोनां रूपो साधारण इकारांत शब्दनी पेठे थाय छे तो पण पालिमां ए 'इन्' छेडावाळा शब्दोनां केटलांक वचनोनां रूपो साधारण इकारांत करतां जुदां पडे छे अने ते बधां आ प्रमाणे छे: (जे रूपो जुदां पडे छेन बधांरे मोटा अक्षरोमां मूकेलां छे)

१ दंडी	दण्डी, दंडिया, दंडिनो
२ दण्डियं दंडिनं दण्डि	दण्डी, दंडिये दंडिने दंडिनो
३ दंडिना	दण्डीहि, दण्डीभि
४ दण्डिनो दण्डिस्स	दण्डीनं
५ दण्डिना दण्डिम्हा दण्डिस्मा	दण्डीहि, दण्डीभि
६ दण्डिनो, दण्डिस्स	दण्डीनं

[1]गामणि (ग्रामणी), पणि (प्रणी), सेणाणि (सेनानी), पहि (प्रधी) अने सुहि (सुधी) वगेरे शब्दोना प्राकृत, शौरसेनी, मागधी अने पैशाचीना रूपो समजवाना छे.

---

[2]भाणु (भानु)

प०—भाणू	भाणुओ, भाणवो, भाणओ, भाणउ, भाणू,
बी०—भाणु	भाणुणो, भाणू.
त०—भाणुणा	भाणूहि, भाणूहिं, भाणूहिँ.
च० छ०—भाणूणो, भाणुस्स	भाणूण, भाणूणं.

---

७ दंडिनि, दण्डिने दाडिस्मि, दण्डिम्हि	दण्डीसु, दण्डिनेसु.
स० दाडि !	दण्डी ! दंण्डिनो !

—पालिप्र० पृ० १३२ 'दण्डी' अने तेनु टिप्पण.

१ आ छेल्ला पाच शब्दोना सम्बोधनना एकवचनमा ते ते शब्दनु एकलु मूळ अग ज वपराय छे· हे गामणि ! हे पणि ! हे सेणाणि ! वगेरे.

२ उकारांतना पालिरूपो

भानु

१ भानु	भानू, भानवो.
२ भानु	,, ,,
३—५ भानुना	भानूहि, भानूभि
५ भानुस्मा, भानुम्हा	
४—६ भानुनो, भानुस्स	भानून

[सा० प०—माणवे माणुणो, माणुस्स]

(माग० माणुह)	(माग० माणुहँ)
पं०—माणुणो, माणुत्तो, माणुओ, माणूउ, माणूहिंतो	माणुत्तो, माणूओ, माणूउ, माणूहिंतो माणूसुंतो

(शौर० माणुदो, माणुदु)
(माग० माणुदो माणुदु)
(पैशा० मानुतो, मानुतु)

७	मानुस्मि, मानुम्हि	मानुसु,
स	मानु !	मानू ! मानवे ! मानवो !

प्राकृतना 'णो' प्रत्ययनी पेठे पालिमां पण प्रथमाना अने द्वितीयाना बहुवचनमां 'नो' प्रत्यय वपरायलो छेः 'हेतुनो, जन्तुनो, गरुनो'' वगेरे.

पालिमां हेतु, जन्तु, अभिभू सहभू, सयम्भू शब्दोनां रूपोमां विशेषता छे ते आ प्रमाणे—

हेतु, जंतु

बहुवचन

१ हेतुयो जंतुयो (वधाराना रूपो)

२

एकवचन

७ हेता न (हेतो) (वधाराना रूपो)

अभिभू (वधाराना रूपो)

१ अभिभू	अभिभू अभिभुवो
२ अभिभू	,, ,,

स०—भाणुंसि, भाणुम्मि	भाणूसु, भाणूसु
सं०—भाणु ! भाणू !	भाणुणो ! भाणवो ! भाणओ !
	भाणउ ! भाणू !

ए प्रमाणे जउ (यदु), धम्मण्णु (धर्मज्ञ), सव्वण्णु (सर्वज्ञ), दइवण्णु (दैवज्ञ), गुरु, गउ (गो), साहु (साधु), वन्धु, वपु (वपुष्), मेरु, कारु, धणु (धनुष्), सिंधु, केउ (केतु), विज्जु (विद्युत्), राहु, संकु (शङ्कु), उच्छु (इक्षु), पवासु (प्रवासिन्), वेलु (वेणु), सेउ (सेतु), मच्चु (मृत्यु), [1]खलपु (खलपू), गोत्तभु (गोत्रभू), सरभु (शरभू), अभिभु (अभिभू), अने सयभु (स्वयभू) वगेरे शब्दोना प्राकृत, शौरसेनी, मागधी अने पैशाचीना रूपो समजवाना छे.

---

५ अभिसुना

स० — अभिभू ! अभिभूवो !

बाकीना 'भानु' प्रमाणे

सहभू, सव्वञ्ञू

(वधाराना)

१–२–स० बहुवचन	सहभुनो
१–२–स० ,,	सव्वञ्ञू, सव्वञ्ञुनो

—पालिप्र० पृ० ९२–९३.

बाकीना 'अभिभू' प्रमाणे

---

१ आ छेल्ला पाच शब्दोना संबोधनना एकवचनमा ते ते शब्दनु एकलु मूळ अग ज वपराय छे, हे खलपु ! हे गोत्तभु ! हे सरभु ! वगेरे,

'अमु (अदस्)

[आ शब्द सर्वादिमां छे छतां एना रूपो विशेषे करीने 'भाणु' नां रूपो साथे मळतां आवे छे माटे एने 'भाणु' नां रूपो पछी मूकवामां आव्यो छे]

प०— अह, अमू, ²असो — अमुणो, अमवो, अमउ, अमओ, अमू

बी०— अमुं — अमुणो, अमू

स०— अयम्मि, इअम्मि, अमुम्मि — अमूसु, अमूसुं

शेष रूपो 'भाणु' नी जेवां

---

१ अमु (अदस्) नां पालिरूपो

१ अमु	अमू, अमुयो
२ अमुं	,, ,,
३ अमुना	अमूहि अमूभि
४–६ अमुनो अमुस्स (सं अमुष्य)	अमूसं, अमूसानं.
५ अमुना अमुस्मा (स अमुष्मात्) अमुम्हा	अमूहि, अमूभि
७ अमुस्मिं (सं अमुष्मिन्) अमुम्हि	अमूसु–

जुओ पालिप्र पृ १४७

२ आ आपरूप स असौ उपरथी थयेलुं छे—जुओ पृ ७ नि १२ औ–ओ असौ शतमकाडीब सूत्रक्र अ १, उ ३, गा ८

'इसि' अने 'भाणु' शब्दना प्राकृत रूपोनी साथे ज शौरसेनी, मागधी अने पैशाचीना वधाराना रूपो जणावेलां छे.

अपभ्रंशमा जे विशेषता छे ते आ प्रमाणे:

अपभ्रंशभाषाना प्रत्ययो

	एकव०	बहुव०
प०—	०	०.
बी०—	०	०.
त०—	ण, ए, म्	हिं.
च० छ०—	०	हु, ह
प०—	हे	हु.
स०—	हि	हिं, हु.
स०—	०	हो, ०.

ज्या ज्या ० छे त्या मूळ अगने ज अते विकल्पे दीर्घ करीने वापरवानुं छे.

अपभ्रशना बधा प्रत्ययो पर रहेता मूळ अगने अते विकल्पे दीर्घ थाय छे

अपभ्रंश—रूपाख्यानो

इसि

प०—	इसि, इसी	इसि, इसी
बी०—	,, ,,	,, ,,
त०—	इसिण, इसिण, इसीण, इसीण, इसिए, इसीए, इसिं, इसीं	इसिहिं, इसीहिं.

च० छ०—हसि, हसी	हसिहु, हसीहुं, हसिहं, हसीहं
पं०— हसिहे, हसीहे	हसिहु, हसीहु
स०— हसिहि, हसीहि	हसिहिं, हसीहिं, (हसिहु, हसीहु)
स — हसि ! हसी !	हसिहो ! हसीहो ! हसि ! हसी !

ए प्रमाणे दरेक इकारांत पुल्लिंगी शब्दनां अपभ्रंश रूपो समजवानां छे

माणु

प — माणु, माणू	माणु, माणू
बी — ,, ,,	,, ,,
त०— माणुण, माणुणं, माणूण माणूणं, माणूएं, माणूएं माणु, माणू	माणूहिं, माणूहिं
च० छ०—माणु, माणू	माणुहुं, माणूहुं, माणुहं, माणूहं
प — माणुहे, माणूहे	माणुहुं माणूहुं
स०— माणुहि, माणूहि	माणुहिं, माणूहिं, (माणुहु, माणूहु)
स०— माणु ! माणू !	माणुहो ! माणूहो ! माणु ! माणू !

ए प्रमाणे दरेक उकारांत पुल्लिंगी शब्दनां अपभ्रंश रूपो समजवानां छे

इकारांत अने उकारांत शब्दनां प्राकृत रूपाख्यानो
(नान्यतर जाति)

[1]दहि (दधि)

१	[2]दहिं	दहीणि, दहीइँ, दहीइं.
२	,,	,, ,, ,,
सं०–	दहि !	,, ! ,, ! ,, !

बाकी बधा तेते भाषा प्रमाणे इकारात पुलिंगी 'इसि' नी जेवा.

---

१ जूओ अकारात नपुसक नामोनु प्रकरण अने तेने लगता प्रत्ययो तथा नियमो––पृ० १३३–१३४

२ कोइने मते इकारात अने उकारात नपुसक नामोना प्रथमाना अने द्वितीयाना एकवचनमा आवा बे रूपो थाय छे.

दहिं, दहिँ (स० दधि, दधिँ)

महु, महुँ (स० मधु, मधुँ)

—हे० प्रा० व्या०–८–३–२५, पृ० ८५

तादर्थ्य अर्थमा सस्कृतमा रूपने मळतु 'दहिणे' (दध्ने) अने 'महुणे' (मधुने) रूप पण वपराय छे

नपुसकलिंगी इकारांतनां अने उकारांतनां पालिरूपो

'दधि'

१	दधि (दधिं)	दधी, दधीनि
२	दधिं	,, ,,

शेष, इकारात पुंलिंगी 'इसि' प्रमाणे.

---

३ 'गामनी' ना पालिरूपो

गामनि	गामनी, गामनीनि
गामनिं	,, ,,

शेष इकारात पुलिंगी 'गामनी' प्रमाणे.

ए प्रमाणे सत्थि (सक्थि), वारि, अच्छि (अक्षि), सुरि (सुरि), अइरि (अतिरि) अने गामणि (ग्रामणी) वगेरे शब्दोनां रूपो पण समजवां

महु (मधु)

१	महुं	महूणि, महूइं, महूइ
२	,,	,, ,, ,,
सं०	महु !	,, ,, ,,

बाकी बधां ते ते भाषा प्रमाणे उकारांत पुंलिंगी 'भाणु' नी जेवां

ए प्रमाणे वारु, वत्थु (वस्तु), चित्तगु (चित्रगु), सुगु, पसु अंसु अंसु—अस्सु (अश्रु) गउ (गडु), बहु अने लहु (लघु) वगेरे शब्दोनां रूपो पण समजवां

---

१ 'मधु'

१ मधु मधू मधूनि.

२ मधुं ,,

शेष, उकारांत पुंलिंगी 'भानु' प्रमाणे

'गोत्रभू' नां पालिरूपो

गोत्रभु गोत्रभू, गोत्रभूनि

गोत्रभुं गोत्रभू गोत्रभूनि

शेष उकारांत पुंलिंगी 'अभिभू' प्रमाणे—

जूओ पालिप्र पृ ११३–११५ अने एनुं टिप्पण

---

[1]अमु (अदस्)

प०– अह, अमु	अमूइं,	अमूइँ,	अमूणि
बी०– अमुं	”	”	”

बाकी बधां [2]पुंलिंगी ‘ अमु ’ नी पेठे.

दहि (अपभ्रंश)

१ दहि	दहीइं,	दहिइं
२ ”	”	”

बाकी बधां ‘ इसि ’ ना अपभ्रंश रूपोनी जेवा.

महु (अपभ्रंश)

१ महु	महूइं	महुइं
२ ”	”	”

बाकी बधा ‘ भाणु ’ ना अपभ्रंश रूपोनी जेवा.

---

[3]ऋकारांत शब्दनां प्राकृत रूपाख्यानो (नरजाति)

ऋकारांत नामोनी बे जात छे–केटलाक ऋकारात नाम विशेष्यरूपे वपराय छे अने केटलाक ऋकारात नाम विशेषणरूपे वपराय छे:

---

१ ‘ अमु ’ ना पालिरूपो

१ अमु	अमू
२ ”	”

शेष पुलिंगी ‘ ‘ अमु ’ पेठे–जूओ पालिप्र० पृ० १४८

२ जूओ पृ० १६६

३ जूओ पृ० १२३ नामना प्रकारो.

विशेष्यरूप—मामायर (जामातृ), पियर (पितृ), मायर (भ्रातृ) वगेरे ।

विशेषणरूप—कत्तार (कर्तृ), दायार (दातृ), मत्तार (मर्तृ) वगेरे ।

[आ भेदने लीधे एक जातनां पण ए बन्ने नामोनां रूपोमां विशेष अंतर छे]

ऋकारांत (विशेष्यवाचक)

१ प्रथमानुं अने द्वितीयानुं एकवचन बाद करतां बधी विभक्तिओमां विशेष्यवाचक ऋकारांत नामना अन्त्य 'ऋ'नो विकल्पे 'उ' थाय छे

२ प्रथमाथी लइने बधी विभक्तिओमां विशेष्यवाचक ऋकारांत नामना अंत्य 'ऋ' नो 'अर' थाय छे

३ प्रथमाना एकवचनमां विशेष्यवाचक ऋकारांत नामनुं आकारांत रूप पण विकल्पे वपराय छे

४ संबोधनना एकवचनमां विशेष्यवाचक ऋकारांत नामना अंत्य ऋ नो 'अ' अने 'अर' विकल्पे थाय छे

[सूचना –उपर जणाव्या प्रमाणे प्रथमाथी लइने बधी विभक्तिओमां ऋकारांत नाम अकारांत अने उकारांत बने छे माटे तेनां रूपाख्यानोनी प्रक्रिया 'जिण' अने 'भाणु' नां रूपाख्यानोनी प्रक्रिया जेवी समजवानी छे अहीं तो मात्र माहिती माटे तेनां रूपाख्यानो आपीए छीए]

[1]पिउ, पिअर (पितृ)

प०–	पिआ, पिअरो (मा० पिअले).	पिअरा, पिउणो, पिअवो, पिअओ, पिअउ, पिऊ.
बी०–	पिअर	पिअरे, पिअरा, पिउणो, पिऊ.
त०–	पिअरेण, पिअरेणं, पिउणा	पिअरेहि, पिअरेहिं, पिअरेहिँ, पिऊहि, पिऊहिं, पिऊहिँ.
च०, छ०–	पिअरस्स (मा० पिअलाह) पिउणो, पिउस्स	पिअराण, पिअराणं, (मा० पिअलाहँ) पिऊण, पिऊणं.
पं०–	पिउणो, पिउत्तो, पिऊओ, पिऊउ, पिऊहिंतो,	पिउत्तो, पिऊओ, पिऊउ, पिऊहिंतो, पिऊसुंतो

---

१ ऋकारांतनां पालिरूपो

पितु

१	पिता	पितरो (पिता).
२	पितर	पितरो, पितरे.
३	पितरा (पित्या, पेत्या) पितुना	पितरेहि, पितरेभि. पितूहि, पितूभि
४–६	पितु, पितुनो, पितुस्स	पितरान, पितान पितून, पितुन्न
५	पितरा (पित्या, पेत्या) पितुना	पितरेहि, पितरेभि. पितूहि, पितूभि.
७	पितरि	पितरेसु, पितुसु, पितूसु
स०–	हे पित ! पिता !	पितरो !

—जूओ पालिप्र० पृ० ९४ अने एनु टिप्पण.

पिअरत्तो, पिअराओ,	पिअरत्तो, पिअराओ,
पिअराउ,	पिअराउ
पिअराहि,	पिअराहि, पिअरेहि,
पिअराहिंतो,	पिअराहिंतो, पिअरेहिंतो,
पिअरा	पिअरासुंतो, पिअरेसुंतो
(शौ० पिअरादो, पिअरादु)	
(मा० पिअलादो, पिअलादु)	
(पै० पिअरातो, पिअरातु)	
स०— पिअरे,	पिअरेसु, पिअरेसुं,
पिअरसि, पिअरम्मि,	पिऊसु, पिऊसुं
पिउंसि पिउम्मि,	
स०— हे पिअ ! पिअरं ! पिअरो !	पिअरा ! पिउणो ! पिअवो,
पिअरा ! पिअर !	पिअओ, पिअउ, पिऊ ।

ए रीते मामायर, मामाउ (भामातृ), मायर, माउ, (भ्रातृ) वगेरे शब्दोनां रूपो समजवानां छे

ऋकारांत (विशेषणवाचक)

१ प्रथमानु अने द्वितीयानुं एकवचन बाद करतां बधी विभक्तिओमां विशेषणवाचक ऋकारांत नामना अत्य 'ऋ'नो विकल्पे 'उ' थाय छे

२ प्रथमाथी लइने बधी विभक्तिओमां ऋकारांत नामना अन्त्य 'ऋ'नो आर' थाय छे

३ प्रथमाना एकवचनमां विशेषणवाचक ऋकारांत नामनु आकारांत रूप पण विकल्पे बने छे

४ संबोधनना एकवचनमां विशेषणवाचक ऋकारांत नामना अत्य 'ऋ' नो विकल्पे 'अ' थाय छे

¹दाउ, दायार (दातृ)

प०—	दाया, दायारो (मा० दायाले)	दायारा, दाउणो, दायवो, दायओ, दायउ, दाऊ.
बी०—	दायारं	दायारे, दायारा, दाउणो, दाऊ.
त०—	दायारेण, दायारेणं, दाउणा	दायारेहि, दायारेहिं, दायारेहिँ दाऊहि, दाऊहिं, दाऊहिँ.
च०, छ०—	दायारस्स, (मा० दायालह) दाउणो, दाउस्स.	दायाराण, दायाराण, (मा० दायालहँ) दाऊण, दाऊण.
प०—	दायारत्तो, दायाराओ, दायाराउ, दायाराहि, दायाराहिंतो, दायारा,	दायारत्तो, दायाराओ, दायाराउ, दायाराहि, दायारेहि, दायाराहिंतो, दायारेहिंतो. दायारासुंतो, दायारेसुतो,

---

१ ऋकारांत विशेषणनां पालिरूपो

दातु

१	दाता	दातारो.
२	दातार	दातारो, दातारे
३	दातारा, दातुना	दातारेहि, दातारेभि.
४–६	दातु, दातुनो, दातुस्स	दातारानं, दातान, दातून.
५	दातारा	दातारेहि, दातारेभि.
७	दातरि	दातारेसु, दातूसु.
सं०	हे दात ! दाता !	दातारो !

—जूओ पालिप्र० पृ० ९५ अने एनुं टिप्पण.

दाउणो, दाउचो, दाउचो,
दाऊओ, दाऊउ, दाऊओ, दाऊउ,
दाऊहिंतो दाऊहिंतो, दाऊसुंतो

(शौ० दायारादो, दायाराटु)

(मा० दायालादो, दायालादु)

(पै० तायारातो, तायारातु)

स०— दायारे, दायारसि, दायारम्मि, दायारेसु, दायारेसुं,
दाउसि दाउम्मि दाऊसु, दाऊसुं

सं०— हे दाय !, दायार !, दायारा, दाउणो, दायवो,
दायारो !, दायारा ! दायओ, दायउ, दाऊ

ए रीते कत्तार, कत्तु, (कर्तृ), भत्तार, भत्तु (भर्तृ) वगेरे शब्दोनां रूपो समजवानां छे

ऋकारांतनां प्राकृत रूपाख्यानोनी साथे ज (तेमां) शौरसेनी, मागधी अने पैशाचीनां पण विशेषतावाळां रूपाख्यानो आपेलां छे

ऋकारांतनां अपभ्रंशरूपाख्यानो आ प्रमाणे छे

आगळ कह्या प्रमाणे दरेक ऋकारांत अंग, अकारांत अने उकारांत थया पछी ज प्राकृतमां वापरी शकाय छे तो ए—मूळ ऋकारांतनां—अकारांत अंगनां अपभ्रंशरूपो 'वीर' नां अपभ्रंशरूपो जेवां करवानां छे अने ए उकारांत अंगनां 'साहु' नां अपभ्रंशरूपो जेवां समजवानां छे *कदाच कोई मूळ ऋकारांत अंग प्राकृतमां* आवतां इकारांत थई होय तो तेनां अपभ्रंशरूपो 'इसि' नां अपभ्रंशरूपो जेवां माणी लेवां

उदाहरण तरीके एक 'पितृ' शब्दनां नीचे जणाव्या प्रमाणे आठ अंगो संभवी शके छे:–

पिअ, पिद; पिइ, पिदि; पिउ, पिदु; पिअर, पिदर.

ए आठमांना 'पिअ' अने 'पिद' तथा 'पिअर' अने 'पिदर' ना अपभ्रंशरूपो 'वीर'ना अपभ्रश रूपो जेवा जाणवा. 'पिइ' 'पिदि' ना अपभ्रंशरूपो 'इसि' ना अपभ्रंशरूपो जेवा समजषा अने 'पिउ' ने 'पिदु' ना अपभ्रंशरूपो 'भाणु' ना अपभ्रंशरूपो जेवा करी लेवा.

(कोइ पण [1]ऋकारात शब्दना अपभ्रंशअंगो करती वखते तेनां प्राकृत अंगो तरफ अने प्रयोगो तरफ लक्ष्य राखवु.)

---

१ केटलाक ऋकारात शब्दोना अपभ्रश अगोने अहीं आपीए छीए:–

कर्तृ=	कत्त, कत्ति, कत्तु.
	कट्ट, कट्टि, कट्टु.
नेतृ=	नेअ, नेइ, नेउ.
	नेद, नेदि, नेदु.
पोतृ=	पोद, पोदु
	पोअ, पोउ
भर्तृ=	भत्त, भत्ति, भत्तु
	भट्ट, भट्टि, भट्टु.
भ्रातृ=	भाय, भाइ, भाउ.
	भाद, भादि, भादु
होतृ=	होद, होदु.
	होअ, होउ

ऋकारांत शब्दनां प्राकृत रूपाख्यानो (नान्यतरजाति)

सुपिअर, सुपिउ (सुपितृ)

प०—	सुपिअर	सुपिअराइं, सुपिअराइँ, सुपिअराणि, सुपिउइं, सुपिउइँ, सुपिउणि
बी०—	सुपिअर	सुपिअराइं, सुपिअराइँ, सुपिअराणि, सुपिउइं, सुपिउइँ, सुपिउणि
स०—	सुपिअर! सुपिअ! सुपिअर!	सुपिअराइं, सुपिअराइँ, सुपिअराणि, सुपिउइं, सुपिउइँ, सुपिउणि

शेष रूपो, ते ते भाषा प्रमाणे पुल्लिंगी पिउ, पिअर (पितृ)नी जेवां छे

दायार, दाउ (दातृ)

प —	दायार	दायाराइं, दायाराइँ, दायाराणि, दाउइं, दाउइँ दाउणि
बी०—	दायार	दायाराइं, दायाराइँ, दायाराणि, दाउइं, दाउइँ, दाउणि
स०—	हे दाय! हे दायार!	दायाराइं, दायाराइँ, दायाराणि, दाउइं, दाउइँ, दाउणि

शेष रूपो ते ते भाषा प्रमाणे पुंल्लिंगी दायार, दाउ (दातृ)नी जेवां छे

नपुंसकलिंगी ऋकारांतनां अपभ्रंशरूपो 'कुल', 'दहि', अने 'महु'नां अपभ्रंशरूपो जेवां जाणवानां छे (जूओ पुंल्लिंगी ऋकारांतनां अपभ्रंशरूपो विषेनुं लखाण)

एकारांत अने ¹ओकारांतनां प्राकृत रूपाख्यानो

एकारात अने ओकारात नामोना रूपाख्यानो प्राकृतमा उपलब्ध थता नथी, तो पण ए शब्दोने छेडे ‘अ’ (स्वार्थिक--क) लगाडी तेना रूपाख्यानो बनावाय छे अने ते ते भाषा प्रमाणे ते बधा रूपाख्यानो पुलिंगमा अकारांत (‘जिण’) नी जेवा छे, नपुंसकमा अकारात (‘कुल’) नी जेवा छे अने स्त्रीलिंगमा स्त्रीलिंगनी प्रक्रिया प्रमाणे बने छे.

---

१ प्राकृतमा ‘गो’ शब्दना ‘गोण’ ‘गाअ’ ‘गउ’ एवा त्रण अगो बने छे (जूओ पृ० १२० प० १ तथा पृ० ६१ ओ=अउ, आअ) अने रूपाख्यानने प्रसगे पण ए त्रण अगो वपराय छे तेम पालिमा ‘गो’ शब्दना ‘गोण’ (गोन) ‘गु’ अने ‘गवय.’ एवा अगो बने छे (जूओ पालिप्र० पृ० ९८ अ० ३२ अने तेनु टिप्पण) अने रूपाख्यानने प्रसगे वपराय छे प्राकृतमा रूपाख्यानने प्रसगे मूळ ‘गो’ अग नथी वपरातु. आर्षप्राकृतमा मूळ ‘गो’ अग अने ते द्वारा थएला रूपो पण (जूओ पृ० १३६ ‘कम्म’ना आर्षरूपो माटेनु टिप्पण) मळी आवे छे तेम पालिमा ए मूळ ‘गो’ अगना पण रूपो–जे रूपो आर्षप्राकृतमा वपराएला छे–छे अने ते आ प्रमाणे:

गो

१	गो	गावो, गवो.
२	गाव	गावो,
	गव	गवो.
	गावु	
	गवु	
३	गावेन	गोहि, गोभि,
	गवेन	
	गवा	

नेमके–स० सुरे–प्रा० सुरेअ । सं० ग्लौ–प्रा० गिलोअ ।
इत्यादि ।

सुरेअ

सुरेओ	सुरेआ ।
सुरेअं,	सुरेए, सुरेआ ।
सुरेएण, सुरेएणं	सुरेएहि, सुरेएहिं, सुरेएहिँ ।

शेष रूपो, ते ते भाषा प्रमाणे 'वीर' नी समान छे

४–६ गावस्स	गोन गुणं,
गवस्स	गवं
५ गावा, गावस्मा	गोहि, गोभि
गावम्हा	
गवा, गवस्मा, गवम्हा	गवेहि गवेभि
७ गावे गावंसि गावम्हि	गावेसु
गवे, गवंसि गवम्हि	गवेसु
	गोसु.
स –गो !	गावो, गवो–

जूओ पालिप्र पृ १७– ८

आर्षप्राकृतनुं उदाहरण—"अवले होइ गव पचोइए"–
सूत्र प्र श्रु अ २,उ ३ गा ५.
'गो–महिस–गवेलग्पभूया –
भगव शत २ उ ५ तुंगियानो
अधिकार (पृ २७७ रा जि)

औकारांत नो प्राकृतमां प्राकृत अग नाम बने छे (जूओ पृ
६२ औ=आव) एम सर्व नाम समासना अंत मां(ना)मा रोहि '=
भगव श १, उ ६ (प्रश्नोत्तर–२२७ पृ १७१ रा जि)

२ जूओ पइमागार्च पृ ९६

गिलोअ

गिलोओ	गिलोआ ।
गिलोअं	गिलोए, गिलोआ ।
गिलोएण, गिलोएण,	गिलोएहि, गिलोएहिं
	गिलोएहिँ ।

शेष रूपो, ते ते भाषा प्रमाणे 'वीर' नी समान छे.

---

२. केटलेक ठेकाणे एकारात अने ओकारात मामोनुं प्राकृतरूप, सस्कृतना सिद्धरूप उपरथी पण बनाववामा आवे छेः सुराहि (स० सुराभि.) सुरासु (सं० सुरासु) इत्यादि.

व्यंजनांत शब्दो

प्राकृतमा रूपाख्यानने प्रसगे कोइ शब्द व्यजनात सभवी शकतो नथी,[1] एथी एना ते ते भाषाना बधा रूपो पूर्वोक्त स्वरात शब्दनी पेठे समजवाना छे फक्त 'अत्' अने 'अन्' छेडावाळा नामोना रूपोमा विशेषता छे अने ए आ प्रमाणे छे.

१ जूओ प्रकरण ३—अत्यव्यजनलोप **षड्भाषाचंद्रिकाने** मते छेडे धातुवाळा व्यजनात नामोना छेवटना व्यजनमा 'अ' उमेराय छे अने बीजा व्यजनात नामोने छेडे स्वार्थिक 'अ' (क) प्रत्यय उमेराय छे एथी ए बधा नामोना रूपो अकारात नामनी जेवा थाय छेः (पृ० ११६ "श्लोऽक्") धातु—गोदुह् + अ = गोदुह. अधातु—सुगिर् + अ = सुगिर. सुदिव् + अ = सुज्जुअ (सुद्युक)

'अत्' छेडावाळां नामो (नरजाति)

जे नामो [1]मत्वर्थीय 'अत्' छेडावाळां छे के वर्तमानकृदत तरीके वा भविष्यत्कृदत तरीके 'अत्' छेडावाळां छे त नामोना अंत्य 'अत्' नो प्राकृतमां 'अत' थाय छे, तेथी एनां बधां रूपो ते ते भाषा प्रमाणे अकारांत 'वीर' नी जेवां बने छे

फक्त आर्षप्राकृतमां एवां केटलांक नामोनां रूपो संस्कृतनां सिद्धरूपो उपरथी पण बनाववामां आवेलां छे

भगवन्तः=	[2]भगवंतो
भगवता=	भगवया
भगवत =	भगवओ इत्यादि

[3]शौरसेनी

शौरसेनीमां कृतवत्, भवत्, भगवत् अने संपादितवत् शब्दना अंत्य व्यंजननो मात्र प्रथमाना एकवचनमां अनुस्वार थाय छे

कदवं	(कृतवान्)
भवं	(भवान्)
[4]भगवं	(भगवान्)

---

१ आ बधां उपरांत मत्वर्थीय बीजा पण अनेक आदेशो थाय छे ते माटे जूओ तद्धितप्रकरणमां मतु ना आदेशो

२ "भेरा भगवंतो "भगवया महावीरेण" "भगवओ महावीरस्स"—(भगव राम पृ २१९–२४१–२४५)

३ शौरसेनीने लगती अपवाद विनानी बधी प्रक्रिया मागधी पैशाची अने अपभ्रंशमां पण समजी लेवी

४ आ रूप आर्षप्राकृतमां प्रथमामां अने द्वितीयामां पण वप राएलुं छे। "भगवं महावीरे "भगवं गोयमं —(भगव उप० पृ २१२)

संपाइअव   (संपादितवान्)
संपादिदवं

रूपाख्यानो

'भगवंत (भगवत्)
भयवंत

१	भगवतो	भगवता,
	(शौ० मा० पै० भगव)	
	(मा० भगवते)	
२	भगवत	भगवते, भगवता.

' अत् ' छेडावाळां नामनां पालिरूपो

१ भगवत

१	भगवा	भगवतो, भगवता.
२	भगवत	भगवते.
३	भगवता भगवतेन	भगवतेहि, भगवतेभि.
४–६	भगवतो भगवतस्स	भगवत, भगवतान
५	भगवता, भगवता भगवंतस्मा, भगवतम्हा	भगवतेहि, भगवतेभि.
७	भगवति, भगवते भगवतस्मि, भगवतम्हि	भगवतेसु
स०	भगव, भगव भगवा (भगवत)	भगवतो भगवता

[जूओ पृ० १८२ ' भगवत ' ना आर्षरूपो]

—जूओ पालिप्र० पृ० ११६–११७–११८ अने एनां टिप्पण.

३ भगवंतेण, भगवतेण — भगवतेहि, भगवंतेहिं, भगवतेहिँ

स०– भगवत !, — भगवता
भगवता !, भगवंतो !

(शौ० मा० पै० भगवं, भगव !)

ए प्रमाणे बधां, ते ते भाषा प्रमाणे 'वीर' नी प्रमाणे

---

[1]भवंत (भवत्)

१ भवतो — भवंते
(शौ० मा० पै० भवं)
(मा० भवते)

२ भवंत — भवंते, भवता

३ भवतेण भवतेणं — भवंतेहि, भवंतेहिं, भवतेहिँ

स० भवन्त, — भवता !
भवंता, भवंतो

---

१ पालिमां 'भवत' शब्दनां विशेष रूपो आ प्रमाणे छे:

१ भवतो भोंतो भवंता (बहुवचन)
३ भवता, भोता भवतेन (एकवचन)
४–६ भवतो भातो, भवंतस्स (")
स –भो ! भन्ते ! भोंत ! (")
, भवता भातो भवता भोंता (बहुवचन)

[illegible] [illegible] शब्दनुं पालिमां (स [illegible] उपग्मी) 'सक्किम' रूप पण थाय छे —जुओ पालिप्र पृ ११८–११ –१२ अने तेनां टिप्पणो

(शौ० मा० पै० भवं, भव)

(मा० भवंते, भंते)

ए प्रमाणे बधा, ते ते भाषा प्रमाणे 'सव्व'नी पेठे.

'भवंत (भवतृ—वर्तमानकृदंत)

१	भवंतो (मा० भवंते)	भवता.
२	भवंत	भवंते, भवंता.
३	भवतेण, भवंतेणं	भवंतेहि, भवंतेहिं, भवंतेहिँ.
सं०	भवन्त ! भवंतो ! भवंता ! (मा० भवंते !)	भवता

ए प्रमाणे बधा ते ते भाषा प्रमाणे 'वीर'नी जेवां.

'अत्' छेडावाळां वर्तमानकृदंतनां पालिरूपो

१ गच्छत (गच्छत्—वर्तमानकृदंत)

१	गच्छं, गच्छतो	गच्छंतो (गच्छं) गच्छता.
२	गच्छत	गच्छते.

शेष बधा 'भगवंत' प्रमाणे.

केटलाक 'अत्' छेडावाळा नामोना पालिरूपोनी विशेषता आ प्रमाणे छे·

'महत' (महत्) अने अरहंत (अर्हत्) शब्दना प्रथमाना एकवचनमा 'महा' अने 'अरहा' (आर्षप्रा० अरहा) रूप वधारे थाय छे—पालि प्र० पृ० ११८–११९.

[1]भवमाण (भवत्–वर्तमानकृदंत)

	एकवचन	बहुवचन
१	भवमाणो, (मा० भवमाणे)	भवमाणा
२	भवमाण	भवमाणे, भवमाणा
३	भवमाणेण, भवमाणेण	भवमाणेहि, भवमाणेहिं, भवमाणेहिँ

शेष, ते ते भाषा प्रमाणे 'वीर' नी जेवां

भविस्संत (भविष्यत्–भविष्यत्कृदत)

	एकवचन	बहुवचन
१	भविस्संतो (मा० भविस्संते)	भविस्संता
२	भविस्संत	भविस्संते, भविस्संता
३	भविस्संतेण, भविस्संतेण	भविस्संतेहि, भविस्संतेहिं, भविस्संतेहिँ
सं०	भविस्संत ! भविस्संतो ! भविस्संतो ! (मा० भविस्संते) (शौ० मा० पै० भविस्सं ![2] भविस्स !)	भविस्संता

ए प्रमाणे बधां 'वीर' प्रमाणे

भविस्समाण (भविष्यत्–भविष्यत्कृदत)

भविस्समाणो भविस्समाणा

---

१ कृदन्तना 'अत्' ने स्थाने 'अंत' अने 'माण' एवा बे आदेशो माटे जुओ पाठ ७–मा कृदन्तप्रकरण

२ संस्कृत भास्वत् । उपरथी

(मा० भविस्समाणे)

भविस्समाण	भविस्समाणे,
	भविस्समाणा.
भाविस्समाणेण,	भाविस्समाणेहि,
भाविस्समाणेणं	भविस्समाणेहिं,
	भविस्समाणेहिँ.

शेष, ते ते भाषा प्रमाणे 'वीर'नी पेठे.

नान्यतरजाति

उपर जणावेला नामोना क्लीबलिंगी रूपो प्रथमा अने द्विती-यामा बरावर 'कुल'नी जेवा थाय छे अने बाकी बधा ते ते भाषा प्रमाणे पुंलिंगी रूपोनी जेवा थाय छे, जेमके,

[1]भगवंत

१	भगवंतं	भगवंताणि, भगवंताइँ,
		भगवंताइ.

---

१ 'भगवत'ना पालिरूपो (नान्यतरजाति)

१	भगवं, भगवंतं	भगवंता, भगवंतानि.
		भगवति.
२	भगवंत	भगवते, भगवतानि,
		भगवति.

शेष, 'भगवंत'नी पेठे.

'गच्छत' (गच्छत्)ना पालिरूपो

१	गच्छ, गच्छत	गच्छता, गच्छतानि.
२	गच्छंत	गच्छते, गच्छतानि

शेष, पुलिंगी 'गच्छत'नी पेठे.—जूओ पालिप्र० पृ० १३८ अने एना टिप्पण.

२	भगवतं	भगवताणि, भगवंताइँ, भगवताइ
स०	भगवत !	भगवताणि, भगवताइँ, भगवंताइं

बाकी बधां पुंल्लिंगी 'भगवंत'नी पेठे

अपभ्रंशरूपो

अपभ्रंशरूपो पण 'वीर' अने 'कुल'नी जेवां थाय छे जेमके;

भगवंत (नरजाति)

१	भगवंतु, भगवंतो भगवंत, भगवता	भगवंत, भगवंता
२	भगवंतु, भगवंत, भगवंता	भगवंत, भगवंता
३	भगवंतेण, भगवंतेण भगवंतें	भगवंतेहिं, भगवंताहिं, भगवंतहिं
४-६	भगवंतासु, भगवंतसु, भगवंतस्सु, भगवंताहो, भगवंतहो, भगवंत, भगवंता	भगवंताहं, भगवंतह, भगवंत, भगवंता
५	भगवंताहु, भगवंतहु, भगवंताहे, भगवंतहे	भगवंताहुं, भगवंतहु
७	भगवंति, भगवंते	भगवंताहिं, भगवंतहिं
स०	भगवंतु, भगवंतो, भगवंत, भगवंता	भगवंताहो, भगवंतहो, भगवंत, भगवंता

भगवंत (नान्यतरजाति)

१ भगवतु, भगवत, भगवता — भगवताइ, भगवतइ.

२ भगवतु, भगवत, भगवता — भगवताइ, भगवतइ.

बाकी बधा 'भगवत'ना अपभ्रंशरूपो प्रमाणे.

'अन्' छेडावाळां नामो (नरजाति)

१ 'अन्' छेडावाळा नामोना नकारात अंगना छेवटना 'अन्'नो 'आण' विकल्पे थाय छे:

अद्धाण, अद्ध (अध्वन्), अप्पाण, अप्प (आत्मन्), उच्छाण, उच्छ (उक्षन्), गावाण, गाव (ग्रावन्) जुवाण, जुव (युवन्) तक्खाण, तक्ख (तक्षन्) पूसाण, पूस (पूषन्) बम्हाण, बम्ह (ब्रह्मन्), महवाण, महव (मघवन्), मुद्धाण, मुद्ध (मूर्द्धन्) रायाण, राय (राजन्) साण, स (श्वन्), सुकम्माण, सुकम्म (सुकर्मन्) इत्यादि

२ 'अन्'नो 'आण' थया पछी ए 'आण' छेडावाळा नामोना रूपो ते ते भाषा प्रमाणे 'वीर'नी जेवा जाणवाना छे. जेमके,

अद्धाण

१ अद्धाणो (मा० अद्धाणे) — अद्धाणा

२ अद्धाणं — अद्धाणे, अद्धाणा. इत्यादि.

रायाण

१	रायाणो	रायाणा
	(मा० लायाणे)	
२	रायाणं	रायाणे, रायाणा इत्यादि

सुकम्माण

१	सुकम्माणो	सुकम्माणा
	(मा० शुकम्माणे)	
२	सुकम्माण	सुकम्माणे, सुकम्माणा इत्यादि

---

१ ज्यारे 'आण' थतो नथी त्यारे ए 'अन्' छेडावाळा नामोनां रूपो बनाववानी रीत आ प्रमाणे छे

प्रत्ययो

प०—	+, ०	णो, ०
बी०—	इण, ०	णो, ०
त०—	णा,	०
च०, छ०—	णो, ०	इण,
प०—	णो, ०	०
स —	०	०
स०—	+, ०	णो ०

१ ज्यां शून्य छे त्यां अकारांत 'वीर' नी जेवी प्रक्रिया समजवानी छे

२ ज्यां + आ निशान छे त्यां 'अन्' छेडावाळा नामना अन्त्य 'न्' नो 'आ' विकल्प थाय छे

३. 'णो' प्रत्यय पर रहेता पूर्वना स्वरनो दीर्घ थाय छे.

४. 'इण' प्रत्यय पर रहेता पूर्वनो स्वर लोपाय छे.

पूस (पूसन्)

प०—	पूसा, पूसो (मा०—पूशे)	पूसाणो, पूसा।
बी०—	पूसिणं, पूस	पूसाणो, पूसे, पूसा।
त०—	पूसणा, पूसेण, पूसेणं	पूसेहि, पूसेहिं, पूसेहिँ।
च०, छ०—	पूसाणो, पूसस्स (मा० पूशाह)	पूसिण, पूसाण, पूसाणं। (मा० पूशाहँ)
पं०—	पूसाणो, पूसत्तो, पूसाओ, पूसाउ, पूसाहि, पूसाहिंतो, पूसा (शौ० पूसादो, पूसादु) (मा० पूशादो, पूशादु) (पै० पूसातो, पूसातु)	पूसत्तो, पूसाओ, पूसाउ, पूसाहि, पूसेहि, पूसाहिंतो, पूसेहिंतो, पूसासुंतो, पूसेसुंतो।
स०—	पूसे, पूसम्मि पूसंसि	पूसेसु, पूसेसुं।
म०—	हे पूसा! हे पूसो, पूस!	हे पूसाणो, हे पूसा।

महव

[1]	महवा, महवो (शौ० महव) (मा० महवे)	महवाणो, महवा.

१ 'मघव' पण थाय छे. आ रूप आर्षप्राकृतमां पण वपराएलु छे: "मघवं पागसासणे"—कल्पसूत्र.

२	महविण, महव	महवाणो, महवे, महवा
३	महवणा, महवेण, महवेण	महवेहि, महवेहिं, महवेहिँ
४–६	महवाणो, महवस्स	महविणं, महवाण, महवाणं
	(मा० महवाह)	(मा० महवाहँ)

बाकी बधां 'पूस' प्रमाणे

---

¹अप्प (आत्मन्)

१ 'आत्मन्' शब्दने तृतीयाना एकवचनमां 'णिआ' अने 'णइआ' प्रत्यय वधारे लागे छे

---

१ 'अन्' छेडावाळां नामोनां पालिरूपो

['अन्' छेडावाळां नामोनां पालिरूपो विशेष अनियमित होवाथी अहीं जरा विगतथी आपेलां छे –]

अत्त, आतुम (आत्मन्)

१	अत्ता, आतुमा	अत्ता, अत्तानो, आतुमानो
२	अत्तानं, अत्तं, आतुमानं, आतुमं	अत्तानो, अत्ते, आतुमानो
३	अत्तना, अत्तेन, आतुमेन	अत्तनेहि, अत्तनेभि, अत्तेहि, अत्तेभि, आतुमेहि, आतुमेभि.
४–६	अत्तनो, अत्तस्स, आतुमस्स	अत्तानं, आतुमानं

प०	अप्पा, अप्पो	अप्पाणो, अप्पा ।
	(मा० अप्पे)	
बी०	अप्पिण, अप्पं	अप्पाणो, अप्पे, अप्पा ।
त०	अप्पणिआ, अप्पणइआ, अप्पणा, अप्पेण, अप्पेण	अप्पेहि, अप्पेहिं, अप्पेहिँ ।
च०,-छ०	अप्पाणो, अप्पस्स	अप्पिण, अप्पाण, अप्पाण ।
	(मा० अप्पाह)	(मा० अप्पाहँ)

इत्यादि बधा रूपो ते ते भाषा प्रमाणे 'पूस' नी समान छे.

---

२ राय (राजन्)

१ तृतीया, पचमी, षष्ठी अने सप्तमीना बहुवचनमा 'राजन्' शब्दनो 'राई' आदेश विकल्पे थाय छे

५	अत्तना, अत्तस्मा, अत्तम्हा, आतुमस्मा, आतुमम्हा	अत्तनेहि, अत्तनेभि, अत्तेहि, अत्तेभि, आतुमेहि, आतुमेभि
७	अत्तनि, अत्ते, अत्तस्मि, अत्तम्हि आतुमे, आतुमस्मि, आतुमम्हि	अत्तनेसु आतुमेसु
८ स०	अत्त ! अत्ता ! आतुम ! आतुमा !	अत्तानो ! अत्ता ! आतुमानो !

२ राज (राजन्)

१	राजा	राजानो, राजा.
२	राजान राज	राजानो
३	रञ्ञा, राजेन, राजिना	राजूहि, राजूभि, राजेहि, राजेभि

९ 'णा' अने पंचमी तथा षष्ठीना 'णो' प्रत्यय पर रहेतां 'राजन्' शब्दनो 'रण्' आदेश विकल्पे थाय छे

४–६	रण्णो (रञ्नस्स)	रञ्ञ,
	राजिनो, राजस्स	राजून, राजान
५	रञ्ञा	राजूहि, राजूमि,
	राजस्मा, राजम्हा	राजेहि, राजेमि
७	रञ्ञे, राजिनि,	राजुसु,
	राजस्मि, राजम्हि	राजेसु,
८ सं	राज, राजा	राजानो राजा

ब्रह्म (ब्रह्मन् प्रा बम्ह)

१	ब्रह्मा	ब्रह्मानो (ब्रह्मा)
२	ब्रह्मान, ब्रह्म	,,
३–५	ब्रह्मुना (ब्रह्मना)	ब्रह्मेहि, ब्रह्मेभि
		(ब्रह्मूहि ब्रह्मूमि)
४–६	ब्रह्मस्स	ब्रह्मान
	ब्रह्मुनो	ब्रह्मून,
७	ब्रह्मनि ब्रह्मे	ब्रह्मेसु
८ सं	ब्रह्म (ब्रह्मा)	ब्रह्मानो (ब्रह्मा)

अत्त (अप्पन्)

१	अत्ता	अत्ता, अत्तानो
२	अत्तान	अत्ताने
३–	अत्तना	अत्तानेहि, अत्तानेभि,
४–६	अत्तनो	अत्तानं
७	अत्तनि अत्ताने	अत्तानेसु
८ सं	अत्त !	अत्ता ! अत्तानो !

---

३ 'णो', 'णा' अने सप्तमीना एकवचनमा ' राजन् ' शब्दनो ' राइ ' आदेश विकल्पे थाय छे.

विशेषता:

[शौरसेनी, मागधी, पैशाची अने अपभ्रंशमा ' अन् ' छेडा-वाळा नामोना अंत्य ' न् ' नो संबोधनना एकवचनमा विकल्पे अनुस्वार थाय छे'

युव (युवन्=प्रा० जुव)

१	युवा (यूनो)	युवा, युवानो, युवाना
२	युवानं, युवं	युवाने, युवे.
३	युवाना, युवानेन, युवेन	युवानेहि, युवानेभि. युवेहि, युवेभि
४–६	युवानस्स, युवस्स	युवानान, युवान
५	युवाना, युवानस्मा, युवानम्हा	युवानेहि, युवानेभि युवेहि, युवेभि.
७	युवाने, युवानस्मिं, युवानम्हि, युवे, युवस्मिं, युवम्हि	युवानेसु युवासु, युवसु
८ स०	युव, युवा, युवान, युवाना	युवानो युवाना

[' मघव ' (मघवन्) ना रूपो ' युव ' जेवा अने ' मघवत ' (मघवन्) ना रूपो ' गुणवत ' नी जेवा]

मुद्ध (मूर्धन्=प्रा० मुढा)

१	मुद्धा	मुद्धा, मुद्धानो.
२	मुद्धं	मुद्धाने.

हे अप्प !, अप्प !

(स॰ भवन्) भव, भव !]

(स॰ भगवन्) हे भयव !, भयव !

हे रायं !, राय !

हे सुकम्म ! सुकम्म !

३–५ मुद्धना

७ मुद्धनि   मुद्धानेसु

शेष 'वीर'नी जेवां

सा (अन्-अन्त श्वन्, साण)

१ सा   सा, साणो

२ सं, साणं   से साणे

३ सेन, साणा   सेहि सेभि (साहि साभि)

     साणेहि, साणेभि

४–६ सस्स   साणं

४—साय

५ सा, सस्मा   सेहि सेभि

सम्हा, साणा   साणेहि साणेभि

७ से, सस्मि   सासु

सम्हि साणे

८ ध स   सा, साणो

आ उपरांत दव्वधम्म (दन्तधम्म) पयवन्तधम्म, गांडीवधन्व सिरवम्म सिरवष्ठ (शिरस्त्रपर्यन्तविशाल...), पुडुलोम अप्पाण (आत्मन्) अने मघव (मघवन्) वगेरे अनेक शब्दो 'अन्' छेडावाळा छे तेमां 'पयवन्तधम्म' अने 'गांडीवधन्व'नां रूपो सा

प०—	राया,	रायाणो, राइणो,
	रायो	राया.
	(मा० लाये)	
बी०—	राइण,	रायाणो, 'राइणो,
	राय	राये, राया.
त०—	राइणा, रण्णा	राईहि, राईहिं, राईहिँ.
	रायेण, रायेण	रायेहि, रायेहिं, रायेहिँ.
च० छ०—	रण्णो, राइणो	राईण, राईणं.
	रायस्स	रायाण, रायाण.
	(ता०—रण्णे)	
	(मा० लायाह)	(मा० लायाहँ)
प०—	रण्णो, राइणो,	राइत्तो, राईओ,
	रायत्तो, रायाओ,	राईउ, राईहि,
	रायाउ, रायाहि,	राईहिंतो, राईसुंतो,
	रायाहिंतो, राया	रायत्तो, रायाओ,
		रायाउ,
		रायाहि, रायेहि,
		रायाहिंतो, रायेहिंतो,
		रायासुतो, रायेसुतो.

(श्वन्) नी जेवा थाय छे 'विस्सकम्म' थी 'अइव्वन' सुधीना शब्दोना रूपो 'वीर' नी जेवा थाय छे अने बाकी रहेला 'दळ्हधम्म' अने 'वत्तह' ना रूपोमा थोडी विशेषता छे ते पालिप्रकाशथी समजी लेवी—जूओ पालिप्र० पृ० १२१–१२९ अने एना टिप्पणो.

१ स० 'राज्ञ' उपरथी 'रण्णो' रूप पण थाय छे—जूओ म्न, ज्ञ—ण पृ० २६ तथा पृ० ९७ विसर्गन्—ओ.

(शौ० रायादो रायादु)
(मा० लायादो, लायादु)
(पै० रायातो, रायातु)
स०— राइसि, राइम्मि राईसु, राईसुं
रायसि, रायम्मि, राये रायेसु, रायेसु
सं०— राया, रायो, राय, रायाणो, राइणो, राया
(शौ० पै० राय, राय, राया, रायो)
(मा० लाय, लाय, लाया, लाये)

'अन्' छेडावाळां नामोनां प्राकृत रूपोनी साथे ज शौरसेनी, मागधी अने पैशाचीनां साधारण रूपो आपेलां छे फक्त 'राजन्' शब्दनां पैशाचीरूपोमां आ एक खास विशेषता छे

पैशाची

एकवचन बहुवचन

त०—'राचिना, रञ्ञा' (राज्ञा) षी०—राचिनो, रञ्ञो (राज्ञ)
च छ०—राचिञो, रञ्ञो (राज्ञ)
पं०— ,, ,, ,
स०— राचिनि, रञ्जि (राज्ञि)

नान्यतरजाति

उपर जणावेलां अन्' छेडावाळां नामोनां नीवलिंगी रूपो प्रथमा अने द्वितीयामां बराबर 'फुल' नी जेवां थाय छे अने बाकी बधां ते ते भाषा प्रमाणे पुंल्लिंगी रूपोनी जेवां थाय छे जमके

---

१ तरणाना 'राजन मा पाचिरूपो—व १ १
२ जुओ मन्त्र मागधी (१ ११) मागधीनी जेवे पैशाचीमां
चम श, न्न अने ण्ण मा ञ्ञ थाय छे

सुपूस, सुपूसाण (सुपूषन्)

१	सुपूस[1],	सुपूसाणि, सुपूसाइँ सुपूसाइ
	सुपूसाणं	सुपूसाणाणि, सुपूसाणाइँ सुपूसाणाइ
२	सुपूस,	सुपूसाणि, सुपूसाइँ सुपूसाइ
	सुपूसाण	सुपूसाणाणि, सुपूसाणाइँ सुपूसाणाइं

शेष रूपो, ते ते भाषा प्रमाणे 'पूस' नी पेठे.

सुअप्प सुअप्पाण (सुआत्मन्)

१	सुअप्प[2]	सुअप्पाणि, सुअप्पाइँ, सुअप्पाइं
	सुअप्पाण	सुअप्पाणाणि, सुअप्पाणाइँ, सुअप्पाणाइ.
२	सुअप्प	सुअप्पाणि, सुअप्पाइँ, सुअप्पाइ
	सुअप्पाण	सुअप्पाणाणि, सुअप्पाणाइँ, सुअप्पाणाइ.

शेष, पुंलिंगी 'अप्प' नी पेठे

---

१ सुपूसं गयणं.

२ सुअप्पं कुलं.

सुराय, सुरायाण (सुरामन्)

१	सुरायं[1]	सुरायाणि, सुरायाइँ, सुरायाइ
	सुरायाण	सुरायाणाणि, सुरायाणाइँ, सुरायाणाइ
२	सुराय	सुरायाणि, सुरायाइँ, सुरायाइ
	सुरायाण	सुरायाणाणि, सुरायाणाइँ, सुरायाणाइ

शेष सर्वां पुंल्लिंगी ' रामन् ' नी जेवां

अपभ्रंशरूपो

ए नामोनां अपभ्रंशरूपो पण ' वीर ' अने ' कुल ' नी जेम थाय छे जेमके,

पूस, पूसाण (पूषन्—नरजाति)

१	पूसु, पूसो, पूस, पूसा, पूसाणु, पूसाणो, पूसाण, पूसाणा	पूस, पूसा पूसाण पूसाणा
२	पूसु पूस, पूसा पूसाणु, पूसाण, पूसाणा	पूस, पूसा पूसाण पूसाणा
३	पूसेण पूसेण पूसें पूसाणण, पूसाणण पूसाणें	पूसेहिं, पूसाहिं पूसहिं पूसाणेहिं, पूसाणाहिं पूसाणाहिं

---

1 सुराय नगर

४–६	पूसासु, पूससु, पूसस्सु पूसाहो, पूसहो, पूस, पूसा, पूसाणासु, पूसाणसु, पूसाणस्सु, पूसाणाहो, पूसाणहो, पूसाण, पूसाणा	पूसाहं, पूसहं पूस, पूसा पूसाणाह, पूसाणहं पूसाण, पूसाणा.
९	पूसाहु, पूसहु, पूसाहे, पूसहे पूसाणाहु, पूसाणहु, पूसाणाहे, पूसाणहे	पूसाहुं, पूसहुं पूसाणाहुं, पूसाणहुं
७	पूसि, पूसे पूसाणि, पूसाणे	पूसाहिं, पूसहिं पूसाणाहिं, पूसाणहिं.
८ (सं०)	पूसु, पूसो, पूस, पूसा पूसाणु, पूसाणो, पूसाण, पूसाणा	पूसाहो, पूसहो पूस, पूसा पूसाणाहो, पूसाणहो, पूसाण, पूसाणा.

सुपूस, सुपूसाण (नान्यतरजाति)

१	सुपूसु, सुपूस, सुपूसा	सुपूसाइं, सुपूसइं
२	सुपूसु, सुपूस, सुपूसा	सुपूसाइं, सुपूसइं

बाकी बधा, ' पूस ' ना अपभ्रंश रूपो प्रमाणे.

ए ज प्रमाणे राय, अप्प वगेरे 'अन्' छेडावाळां नामोनां बधां अपभ्रंश रूपो करी लेवानां छे.

[पुस, अप्प, राय वगेरे शब्दोनां शौरसेनीरूपोनो पण अपभ्रंशमां उपयोग थइ शके छे]

'अस्' छेडावाळां नामो ('मरन्नाति')

प्राकृतमां अने पालिमां 'अस्' छेडावाळां नामोनां रूपो 'अकारांत शब्दोनी जेवां थाय छे' जेमके,

सुमण (सुमनस्)

१	सुमणो	सुमणा
२	सुमण	सुमणे, सुमणा
३	सुमणेण, सुमणेण	सुमणेहि, सुमणेहिं, सुमणेहिँ

इत्यादि बधां ते ते भाषा प्रमाणे 'वीर' नी जेवां समजवां

---

१ जुओ पृ १२१ (नामनी व्याविओ)

२ पृ १ —अस्पष्ट लोप

३ पालिमां पुमस् (सं पुंस्) शब्दनां रूपोमां विशेषता छे ते आ प्रमाणे:

पुम (पुमस्)

१	पुमा	पुमा
	पुमो	पुमानो
२	पुमानं	पुमानो
	पुमं	पुमाने, पुमे
३	पुमाना	पुमानेहि,
	पुमुना	पुमानेभि,
	पुमेन	पुमेहि, पुमेभि

ए प्रमाणे सुवय (सुवचस्) सुमेह (ध) (सुमेधस्) विमण (विमनस्) पवय (प्रवयम्) अने दुव्वय (दुर्वचस्) वगेरे शब्दोना रूपो समजवा.

स्त्रीलिंग

स्त्रीलिंग नामो पाच प्रकारना छे, जेमके—आकारात, इकारात, ईकारात, उकारात, ऊकारात ।

आकारांत

१ प्राकृतमा आकारात नामो बे जातना छे, जेमके—केटलाक आकारात नामोनुं मूळरूप (संस्कृतमा) अकारात होय छे ते अने केटलाक आकारात नामोनु मूळरूप (संस्कृतमा) अकारात नथी

४–६	पुमुनो	पुमान
	पुमस्स	
५	पुमाना	पुमानेहि, पुमानेभि
	पुमुना	
	पुमा, पुमस्मा	पुमेहि, पुमेभि
	पुमम्हा	
७	पुमाने	पुमानेसु
	पुमे	पुमासु, पुमेसु
	पुमस्मिं, पुमम्हि	
८ स०—	पुम,	पुमानो
	पुम	पुमा

'चन्द्रमस्' शब्दनु प्रथमाना एकवचनमा 'चंदिमा' रूप थाय छे अने बाकीना रूपो अकारातनी जेवा थाय छेः—जूओ पालिप्र० पृ० १३०–१३१ अने एना टिप्पणो.

होई ते [ए बन्ने भातनो आकारांत नामोना रूपोमां थोडुं अंतर छे माटे आ अहीं ए विभाग गणाव्यो छे]

२ स्त्रीलिंगे थनार (संस्कृत) अकारांत नामना छेवटना 'अ' नो 'आ' थाय छेः रम=रमा इत्यादि ।

३ 'विद्युत्' शब्दने वर्जीने स्त्रीलिंगी व्यंजनांत शब्दना छेवटना व्यंजननो 'आ' के 'या' थाय छेः वाच्=वाआ, वाया इत्यादि।

४ स्त्रीलिंगी रकारांत शब्दना छेवटना 'र' नो 'रा' थाय छे गिर्=गिरा । धुर्=धुरा । पुर्=पुरा इत्यादि ।

५ नीचेनां संस्कृत नामोनां प्राकृत रूपो आ रीते थाय छेः

[1]अप्सरस्–अच्छरसा । आशिष्–आसिसा । दुहितृ–धुहिआ, धूआ । ननान्दृ–नणंदा । नौ–नावा । पितृष्वसृ–पिउसिआ, पिउच्छा । बाहु–बाहा । माता–माआ[2], माय (अ) रा । मातृष्वसृ–माउसिआ, माउच्छा । स्वसृ–ससा ।

ईकारांत

१ स्त्रीलिंगे थनारा विशेषणवाचक अने व्यक्तिवाचक शब्दो प्राकृतमां आकारांत अने ईकारांत बने छे

नीला, नीली (नीला), हसमाणी हसमाणा (हसमाना) सव्वी, सव्वा (सर्वा) सुप्पणही, सुप्पणहा (शूर्पणखा) इत्यादि ।

२ संस्कृतमां जे शब्दो आ गणावेला (हेम० २–४–२ अने पाणि ४–१–१९ (सूत्रांक–४७०) सूत्रथी ईकारांत बने छे ते शब्दोने प्राकृतमां आकारांत अने ईकारांत समजवाना छेः

---

१ आ शब्दोमांना केटलाक शब्दो तो आगळ आवी गया छे– जुओ शब्दविशेषविकार पृ ८४–८६ नि १०८–१९

२ आ शब्दनो माता–जननी–अर्थ छे

३ आ शब्दनो देवी अर्थ छे

ओपगवी, ओपगवा (औपगवी), वेई, वेआ (वैदी), सुप्पणेयी, सुप्पणेया (सौपर्णेयी), अक्खिई, अक्खिआ (आक्षिकी), थेणी, थेणा (स्त्रैणी) पुंण्ही, पुंण्हा (पौंस्नी), साहणी, साहणा (साधनी) कुरुचरी, कुरुचरा (कुरुचरी) इत्यादि ।

३ छाया अने हरिद्रा शब्द प्राकृतमा ईकारांत पण बने छेः छाही, छाया (छाया), हलद्दी, हलद्दा (हरिद्रा)

स्त्रीलिंगी नामोने लागता प्राकृत प्रत्ययो

प०—	०	¹आ, उ, ओ, ०
बी०—	म्	¹आ, उ, ओ, ०
त०—	अ, ¹आ, इ, ए	हि, हिं, हिँ
च०, छ०—	अ, ²आ, इ ए	ण, णं
पं०—	अ, ¹आ, इ, ए, त्तो, ओ, उ, हिंतो	त्तो, ओ, उ, हिंतो, सुंतो
स०—	अ, ²आ, इ, ए	सु, सुं

प्राकृत प्रत्ययोने लगता नियमो

१ 'त्तो' अने 'म्' सिवायना प्रत्ययो पर रहेता पूर्वनो ह्रस्व स्वर दीर्घ थाय छे

२ 'म्' प्रत्यय पर रहेता पूर्वनो दीर्घ स्वर ह्रस्व थाय छे.

३ ज्या शून्य (०) छे त्या शब्दोनुं मूळरूप पण वपराय छे अने जो मूळरूप ह्रस्वांत होय तो तेने दीर्घांत करीने वापरवानुं छे.

---

१ आ प्रत्यय ईकारांत नामने ज लागी शके छे.

२ आ प्रत्ययने आकारांत नामने लगाडवानो नथी.

४ संबोधनना एकवचनमां इकारांत अने उकारांत नामोनो अत्य स्वर ह्रस्व, थाय छे अने बहुवचन, प्रथमानी जेवु थाय छे

५ संबोधनना एकवचनमां इकारांत अने उकारांत नामोना अत्य स्वरनो दीर्घ विकल्पे थाय छे अने बहुवचन प्रथमानी सरखु थाय छे

६ जे आकारांत शब्दोनु मूळ (संस्कृत) रूप अकारांत होय छे, ते शब्दोना अत्य 'आ' कारनो, संबोधनना एकवचनमां 'ए' विकल्पे थाय छे अने बहुवचन प्रथमानी सरखु थाय छे

७ संबोधनना एकवचनमां, बीजा 'आकारांत शब्दोनुं मूळ-रूप ज वपराय छे अने बहुवचन प्रथमानी सरखुं थाय छे

विशेषता

शौरसेनी, पैशाची अने मागधीमां पण स्त्रीलिंगी नामोने प्राकृतना ज प्रत्ययो लगाडवाना छे मात्र मागधीमां छट्ठी विभक्तिमां फेर छे अने ए आ प्रमाणे छे

फक्त आकारांत नामोने मागधीमां छट्ठीना एकवचनमां 'ह' प्रत्यय अने बहुवचनमां 'हँ' प्रत्यय लागे छे जेमके

मालाह	माल्माहँ

स्त्रीलिंगी नामोने लागता अपभ्रंश प्रत्ययो

एकव०	बहुव०
प – ०	उ, ओ, ०
बी०–	उ, ओ, ०

---

१ जुओ पृ ८ नि ५

त०—	ए	हिं
च० छ०—	हे, ०	हु, ~
प०—	हे	हु
स०	हिं	हिं
स०—	०	हो. ०

अपभ्रंश प्रत्ययने लगता नियमोः

१ अपभ्रंशना प्रत्ययो लागता नामनो अंत्य स्वर ह्रस्व अने दीर्घ थाय छे.

२ ज्यां शून्य छे त्यां पण उपरनो नियम लागु थाय छे.

प्राकृत रूपाख्यानो

[1]माला

प०—	माला	मालाउ, मालाओ, माला
बी०—	मालं	मालाउ, मालाओ, माला

---

१ आकारांत स्त्रीलिंगी शब्दना पालिरूपो

माला

१	माला	माला, मालायो
२	मालं	माला, मालायो.
३—५	मालाय	मालाहि, मालाभि
४—६	मालाय	मालानं.
७	मालाय मालायं	मालासु.
८	सं०—माले	माला, मालायो.

—जूओ पालिप्र० पृ० ९९–१००–१०१

तृ०—	मालाअ, मालाइ, मालाए	मालाहि, मालाहिँ, मालाहिं
ष०, च०—	मालाअ, मालाइ, मालाए	[1]मालाण, मालाणं
	(मा० मालाह)	(मा० मालाहँ)
पं०—	मालाअ, मालाइ, मालाए, मालत्तो, मालाओ, मालाउ, मालाहिंतो	मालत्तो, मालाओ, मालाउ, मालाहिंतो मालासुंतो
स०—	मालाअ, मालाइ, मालाए	मालासु, मालासुं
सं०—	[2]माले ! माला !	मालाउ !, मालाओ ! माला !

ए रीते नावा (नौ) गउआ (गोका) सद्धा (श्रद्धा), मेहा (मेधा) पण्णा (प्रज्ञा), तण्हा (तृष्णा) विज्जा (विद्या), पुच्छा (पृच्छा) चिंता छुहा (क्षुध्-छुह) कउहा (ककुभ्-कउह), निसा (निशा) अने दिसा (दिशा) वगेरे आकारांत शब्दोनां रूपाख्यानो 'माला' नी पेठे छे

---

१ आकारांत स्त्रीलिंगी शब्दोने षष्ठीना बहुवचनमां आयभीनो 'ईं' प्रत्यय पण लागे छे जेमके—हरिआ + हरिआण, हरिआईं। माला + मालाणं मालाईं।

२ 'अम्मा' शब्दनुं संबोधननुं एकवचन 'अम्मो' पण थाय छे

वाया (वाचा)

प०—	वाया	वायाउ, वायाओ, वाया.
स०—	वाया	वायाउ, वायाओ, वाया.

शेष रूपो ' माला ' नी जेवा.

ए रीते अच्छरसा (अप्सरस्), आसिसा (आशिष्), धूआ, दुहिआ ((दुहितृ), नणंदा (ननान्द), नावा (नौ), पिउच्छा. पिउसिआ (पितृष्वसृ), वाहा (वाहु), माआ, माअ (य) रा, (मातृ) माउसिआ, माउच्छा (मातृष्वसृ) अने ससा (स्वसृ) वगेरे आकारांत शब्दोना रूपाख्यानो समजवाना छे.

---

[१]गइ (गति)

प०—	गई	गईउ, गईओ, गई
बी०—	गइ	गईउ, गईओ, गई

---

१ इकारात स्त्रीलिंगी शब्दना पालिरूपो

रत्ति (रात्रि)

१	रत्ति	रत्ती, रत्तियो
२	रत्तिं	,, ,,
३–५	रत्तिया	रत्तीहि, रत्तीभि.
४–६	रत्तिया	रत्तीनं
७	रत्तिया	रत्तीसु
	रत्तियं	
८	रत्ति	रत्ती, रत्तियो

—जूओ पालिप्र० पृ० १०१–१०२

त०—	गईअ, गईआ, गईइ, गईए	गईहि, गईहिं, गईहिँ
च०, छ०—	गईअ, गईआ, गईइ, गईए	गईण, गईणं
पं०—	गईअ, गईआ, गईइ, गईए, गइत्तो, गईओ, गईउ, गईहिंतो	गइत्तो, गईओ, गईउ, गईहिंतो, गईसुंतो
स०—	गईअ, गईआ, गईइ, गईए	गईसु, गईसुं (¹गइसु, गइसुं)
सं०—	गइ ! गई !	गईउ, गईओ गई

ए प्रमाणे जुत्ति (युक्ति) माइ (मातृ) भूमि, जुवइ (युवति) बुद्धि, रइ (रति), सुद्धि, मइ (मति), दिहि, धिइ (धृति) अने सिप्पि, सुत्ति (शुक्ति) वगेरे इकारांत शब्दोनां रूपाख्यानो समजवानां छे

[व शब्द ' उपरथी पालिमा ' रत्ता, ' शब्दा ' अने शब्दा उपरथी रत्ता शब्दाम् उपरथी रत्त अने ' रत्ति गया शब्दो उपरथी रत्तो रूपो पण बने छे]

१ जुओ हे प्रा० व्या ८–३–१६

धेणु (धेनु)

प०—	धेणू	धेणूउ, धेणूओ, धेणू
बी०—	धेणु	धेणूउ, घेणूओ, धेणू
त०—	धेणूअ, धेणूआ, धेणूइ, धेणूए	धेणूहि, धेणूहिं, धेणूहिँ
च०,छ०—	धेणूअ, धेणूआ, धेणूइ, धेणूए	धेणूण, धेणूणं
पं०—	धेणूअ, धेणूआ, धेणूइ, धेणूए धेणूत्तो, धेणूओ, धेणूउ, घेणूहिंतो	धेणूत्तो, धेणूओ, धेणूउ, धेणूहिंतो, धेणूसुंतो
स०—	धेणूअ, धेणूआ, धेणूइ, धेणूए	घेणूसु, धेणूसुं
सं०—	धेणू ! धेणु !	धेणूउ, धेणूओ, धेणू

१ उकारांत स्त्रीलिंगी शब्दना पालिरूपो

यागु (यवागू)

१	यागु	यागू, यागुयो.
२	यागु	,, ,,
३—५	यागुया	यागूहि, यागूभि
४—६	यागुया	यागून
७	यागुया यागुयं	यागूसु
८ सं०	यागु	यागू, यागुयो.

—जूओ पालिप्र० पृ० १०६–१०७

ए प्रमाणे गउ, कण्डु, विज्जु (विद्युत्), उज्जु (ऋजु), पिम्मगु (प्रियङ्गु) माउ (मातृ) वड्डु (दृढु) पड्डु (पट्टु), गुरु, लहु (लघु) अने कण्डु वगेरे उकारांत शब्दोनां रूपो 'धेणु' नी पेठे समजवानां छे

---

[1]नई (नदी)

प०	नई	नईआ, नईउ, नईओ, नई
बी०	नई	नईआ, नईउ, नईओ, नई
त०	नईअ, नईआ, नईइ, नईए	नईहि, नईहिं, नईहिँ

---

[1] ईकारांत स्त्रीलिंगी शब्दनां पालिरूपो:

नदी

१	नदी	नदी, नदियो (नज्जो)
२	नदिं, नदियं	, , ,,
३–५	नदिया (नज्जा)	नदीहि नदीभि
४–६	नदिया (नज्जा)	नदीनं
७	नदिया (नज्जा) (नज्जं)	नदीसु
८ सं	नदि	नदी नदियो (नज्जो)

—जुओ पालिप्र पृ ९ १–१ ४–१ ५–१ ६ तथा एनां टिप्पणो

[स नज्ज नज्जा नज्जा अने नज्जम् उपरथी पालिमां उपयुक्त नज्जो नज्जा नज्जा अने नज्जं रूपो बनेलां छे–जुओ पृ ११ म २७–७ पर पज्ज]

च०, छ०—	नईअ, नईआ, नईइ, नईए	नईण. नईण
प०—	नईअ, नईआ, नईइ, नईए, नईत्तो. नईओ. नईउ, नईहिंतो	नइत्तो, नईओ, नईउ, नईहिंतो, नईसुतो
स०—	नईअ, नईआ, नईइ, नईए	नईसु, नईसुं
स०—	नइ !	नईआ, नईउ, नईओ, नई

ए प्रमाणे गाई (गो) वावी (वापी), कयली (कदली), नारी, कुमारी, तरुणी, समणी (श्रमणी), साहुवी, [1]साहुणी(साध्वी), पुहवी (पृथ्वी), वाराणसी, तणुवी (तन्वी), इत्थी, थी (स्त्री) अने बहिणी (भगिनी) वगेरे ईकारांत शब्दोना रूपाख्यानो 'नई' नी पेठे छे

---

[2]वहू (वधू)

प०—	वहू	वहूउ, वहूओ, वहू
बी०—	वहुं	वहूउ, वहूओ, वहू

---

१ जुओ पृ० ४३—वी—उवी अने ते उपरनुं टिप्पण.

२ ऊकारांत स्त्रीलिंगी शब्दना पालिरूपो

वधू (प्रा० वहू)

१	वधू	वधू, वधुयो.
२	वधुं	,, ,,
३—५	वधुया	वधूहि वधूभि.
४—६	वधुया	वधूनं

त०—	वहूअ, वहूआ, वहूइ वहूए	वहूहि, वहूहिं, वहूहिँ
च० छ०—	वहूअ, वहूआ, वहूइ, वहूए	वहूण, वहूण
प०—	वहूअ, वहूआ, वहूइ वहूए वहुत्तो, वहूओ, वहूउ वहूहिंतो	वहुत्तो, वहूओ, वहूउ, वहूहिंतो, वहूसुंतो
स०—	वहूअ, वहूआ, वहूइ, वहूए	वहूसु, वहूसुं
सं०—	वहु [1]	वहूआ, वहूउ, वहूओ, वहू

ए प्रमाणे भजू (आर्या) पङ्गू, करेणू, वामोरू, कद्दू (कद्रू) पीणोरू (पीनोरू) अने कक्कधू (कर्कन्धू) वगेरे उकारांत शब्दोनां रूपाख्यानो समजवानां छे

प्राकृतनां स्त्रीलिंगी रूपाख्यानोनी पेठे शौरसेनी, मागधी अने पैशाचीनां पण रूपाख्याना समजवानां छे–शौरसेनीमां, मागधीमां अने अपभ्रंशमां पंचमीना एकवचनमां (प्राकृतना ' आ ' अने उ' ने बदले) 'दो' अने 'दु' प्रत्यय वापरवामा छे पैशाचीमां एने बदले 'तो' अन तु' वापरवाना छे अन मागधीनी जे खास विशेषता छे त जणावी छे '

---

७ मधुणा मधुणं — मधूण
८ म — मधु — माहु मधुणो
—प्रभो पाणिनि १ ' ३—१ ८
१ प्रमा ७ २ ६

अपभ्रंशरूपाख्यानो

माला

१	माला, माल	मालाउ, मालउ, मालाओ, मालओ माल, माला
२	माला, माल	मालाउ, मालउ, मालाओ, मालओ माल, माला.
३	मालाए, मालए	मालाहिं, मालहिं.
४–६	मालाहे, मालहे माला, माल	मालाहु, मालहु, माला, माल
५	मालाहे, मालहे मालत्तो, मालादो मालादु, मालाहिंतो,	मालाहु, मालहु मालत्तो, मालादो मालादु मालाहिंतो, मालासुंतो
७	मालाहि, मालहि	मालाहिं, मालहिं
८ सं०	माला, माल	मालाहो, मालहो माल, माला

मइ

१	मइ, मई	मइउ, मईउ मइओ, मईओ मइ, मई
२	मइ, मई	मइउ, मईउ मइओ, मईओ मइ, मई
३	मइए, मईए	मइहिं, मईहिं

४–१	मइहे, मईहे	मइहु, मईहु
	मइ, मई	मइ, मई
५	मइहे, मईहे	मइहु, मईहु
७	मइहि, मईहि	मइहिं, मईहिं
८ स०	मइ, मई	मइहो, मईहो,
		मइ, मइ

पइट्ठी (प्रविष्टा–पविट्ठा)

१	पइट्ठी, पइट्ठि	पइट्ठिउ, पइट्ठीउ,
		पइट्ठिओ, पइट्ठीओ,
		पइट्ठी, पइट्ठि
२	पइट्ठी, पइट्ठि	पइट्ठिउ, पइट्ठीउ,
		पइट्ठिओ, पइट्ठीओ,
		पइट्ठी, पइट्ठि
३	पइट्ठिए, पइट्ठीए	पइट्ठिहिं, पइट्ठीहिं
४–६	पइट्ठिहे, पइट्ठीहे	पइट्ठिहु, पइट्ठीहु,
	पइट्ठी, पइट्ठि	पइट्ठी, पइट्ठि
५	पइट्ठिहे, पइट्ठीहे	पइट्ठिहु, पइट्ठीहु
७	पइट्ठिहि, पइट्ठीहि	पइट्ठिहिं, पइट्ठीहिं
८ स	पइट्ठि, पइट्ठी	पइट्ठिहो, पइट्ठीहो
		पइट्ठी, पइट्ठि

धणु

१	धण धण	धणुउ, धणउ
		धेणुओ धेणुआ

मा [illegible] ना [illegible] मीना [illegible] नी पउ अनी मइसो, पइट्ठिना

पनो मसो पन समजवा–जवा [illegible] २१

		धेणु, धेणू.
२	धेणु, धेणू	धेणुउ, धेणूउ
		धेणुओ, धेणूओ,
		धेणु, धेणू.
३	धेणुए, धेणूए	धेणुहिं, धेणूहिं.
४–६	धेणुहे, धेणूहे	धेणुहु, धेणूहु,
	धेणु, धेणू	धेणु, धेणू .
५	धेणुहे, धेणूहे	धेणुहु, धेणूहु.
७	वेणुहि, धेणूहि	धेणुहिं, धेणूहिं
८ सं०—	धेणु, धेणू	धेणुहो, धेणूहो,
		धेणु, धेणू

वहू

१	वहू, वहु	वहुउ, वहूउ
		वहुओ, वहूओ,
		वहु, वहू
२	वहू, वहु	वहुउ, वहूउ
		वहुओ, वहूओ,
		वहु, वहू
३	वहुए, वहूए	वहुहिं, वहूहिं
४–६	वहुहे, वहूहे,	वहुहु, वहूहु,
	वहु, वहू	वहु, वहू.
९	पहुहे, वहूहे	वहुहु, वहूहु.

७ वहुहि, वहूहि	वहुहिं, वहूहिं
८ सं —वहु, वहू	वहुहो, वहूहो
	वहु वहू

ए प्रमाणे बधा आकारांत, इकारांत, ईकारांत, उकारांत अने ऊकारांत शब्दोनां अपभ्रंशरूपो बनावी लेवानां छे

---

[1]सर्वादि (स्त्रीलिंग)

स्त्रीलिंगी सर्वादि शब्दोनां प्राकृतरूपो, शौरसेनीरूपो माग-धीरूपो, पैशाचीरूपो, अने अपभ्रंशरूपो पूर्वे जणावेला साधारण स्त्रीलिंगी शब्दो प्रमाणे समजवानां छे

केटलाक स्त्रीलिंगी सर्वादि शब्दोनां प्राकृत रूपोनी विशेषता आ प्रमाणे छे

[स्त्रीलिंगी सर्वादि शब्दोना 'आकारांत' अंगनां रूपो माला 'नी जेवां करवानां छे इकारांत अंगनां रूपो 'नई 'नी जेवा करवानां छे अने उकारांत अंगनां रूपो 'धेणु 'नी जेवां करवानां छे]

---

१ स्त्रीलिंगी सर्वादि शब्दोना पालिरूपो—

सब्बा (सर्वा) ना चपरानां रूपो:

४–६ सब्बस्सा (स सर्वस्या) सब्बासं (स सर्वासाम्)

सब्बासानं

७ सब्बस्सं (स सर्वस्याम्)—बाकी पालिप्र प १४ अने टिप्पण बा३। पधा मामा मा पालिरूपो जेवां

[1]ती, ता, [2]णी, णा (तत्[3])

१	सा	तीआ, तीउ, तीओ, ती, ताउ, ताओ, ता.

---

१ पेली अने बीजीना एकवचनमा तथा छट्ठीना बहुवचनमा आ ईकारात अंगनो प्रयोग थतो नथी

२ जूओ पृ० १४१ नु 'ण' उपरनु टिप्पण.

३ ता (तद्) ना वधाराना रूपो

१	सा	
३–५	तस्सा (स० तस्या)	ताहि, ताभि
	ताय	नाहि, नाभि.
	नस्सा	
	नाय	
	अस्सा	
४–६	तस्साय, तस्सा ताय { स० तस्यै तस्या }	तास (स० तासाम्) तासान
	नस्साय, नस्सा	नास, नासान
	नाय	
	अस्साय, अस्सा	आस, आसान
	तिस्साय, तिस्सा	सान
७	तस्स (स० तस्याम्)	
	तस्सा	
	नस्स, नस्सा	
	अस्स, अस्सा	
	तिस्सं, तिस्सा	
	ताय ताय	
	नाय, नाय	

बाकी बधा 'माला'नी पेठे

—जूओ पालिप्र० पृ० १४३ अने टिप्पण

२	त	तीआ, तीउ, तीओ, ती,
	ण	ताउ, ताओ, ता
३	तीअ, तीआ तीइ तीए,	तीहि, तीहिं तीहिँ
	ताअ, ताइ, ताए	ताहि, ताहिं, ताहिँ
	(पै० ताए)	
४–६	से,	सिं,
	(तास) तिस्सा, तीसे	(तेसिं)
	तीअ, तीआ, तीइ, तीए,	
	ताअ, ताइ, ताए	ताण, ताण
स०–(ताहिं) तीअ, तीआ,		
	तीइ, तीए	
	ताअ, ताइ, ताए	

शेष रूपो 'नई' अने 'माला'नी पेठे

['ती' अने 'ता' अंगनां रूपो पण 'नई' अने 'माला'नी पेठे थाय छे]

'ली, ला (यत्)

१	जा	जीआ, जीउ, जीओ, जी,
		जाउ जाओ, जा
२	ज	जीआ, जीउ, जीओ, जी,
		जाउ, जाओ, जा
४–६	जिस्सा जीसे	जाण, जाण
	जीअ जीआ,	
	जीइ, जीए,	
	जाअ जाइ	
	जाए	

१ जुओ पृ २१९ उपरनुं टिप्पण १

७ (जाहिं), जीअ, जीआ,
जीइ, जीए,
जाअ, जाइ,
जाए

शेष रूपो 'नई' नी अने 'माला' नी जेवा.

---

[1]की, का (किम्)

१	का	कीआ, कीउ, कीओ, की, काउ, काओ, का.
२	कं	कीआ, कीउ, कीओ, की, काउ, काओ, का.
४–६	किस्सा, कीसे, (कास) कीअ, कीआ, कीइ, कीए काअ, काइ, काए	काण, काण
७	(काहिं), कीअ, कीआ, कीइ, कीए, काअ, काइ, काए	

शेष रूपो 'नई' अने 'माला' नी जेवा

इमा, [2]इमी (इदम्)

१	इमिआ, इमा, इमी	इमीआ, इमीउ, इमीओ, इमी,

---

१ जूओ पृ० २१९ उपरनु टिप्पण १

२ इम (इदम्) ना पालिरूपो

१	अय	इमा, इमायो.
२	इम	,, ,,

		इमाउ, इमाओ, इमा
३	इमीअ इमीआ, इमीइ, इमीए, इमाअ, इमाइ, इमाए (पै० नाए)	इमीहि, इमीहिं, इमीहिँ इमाहि, इमाहिं, इमाहिँ (आहि, आहिं, आहिँ)
४–६	से, इमीअ, इमीआ, इमीइ, इमीए इमाअ, इमाइ, इमाए	सिं इमीण, इमीण, इमाण, इमाण,

शेष रूपा 'नर' अने 'माला'नी जेम

३–	इमाय	इमाहि, इमाभि
४–६	इमाय, इमिस्सा इमस्साय अस्सा (सं. अस्या) अस्साय (सं. अस्य)	इमास, इमासानं
७	इमाय इमिस्सं अस्सं (सं. अस्याम्)	इमासु

—(पा पालि प्र. पृ. १४५–१४६)

एआ, [1]एई

१	एसा, एस, इणं, इणमो	एईआ, एईउ, एईओ, एई, एआउ, एआओ. एआ.
४–६	से, एईअ, एईआ, एईइ, एईए, एआअ, एआइ, एआए	सि, एईण, एईणं, एआण, एआण.

शेष रूपो 'नई' अने 'माला' नी जेवा

---

[2]अमु (अदस्)

१	अह, अमू	अमूउ, अमूओ, अमू.

शेष 'धेणु' वत्

---

१ एता (एतद्) ना पालिरूपो

१	एसा
३–५	एताय, एतिस्सा (स० एतस्या.)
४–६	एताय, एतिस्सा, एतिस्साय { स० एतस्यै एतस्या }
७	एताय, एताय एतिस्स, एतस्स (सं० एतस्याम्)

बाकी बधा 'माला' नी पेठे

—जूओ पालिप्र० पृ० १४४.

[जुओ पृ० १४६, १ टिप्पण]

---

२ 'अमु' ना पालिरूपो:

१	असु, अमु,	अमृ, अमुयो.
२	अमुं	अम, अमुयो.
३–५	अमुया	अमूहि, अमभि.
४–६	अमुया, अमुस्सा	अमूस, अमूसान

ऋकारांत (स्त्रीलिंग)

ऋकारांत स्त्रीलिंगी 'मातृ' शब्दनां 'माआ' अने 'मायरा' आवां बे रूपो जूदा जूदा अर्थमां थाय छे ए आगळ जणावेलु छे, एथी एनां शौरसेनी वगेरेनां बधां रूपो 'वाया' नी जेवां समजवानां छे, जेमके,

¹माआ, मायरा (मातृ)

प	माआ,	माआउ, माआओ, माआ,
	मायरा	मायराउ, मायराआ, मायरा

७	अमुर्य	अमूसु
	अमुस्स	

—जुओ पालिम पृ १४८

१ जुओ पृ २ ४, नि ५—'मायर ने बदले 'माअर' पण थइ शके छे

२ ऋकारांत स्त्रीलिंगी 'मातृ' शब्दनां पालिरूपो

मातु (मातृ)

१	माता	माता मातरो
२	मातर	माता, मातरे
३–	मातरा	मातरेहि मातरेभि
	मातुया	मातूहि मातूभि
	मत्या	
४–६	मातु	मातरान, मातान
	मातुया	मातूनं
	मत्या	
७	मातरि	मातरम्,
	मातुया	मातूसु
	मत्या	
	मातुयं मत्यं	
८ स –मात माता		मातरा, मातरो

—जुओ पालिप्र पृ १ ८–१ ९–११ अने एमां टिप्पण

बी०— माअं	माआउ, माआओ, माआ,
मायरं	मायराउ, मायराओ, मायरा.
त०— माआअ, माआइ,	माआहि, माआहिं, माआहिँ,
माआए,	मायराहि, मायराहिं, मायराहिँ.
मायराअ, मायराइ, मायराए	
च० छ०—माआअ, माआइ,	माआण, माआणं
माआए	([1]माईण)
मायराअ, मायराइ, मायराए	मायराण. मायराण
पं०— माआअ, माआइ, माआए,	माअत्तो, माआओ,
माअत्तो, माआओ,	माआउ, माआहिंतो,
माआउ, माआहिंतो.	माआसुंतो,
मायराअ, मायराइ,	मायरत्तो, मायराओ,
मायराए,	मायराउ,
मायरत्तो, मायराओ, मायराउ,	मायराहिंतो,
मायराहिंतो	मायरासुंतो.
स०— माआअ, माआइ माआए,	माआसु, माआसुं
मायराअ, मायराइ, मायराए	मायरासु, मायरासुं.
सं०— माआ,	माआउ, माआओ,
	माआ,
मायरा	मायराउ, मायराओ, मायरा.

[माआ (मातृ=माता+माआ) नु ' [2]माया ' बनावीने पण ' माआ ' नी जेवां ज रूपो बनावी शकाय छे.]

---

१ जूओ पृ० ५६ मातृ=माइ+माईण (स० मातृणाम्)

२ जूओ पृ० १८ ' कादि ' नो ' य ' अ० ८

['मातृ' शब्दमां 'माइ' अने 'माउ' एवां पण बे अंगो बने छे, पण रूपाख्यानने प्रसंगे ते बन्नेनो प्रयोग विरल जणाय छे]

स० 'दुहितृ' नु प्राकृत रूप 'धूआ' थाय छे ए 'मामळ' मळावेलुं छे एथी एनां बधां रूपो 'माला' नी जेवां थाय छे

ओकारांत 'गो' शब्दनां शौरसेनी अंगो प्रण थाय छे जमके 'गोणी, गाई अने गउ' एमांना 'गउ' नां शौरसेनी वगेरेनां बधां

---

१ जुओ हे प्रा व्या० ८-३-४६-"माईण" "माउए समसिअं वंदे" 'षड्भाषाचंद्रिका' मां तो ए बन्ने अंगोने रूपाख्यानने प्रसंगे बधी विभक्तिओमां वापरेलां छे-"इयुद् मातुः" १-२-८१ पृ १ ८. 'माइ' नां रूपो 'गइ' नी जेवां अने माउ' नां रूपो 'धेणु' नी जेवां थाय छे

२ धीतु (दुहितृ) नां पालिरूपो

१	धीता	धीता, धीतरो
२	धीतरं, धीतं	धीतरो, धीतरे.
३-५	धीतरा,	धीतरेहि, धीतरेभि,
	धीतुया	धीतूहि, धीतूभि.
४-६	धीतु,	धीतूनं
	धीतुया	धीतान, धीतरानं
७	धीतरि	धीतूसु,
	धीतुया	धीतरेसु.
	धीतुय	

जुओ पालिप्र पृ ११०-१११

३ जुओ पृ० २ ४ नि ५

४ गो शब्दना प्राकृत रूपांतरोमां 'गावी' 'गोणी' 'गोता' अने 'गोपोतलिका' ने पण गणावेलां छे -महाभाष्य पृ० ५०

रूपो बराबर 'धेणु'नी जेवा थाय छे अने 'गोणी' 'गाई'ना पण शौरसेनी वगेरेनां बधां रूपो बराबर 'नई'नी जेवा बने छे, जेमके,

गउ (गो)

प०—	गऊ	गऊउ, गऊओ, गऊ.
बी०—	गउं	गऊउ, गऊओ, गऊ.
त०—	गऊअ, गऊआ गऊइ, गऊए	गऊहि, गऊहिं, गऊहिँ.
च० छ०—	गऊअ, गऊआ. गऊइ, गऊए	गऊण, गऊणं.
पं०—	गऊअ, गऊआ गऊइ, गऊए गऊत्तो, गऊओ गऊउ, गऊहिंतो	गऊत्तो, गऊओ, गऊउ, गऊहिंतो, गऊसुंतो.
स०—	गऊअ, गऊआ गऊइ, गऊए	गऊसु, गऊसुं.
स०—	गऊ, गउ,	गऊउ. गऊओ, गऊ.

---

[1]गाई, गोणी

प०—	गाई,	गाईआ, गाईउ, गाईओ, गाई.

१ स्त्रीलिंगी 'गो' शब्दना पालिरूपोः

गो

१	गो, गावी	गावी, गावो, गवो.
२	गाविं, गाव, गव	गावी, गावो, गवो.

	गोणी	गोणीआ, गोणीउ, गोणीओ, गोणी
बी०—	गाइ,	गाईआ, गाईउ, गाईओ, गाई
	गोणि	गोणीआ, गोणीउ, गोणीओ, गोणी
त —	गाइअ, गाईआ, गाइइ, गाईए	गाईहि, गाईहिं, गाईहिँ
	गोणीअ, गोणीआ, गोणीइ, गोणीए	गोणीहि, गोणीहिं, गोणीहिँ

इत्यादि बधां 'नई' नी जेवां

'ना' शब्दनुं स्त्रीलिंगी प्राकृत रूप 'नावा' थाय छे अने एनां बधां रूपो बराबर 'माला' नी जेवां बने छे, जेमके,

प०—	नावा	नावाउ, नावाओ, नावा
बी०—	नावं	नावाउ, नावाओ, नावा
त —	नावाअ, नावाइ, नावाए	नावाहि, नावाहिं, नावाहिँ

इत्यादि बधां 'माला' नी जेवां.

---

१ गावि, गाव गवं — गोहि, गोमि
४ गावि गाव गवं — गवं, गौन, गुम्नं
गावि गाव गव — गोहि, गोमि
६ गावि गाव गव — गवं गोनं गुम्नं.
५ गावि गाव गवं — गोमु.
८ स गा । गावे गव — गावी, गावी, गवो

—जुओ पालिप्र पृ १११ नुं टिप्पण

संख्यावाचक शब्दो

विशेषता:

१ अट्ठारस (अष्टादश) सुधीना संख्यावाचक शब्दोने षष्ठीना बहुवचनमा 'ण्ह' अने 'ण्हं' प्रत्यय लागे छे: एगण्ह, एगण्हं। दुण्ह, दुण्हं। उभयण्ह, उभयण्हं वगेरे

इक, एक्क, एग, एअ (एक)

आ शब्दना ते ते भाषाना पुंलिंगी रूपो 'सव्व'नी जेवा थाय छे, स्त्रीलिंगी रूपो 'माला'नी जेवा थाय छे अने नपुंसकलिंगी रूपो नपुंसकी 'सव्व'नी जेवा थाय छे. ए प्रमाणे बधा संख्यावाचक शब्दोमा यथासंभव समजवानु छे

[1]उभ, उह (उभ)

आ शब्दना रूपो बहुवचनमा ज थाय छे अने ए 'सव्व'नी पेठे छे.

---

१ संख्यावाचकशब्दनां पालिरूपो

(पालिप्रकाशमा पृ० १५५ थी १६८ सुधीमा संख्यावाचक शब्दोना रूपो आपेला छे.)

'उभ' ना पालिरूपो

१–२	उभो। उभे।
३–५	उभोहि, उभोभि, उभेहि, उभेभि।
४–६	उभिन्नं।
७	उभोसु, उभेसु।

—जुओ पालिप्र० पृ० १५५

प०— उमे ।

बी०— उमे, उमा ।

त०— उमेहि, उमेहिं, उमेहिँ ।

च० छ०—उमण्ह, उमण्ह ।

प०— उमत्तो, उमाओ, उमाउ,
उमाहि, उमेहि,
उमाहिंतो उमेहिंतो,
उमासुंतो, उमेसुंतो ।

स०— उमेसु, उमेसुं ।

'उम' नां अपभ्रंश रूपो 'सव्व'नां अपभ्रंश रूपोनी पेठे छे

दु (द्वि) अने लिंगनां रूपो

आ शब्दनां रूपो बहुवचनमां ज थाय छे

प०— दुवे, दोण्णि, दुण्णि, बेण्णि, विण्णि, दो, वे ।

बी०— दुवे, दोण्णि, दुण्णि, वेण्णि, विण्णि, दो, बे ।

त०— दोहि, दोहिं, दोहिँ,
बेहि, बेहिं, बेहिँ ।

---

१ द्वि नां पालिरूपो

१—२ दुवे
द्वे ।

३— द्वीहि, द्वीभि ।

४—६ दुविन्न द्विन्नं ।

७ द्वीसु ।

—कच्चा पालिप्र प १५६

च० छ०—दोण्ह, दोण्हं, दुण्ह, दुण्हं,
वेण्ह, वेण्हं, विण्ह, विण्हं ।

प०— दुत्तो, दोओ, दोउ, दोहितो, दोसुंतो,
वित्तो, वेओ, वेउ, वेहिंतो, वेसुंतो ।

स०— दोसु, दोसुं,
वेसु, वेसु ।

'दु' ना अपभ्रंश वगेरेना रूपो 'भाणु' ना वहुवचनात रूपो जेवा छे.

---

[1]ति (त्रि) त्रणे लिंगना रूपो

प०— }
बी०— } तिण्णि ।

च० छ०— तिण्ह, तिण्ह ।

शेष रूपो ते ते भाषा प्रमाणे 'इसि' ना वहुवचन रूपो जेवां छे.

---

१ पालिमा तो 'ति' (त्रि) शब्दना रूपो पुंलिंगमा, स्त्रीलिंगमा अने नपुंसकलिंगमा जुदा जुदा थाय छे, जेमके,

	ति (पुलिंग)	ति (स्त्रीलिंग)	ति (नपुंसकलिंग)
१–२	तयो ।	तिस्सो ।	तीणि
३–५	तीहि,	तीहि,	तीहि,
	तीभि ।	तीभि ।	तीभि ।
४–६	तिण्णं	(तिस्सं)	तिण्णं
	तिण्णन्नं	तिस्सन्नं ।	तिण्णन्नं ।
७	तीसु	तीसु ।	तीसु ।

—जूओ पालिप्र० पृ० १५७

[1]चउ (चतुर्) त्रणे लिंगमां रूपो

तृतीया, पंचमी अने सप्तमीना प्रत्ययो पर रहेतां आ शब्दना अंत्य 'उ' नो दीर्घ विकल्पे थाय छे

प०— } चत्तारो, चउरो, चत्तारि ।
बी०— }

त०— चऊहि, चऊहिं, चऊहिँ,

चउहि, चउहिं, चउहिँ ।

च छ०—चउण्ह, चउण्हं

शेष रूपो ते ते भाषा प्रमाणे 'भाणु'नां बहुवचनांत रूपो जेवां छे

---

१ पालिमां 'चतु' (चतुर्) शब्दमां पण त्रणे लिंगमां रूपो जुदां जुदां थाय छे, जेमके,

	चतु (पुंलिंग)	चतु (स्त्रीलिंग)	चतु (नपुंसकलिंग)
१–२	चत्तारो, चतुरो ।	चतस्सो ।	चत्तारि ।
३–५	चतूहि चतूभि ।	चतूहि, चतूभि ।	चतूहि, चतूभि ।
४–६	चतुन्नं ।	चतस्सन्नं ।	चतुन्नं ।
७	चतूसु ।	चतूसु ।	चतूसु ।

—जुओ पालिप्र पृ० १५७–१५८

[1]पंच (पञ्च) त्रणे लिंगना रूपो

प०— } पंच ।
बी०— }

त०— पंचेहि, पंचेहिं, पंचेहिँ,
[2]पंचहि, पंचहि, पंचेहिँ ।

च० छ०—पंचण्ह, पंचण्हं ।

शेष रूपो ते ते भाषा प्रमाणे 'जिण' ना बहुवचनात रूपो जेवा छे.

ए रीते छ (षट्), सत्त (सप्तन्), अट्ठ (अष्टन्), नव (नवन्), दह, दस (दशन्), एआरह, एगारह, एआरस (एकादश), दुवालस, बारह, बारस (द्वादश), तेरह, तेरस (त्रयोदश), चोद्दह, चोद्दस, चउद्दह, चउद्दस (चतुर्दश), पण्णरह, पण्णरस (पञ्चदश).

---

१ पंच (त्रणे लिंगे सरखा)

१—२ पच ।

३—५ पचहि, पचभि ।

४—६ पचन्न ।

७ पचसु ।

——जूओ पालिप्र० पृ० १५८

२ व्याकरणनो नियम जोता तो 'पचेहि' वगेरे 'ए' कार-वाळा रूपो ज थइ शके छे, आर्षप्राकृतमा 'पचहि' वगेरे 'ए' कार विनाना पण रूपो वपराएला छे जेमके,

['पचहिं कामगुणेहिं"
'पचहिं महव्वएहिं"
"पचहिं किरिआहिं"
"पचहिं समईहिं"——श्रमणसूत्र]

माटे अही ए बन्ने रूपो साथे देखाडेला छे.

सोळस, सोल्रह (षोडश), सत्तरस, सत्तरह (सप्तदश) अने अट्ठारस, अट्ठारह (अष्टादश) ए बधां शब्दोनां रूपो 'पंच'नी पेठ समजवानां छे

कइ (कति)

(आ शब्दनां रूपो बहुवचनमां ज थाय छे)

प०— } कइ
बी०— }

ष० ब०—कइण्ह, कइण्हे

शेषरूपो छे ते भाषा प्रमाणे 'इसि'नां बहुवचनांत रूपो जेवां छे

नीचे गणावेला शब्दोमां जे शब्दो आकारांत छे तेनां रूपो 'माला'नी जेवां जाणवानां छे अने जे शब्दो इकारांत छे तेनां रूपो 'गइ'नी जेवां जाणवानां छे

एगूणवीसा (एकोनविंशति)	एगवीसा, इक्कवीसा, एक्कवीसा (एकविंशति)
वीसा (विंशति)	

---

१ 'कति' नां पालिरूपो (त्रणे लिंगे)

कति ।
कतीहि
कतीभि ।
कतीनं
कतिसु ।
कतीसु ।

—पालिप्र पृ १६६

२ पालिप्र पृ १६९–१६५

बावीसा (द्वाविंशति)
तेवीसा (त्रयोविंशति)
[1]चउवीसा, चोवीसा (चतुर्विंशति)
पणवीसा (पंचविंशति)
छव्वीसा (षड्विंशति)
सत्तावीसा (सप्तविंशति)
अट्ठावीसा, अट्ठवीसा, अडवीसा (अष्टाविंशति)
एगूणतीसा (एकोनत्रिंशत्)
तीसा (त्रिंशत्)
एगतीसा, एक्कतीसा, एक्कतीसा (एकत्रिंशत्)
बत्तीसा (द्वात्रिंशत्)

तेत्तीसा, तित्तीसा (त्रयस्त्रिंशत्)
चउत्तीसा, चोत्तीसा (चतुस्त्रिंशत्)
पणतीसा (पञ्चत्रिंशत्)
छत्तीसा (षट्त्रिंशत्)
सत्ततीसा (सप्तत्रिंशत्)
अट्ठतीसा, अडतीसा (अष्टत्रिंशत्)
एगूणचत्तालिसा (एकोनचत्वारिंशत्)
चत्तालिसा (चत्वारिंशत)
एगचत्तालिसा, इक्कचत्तालिसा, एक्कचत्तालिसा, इगयाला (एकचत्वारिंशत्)

---

१ पालिभाषामां 'चउवीसा' शब्दनुं प्रथमानुं एकवचन 'चउवीसं' थाय छे (जूओ पालिप्र० पृ० १६० नि० १२७) अने ए रूप प्राकृतसाहित्यमां पण वपराएलुं छे. जेमके, "चउवीसं पि जिणवरा" (चतुर्विंशतिस्तव)

आचार्य हेमचंद्र ए 'चउवीसं' रूपने 'द्वितीया' विभक्तिवाळुं समजे छे अने उपर्युक्त वाक्यमां 'द्वितीया' नो अर्थ घटतो नथी पण 'प्रथमा' नो अर्थ घटे छे तेथी "क्याय प्रथमा ने बदले 'द्वितीया' पण वपराय छे" एम ए वाक्य आपीने ज जणावे छे-(जूओ हे० प्रा० व्या० ८-३-१३७ पृ० १०८)

बेआलिसा, बेआला, दुचत्तालिसा (द्विचत्वारिंशत्)

तिचत्तालिसा, तेआलिसा, तेआला (त्रिचत्वारिंशत्)

चउचत्तालिसा, चोआलिसा, चोआला, चउआला (चतुश्चत्वारिंशत्)

पणचत्तालिसा, पणयाला (पञ्चचत्वारिंशत्)

छचत्तालिसा, छायाला (षट्चत्वारिंशत्)

सत्तचत्तालिसा, सगयाला (सप्तचत्वारिंशत्)

अट्ठचत्तालिसा, अडयाला (अष्टचत्वारिंशत्)

एगूणपण्णासा (एकोनपञ्चाशत्)

पण्णासा (पञ्चाशत्)

एगपण्णासा, इक्कपण्णासा, एकपण्णासा, एगावण्णा (एकपञ्चाशत्)

बावण्णा, दुपण्णासा (द्विपञ्चाशत्)

तेवण्णा, तिपण्णासा (त्रिपञ्चाशत्)

चोवण्णा, चउपण्णासा (चतुष्पञ्चाशत्)

पणपण्णा, पणपण्णासा, पञ्चावण्णा (पञ्चपञ्चाशत्)

छप्पण्णा, छप्पण्णासा (षट्पञ्चाशत्)

सत्तावण्णा, सत्तपण्णासा (सप्तपञ्चाशत्)

अट्ठावण्णा, अडवण्णा, अट्ठपण्णासा (अष्टपञ्चाशत्)

एगूणसट्ठि (एकोनषष्टि)

सट्ठि (षष्टि)

एगसट्ठि, इगसट्ठि (एकषष्टि)

बासट्ठि (द्विषष्टि)

तेसट्ठि (त्रिषष्टि)

चउसट्ठि, चोसट्ठि (चतुष्षष्टि)

पणसट्ठि (पञ्चषष्टि)

छासट्ठि (षट्षष्टि)

सत्तसट्ठि (सप्तषष्टि)

अडसट्ठि, अट्ठसट्ठि (अष्टषष्टि)

एगूणसत्तरि (एकोनसप्तति)

सत्तरि	(सप्तति)
एग[1]सत्तरि, इक्कसत्तरि	(एकसप्तति)
बा(बि)सत्तरि, बावत्तरि	(द्विसप्तति)
तिसत्तरि	(त्रिसप्तति)
चोसत्तरि, चउसत्तरि	(चतुस्सप्तति)
पण्णसत्तरि	(पञ्चसप्तति)
छसत्तरि	(षट्सप्तति)
सत्तसत्तरि	(सप्तसप्तति)
अट्ठसत्तरि	(अष्टसप्तति)
एगूणासीइ	(एकोनाऽशीति)
असीइ	(अशीति)
एगासीइ	(एकाशीति)
बासीइ	(द्व्यशीति)
तेसीइ	(त्र्यशीति)
चउरासीइ, चोरासीइ	(चतुरशीति)
पणसीइ	(पञ्चाशीति)
छासीइ	(षडशीति)
सत्तासीइ	(सप्ताशीति)
अट्ठासीइ	(अष्टाशीति)
नवासीइ	(नवाशीति)
एगूणनवइ	(एकोननवति)
नवइ	(नवति)
एगणवइ, इगणवइ	(एकनवति)
बाणवइ	(द्विनवति)
तेणवइ	(त्रिनवति)
चउणवइ, चोणवइ	(चतुर्नवति)
पण्णणवइ, पञ्चणवइ	(पञ्चनवति)
छण्णवइ	(षण्णवति)
सत्त(त्ता)णवइ	(सप्तनवति)
अट्ठ(ड)णवइ	(अष्टनवति)
ण(न)वणवइ	(नवनवति)
एगूणसय	(एकोनशत)
सय	(शत)
दुसय	(द्विशत)
तिसय	(त्रिशत)
बे सयाइ—बसें—	(द्विशत)

१ 'सत्तरि' ने बदले 'हत्तरि' शब्द पण प्रयोगानुसारे वपराय छे.

तिण्णि सयाई—त्रणसें (त्रिशत)
चत्तारि सयाई—चारसें (चतुश्शत)
इत्यादि
सहस्स (सहस्र)
दह(स)सहस्स (दशसहस्र)
अयुअ(त) (अयुत)
लक्स (लक्ष)
दस(ह)लक्स (दशलक्ष)
पयुअ(त) (प्रयुत)
कोडि (कोटि)
कोडाकोडि (कोट्यकोटि)

प्रकरण ११

कारक–विभक्त्यर्थ

जेम संस्कृतमा छ कारक छे तेम अहीं प्राकृतमा पण छे अने तेनी बधी व्यवस्था संस्कृतने अनुसारे समजी लेवानी छे. परंतु जे केटलाक खास विभक्त्यर्थो छे तेने अहीं जणावी दईए छीए:

१. प्राकृतमा केटलेक ठेकाणे द्वितीया, तृतीया, पंचमी अने सप्तमीने स्थाने पण षष्ठी [1]विभक्ति वपराय छे.–

सीमाधरस्स वंदे [सीमाधरं वन्दे]

धणस्स लद्धो [धनेन लब्धः]

चोरस्स बीहइ [चौराद् बिभेति]

[2]अंतेउरस्स रमिउं आअओ [अन्तःपुरे रन्तुमागतः]

२. कोई कोई ठेकाणे द्वितीया अने तृतीयाने बदले सप्तमी वपराय छे.–

---

१ संस्कृतमां पण षष्ठी विभक्तिनो आवो ज उपयोग थएलो छे.

मातरं स्मरति	ने बदले	मातुः स्मरति ।
अन्नं नो देहि	,,	अन्नस्य नो देहि ।
फलैस्तृप्तः	,,	फलानां तृप्तः ।
अक्षैर्दीव्यति	,,	अक्षाणां दीव्यति ।
वृक्षात् पर्णं पतति	,,	वृक्षस्य पर्णं पतति ।
महत्सु विभाषते	,,	महतां विभाषते ।

—जूओ "षष्ठी शेषे" (पाणि० २–३–५०) तथा "शेषे" (हे० स० २–२–८१)

२ जूओ षड्भाषाचन्द्रिका "क्वचिद्द्वितीयादेः" २–३–३८ पृ० १६२ ।

नयरे न जामि ,[नगरं न यामि]
तेसु अलंकिआ पुहवी [तैरलङ्कृता पृथ्वी]

३ क्यांय क्यांय पंचमीने बदले तृतीया अने सप्तमी वपराय छे —
चोरेण बीहइ [चौराद् बिभेति]
अंतेउरे रमिउ आगओ राया [अन्त पुराद् रन्त्वा आगतो राजा]

४ कोई ठेकाणे तो सप्तमीने स्थाने द्वितीया पण वपराय छे —
विज्जुज्जोयं भरइ रत्तिं [विद्युदुद्योते स्मरति रात्रिम्]

---

१ संस्कृतनी रीते पण आ वाक्यमां नगर ने कर्म' कही शकाय अने आधार पण कही शकाय एटले 'नगरे न यामि अने 'नगर न यामि' ए बन्ने वाक्यो शिष्टसमत छे

२ आ वाक्यमां जो 'तेषु सत्सु ('तेओनी विद्यमानतामां') एवो अर्थ विवक्षित होय तो संस्कृतमां पण 'तैः अलङ्कृता पृथ्वी' आ वाक्यने, बदले 'तेषु अलंकृता पृथ्वी' आवुं सप्तमीवाळुं वाक्य थइ शके छे

३-४ अहीं जो चोर'ने 'भयना कारण' तरीके अने अंतःपुर ने रमनारना आधार' तरीके कहेवानो आशय होय तो संस्कृतमां पण चौरेण बिभेति' तथा 'अन्तःपुरे रन्त्वा वगेरे वाक्य थइ शके छे

५ आयमारङ्गमां ठेकठेकाणे आ 'तेण कालेणं तेण समएणं' प्रयोग वपराएला छे एनो अर्थ तें काले अने ते समये' थाय छे तथी आ अने आवा बीजा प्रयोगोमां सप्तमी' विभक्तिने बदले 'तृतीया विभक्ति वपराएली छे' एम आचार्य हेमचंद्र जणावे छे —(जुओ हे प्रा व्या ८-३-१३७ वृ १ ८) त्यारे आ प्रयोगनु

विवरण करता नवांगी टीकाकार आचार्य अभयदेव ए प्रयोगमा आवेला 'णं' ने वाक्यालंकाररूपे मानी ए प्रयोगने 'सप्तमी' विभक्तिवाळो पण जणावे छे. आचार्य अभयदेवनी दृष्टिए ए पदोनो पदच्छेद आ प्रमाणे छे: 'ते ण काले णं, ते ण समए ण'–" 'ते' इति प्राकृतशैलीवशात् 'तस्मिन्' × × × 'णं' कारोऽन्यत्रापि वाक्यालंकारार्थः, × × काले × अवसर्पिणीचतुर्थविभागलक्षणे, × × × समये कालस्यैव विशिष्टे भागे"–जूओ भगवती सूत्र रा० पृ० १८ टीका, ज्ञाता० सूत्र टीका पृ० १ समिति, उपासकदशासूत्र टीका पृ० १ समिति.

ए प्रयोगनुं विवरण करता आचार्य मलयगिरि पण आचार्य अभयदेवनी पेठे पूर्व प्रमाणे जणावे छे:–जूओ सूर्यप्रज्ञप्तिनी टीका पृ० १ समिति.

आचार्य अभयदेव ए पदोनुं संस्कृत 'तेन कालेन तेन समयेन' पण करे छे अने आ पक्षमां तेओ आ वाक्यमां तृतीयानो अर्थ घटावे छे पण 'तृतीया' ने स्थाने 'सप्तमी' होवानी सूचना करता नथी –"अथवा तृतीयैवेयम्, तत 'तेन कालेन हेतुभूतेन, तेन समयेन हेतुभूतेनैव"–जूओ भगवतीसूत्र रा० पृ० १८ टीका.

प्रकरण १२

आख्यात

संस्कृतभाषामां धातुओमां अनेक प्रकार छे, जेमके, पेला गणमां, बीजा गणना, चोथा गणना, छट्ठा गणना वगेरे तेमां पण प्रत्येक गणमां धातुओना त्रण पेटा प्रकार छे परस्मैपदी, आत्मनेपदी अने उभयपदी आम होवाथी संस्कृतमां धातुनां रूपाख्यानो अनेक प्रकारनां थाय छे कारण के, तेमां प्रत्येक गणनी निशानीओ (विकरण प्रत्ययो) जुदी जुदी छे, प्रक्रियाओ जुदी जुदी छे, आत्मनेपद तथा परस्मैपदना प्रत्ययो पण जुदा जुदा छे

पालिमां केटलुंक संस्कृतनी जेवुं छे पण तेमां वैदिक संस्कृतनी पेठे आत्मनेपद अने परस्मैपदनो नियम अचोक्स छे प्राकृतमां तो आत्मनेपद अने परस्मैपदनो कोई नियम ज नथी हा के प्राकृतमां वर्तमानकाळना केटलाक प्रत्ययो संस्कृतना आत्मनेपदी प्रत्ययो साथे मळता आवे छे पण ए प्रत्ययो दरेक धातुने लगाडी शकाय छे

पालिव्याकरणमां[1] आपेला नियमो उपरथी समजी शकाय छे के, संस्कृतनी पेठे गणभेदने लीधे पालिमां ते ते धातुनां रूपो जुदां जुदां बने छे पण प्राकृत व्याकरणना नियमोमां तेम नथी प्राकृत-व्याकरणमां तो पेला गणना के चोथा गणना धातुनी एक सरखी प्रक्रिया छे, पण एटलुं खरु के, ते ते धातुनां रूपो उपरथी सरखामणीने लीधे आपणे संस्कृतमां वपराता ए धातुनो गण जरूर कळी शकीए[2]

---

१ जुओ कात्यायनकृत पालिव्याकरण—आख्यातकल्प

२ दिव्वइ (दीव्यति)

   सिव्वइ (सिव्यति)

   नच्चइ (नृत्यति)

एकंदर रीते संस्कृत करता पालिनी आख्यातप्रक्रिया सरळ छे अने प्राकृतमां तो ए सविशेष सरळ छे.

विभक्तिओ

वर्तमाना, सप्तमी, पचमी, ह्यस्तनी, अद्यतनी, परोक्षा, आशी (आशिरर्थ), श्वस्तनी, भविष्यन्ती अने क्रियातिपत्ति एम [1]दस विभक्तिओ संस्कृतमा छे, पालिमा आशिरर्थ अने श्वस्तनीनो प्रयोग नथी अने प्राकृतमा पंचमी अने सप्तमी एक सरखी छे, ह्यस्तनी, अद्यतनी अने परोक्षा एक सरखी छे, श्वस्तनी अने भविष्यन्ती एक सरखी छे एटले वर्तमाना, आज्ञार्थ–विध्यर्थ, भूतकाळ, भविष्यत्काळ अने क्रियातिपत्ति ए पाच ज विभक्तिओ क्रियापदने लगती छे. आख्यातने लगतो विभक्तिप्रयोग संस्कृतमा जे झीणवटथी करवामा आवे छे तेवी झीणवट पालि के प्राकृतमा नथी. पालिमा ए दरेक विभक्तिना प्रत्ययो जुदा जुदा छे पण प्राकृतमा तो आगळ जणाव्या प्रमाणे ए पाच विभक्तिओमा ज सस्कृतनी बधी विभक्तिओ समाएली छे.

आ चालु प्रकरणमा आख्यात विषे अने केटलाक कृदत विषे समजाववानु छे पण धातुओथी बनता दरेक नामो विषे काई कहेवानु नथी माटे ज धातुना उपयोगनो विभाग करता अहीं जणाववामा आवे छे के, साहित्यमा धातुओनो उपयोग खास करीने बे प्रकारे थएलो छेः **क्रियापदरूपे अने कृदंतरूपे.**

---

१ पाणिनिना सकेत प्रमाणे ए दस विभक्तिओना नाम आ प्रमाणे छे लट्, विधिलिङ्, लोट, लङ् , लिट्, आशीर्लिङ् , लुट्, लृट्, लङ्, अने लुङ्.

क्रियापदरूपे वपराता धातुना रूपाख्यानर्नु नाम 'आख्यात' छे अने कृदंतरूपे वपराता धातुना रूपाख्यानने 'नाम' कहेवामां आवे छे

आख्यातरूपे वपराता धातुना रूपाख्याननी विविधता आ प्रमाणे छे

कर्तरिरूप, कर्मणिरूप, भावेरूप (सद्यभेद), प्रेरककर्तरिरूप, प्रेरककर्मणिरूप, प्रेरकभावेरूप (प्रेरक सद्यभेद) इत्यादि ।

कृदंतरूप वपराता धातुना रूपाख्यानना अनेक प्रकार आ रीते छे

कर्तरि	वर्तमानकृदंत, प्रेरकवर्तमानकृदंत, कर्तृसूचकरूप, भविष्यत्कृदंत, प्रेरकभविष्यत्कृदंत ।
कर्मणि अने भावे-सद्यभेद	वर्तमानकृदंत, भविष्यत्कृदंत, प्रेरकवर्तमानकृदंत, प्रेरकभविष्यत्कृदंत, भूतकृदंत, विध्यर्थकृदंत, प्रेरकभूतकृदंत, प्रेरकविध्यर्थकृदंत ।
भावेरूप	हेत्वर्थकृदंत अने संबंधकभूतकृदंत ।

आ प्रकरणमां अहीं गणावेल क्रम प्रमाणे रूपाख्यानोनी समजूती आपवानी छे

कर्तरिरूप

प्राकृतमां धातुओनी बे जात छे व्यंजनांत धातु अने स्वरांत धातु

१ व्यंजनांत धातुना छेल्ला व्यंजनमां 'अ'कार उमेराया पछी ज तेनां रूपाख्यानो थाय छे अने ए उमेरातो 'अ'कार विकरणरूप केवाय छे

मण् + अ—भण—भणइ (भणति)

कह् + अ—कह—कहइ (कथयति)

सम् + अ—समइ (शाम्यति)

हस् + अ—हस—हसइ (हसति)

आव् + अ—आव—आवइ (आप्नोति)

सिंच् + अ—सिंच—सिंचइ (सिञ्चति)

रुन्ध् + अ—रुन्ध—रुन्धइ (रुणद्धि)

मुस् + अ—मुस—मुसइ (मुष्णाति)

तण् + अ—तण—तणइ (तनोति)

२ अकारांत सिवाय बाकीना स्वरांत धातुओने पण विकरण 'अ' विकल्पे लागे छे:

पा + अ—पाअ—पाअइ, पाइ (पाति)

जा + अ—जाअ—जाअइ, जाइ (याति)

धा + अ—धाअ—धाअइ, धाइ (धयति, धावति, दधाति)

झा + अ—झाअ—झाअइ, झाइ (ध्यायति)

जम्भा + अ—जम्भाअ—जम्भाइ (जृम्भते)

वाअ + अ—वाअ—वाअइ, वाइ (वाति)

मिला + अ—मिलाअ—मिलाअइ, मिलाइ—(म्लायति)

विक्की+विक्के + विक्केअ—विक्केअइ, विक्केइ (विक्रीणाति)

हो + अ—होअ—होअइ, होइ (भवति)

हो + अ—होअ—होइऊण, होऊण (भूत्वा)

३ उवर्णांत धातुना अंत्य उवर्णनो 'अव्' थाय छे:

ण्हु—ण्हव्+अ—ण्हव—ण्हवइ (ह्नुते)

निण्हवइ (निह्नुते)

हु–हव्– हव–हवइ (जुहोति)

निहवइ (निजुहोति)

च्यु–चव्–चव–चवइ (च्यवते)

रु–रव्–रव–रवइ (रौति)

कु–कव्–कव–कवइ (कौति)

सू–सव्–सव–सवइ (सुते)

पसवइ (प्रसूते)

४ ऋकारांत धातुना अंत्य ऋवर्णनो 'अर्' थाय छे

कृ–कर्–कर–करइ (करोति)

धृ–धर्–धर–धरइ (धरति)

मृ–मर्–मर–मरइ (म्रियते)

वृ–वर्–वर–वरइ (वृणोति, वृणुते)

सृ–सर्–सर–सरइ (सरति)

हृ–हर्–हर–हरइ (हरति)

तॄ–तर्–तर–तरइ (तरति)

जॄ–जर्–जर–जरइ (जीर्यति)

५ उपान्त्यमां ऋवर्णवाळा धातुना ऋवर्णनो 'अरि' थाय छे

कृष्–करिस्–करिस–करिसइ (कर्षति)

मृष्–मरिस्–मरिसइ (मृष्यते)

वृष्–वरिस्–वरिसइ (वर्षति)

हृष्–हरिस्–हरिसइ (हृष्यति)

६ धातुना 'इवर्ण' अने 'उवर्ण'नो अनुक्रमे 'ए' अने 'ओ' थाय छे;

नी–नेइ (नयति)

नेंति (नयन्ति)

उड्डी—उड्डेइ (उड्डयते)

उड्डेंति (उड्डयन्ते)

जि—जेऊण (जित्वा)

नी—नेऊण (नीत्वा)

७ केटलाक धातुना उपान्त्य स्वरनो दीर्घ थाय छे:

रुष्—रूस्—रूस—रूसइ (रुष्यति)

तुष्—तूस्—तूस—तूसइ (तुष्यति)

शुष्—सूस्—सूस—सूसइ (शुष्यति)

दुष्—दूस्—दूस—दूसइ (दुष्यति)

पुष्—पूस्—पूस—पूसइ (पुष्यति)

सीसइ (शिष्यते) इत्यादि ।

८ धातुना नियत स्वरने स्थाने प्रयोगानुसारे बीजो स्वर पण थाय छे:

वि०—हवइ—हिवइ (भवति)

चिणइ—चुणइ (चिनोति)

सद्दहणं—सद्दहाणं (श्रद्धानम्)

धावइ—धुवइ (धावति)

रुवइ—रोवइ (रोदीति) इत्यादि ।

नि०—दा—दे—देइ (ददाति, दाति, द्यति)

ला—ले—लेइ (लाति)

विहा—विहे—विहेइ (विदधाति, विभाति)

ब्रू—बे—बेमि (ब्रवीमि) इत्यादि ।

९ केटलाक धातुओनो अंत्य व्यंजन प्रयोगानुसारे बेवडो थाय छे:

वि०—फुडइ, फुट्टइ (स्फुटति)

चलइ, चल्लइ (चलति)

पमीलइ पमिल्लइ (प्रमीलति)
निमीलइ, निमिल्लइ (निमीलति)
संमीलइ, संमिल्लइ, (संमीलति)
उम्मीलइ, उम्मिल्लइ (उन्मीलति) इत्यादि।

मि०—तिम्मइ (तेमति) परिअट्टइ (पर्यटति)
सक्कइ (शक्नोति) पलोट्टइ (प्रलोटति)
लग्गइ (लगति) तुट्टइ (त्रुटति)
मग्गइ (मृगयते)। नट्टइ (नटति)
नस्सइ (नश्यति) सिम्मइ (सीव्यति)
कुप्पइ (कुप्यति) इत्यादि।

१० केटलाक धातुओना (प्राय संस्कृतमां विकरण उमेरावा पछी '-य' छेडावाळा धातुओना) अंत्य व्यंजननो प्रयोगानुसार 'ज्ज' थाय छे

सपज्जइ (संपद्यते) सिज्जइ (स्विद्यति)
सिज्जइ (सिद्यते) सिज्जिरी (स्वेत्री, स्वेदयित्री)
इत्यादि।

११ उपरना नियमोथी तैयार थएला धातुना अंगने वर्तमानकाळमां नीचे जणावेला कर्तृबोधक [2]प्रत्ययो लागे छे—

---

१ जुओ पृ० १४—य, म्य, र्य—ज्ज (नि २७)

२ पालिमां 'वत्तमाना' ना प्रत्ययो आ प्रमाणे छे

	परस्मैपद		आत्मनेपद	
	एकव	बहुव	एकव०	बहुव
१	मि	म	ए	म्हे
२	सि	थ	से	व्हे
३	ति	अन्ति	ते	न्ते (रे

—जुओ पालिप्र० पृ १०१ नि० ११.

	एकव०	बहुव०
१ पुरुष	मि,[1]	मो, मु, म.
२ पुरुष	सि, से,[2]	इत्था,[3] ह.
३ पुरुष	इ, ए	न्ति, न्ते, इरे[4].

सर्वपुरुष–सर्ववचन–ज्ज, ज्जा.

१ 'मि' प्रत्यय पर रहेता धातुना अकारात अंगना अंत्य 'अ' नो विकल्पे 'आ' थाय छे.

२ 'मो', 'मु' अने 'म' प्रत्यय पर रहेता धातुना अकारात अंगना अंत्य 'अ' नो विकल्पे 'आ' अने 'इ' थाय छे.

३ उपर जणावेला बधा प्रत्ययो पर रहेता धातुना अकारात अगना अंत्य 'अ' नो विकल्पे 'ए' थाय छे.

[नामना रूपोमा पालिमा अने प्राकृतमा सविशेष समानता छे तेथी नामना प्रकरणमा स्थळे स्थळे समानता बताववा पालिना रूपो सविस्तर मूकेला छे पण धातुना रूपोमा तेम नथी, तेथी आ प्रकरणमा ज्या ज्या जेटली समानता छे तेटलो उल्लेख करवामा आवशे पण धातुना पालिरूपोनी वीगतथी नोंध नहि करवामा आवे]

१ केटलेक ठेकाणे 'मि' प्रत्ययने बदले 'म्' प्रत्यय पण वपराएलो छेः–मरं, मरामि (म्रिये) । सक्कं, सक्कामि (शक्नोमि) ।

२ 'से' अने 'ए' तथा शौरसेनीनो 'दे' अने पैशाचीनो 'ते' प्रत्यय, धातुना अकारात अगने ज लगाडवाना छे अर्थात् अकारात सिवायना धातुना अंगने ए बन्ने प्रत्ययो लागता नथीः–

पा + सि–पासि । पा + इ–पाइ (पासे, अने पाए, रूप थाय नहि).

३ कोई ठेकाणे आ 'इत्था' प्रत्यय त्रीजा पुरुषना एकवचनमा पण वपराएलो छे –रोइत्था, रोयइ, रोयए–(रोचते)

४ आ 'इरे' प्रत्यय क्वचित् क्वचित् त्रीजा पुरुषना एकवचनमा पण वपराएलो छे. जेमके–सूसइ, सूसइरे–(शुष्यति).

४ 'ज्ज' अने 'ज्जा' प्रत्यय पर रहेतां तो धातुना अकारांत अगना अन्त्य 'अ' नो 'ए' थाय छे

शौरसेनी, मागधी, पैशाची अने अपभ्रंशभाषामां वर्तमानकाळने लगती विशेषतावाळी प्रक्रिया आ प्रमाणे छे—

शौरसेनी—मागधी

१ पु	मि	मो, मु, म ।
२ पु०	'सि, से'	इत्था, ध, ह ।
३ पु०	दि, दे	न्ति, न्ते, इरे ।

पैशाची

१ पु०	शौरसेनी प्रमाणे
२ पु०	,,
३ पु० ति, ते	शौरसेनी प्रमाणे

अपभ्रंश

१ पु०	उँ, मि	हु, मो, मु, म ।
२ पु०	हि, सि, से	हु, ह, ध, इत्था ।
३ पु	दि, दे, इ, एं	हिं, न्ति, न्ते, इरे ।

प्राकृतमां वर्तमानकाळना प्रत्ययो लागतां धातुना अगमा जे जे फेरफार थवानुं जणावायुं छे ते बधुं शौरसेनी, मागधी, पैशाची अने अपभ्रंशना वर्तमानकाळना प्रत्ययो लागतां पण समजी लेवानुं छे

धातुने लागता कोई पण प्रत्ययो लगाडया पहेलां पण प्राकृतमां धातुने लगती ज ज प्रक्रिया (विकरण वगेरेनी प्रक्रिया)

१ जुओ पृ २० व ३.

२ जुओ पृ २४९, २ टिप्पण

जणावी छे ते बधी शौरसेनी, पैशाची, मागधी अने अपभ्रंशमा समजी लेवानी छे.

व्यंजनांत धातुनां रूपाख्यानो

हस्

एकवचन

	प्राकृतरू०–	शौरसेनीरू०– [1]मागधीरू०–	पैशाचीरू०–	अपभ्रंशरू०–
१ पुरुष–	हसमि, हसामि, हसेमि, हसेज्ज, हसेज्जा।	प्राकृत प्रमाणे	प्राकृत प्रमाणे	हसउ, हसेउं, हसमि, हसामि, हसेमि, हसेज्ज, हसेज्जा।
२ पुरुष–	हससि, हसेसि, हससे, हसेसे, हसेज्ज, हसेज्जा।	प्राकृत प्रमाणे	प्राकृत प्रमाणे	हसहि, हसेहि, हससि, हसेसि, हससे, हसेसे, हसेज्ज, हसेज्जा।
३ पुरुष–	हसइ, हसेइ,	हसदि, हसेदि,	हसति, हसेति,	हसदि, हसेदि,

---

१ जूओ स–ज पृ० २७ नि० (१)–हशामि वगेरे.

हसए,	हसदे,	हसते,	हसदे,
हसेए,	हसेदे,	हसेते,	हसेदे,
हसेज्ज,	हसेज्ज,	हसेज्ज,	हसइ,
हसेज्जा।	हसेज्जा।	हसेज्जा।	हसेइ,
			हसए,
			हसेए,
			हसेज्ज,
			हसेज्ज।

बहुवचन

प्राकृतरू०—	शौरसेनीरू०— मागधीरू०—	पैशाचीरू०—	अपभ्रंशरू०—
१ पुरुष—हसमो,	प्राकृत	प्राकृत	हसहु,
हसामो,	रूपो	प्रमाणे	हसेहु,
हसिमो,	प्रमाणे		हसमो,
हसेमो,			हसामो,
हसमु			हसिमो,
हसामु			हसेमो;
हसिमु,			हसमु,
हसेमु,			हसामु,
हसम			हसिमु,
हसाम,			हसेमु
हसिम,			हसम,
हसेम,			हसाम,

हसेज्ज,
हसेज्जा ।

हसिम,
हसेम;
हसेज्ज,
हसेज्जा ।

२ पुरुष—हसइत्था,
[1]हसित्था,
हसेइत्था,
हसह,
हसेह,
हसेज्ज,
हसेज्जा ।

हसइत्था,
हसित्था,
हसेत्था,
हसध,
हसेध,
हसह,
हसेह,
हसेज्ज,
हसेज्जा ।

शौरसेनी
प्रमाणे

हसइत्था,
हसित्था,
हसेत्था,
हसध,
हसेध,
हसह,
हसेह,
हसहु,
हसेहु,
हसेज्ज,
हसेज्जा ।

३ पुरुष—हसन्ति,
हसेंति,
[3]हसिंति,
हसंते,

[2]प्राकृत
रूपो
प्रमाणे

शौरसेनी
रूपो
प्रमाणे

हसहिं,
हसेहिं,
हसंति,
हसेंति,

१ जूओ पृ० ९६ स्वरलोप नि० ६—हस + इत्था=हसित्था ।

२ प्राकृतना हसति, हसते वगेरे रूपो उपरथी शौरसेनीमा हसंदि, वगेरे रूपो पण प्राये यथासंभव थइ शके छे—जूओ पृ० ३५ नि० (१) न्त=न्द ।

३ जूओ पृ० ४ नि० १—हसेंति + हसिंति ।

हसेंते,	हसिंति
हसिंते,	हसंते,
हसइरे,	हसेंते
हसिरे,	हसिंते,
हसेइरे	हसइरे
हसेज्ज,	हसिरे,
हसेज्जा ।	हसेइरे,
	हसेज्ज,
	हसेज्जा ।

आ रीते आगळ जणावेल बधां व्यंजनांत (धातुनां) अंगोनां वर्तमानकाळनां रूपो समजवानां छे

स्वरांत धातुनां रूपाख्यानो

हो (भू)

स्वरांत धातुओनी प्रक्रिया व्यंजनांत धातुनी ('हस्' नी) सरखी छे मात्र फेर आ छे

स्वरांत धातु अने पुरुषबोधक प्रत्यय—ए बेनी—वचे पण 'ज्ज' 'ज्जा' विकल्पे उमेराय छे

एकवचन

प्राकृतरू०— शौरसेनीरू०— पैशाचीरू०— अपभ्रंशरू०— मागधीरू०—

१ पुरुष—[1]होअमि,	प्राकृत	प्राकृत	होअउ
होआमि,	रूपो	रूपो	होएउ
होएमि,	प्रमाणे	प्रमाणे	होअमि

१ पेलेथी नव रूपो विकरणवाळां छे अने बाकी बधां विकरण विनानां छे विकरण माटे जुओ पृ २४९ नि २

(ज्ज) होएज्जमि,	होआमि
होएज्जामि,	होएमि
होएज्जेमि,	होएज्जउं, होएज्जमि
होएज्ज,	होएज्जामि
(ज्जा) होएज्जामि,	होएज्जेउं, होएज्जेमि
होएज्जा,	होएज्ज
होमि,	होएज्जाउं, होएज्जामि
(ज्ज) होज्जमि, (हुज्जमि)	होएज्जा
होज्जामि,	होउं
होज्जेमि,	होमि
होज्ज (हुज्ज)	होज्जउं, होज्जमि
(ज्जा) होज्जामि	होज्जामि
होज्जा (हुज्जा)	होज्जेउं, होज्जेमि
	होज्ज
	होज्जाउं, होज्जामि
	होज्जा।

एकवचन

प्राकृतरू०—	शौरसेनीरू०— मागधीरू०—	पैशाचीरू०—	अपभ्रंशरू०—
२ पुरुष–होअसि	प्राकृत	प्राकृत	होअहि,
होएसि	रूपो	रूपो	होएहि,
होअसे	प्रमाणे	प्रमाणे	होआसि
होएसे			होएसि
होएज्जासि			होअसे
होएज्जेसि			होएसे

होएज्जसे
होएज्जेसे
होएज्जासि
होसि
होज्जासि
होज्जेसि
होज्जसे
होज्जेसे
होज्जासि
होज्ज
होज्जा

होएज्जहि
होएज्जेहि
होएज्जसि
होएज्जेसि
होएज्जसे
होएज्जेसे
होएज्जाहि
होएज्जासि
होहि,
होसि
होज्जहि, होज्जासि
होज्जेहि, होज्जेसि
होज्जसे
होज्जेसे
होज्जाहि, होज्जासि
होज्ज
होज्जा ।

१ पुरुष—होअइ	होअदि	होअति	होअइ, होअदि
होएइ	होएदि	होएति	होएइ, होएदि
होअए	होअदे	होअते	होअए, होअदे
होएए	होएदे	होएते	होएए, होएदे
होएज्जइ	होएज्जदि	होएज्जति	होएज्जइ, होएज्जदि
होएज्जेइ	होएज्जेदि	होएज्जेति	होएज्जेइ, होएज्जेदि
होएज्जए	होएज्जदे	होएज्जते	होएज्जए, होएज्जदे
होएज्जेए	होएज्जेदे	होएज्जेते	होएज्जेए, होएज्जेदे

होएज्जाइ	होएज्जादि	होएज्जाति	होएज्जाइ,	होएज्जादि
होइ	होदि	होति	होइ,	होदि
होज्जइ	होज्जदि	होज्जति	होज्जइ,	होज्जदि
होज्जेइ	होज्जेदि	होज्जेति	होज्जेइ,	होज्जेदि
होज्जए	होज्जदे	होज्जते	होज्जए,	होज्जदे
होज्जेए	होज्जेदे	होज्जेते	होज्जेए,	होज्जेदे
होज्जाइ	होज्जादि	होज्जाति	होज्जाइ,	होज्जादि
होज्ज	होज्ज	होज्ज		होज्ज
होज्जा	होज्जा	होज्जा		होज्जा

बहुवचन

प्राकृतरू०—	शौरसेनीरू०— मागधीरू०—	पैशाचीरू०—	अपभ्रंशरू०—
१ पुरुष—होअमु	प्राकृत	प्राकृत	होअहुं
होआमु	रूपो	रूपो	होएहु
होइमु, होएमु	प्रमाणे	प्रमाणे	होअमु
होअमो			होआमु
होआमो			होइमु
होइमो, होएमो			होएमु
होअम			होअमो
होआम			होआमो
होइम, होएम			होइमो
होएज्जमु			होएमो
होएज्जामु			होअम
होएज्जिमु			होआम

होएज्जेमु
होएज्जमो
होएज्जामो
होएज्जिमो
होएज्जेमो
होएज्जम
होएज्जाम
होएज्जिम
होएज्जेम
होमु
होमो
होम
होज्जमु
होज्जामु
होज्जिमु
होज्जेमु
होज्जमो
होज्जामो
होज्जिमो
होज्जेमो
होज्जम
होज्जाम
होज्जिम
होज्जेम
होज्ज

होइम
होएम
होएज्जइं
होएज्जेइं
होएज्जमु
होएज्जामु
होएज्जिमु
होएज्जेमु
होएज्जमो
होएज्जामो
होएज्जिमो
होएज्जेमो
होएज्जम
होएज्जाम
होएज्जिम
होएज्जेम
होइं
होमु
होमो
होम
होज्जइं
होज्जेइं
होज्जमु
होज्जामु
1 होज्जिमु

होज्जा	होज्जेमु
	होज्जमो
	होज्जामो
	होज्जिमो
	होज्जेमो
	होज्जम
	होज्जाम
	होज्जिम
	होज्जेम
	होज्जाहुं
	होज्ज
	होज्जा ।

बहुवचन

	प्राकृतरू०–	शौरसेनीरू०– मागधीरू०–	पैशाचीरू०–	अपभ्रंशरू०–
२ पुरुष–	होअह	होअह, होअध	शौरसेनी	होअहु
	होएह	होएह, होएध	प्रमाणे	होएहु
	होएज्जह	होएज्जह, होएज्जध		होएज्जहु, होएज्जेहु
	होएज्जेह	होएज्जेह, होएज्जेध		होएज्जाहु
	होएज्जाह	होएज्जाह, होएज्जाध		होज्जहु, होज्जेहु
	होज्जह	होज्जह, होज्जध		होज्जाहु
	होज्जेह	होज्जेह, होज्जेध		होहु
	होज्जाह	होज्जाह, होज्जाध		होअह, होअध
	होह	होह, होध		होएह, होएध
	होअइत्था	होअइत्था		होएज्जह, होएज्जध

होएइत्था	होएइत्था	होएज्जेइ, होएज्जेए
होएज्जइत्था	होएज्जइत्था	होएज्जाइ, होएज्जाए
होएज्जेइत्था	होएज्जेइत्था	होज्जइ, होज्जए
होएज्जाइत्था	होएज्जाइत्था	होज्जेइ, होज्जेए
होज्जइत्था	होज्जेइत्था	होज्जाइ, होज्जाए
होज्जेइत्था	होज्जइत्था	होइ, होए
होज्जाइत्था	होज्जाइत्था	होअइत्था
होइत्था (होत्था[1])	होइत्था	होएइत्था
होएज्ज	होज्ज, होज्जा	होएज्जइत्था
होज्जा		होएज्जेइत्था
		होएज्जाइत्था
		होज्जेइत्था
		होज्जइत्था
		होज्जाइत्था
		होइत्था
१ पुरुष—होअंति	[2]प्राकृत शौरसेनी	होअहिं
होएंति	रूपो प्रमाणे	होएहिं
होअंते	प्रमाणे	होएज्जहिं
होएंते		होएज्जेहिं
होअइरे		होएज्जाहिं
होएइरे		होज्जहिं
होएज्जंति		होज्जेहिं

---

१ आ प्रयोग आर्षप्रयोगोमां 'अभूत्' अर्थमां वपराएलो छे—जूओ भूतकाळनुं प्रकरण पृ २६४

२ जूओ पृ २९१ १ टिप्पण

होएज्जेंति
होएज्जंते
होएज्जेंते
होएज्जइरे
होएज्जेइरे
होएज्जांति
होएज्जाते
होएज्जाइरे
होंति (हुति)
होंते (हुते)
होइरे
होज्जंति, होज्जेंति
होज्जंते, होज्जेंते
होज्जइरे, होज्जेइरे
होज्जांति
होज्जाते
होज्जाइरे
होज्ज
होज्जा ।

होज्जाहिं
होहिं
होअंति, होएंति
होअंते, होएंते
होअइरे, होएइरे
होएज्जंति, होएज्जेंति
होएज्जते, होएज्जेंते
होएज्जइरे, होएज्जेइरे
होएज्जाति
होएज्जाते
होएज्जाइरे
होंति (हुति)
होंते (हुंते)
होइरे
होज्जति, होज्जेंति
होज्जते, होज्जेंते
होज्जइरे, होज्जेइरे
होज्जाति
होज्जाते
होज्जाइरे
होज्ज
होज्जा

ए रीते दरेक स्वरांत धातुनी (दा, पा, नी, जा, बू वगेरेनी) वर्तमानकाळनी बधी प्रक्रिया ' हो ' नी पेठे समजवानी छे.

भूतकाळ

(स्वरांत अने व्यंजनांत धातुने लागता प्रत्ययो)

१ संस्कृतमां भूतकाळना त्रण प्रकार छे, जेमके—ह्यस्तनभूत, अद्यतनभूत अने परोक्षभूत ए त्रणे काळना प्रत्ययो अने प्रक्रिया पण संस्कृतमां तद्दन जूदां जूदां छे परंतु प्राकृत, शौरसेनी, मागधी, पैशाची के अपभ्रंश भाषामां तेम नथी तेमां तो ते त्रणे काळ माटे एक सरखा ज प्रत्ययो छे एटलुं ज नहि पण ते त्रणे काळना त्रणे पुरुषोना अने त्रणे वचनोना पण एक सरखा ज प्रत्ययो छे अर्थात् भूतकाळनी प्रक्रिया के रूपमां प्राकृत, शौरसेनी वगेरे भाषामां क्यांय कशो भेद जणातो नथी

प्राकृत, शौरसेनी, मागधी, पैशाची अने अपभ्रंशमां भूतकाळना ए प्रत्ययो आ प्रमाणे छे –

१ पु०
२ पु० } ईअ[1] (व्यंजनांत धातुने लागतो प्रत्यय)
३ पु०
,, } सी[2], ही, हीअ (स्वरांत धातुने लागता प्रत्ययो)

---

१ कोईनो मत एवो छे के, वर्तमानकाळनी पेठे भूतकाळमां पण 'अ अने 'आ प्रत्यय वपराय छे'—होअ, होआ–(अभूत)

२ पालिमां बीजा पुरुषना एकवचनमां 'ई' अने ' इ' एम बे परस्मैपदी प्रत्ययो छे अने ए प्राकृतना ईअ प्रत्यय साथे मळता आवे छे पालिप्र पृ २१७ नि १७६

३ पालिमां बीजा पुरुषना अने त्रीजा पुरुषना एकवचनमां पर स्मैपदी सि प्रत्यय वपराएलो छे अने ए, प्राकृतना 'सी प्रत्यय साथे मळतो आवे छे जेम प्राकृतमां त्रणे पुरुषमां एक सरखो 'सी' प्रत्यय स्वरांत धातुने लगाडवामां आवे छे तेम पालिमां त्रणे पुरुषमां एक सरखो सि प्रत्यय स्वरांत धातुने लगाडवामां आवे छे मात्र पालिनो ए सिं प्रत्यय प्रथम पुरुषना एकवचनमां अनुस्वारवाळो (सिं) वपराय छे एटलो ज भेद छे। पालिप्र २१८ नि १७९

व्यजनात धातु—हस् + ईअ—हसीअ ।
कर + ईअ—करीअ ।
भण् + ईअ—भणीअ ।

ए रीते व्यंजनात धातुना भूतकाळना रूपो साधवाना छे.

स्वरात धातु—हो + सी—होसी होअसी	हो + ही—होही होअही	हो+हीअ—होहीअ होअहीअ
पा + सी—पासी पाअसी	पा + ही—पाही पाअही	पा + हीअ—पाहीअ पाअहीअ
ठा + सी—ठासी ठाअसी	ठा + ही—ठाही ठाअही	ठा + हीअ—ठाहीअ ठाअहीअ
ने + सी—नेसी नेअसी	ने + ही—नेही नेअही	ने + हीअ—नेहीअ नेअहीअ

लासी, लाही, लाहीअ, लाअसी, लाअही, लाअहीअ ।

उड्डे + सी—उड्डेसी, उड्डेअसी, उड्डेही, उड्डेअही, उड्डेहीअ, उड्डेअहीअ ।

ए रीते स्वरात धातुना भूतकाळना रूपो साधवाना छे.

[उपर जणावेला भूतकाळना प्रत्ययो करता केटलाक जूदा प्रत्ययो पण आर्षग्रथोमा वपराएला छे, आर्षरूपोमा विशेषे करीने

पालिरूपो

एकव०

१ अहोसि

२ अहोसि

३ अहोसिं

—जूओ पालिप्र० पृ० २१८ नि० १८०—पृ० २१९ नि० १८१

भूतकाळ

(स्वरांत अने व्यंजनांत धातुने लागता प्रत्ययो)

१ संस्कृतमां भूतकाळना त्रण प्रकार छे, जेमके—ह्यस्तनभूत, अद्यतनभूत अने परोक्षभूत ए त्रणे काळना प्रत्ययो अने प्रक्रिया पण संस्कृतमां तद्दन जूदां जूदां छे परंतु प्राकृत, शौरसेनी, मागधी, पैशाची के अपभ्रंश भाषामां तेम नथी तेमां तो ते त्रणे काळ माटे एक सरखा ज प्रत्ययो छे एटलुं ज नहि पण ते त्रणे काळना त्रणे पुरुषोना अने त्रणे वचनोना पण एक सरखा ज प्रत्ययो छे अर्थात् भूतकाळनी प्रक्रिया जे रूपमां प्राकृत, शौरसेनी वगेरे भाषामां क्यांय कशो भेद जणातो नथी

प्राकृत, शौरसेनी, मागधी, पैशाची अने अपभ्रंशमां भूतकाळना ए प्रत्ययो आ प्रमाणे छे –

१ पु० }
२ पु० } ईअ[1] (व्यंजनांत धातुने लागतो प्रत्यय)
३ पु० }
,, } सी, ही, हीअ (स्वरांत धातुने लागता प्रत्ययो)

---

१ कोईनो मत एवो छे के, वर्तमानकाळनी पेठे भूतकाळमां पण 'अ' अने 'अ' प्रत्यय वपराय छेः—होअ, होआ—(अभूत्)

२ पालिमां बीजा पुरुषना एकवचनमां 'ई' अने 'इ' एम बे परस्मैपदी प्रत्ययो छे अने ए, प्राकृतना 'ईअ' प्रत्यय साथे मळता आवे छेः पालिप्र पृ २१७ नि १७६

३ पालिमां बीजा पुरुषना अने त्रीजा पुरुषना एकवचनमां परस्मैपदी 'सि' प्रत्यय वपराएलो छे अने ए प्राकृतना 'सी' प्रत्यय साथे मळतो आवे छे जेम प्राकृतमां त्रणे पुरुषमां एक सरखो 'सी' प्रत्यय स्वरांत धातुने लगाडवामां आवे छे तेम पालिमां पण पुरुषमां एक सरखो 'सि' प्रत्यय स्वरांत धातुने लगाडवामां आवे छे मात्र पालिनो 'सि' प्रत्यय प्रथम पुरुषना एकवचनमां अनुस्वारवाळो (सिं) वपराय छे एटलो ज भेद छेः पालिप्र २१८ नि १७९

व्यंजनांत धातु—हस + ईअ—हसीअ ।
कर + ईअ—करीअ ।
भण् + ईअ—भणीअ ।

ए रीते व्यंजनांत धातुना भूतकाळना रूपो साधवाना छे.

स्वरात धातु—हो + सी—होसी, होअसी	हो + ही—होही, होअही	हो+हीअ—होहीअ, होअहीअ
पा + सी—पासी, पाअसी	पा + ही—पाही, पाअही	पा + हीअ—पाहीअ, पाअहीअ
ठा + सी—ठासी, ठाअसी	ठा + ही—ठाही, ठाअही	ठा + हीअ—ठाहीअ, ठाअहीअ
ने + सी—नेसी, नेअसी	ने + ही—नेही, नेअही	ने + हीअ—नेहीअ, नेअहीअ

लासी, लाही, लाहीअ, लाअसी, लाअही, लाअहीअ ।

उड्डे + सी—उड्डेसी, उड्डेअसी, उड्डेही, उड्डेअही, उड्डेहीअ, उड्डेअहीअ ।

ए रीते स्वरात धातुना भूतकाळना रूपो साधवाना छे.

[उपर जणावेला भूतकाळना प्रत्ययो करता केटलाक जूदा प्रत्ययो पण आर्षग्रंथोमा वपराएला छे, आर्षरूपोमा विशेषे करीने

पालिरूपो

एकव०

१ अहोसि

२ अहोसि

३ अहोसिं

—जूओ पालिप्र० पृ० २१८ नि० १८०—पृ० २१९ नि० १८१

भूतकाळ

(स्वरांत अने व्यंजनांत धातुने लागता प्रत्ययो)

१ संस्कृतमां भूतकाळना त्रण प्रकार छे, जेमके—ह्यस्तनभूत, अद्यतनभूत अने परोक्षभूत ए त्रणे काळना प्रत्ययो अने प्रक्रिया पण संस्कृतमां जुदा जुदा छे परंतु प्राकृत, शौरसेनी, मागधी, पैशाची के अपभ्रंश भाषामां तेम नथी तेमां तो ते त्रणे काळ माटे एक सरखा ज प्रत्ययो छे एटलुं ज नहि पण ते त्रणे काळना त्रणे पुरुषोना अने त्रणे वचनोना पण एक सरखा ज प्रत्ययो छे अर्थात् भूतकाळनी प्रक्रिया के रूपमां प्राकृत, शौरसेनी वगेरे भाषामां क्यांय कशो भेद जणातो नथी

प्राकृत, शौरसेनी, मागधी, पैशाची अने अपभ्रंशमां भूतकाळना ए प्रत्ययो आ प्रमाणे छे —

१ पु०
२ पु० } ईअ[1] (व्यंजनांत धातुने लागतो प्रत्यय)
३ पु०

,, } [2]सी, ही, हीअ (स्वरांत धातुने लागता प्रत्ययो)

---

१ कोईनो मत एवो छे के, वर्तमानकाळनी पेठे भूतकाळमां पण 'अ' अने 'आ' प्रत्यय वपराय छे:—होअ होआ—(अभूत्)

२ पालिमां बीजा पुरुषना एकवचनमां 'ई' अने 'इ' एम बे परस्मैपदी प्रत्ययो छे अने ए, प्राकृतना 'ईअ' प्रत्यय साथे मळता आवे छे: पालिप्र पृ २१७ नि १७६

३ पालिमां बीजा पुरुषना अने त्रीजा पुरुषना एकवचनमां परस्मैपदी 'सि' प्रत्यय वपराएलो छे अने ए, प्राकृतना 'सी' प्रत्यय साथे मळतो आवे छे जेम प्राकृतमां त्रणे पुरुषमां एक सरखो 'सी' प्रत्यय स्वरांत धातुने लगाडवामां आवे छे तेम पालिमां पण पुरुषमां एक सरखो 'सि' प्रत्यय स्वरांत धातुने लगाडवामां आवे छे मात्र पालिनो ए 'सि' प्रत्यय प्रथम पुरुषना एकवचनमां अनुस्वारवाळो (सिं) वपराय छे एटलो ज भेद छे: पालिप्र २१८ नि १७९

री + इत्था–रीइत्था[1] (अरयिष्ट)

विहर् + इत्था–विहरित्था (विहृतवान्)

सेव् + इत्था–सेवित्था (सेवितवान्)

पहार् + इत्थ=पह्यारेत्थ (प्रधारितवान्)

गम्–गच्छ + इंसु–गच्छिंसु (अगच्छन्, अगमन्, जग्मुः)

प्रच्छ–पुच्छ + इंसु–पुच्छिंसु (पृष्टवन्तः)

कृ–कर + इंसु–करिंसु (अकुर्वन्, अकार्षुः, चक्रुः)

नृत्य्–नच्च + इंसु–नच्चिंसु (नृत्तवन्त.)

ब्रू–आह + अंसु–आहंसु (आहुः)

संस्कृतमा भूतकाळना जे रूपाख्यानो तैयार थाय छे, ते उपरथी सीधी रीते पण वर्णविकारना नियमो द्वारा प्राकृतरूपाख्यानो बनावी शकाय छे. जेमके:—

सं०– अब्रवीत्–	अब्बवी	(प्रा०)
अकार्षीत्–	अकासी	(,,)
अभूत्–	अहू	(,,)
अवोचत्–	अवोच	(,,)
अद्राक्षुः–	अदक्खू	(,,)
अकार्षम्–	अकरिस्सं	(,,) इत्यादि.

प्राचीन प्राकृतमा–आर्षग्रंथोमा–आवां रूपाख्यानो घणा वपराएलां छे.

---

१ श्रीहेमचंद्रे पोताना प्राकृत–व्याकरणमा आ आर्षरूपो माटे कोई जातनो उल्लेख कर्यो जणातो नथी.

त्या, इत्थ, इत्या, इंसु अने अंसु; ए चार प्रत्ययो वपराएला छे तेमां 'त्या' अने 'इत्या,' बन्ने ठेकाणे एकवचनमां वपराया छे अने 'इंसु' तथा 'अंसु' बन्ने ठेकाणे बहुवचनमां वपराया छे ए जातनां केटलांयक आर्षरूपो जोवाथी एवु अनुमान बांधी शकाय छे के, त्रीजा पुरुषना एकवचनमां 'त्या' अने 'इत्या' वपराया छ अने बहुवचनमां 'इंसु' अने 'अंसु' वपराया छे जेमकेः—

[1]हो + त्था–होत्था (अभवत्, अभूत्, बभूव)

भुज + इत्था–भुंजित्था (भुक्तवान्)

---

१ आ 'होत्थ' 'पहारित्थ' 'विहरित्था' वगेरे एकवचनी रूपोनी अने 'करिंसु' 'पुच्छिंसु' 'आइंसु' वगेरे बहुवचनी रूपोनी साधना पालिव्याकरण द्वारा थेयी शकाय छे पालिभाषामां त्रीजा पुरुषना एकवचनमां आत्मनेपदी 'इत्थ' अने बहुवचनमां परस्मैपदी 'इंसु, 'इंसुं,' अने अंसु प्रत्ययो वपराएला छे उपर्युक्त आर्षरूपोमां वपराएलो 'इत्थ' पालिना ए 'इत्थ'नुं रूपांतर जणाय छे, 'पहारित्थ' रूपमां तो पालिनो जेवोने तेवो 'इत्थ' प्रत्यय ज वपराएलो छे अने पालिना इंसु अने अंसु ए बे प्रत्ययो एमने एम ए आर्ष रूपोमां वपराया छे जेम संस्कृतमां ह्यस्तनी, अद्यतनी अने क्रियातिपत्तिनां रूपाख्यानोमां धातुनी पूर्वे 'अ' उमेराय छे तेम पालिमां छे पण प्राकृतमां नथी

पालिरूपो भू

एकव १ अभवित्थ ('इत्थ' प्रत्ययवाळुं)

बहुव १ अगमिंसु, अगमंसु ('इंसु अने अंसु प्रत्ययवाळां)

—जुओ पालिप्र पृ २१० नि १७६–१७७ तथा पृ २१० 'गम'नां रूपो अने टिप्पण

२ पु०	हिसि, हिसे[1]	हित्था, हिह
३ पु०	हिइ, हिए	हिंति, हिंते, हिइरे

सर्वपुरुष } ज्ज, ज्जा
सर्ववचन }

शौरसेनी अने मागधीना भविष्यत्काळना प्रत्ययोः

शौरसेनीना वर्तमानकाळना प्रत्ययोनी आदिमा 'स्सि' उमेरवाथी ते बधा प्रत्ययो भविष्यत्काळना थाय छे. ए उपरात पहेला पुरुषना एकवचनमा एक 'स्सं' प्रत्यय जुदो पण छे. जेमके,

१ पु०	स्सं, स्सिमि[2]	स्सिमो, स्सिमु, स्सिम ।
२ पु०	स्सिसि, स्सिसे	स्सिह, स्सिध, स्सिइत्था ।
३ पु०	स्सिदि, स्सिदे	स्सिंति, स्सिंते, स्सिइरे ।

---

१ प्राकृत, शौरसेनी वगेरेना 'से' 'ए' तथा 'दे' प्रत्ययो माटे जूओ पृ० २४९, २ टिप्पण

२ संस्कृतना भाविष्यत्काळ्ना प्रत्ययो अने पालिना भविष्यत्काळना प्रत्ययो एक सरखा छे, मात्र सस्कृतना 'स्य' ने बदले पालिमा 'स्स' वपराय छे'

परस्मैपद	१	स्सामि	स्साम
	२	स्ससि	स्सथ
	३	स्सति	स्सति
आत्मनेपद	१	स्सं	स्साम्हे
	२	स्ससे	स्सव्हे
	३	स्सते	स्संते

शौरसेनीना उपर जणावेला प्रत्ययो साथे पालिना आ प्रत्ययो मळता आवे छेः—

जूओ पालिप्र० २०४ नि० १३०

भविष्यत्काळ

संस्कृतमां भविष्यत्काळना त्रण प्रकार छे, जेमके—श्वस्तन भविष्य, अद्यतनभविष्य अने परोक्षभविष्य (क्रियातिपत्ति) ए त्रणे भविष्यना पुरुषबोधक प्रत्ययो अने प्रक्रिया पण जूदां जूदां छे परंतु प्राकृत, शौरसेनी, मागधी, पैशाची के अपभ्रंशमां तेम नथी—तेमां तो मात्र परोक्षभविष्यना ज प्रत्ययो अने प्रक्रिया नोखां नोखां छे अने श्वस्तन तथा अद्यतन भविष्यनी प्रक्रिया, प्रत्ययो तो तद्दन सरखां छे

प्राकृतना भविष्यत्काळना प्रत्ययोः

१ पु०	स्स, स्सामि, हामि, हिमि[1]	स्सामो, हामो, हिमो,
		स्सामु, हामु, हिमु,
		स्साम, हाम, हिम,
		हिस्सा, हित्था

---

१ भविष्यत्काळना उपर बतावेल प्रत्ययो धातुमात्रने लागे छे त्यारे पालिमां तो एवा प्रत्ययो मात्र 'भू' धातुने ज लागेल छे—

भू पालिरूपो (भविष्यत्काळ)

१	होहामि,	होहाम,
	होहिस्सामि	होहिस्साम
२	होहिसि,	होहिथ
	होहिस्ससि	होहिस्सथ
३	होहिति,	होहिति
	होहिस्सति	होहिस्सति वगेरे०

जुओ पालिप्र पृ २९ 'होहिसि' वगेरे रूपो.

२ पु०	हिसि, हिसे[1]	हित्था, हिह
३ पु०	हिइ, हिए	हिंति, हिंते, हिइरे

सर्वपुरुष }
सर्ववचन } ज्ज, ज्जा

शौरसेनी अने मागधीना भविष्यत्काळना प्रत्ययोः

शौरसेनीना वर्तमानकाळना प्रत्ययोनी आदिमा 'स्सि' उमेरवाथी ते बधा प्रत्ययो भविष्यत्काळना थाय छे. ए उपरात पहेला पुरुषना एकवचनमा एक 'स्स' प्रत्यय जुदो पण छे. जेमके,

१ पु०	स्सं, स्सिमि[2]	स्सिमो, स्सिमु, स्सिम ।
२ पु०	स्सिसि, स्सिसे	स्सिह, स्सिध, स्सिइत्था ।
३ पु०	स्सिदि, स्सिदे	स्सिंति, स्सिंते, स्सिइरे ।

---

१ प्राकृत, शौरसेनी वगेरेना 'से' 'ए' तथा 'दे' प्रत्ययो माटे जूओ पृ० २४९, २ टिप्पण

२ संस्कृतना भविष्यत्काळना प्रत्ययो अने पालिना भविष्यत्काळना प्रत्ययो एक सरखा छे, मात्र सस्कृतना 'स्य' ने बदले पालिमा 'स्स' वपराय छे·

परस्मैपद	१	स्सामि	स्साम
	२	स्ससि	स्सथ
	३	स्सति	स्सति
आत्मनेपद	१	स्सं	स्साम्हे
	२	स्ससे	स्सव्हे
	३	स्सते	स्संते

शौरसेनीना उपर जणावेला प्रत्ययो साथे पालिना आ प्रत्ययो मळता आवे छेः—

जूओ पालिप्र० २०४ नि० १३०

भविष्यत्काळ

संस्कृतमां भविष्यत्काळना त्रण प्रकार छे, जेमके—श्वस्तनभविष्य, अद्यतनभविष्य अने परोक्षभविष्य (क्रियातिपत्ति) ए त्रणे भविष्यना पुरुषबोधक प्रत्ययो अने प्रक्रिया पण जूदां जूदां छे परंतु प्राकृत, शौरसेनी, मागधी, पैशाची के अपभ्रंशमां तेम नथी—तेमां तो मात्र परोक्षभविष्यना ज प्रत्ययो अने प्रक्रिया नोखां नोखां छे अने श्वस्तन तथा अद्यतन भविष्यनी प्रक्रिया, प्रत्ययो तो तद्दन सरखां छे

प्राकृतना भविष्यत्काळना प्रत्ययो:

१ पु०	स्सं, स्सामि, हामि, हिमि[1]	स्सामो, हामो, हिमो,
		स्सामु, हामु, हिमु,
		स्साम, हाम, हिम,
		हिस्सा, हित्था

---

१ भविष्यत्काळना उपर जणावेला प्रत्ययो धातुमात्रने लागे छे त्यारे पालिमां तो एवा प्रत्ययो मात्र 'भू' धातुने ज लागेला छे—

भू धातुरूपो (भविष्यत्काळ)

१	होहामि,	होहाम
	होहिस्सामि	होहिस्साम
२	होहिसि,	होहिथ
	होहिस्ससि	होहिस्सथ
३	होहिति,	होहिंति,
	होहिस्सति	होहिस्सन्ति वगेरे:

जुओ पालिप्र० पृ० २९ 'होहिति' वगेरे रूपो.

रूपाख्यानो—

भण

एकवचन

	प्राकृतरू०—	शौरसेनीरू०— मागधीरू०—	पैशाचीरू०—	अपभ्रंशरू०—
१ पुरुष—	भणिस्स,	भणिस्सं	शौरसेनी	भणिसउं,
	भणेस्सं,	भणेस्स	प्रमाणे	भणेसउ,
	भणिस्सामि,	भणिस्सिमि		भणिस्सिउं
	भणेस्सामि,	भणेस्सिमि		भणेस्सिउं
	भणिहामि,			भणिसमिं
	भणेहामि,			भणेसमि
	भणिहिमि,			भणिस्सिमि
	भणेहिमि			भणेस्सिमि
सर्व पुरुष अने सर्व वचन	भणेज्ज भणेज्जा			
२ पुरुष—	भणिहिसि	भणिस्सिसि	शौरसेनी	भणिसहि,
	भणेहिसि	भणेस्सिसि	प्रमाणे	भणेसहि,
	भणिहिसे	भणिस्सिसे		भणिस्सिहि
	भणेहिसे	भणेस्सिसे		भणेस्सिहि
				भणिससि
				भणेससि
				भणिस्सिसि
				भणेस्सिसि
				भणिससे
				भणेससे

पैशाचीना भविष्यत्काळना प्रत्ययोः

१ पु० शौरसेनी प्रमाणे
२ पु ,,
३ पु० एज्ज शौरसेनी प्रमाणे.

अपभ्रंशना भविष्यत्काळना प्रत्ययोः

अपभ्रंशना वर्तमानकाळना प्रत्ययोनी आदिमां 'स' अने 'सि' उमेरवाथी ते बधा प्रत्ययो भविष्यत्काळना थाय छे जेमके,

१ पु०	सउं, सिसउं, समि, सिसमि	सहु, सिसहुं, समो, सिसमो, समु, सिसमु, सम, सिसम ।
२ पु०	सहि, सिसहि, ससि, सिससि, ससे, सिससे	सहु, सिसहु, सह, सिसह, सध, सिसध, सइत्था, सिसइत्था ।
३ पु०	सदि, सदे, सइ, सए सिसदि, सिसदे, सिसइ, सिसए	सहिं, सति, सते, सइरे । सिसहिं, सिसते, सिसते, सिसइरे,

---

उपर जणावेला भविष्यत्काळना बधा प्रत्ययो पर रहेतां पूर्वना 'अ' नो 'इ' अने 'ए' थाय छे

भणिहिमो	भणिस्सिम		भणिसमो
भणेहिमो	भणेस्सिम		भणेसमो
भणिस्सामु			भणिस्सिमो
भणेस्सामु			भणेस्सिमो
भणिहामु			भणिस्समु
भणेहामु			भणेसमु
भणिहिमु			भणिस्सिमु
भणेहिमु			भणेस्सिमु
भणिस्साम			भणिसम
भणेस्साम			भणेसम
भाणिहाम			भणिस्सम
भणेहाम			भणेस्सिम
भणिहिम			
भणेहिम			
भणिहिस्सा			
भणेहिस्सा			
भणिहित्था			
भणेहित्था			
२ पुरुष—भणिहित्था	भणिस्सिह	शौरसेनी	भणिसहु
भणेहित्था	भणेस्सिह	प्रमाणे	भणेसहु
भणिहिह	भणिस्सिध		भणिस्सिहु
भणेहिह	भणेस्सिध		भणेस्सिहु
	भणिस्सिइत्था		भणिसह
	भणेस्सिइत्था		भणेसह
			भणिस्सिह

			मणिस्सिसे
			मणेस्सिसे
१ पुरुप—मणिहिइ	मणिस्सिवि	[1]मनेश्य	मणिसदि
मणेहिइ	मणेस्सिवि		मणेसवि
मणिहिए	मणिस्सिदे		मणिसदे
मणेहिए	मणेस्सिदे		मणेसदे
			मणिसइ
			मणेसइ
			मणिसए
			मणेसए
			मणिस्सिदि
			मणेस्सिदि
			भमिस्सिदे
			मणेस्सिदे
			मणिस्सिइ
			मणेस्सिइ
			मणिस्सिए
			मणेस्सिए

बहुवचन

प्राकृतरू०—	शौरसेनीरू — मागधीरू०—	पैशाचीरू०—	अपभ्रंशरू०—
१ पुरुप—मणिस्सामो	मणिस्सिमो	शौरसेनी	मणिसहु
मणेस्सामो	मणेस्सिमो	ममाणे	मणेसहु
मणिहामो	मणिस्सिमु		मणिस्सिहुं
मणेहामो	मणम्सिमु		मणेस्सिहुं

१ ऊमी ? २१ नि (१)

भणिहिमो
भणेहिमो
भणिस्सामु
भणेस्सामु
भणिहामु
भणेहामु
भणिहिमु
भणेहिमु
भणिस्साम
भणेस्साम
भणिहाम
भणेहाम
भणिहिम
भणेहिम
भणिहिस्सा
भणेहिस्सा
भणिहित्था
भणेहित्था

भणिस्सिम
भणेस्सिम

भणिसमो
भणेसमो
भणिस्सिमो
भणेस्सिमो
भणिसमु
भणेसमु
भणिस्सिमु
भणेस्सिमु
भणिसम
भणेसम
भणिस्सम
भणेस्सिम

२ पुरुष—भणिहित्था
भणेहित्था
भणिहिह
भणेहिह

भणिस्सिह
भणेस्सिह
भणिस्सिध
भणेस्सिध
भणिस्सिइत्था
भणेस्सिइत्था

शौरसेनी प्रमाणे

भणिसहु
भणेसहु
भणिस्सिहु
भणेस्सिहु
भणिसह
भणेसह
भणिस्सिह

भणेस्सिह
भणिसध
भणेसध
भणिस्सिध
भणेस्सिध
भणिसइत्था
भणेसइत्था
भणिस्सिइत्था
भणेस्सिइत्था

१ पुरुष—भणिहिंति	भणिस्सिति	शौरसेनी	भणिसहिं
भणेहिंति	भणेस्सिति	प्रमाणे	भणेसहिं
भणिहिते	भणिस्सिते		भणिस्सिहिं
भणेहिते	भणेस्सिते		भणेस्सिहिं
भणिहिइरे	भणिस्सिइरे		भणिसंति
भणेहिइरे	भणेस्सिइरे		भणेसति
			भणिस्सिति
			भणेस्सिति
			भणिसंते
			भणेसंते
			भणिस्सिते
			भणेस्सिते
			भणिसइरे
			भणेसइरे
			भणिस्सिइरे
			भणेस्सिइरे

['ज्ज' अने 'ज्जा' नो उपयोग प्राकृतनी पेठे शौरसेनी वगेरे बधी भाषाओमां करवानो छे]

ए रीते, व्यंजनांत धातुनां भविष्यत्काळनां बधी जातनां रूपो समजवाना छे अने प्राकृतरूपोनो (भणिहिइ वगेरेनो) उपयोग अपभ्रंशमां यथासंभव थइ शके छे.

हो (भू)

स्वरात धातु अने पुरुषबोधक प्रत्यय--ए बेनी--वच्चे भविष्यत्काळमा पण 'ज्ज' अने 'ज्जा' विकल्पे आवे छे.

आगळ जणावेला नियमो प्रमाणे 'हो' धातुना (बधा स्वरात धातुना) छ अंगो थाय छे अने ते छ अंगोने भविष्यत्काळना पुरुषबोधक प्रत्ययो लगाडवाथी अने ए प्रत्ययनिमित्तक थतो फेरफार ए अंगोमा करवाथी स्वरात धातुना बधा रूपाख्यानो तैयार थाय छे.

छ अंगो: हो—हो, होअ, होएज्ज, होएज्जा, होज्ज, होज्जा.

पा—पा, पाअ, पाएज्ज, पाएज्जा, पाज्ज, पाज्जा.

नी—नी, नीअ, नीएज्ज, नीएज्जा, निज्ज, निज्जा.

[बधा स्वरात धातुना छ छ अंगो उपर्युक्त रीते करी लेवाना छे]

जे रीते 'भण्'ना बधी जातना रूपो आगळ बताववामा आव्या छे ते ज रीते आ छ ए अगना प्रत्येकना बधी जातना रूपो बनावी लेवाना छे. जेमके;

एकवचन

	प्राकृतरू०—	शौरसेनीरू०— मागधीरू०—	पैशाचीरू०—	अपभ्रंशरू०—
१ पुरुष—	होस्सं	होस्सिमि	शौरसेनी	होसउ
	होइस्स	होइस्सिमि	प्रमाणे	होइसउ

होएस्सं	होएस्सिमि	होएस्सउ
होएज्जिस्सं	होएज्जिस्सिमि	होएज्जिस्सउ
होएज्जेस्सं	होएज्जेस्सिमि	होएज्जेस्सउ
होएज्जास्सं (ज्जस्सं)	होएज्जा (ज्ज) स्सिमि	होएज्जास्सउ
होज्जिस्सं	होज्जिस्सिमि	होज्जिस्सउ
होज्जेस्सं	होज्जेस्सिमि	होज्जेस्सउ
होज्जास्सं (ज्जस्सं)	होज्जा (ज्ज) स्सिमि	होज्जास्सउ

[प्राकृत, शौरसेनी, मागधी, पैशाची अने अपभ्रंशनो मात्र एक ज प्रत्यय लगाडीने नमूनारूपे 'हो' नां ए अने अ अंगनां रूपो उपर आपेलां छे, ए ज प्रकारे दरेक प्रत्यय लगाडीने 'हो'नां (स्वरांत धातुनां) बधां रूपो समजी लेवानां छे]

ए ज रीते 'हो'नी पेठे पा, ला, ठा, झिला, गिला अने ण्हा वगेरे स्वरांत धातुओनां दरेकनां छ छ अंगो करी बधां रूपाख्यानो बनावी लेवानां छे

भविष्यत्काळमां संस्कृत सिद्धरूपोने पण वर्णविकारना नियमो लगाडी प्राकृतमां वापरी शकाय छे जेमके:—

सं०— मोक्ष्यामः=मोक्खामो (प्रा०)
भविष्यति=भविस्सइ (,,)
करिष्यति=करिस्सइ (,,)
धरिष्यति=धरिस्सइ (,,)
भविष्यामि=भविस्सामि (,,) इत्यादि

आर्षप्रयोगोमां केटलांक रूपो तो आ ज प्रकारनां वपराएलां छे

क्रियातिपत्ति—(परोक्षभविष्य)

ज्यारे शरतवाळा बे वाक्योनुं एक संयुक्त वाक्य बनेलुं होय अने तेमां देखाती बन्ने क्रियाओ कोइ सांकेतिक क्रिया जेवी जणाती होय त्यारे आ 'क्रियातिपत्ति' नो प्रयोग थाय छे.

प्राकृत, शौरसेनी, मागधी, पैशाची अने अपभ्रंशना प्रत्ययोः

सर्व पुरुष, सर्व वचन } ज्ज, ज्जा, अन्त, माण

धातुने 'न्त,' 'माण' प्रत्यय लाग्या पछी तैयार थएल अकारांत अंगना ते ते भाषा प्रमाणे नामनी प्रथमा विभक्ति जेवा ज रूपाख्यानो थाय छे.

व्यंजनांत—भणेज्ज, भणेज्जा, भणंतो, भणमाणो } सर्व पुरुष, सर्व वचन.

स्वरांत—होज्ज, होज्जा, होंतो, होमाणो } ,, ,,

---

[1]आज्ञार्थ

१ पुरुष— मु मो

---

१ पालिमां वर्तमान आज्ञार्थ अने विध्यर्थ प्रत्ययो आ प्रमाणे छे'

	आज्ञार्थ		विध्यर्थ	
परस्मैपद	१ मि	म.	एय्यामि (प्रा० एज्जामि) ए,	एय्याम(प्रा० एज्जाम).
	२ हि	थ.	एय्यासि (प्रा० एज्जासि) ए,	एय्याथ(प्रा० एज्जाह).
	३ तु	अंतु.	एय्य (प्रा० एज्ज) ए,	एय्युं.
आत्मनेपद	१ ए	आमसे.	एय्यं, ए	एय्याम्हे.
	२ स्सु	व्हो.	एथो	एय्यव्हो.
	३ त	अंतं.	एथ	एर

—जुओ पालिप्र० पृ० १९१ पचंमी तथा पृ० १९४ सत्तमी.

२ पुरुष—	सु, *इज्जसु, *इज्जहि, *इज्जे, हि	ह
	(अप० इ, उ, ए)	
३ पुरुष—	उ (शौ० दु)	न्तु

सर्व पुरुष, सर्व वचन—ज्ज, ज्जा

उपरना बधा प्रत्ययो पर रहेतां धातुना अकारांत अंगना अंत्य 'अ' नो 'ए' थाय छे

'मु' अने 'मो' प्रत्यय पर रहेतां धातुना अकारांत अंगना अंत्य 'अ' नो 'आ' अने 'इ' विकल्पे थाय छे

अकारांत अंगने लागेला 'हि' प्रत्ययनो लोप थाय छे

हस—

१ पु०—	हसामु, हसिमु, हसेमु, हसमु	हसामो, हसिमो, हसेमो, हसमो
२ पु०—	हससु, हसेसु, — हसेज्जसु, हसेज्जहि, हसेज्जे, हस	हसह, हसेह
३ पु०—	हसउ, हसेउ	हसंतु, हसेंतु

सर्व पु० सर्व वचन—हसेज्ज, हसेज्जा

पालिना विध्यर्थप्रत्ययो मोटा रूपांतर साथे प्राकृतमां वपराया छे। प्राकृतमां धातुना विध्यर्थक रूपोमां जे 'एज्ज' अने 'एज्जा' नो अंश आवे छे ते पालिना 'एय्य' अने 'एय्या' नुं प्रकारान्तर रूपांतरमात्र छे अने ए पालिप्रत्ययो साथे बताव्युं छे

* आ बधा प्रत्ययो धातुना अकारांत अंगने ज लागे छे

१ कोई ठेकाणे तो 'उ' ने बदले 'आउ' पण थई जाय छे जेमके—सुण— सुणेउ ने बदले सुणाउ (शृणोतु)

हो—

१ पु०—	होआमु, होइमु.	होआमो, होइमो,
	होएमु, होअमु,	होएमो, होअमो,
	[1]होएज्जामु, होएज्जिमु,	होएज्जामो, होएज्जिमो,
	होएज्जेमु, होएज्जमु,	होएज्जेमो, होएज्जमो,
	होज्जामु, होज्जिमु,	होज्जामो, होज्जिमो,
	होज्जेमु, होज्जमु,	होज्जेमो. होज्जमो,
	होमु, होज्ज, होज्जा.	होमो, होज्ज, होज्जा.

पूर्व प्रमाणे 'हो' ना छ अंगो बनावी आज्ञार्थनां बधा रूपाख्यानो 'हस' नी पेठे साधवाना छे. अने ए रीते बधा स्वरांत धातुना (दा, ला, पा वगेरेना) रूपाख्यानो समजवानां छे.

[शौरसेनीनो प्रत्यय मागधी, पैशाची अने अपभ्रंशमा पण वापरवानो छे]

शौरसेनी, मागधी अने पैशाचीनां रूपाख्यानो

हस्

१ पु०	हसामु वगेरे प्राकृत प्रमाणे	हसामो वगेरे प्राकृत प्रमाणे
२ पु०	हससु वगेरे ,, ,,	हसह वगेरे ,, ,,
३ पु०	हसदु, हसेदु	हसंतु वगेरे ,, ,,

अपभ्रशनां रूपाख्यानो

१ पु०	हसामु वगेरे प्राकृत प्रम णे	हसामो वगेरे प्राकृत प्रमाणे
२ पु०	हसि, हसु, हसे, हससु वगेरे प्राकृत प्रमाणे	हसह वगेरे ,, ,,

---

१ जूओ पृ० २५४ 'ज्ज' अने 'ज्जा' नी वपराश.

३ पु०	हसतु, हसेतु, हसउ, हसेउ	हसतु वगेरे प्राकृत प्रमाणे

हो

१ पु०	होमामु वगेरे प्राकृत प्रमाणे होइ, होउ, होए,	होमामो वगेरे प्राकृत प्रमाणे
२ पु०	होअसु वगेरे प्राकृत प्रमाणे	होअह वगेरे प्राकृत प्रमाणे
३ पु०	होअतु, होएदु होअउ, होएउ	होअंतु वगेरे प्राकृत प्रमाणे

ए रीते दरेक व्यंजनांत अने स्वरांत धातुओनां रूपो करी लेवानां छे.

विध्यर्थनी बधी प्रक्रिया आज्ञार्थमा जेवी छे, विशेष ए छे के, सर्वपुरुष अने सर्ववचनमां एक 'ज्जइ' प्रत्यय वधारे लागे छे, ए 'ज्जइ' प्रत्यय पर रहेतां पूर्वना 'अ' 'ए' थाय छे

सर्वपुरुष { होज्जइ, होज्ज, होज्जा (भवेत्)
सर्ववचन | हसेज्जइ, हसेज्ज, हसेज्जा (हसेत्)

[आर्षग्रंथोमां विध्यर्थसूचक केटलांक खास रूपो मळी आवे छे ते आ छे—

१ जुओ पृ १ अव्ययुक्त आदि लोप—हसतु=हसउ
२ जुओ पृ० १५ त=द नि० (१)

सिया (स्यात्)
'चरे (चरेत्)
पढे (पठेत्)
अच्छे (आच्छिन्द्यात्)
अब्भे (आभिन्द्यात्)

आ रूपो विध्यर्थसूचक संस्कृत सिद्ध रूपो उपरथी सीधी रीते वर्णविकारना नियमो द्वारा सधाएला छे: ते हकीकत तेने पडखे ( ) आ निशानमा आपेला रूपो उपरथी जणाइ आवे छे. ए रीते बीजा सम्कृतरूपो उपरथी पण प्राकृतरूपो साधी शकाय छे.]

अनियमित रूपाख्यान

[2]अस्–थवुं

वर्तमानकाळ

१ पुरुष	अत्थि, म्हि, [3]अंसि	अत्थि, म्हो, म्ह.
२ पुरुष	अत्थि, सि	अत्थि.
३ पुरुष	अत्थि	अत्थि.

---

१ पालिमा पण त्रणे पुरुषना एकवचनमा विध्यर्थसूचक 'ए' प्रत्यय वपराएलो छे (जूओ पृ० २७५ १ टिप्पण) ए अनुसारे पण आ आर्षरूपो साधी शकाय छे.

२ प्राकृतमा 'अस्' धातुना घणा थोडा रूपो थाय छे, भूतकाळ सिवाय बीजा अर्थमा एक मात्र 'अत्थि' रूपथी पण काम चाली शके छे. पालिमा 'अस्' ना दरेक काळवार नोखा नोखा रूपो थाय छे अने पालिना ए रूपो, संस्कृत रूपो साथे घणा मळता आवे छे:

भूतकाळ

सर्व पुरुष, सर्व वचन— } आसि, अहेसि ।

विध्यर्थ, आज्ञार्थ, भविष्यत्काळ

सर्व पुरुष, सर्व वचन— } अत्थि ।

अस् (पालिरूपो)

वर्तमाना—१	अस्मि, अम्हि	अस्म, अम्ह (अम्हसे).
२	असि, अहि	अत्थ
३	अत्थि	सन्ति.
सप्तमी—१	अस्स	अस्साम
(विध्यर्थ) २	अस्स	अस्सथ,
३	अस्स,	अस्सु,
	सिया	सियु
पञ्चमी—१	अस्मि, अम्हि	अस्म, अम्ह
(आज्ञार्थ) २	आहि,	अत्थ
३	अत्थु,	सन्तु.
अज्जतनी—१	आसिं	आसिम्ह
(भूतकाळ) २	आसि	आसित्थ
३	आसि	आसुं, आसिंसु (आसु)

—जूओ पालिप्र पृ १७८–१९८–१९२–२२१

'अस्' नां रूपो

१ जूओ आचारांगसूत्रनो आरंभ—

"पुरत्थिमाओ वा दिसाओ आगओ अहं अंसि" इत्यादि आ आर्षरूप संस्कृतना अस्मि रूपनुं रूपांतर जणाय छे

[1]कृ—करवुं

मात्र भूतकाळ अने भविष्यत्काळमा 'कृ' धातुनो 'का' आदेश थाय छे·

भूतकाळ

कासी, काही, काहीअ, काअसी, काअही, काअहीअ.

भविष्यत्काळ

फक्त प्रथम पुरुषना एकवचनमा 'काहं' रूप वधारे थाय छे, बाकी बधा रूपो 'हो' धातुनी सरखा छे:

[2]काहिइ, काहिसि, काहिमि इत्यादि ।

दा—देवु

मात्र भविष्यत्काळमा प्रथम पुरुपना एकवचनमा 'दा' धातुनु 'दाहं' रूप वधारे थाय छे, बाकी बधा रूपो 'हो' धातुनी सरखा छे:

दाहं, दाहिमि, दाहिसि, दाहिइ, इत्यादि ।

---

१ 'कृ' नुं भूतकाळसूचक 'अकासि' अने 'अकासिं' (त्रीजा पुरुषनु एकवचन अने प्रथम पुरुषनु एकवचन) रूप पालिमा थाय छे, ए, प्राकृतना 'कासी' रूप साथे मळतु गणाय खरु —जूओ पालिप्र० पृ० २२५ 'कृ'ना रूपो.

२ प्राकृतरूपो साथे मळता आवता 'कृ'ना भविष्यत्काळना पालिरूपो आ प्रमाणे छे:

१	काहामि	काहाम.
२	काहिसि	काहिथ.
३	काहिति	काहिंति.

—जूओ पालिप्र० पृ० २०९ 'कृ' ना रूपो.

मात्र भविष्यत्काळमां नीचेना धातुओना नीचे प्रमाणे आदेशो थाय छे

[1]श्रु— सोच्छ।	दृश—दच्छ।	भिद्—भेच्छ।
गम— गच्छ।	मुच—मोच्छ।	भुज्—मोच्छ।
रुद्— रोच्छ।	वच—वोच्छ।	
विद्— वेच्छ।	छिद्—छेच्छ।	

आ धातुओनां भविष्यत्काळ संबंधी रूपाख्यानो 'गम' धातुनी जेवा थाय छे विशेषता ए छे के, आ धातुओने लगाता भविष्यत्का-

---

१ प्राकृतमां 'श्रु' वगेरे धातुओनां 'सोच्छ' वगेरे अंगो बने छे तेम पालिमां पण बने छे

पालिअंगो

श्रु—	सोस्स—	प्रथम पुरुषनुं एकवचन—	सोस्सं
गम —	गच्छ—		
रुद्—	रुच्छ	,,	गच्छिस्सामि
		,	रुच्छिस्सामि
दृश	{ दक्ख { दिच्छ	तृतीय पुरुषनुं एकवचन—	दिच्छति
मुच	मोक्ख		मोक्खति
वच	वक्ख	,,	वक्खति
छिद	छेच्छ	,,	छेच्छति
भुज्	मोक्ख	,,	मोक्खति

—जुओ पालिप्र पृ १ ६-२ ७

[वर्णपरिवर्तनना नियमद्वारा 'श्रु' वगेरेनां संस्कृत रूपोमांथी पण उपर बतावेलां प्राकृत अने पालिअंगो नीपजावी शकाय छे श्रुस्यति, मोक्ष्यति मोक्ष्यते, वक्ष्यति, छेत्स्यति रुत्स्यति (कल्पित) भोक्ष्यति— जुओ [illegible] [illegible] मि २१ पृ १ [illegible] मि० २१ पृ १२ अने संयुक्त 'मादि' स्तोत्र पृ १५]

ळना जेटला प्रत्ययो ‘ हि ’ आदिवाळा छे तेमाना ‘ हि ’ नो लोप विकल्पे थाय छे तथा प्रथम पुरुषना एकवचनमा ए बधा धातुओनुं एक अनुस्वारात रूप पण वधारे थाय छे

१ पुरुष–सोच्छं, सोच्छिमि, सोच्छेमि, सोच्छिहिमि, सोच्छेहिमि, सोच्छिस्सं, सोच्छेस्सं, सोच्छिस्सामि, सोच्छेस्सामि, सोच्छिहामि, सोच्छेहामि ।

२ पुरुष–सोच्छिसि, सोच्छेसि, सोच्छिहिसि, सोच्छेहिसि, सोच्छिसे, सोच्छेसे, सोच्छिहिसे, सोच्छेहिसे ।

३ पुरुष–सोच्छिइ, सोच्छेइ, सोच्छिहिइ, सोच्छेहिइ । सोच्छिए, सोच्छेए, सोच्छिहिए, सोच्छेहिए । इत्यादि ।

[सूचना–आख्यातने लगता बधी भाषाना (प्राकृत, शौरसेनी, मागधी, पैशाची अने अपभ्रंशना) प्रत्ययो आगळ जणावेला छे, आ चालु प्रकरणमा प्रेरकभेदी, सह्यभेदी वगेरे आख्यातने लगती हकीकत जणाववानी छे, तेमा मात्र प्राकृतना ज एक एक प्रत्ययद्वारा बधा उदाहरणो देखाडेला छे तो अभ्यासीए पोतानी मेळे प्रेरकभेदी, सह्यभेदी वगेरे अंगोने शौरसेनी, मागधी, पैशाची अने अपभ्रंश भाषाना प्रत्ययो लगाडी ते ते भाषाना रूपो बनावी लेवा]

प्रेरकरूप

प्रेरकअग बनाववानी रीत

१ धातुने अ, ए, आव अने आवे [१]प्रत्यय लगाडवाथी तेनु प्रेरक अंग तैयार थाय छे.

---

१ पालिमां पण साधारण रीते प्रेरणाना अर्थमा ‘अ,’ ‘ए,’ ‘आप’ अने ‘आपे’ लगाडवाथी धातुमात्रना चार अंगो बने छे:–

२ 'अ' अने 'ए' प्रत्यय पर रहेतां धातुना उपांत्य 'अ'नो 'आ' थाय छे'

धातु	प्रेरक अंगो
कृ—कर्	कार, कारे, कराव, करावे ।
हस्	हास, हासे, हसाव, हसावे ।
शम्—सम्—	साम, सामे, समाव, समावे ।
हश—हरिस्—	हरिस, हरिसे, हरिसाव, हरिसावे ।
भ्रम्—भम्—	भाम, भामे, भमाव, भमावे ।
स्मृ—सम्—	साम, सामे, समाव, समावे । इत्यादि ।

(कृ) कार, कारे, काराप, कारापे
(पच्) पाच, पाचे, पाचाप, पाचापे
(हन्) घात घाते घाताप घातापे
(गम्) गाम, गामे, गच्छाप गच्छापे
(ग्रह्) गाह गाहे, गाहाप, गाहापे
(चिन्त्) चिंताप चिंतापे
(चुर्) चोराप चोरापे
(बुध्) बोध बोधे, बुज्झाप, बुज्झापे

पालिमां वपरातां 'आप' अने 'आपे' ज प्राकृतमां वपरातां 'आव' अने 'आवे' छे (जुओ पृ २४९—नं ११)

—जुओ पालिप्र पृ २२७—२२९.

' आवि' अने 'आवे' प्रत्यय पर रहेतां पण आ नियम लागे छे एम कोईनो मत छे

कोई—	हेमचंद्र—
कारावेइ ।	करावेइ ।
हासाविओ ।	हसाविओ ।

ए प्रकारे धातुमात्रना प्रेरक अगो तैयार करी लेवाना छे.

३ उपात्यमा गुरु स्वरवाळा (स्वरादि वा व्यजनादि) धातुने उपर जणावेल प्रत्ययो उपरात विकल्पे 'अवि' प्रत्यय लगाडवाथी पण तेनु प्रेरक अग तैयार थाय छे·

धातु–	प्रेरक अगो–
तुष्–तोषि–तोसि–	तोसवि, तोस, तोसे, तोसाव, तोसावे।
घुष्–घोषि–घोसि–	घोसवि, घोस, घोसे, घोसाव, घोसावे।
मुष्–मोषि–मोसि–	मोसवि, मोस, मोसे, मोसाव, मोसावे।
दुष्–दूषि–दूसि	दूसवि, दूस, दूसे, दूसाव, दूसावे।
दोसि	दोसवि, दोस, दोसे, दोसाव, दोसावे।
दुह्–दोहि–	दोहवि, दोह, दोहे, दोहाव, दोहावे।
मुह्–मोहि–	मोहवि, मोह, मोहे, मोहाव, मोहावे।
भक्ष्–भाक्षि–भक्खि–	भक्खवि, भक्ख, भक्खे, भक्खाव, भक्खावे।
तक्ष्–ताक्षि–तक्खि–	तक्खवि, तक्ख, तक्खे, तक्खाव, तक्खावे।
पार–पारि–	पारवि, पार, पारे, पाराव, पारावे।
चिल्ल्–चिल्लि–	चिल्लवि, चिल्ल, चिल्ले, चिल्लाव, चिल्लावे।
जीव–जीवि–	जीववि, जीव, जीवे, जीवाव, जीवावे।
लुञ्च्–लुञ्चि–लुचि–	लुचवि, लुंच, लुंचे, लुंचाव, लुंचावे।
शुष्–शोषि–सोसि	सोसवि, सोस, सोसे, सोसाव, सोसावे.
चूष्–चूषि–चूसि–	चूसवि, चूस, चूसे, चूसाव, चूसावे।

इत्यादि

ए रीते उपात्यगुरुवाळा धातुओनुं प्रेरक अग बनावी लेवानु छे.

४ भम (भ्रम) धातुनु प्रेरक अग 'भमाड' पण थाय छे

भम–भमाड, भाम, भामे, भमाव, भमावे।

ए रीते तैयार थएल प्रेरक अंगोने ते ते पुरुषबोधक प्रत्ययो लगाडवाथी तेनां दरेक प्रकारनां रूपाख्यानो तैयार थाय छे—ए रूपाख्यानो बनाववानी प्रक्रिया आगळ आवेल कर्तरिरूपाविकारमां आवी गई छे तो पण अहीं उदाहरण तरीके केटलांक रूपाख्यानो दर्शाववामां आवे छे

वर्तमानकाळ

१ पु०—खामेमि, खामामि, खामामो,-[1]मु,-म, खामिमो, मु,-म,
खाममि, खामेमि, खामेमो,-मु,-म, खाममो, मु,-म ।
खामेमो-मु,-म,
खमावेमि, खमावामि, खमावामो,-मु,-म, खमाविमो,-मु,-म,
खमाबमि, खमावेमि खमावेमो,-मु,-म, खमावमो,-मु,-म,
खमावेमो,-मु,-म इत्यादि ।
खामेज्ज, खामेज्जा, खमावेज्ज, खमावेज्जा ।

भूतकाळ

सर्वपुरुष, सर्ववचन—तोसवि-सी,-ही,-हीअ, तोस-सी,-ही,-हीअ,
तोसे-सी,-ही,-हीअ, तोसाव-सी,-ही,-हीअ,
तोसावेसी,-ही,-हीअ । इत्यादि ।

भविष्यत्काळ

१ पु०—भक्खवि-हिइ, भक्स हिइ भक्खे-हिइ, भक्खाव-हिइ,
भक्खावे-हिइ इत्यादि ।

---

१ – मु –[1]म वगेरे प्रत्ययो मूकेला छे, तो मूळ अंगने ए प्रत्ययो लगाडी 'खामाम्मो नी पेठे 'खामासु' 'खामाम वगेरे रूपो पोतानी मेळे बनावी लेवां अने हवे पछी ज्यां ज्यां आवे त्यां पण आ रीते ज समजी लेवुं.

क्रियातिपत्ति–

सर्वपुरुष, सर्ववचन–भक्खविंतो–विमाणो,–विज्ज,–विज्जा ।

भक्खतो,–क्खमाणो,–क्खज्ज,–क्खज्जा ।

भक्खेंतो,–क्खेमाणो,–क्खेज्ज,–क्खेज्जा ।

भक्खावंतो,–क्खावमाणो,–क्खावज्ज,–क्खावज्ज ।

भक्खावेंतो, -वेमाणो, -वेज्ज, -वेज्जा । इत्यादि ।

विध्यर्थ–आज्ञार्थ

२. पु०–हाससु, -सेसु, हासेज्जसु, हासेज्जाहि, हासेज्जे, हास ।
हासेसु, हासेहि ।
हसा-वसु,-वेसु,-वेज्जसु,-वेज्जाहि,-वेज्जे, हसाव ।
हसावेसु, हसावेहि ।
हासेज्जइ, हासेज्ज, हासेज्जा, हसावेज्जइ, हसावेज्ज, हसावेज्जा ।

इत्यादि ।

ए रीते प्रत्येक प्रेरक अगने वधी जातना पुरुषबोधक प्रत्ययो लगाडी तेना रूपाख्यानो समजी लेवाना छे.

ज्यारे प्रेरकसह्यभेद, प्रेरकवर्तमानकृदंत, प्रेरकभूतकृदंत अने प्रेरकभविष्यत्कृदत बनाववु होय त्यारे पण प्रेरकअगने ज ते सह्यभेद वगेरेना प्रत्ययो लगाडी तेना रूपाख्यानो बनावी लेवाना छे. (आ संबंधेनी विशेष माहिती सह्यभेदाधिकार अने कृदंताधिकारमा जणाववानी छे).

नामधातु

प्रेरकप्रक्रिया सिवाय संस्कृतमां बीजी पण अनेक प्रक्रियाओ छे, जेमके–[1]सन्नन्तप्रक्रिया, यङन्तप्रक्रिया, यङ्लुगन्तप्रक्रिया अने नामधातुप्रक्रिया परंतु प्राकृतमां ए प्रक्रियाओ माटे कोई खास विशेष

---

१ पालिमां पण सन्नंत, यङन्त, यङ्लुगंत अने नामधातुनी प्रक्रिया संस्कृतनी पेठे थाय छे:—

सन्नन्त–	बुभुक्खति	(बुभुक्षते)
	जिघच्छति	(जिघत्सति)
	पिवासति	(पिपासति)
	विजिगिंसति	(विजिगीषति)
		(जिहीर्षति)
	चिकिच्छति तिकिच्छति	(चिकित्सति)
	वीमंसते	(मीमांसते)
सन्नंतप्रेरक–	बुभुक्खापेति	(बुभुक्षयति)
यङंत–	लालप्पति	(लालप्यते)
	दद्दल्लति	(जाज्वल्यते)
यङ्लुगन्त–	चंकमति	(चङ्क्रमीति)
	जंगमति	(जङ्गमीति)
	लालप्पति	(लालपीति)
नामधातु–	पब्बतायति	(पर्वतायते–पर्वत इव आचरति)
	छत्तीयति	(छात्रीयति पुत्रम्)
	अतिहत्थयति	(अतिहस्तयति–हस्तिना अतिक्रामति)
	उपवीणयति	(वीणया उपगायति)
	कुसलायति	(कुशलं पृच्छति)

—पालिप्र० पृ० २२९–२३१

विधान तो नथी अने प्राकृत साहित्यमा ए प्रक्रियानां रूपाख्यानो उपलब्ध थाय छे एथी कल्पी शकाय छे के, ते ते प्रक्रियानां(संस्कृत) सिद्ध रूपोमा, आगळ जणावेल वर्णविकारना नियमानुसार फेरफार करी ते रूपोनो प्रयोग करवामा आवे (ल) छे. जेमके—

संस्कृत	प्राकृत
शुश्रूषति—	सुस्सूसइ । (सन्नंत)
लालप्यते—	लालप्पइ । (यङंत)
चङ्क्रमीति—	चकमइ । (यङ्लुबंत) चंकमण । (चङ्क्रमणम्)

इत्यादि ।

मात्र नामधातु माटे विशेषता आ छे :

नामधातुओने लागेल ‘ य ’ प्रत्ययनो लोप विकल्पे थाय छे.

गुरुकायते—गरुआइ, गरुआअइ (गुरुरिव आचरति–गुरुनी जेवुं आचरण करे छे)

दमदमायते—दमदमाइ दमदमाअइ (दम दम थाय छे)

लोहितायते– लोहिआए–इ, लोहिआअए–इ । (लाल थाय छे)

हंसायते– हसाए–इ, हंसाअए,–इ । (हंसनी जेम आचरे छे)

तमायते– तमाए–इ, तमाअए–इ । (अंधारा जेवुं छे)

अप्सरायते– अच्छराए,–इ, अच्छराअए–इ । (अप्सरानी जेम आचरे छे)

उन्मनायते– उम्मणाए–इ, उम्मणाअए,–इ ।(उन्मना थाय छे)

कष्टायते– कट्ठाए,–इ, कट्ठाअए,–ई । (कष्टने माटे क्रमण करे छे)

घूमायते   घूमाप–इ, घूमाअप–इ । (घूमने उद्वमे छे)

सुखायते   सुहाप–इ, सुहाअप,–इ । (सुखने अनुभवे छे)

शब्दायते   सद्दाप, इ, सद्दाअप–इ । (शब्द करे छे—बोलावे छे)

इत्यादि

सक्कमेद

वर्तमानकाळ, विध्यर्थ, आज्ञार्थ अने (ह्यस्तन) भूतकाळमां धातुने ' ईअ ' अने ' इज्ज ' प्रत्यय लगाडवाथी तेनुं सक्कमेदी अंग

---

१ पालिमां सक्कमेदी अंग बनाववा माटे ' य ' ' इय ' अने ' ईय ' तथा क्वचित् ' इय्य ' (य ईय इय) प्रत्ययनो व्यवहार थाय छेः—

य—	पच्चते, पच्चति	(पच्यते)
	वुच्चते, वुच्चति	(उच्यते)
	वुप्पते, वुप्पति	(उप्यते)
य अने इय—	गुय्हते, गुहियति	(गुह्यते)
	पुच्छते, पुच्छियति	(पृच्छ्यते)
	भञ्जियति	(भज्यते)
इय्य—	करिय्यति, करिय्यते	(क्रियते)
ईय—	महीयति	(मह्यते)
	मर्यादयति	(मध्यते)
	करीयति	(क्रियते)
	[illegible]	
	[illegible]	

—[illegible] पालि[illegible] ९ २१४–२१०

बने छे अने ते अंगने प्राकृत, शौरसेनी, मागधी, पैशाची अने अप-भ्रंश भाषाना ते ते पुरुषबोधक प्रत्ययो लगाडवाथी तेनां रूपाख्यानो थाय छे.

पैशाचीनी विशेषता

पैशाचीमा धातुनु सह्यभेदी अग बनाववुं होय तो पुरुषबोधक प्रत्ययो लगाडता पहेला धातुने 'ईअ' 'इज्ज' ने बदले 'इय्य' प्रत्यय लगाडवो जोईए. जेमके,

सं०	प्रा०	शौ० मा०	पै०
गीयते	गिज्जए	गिज्जदे	गिय्यते
दीयते	दिज्जए	दिज्जदे	दिय्यते
रम्यते	रमिज्जए	रमिज्जदे	रमिय्यते
पठ्यते	पढिज्जए	पढिज्जदे	पढिय्यते

कृ

'कृ' धातुनुं सह्यभेदी अग बनाववुं होय तो पुरुषबोधक प्रत्ययो लगाडता पहेला एने ('कृ' धातुने) ज 'इय्य' ने बदले 'ईर' प्रत्यय लगाडवो जोईए.

सं० क्रियते प्रा० करिज्जए शौ० मा० [1]करिज्जदे पै० कीरते
करीअए करीअदे

अपभ्रंशनी विशेषता

संस्कृतमा थता प्रथम पुरुषना 'क्रिये' रूपने बदले अपभ्रशमा 'कीसु' रूप पण वपराय छे अने पक्षे यथाप्राप्त.

---

१ कलिज्जदे, कलीअदे—जूओ पृ० २६ र–ल.

साधारण सप्तमेदी अंगो

धातु	सप्तमेदी अंग	धातु	सप्तमेदी अंग
मण्–	मणीअ, मणिज्ज ।	पा–	पाईअ, पाइज्ज ।
हस्–	हसीअ, हसिज्ज ।	दा–	दाईअ, दाइज्ज ।
कथ्–कह्–	कहीअ, कहिज्ज ।	ला–	लाईअ, लाइज्ज ।
पत्–पड्–	पडीअ, पडिज्ज ।	ध्या–झा–	झाईअ, झाइज्ज ।
कथ्–बोल–	बोलीअ, बोलिज्ज ।	हो–	होईअ, होइज्ज ।
		सू–	सूईअ, सूइज्ज ।

इत्यादि ।

ए रीते धातुमात्रनां सप्तमेदी अंगो बनावी लेवानां छे आ अंगोनां रूपाख्यानो बनाववानी प्रक्रिया, कर्तरिरूपाधिकारमां जणावेल प्रक्रिया जेवी छे जेमके–

वर्तमानकाळ

(मण्यत मन्य)

१ पु०–(गयो) मणीअइ,–एइ, अए, एए, एज्ज, एज्जा
मणिज्जइ, ज्जेइ, ज्जए, ज्जेए, ज्जेज्ज, ज्जेज्जा ।

(मण्यन्ते मन्या)

(गया) मणीअंति, ते, एंति, एंते, मणीअइरे, एइरे
मणिज्जंति, ते, ज्जेंति, ज्जेंते, ज्जइरे, ज्जेइरे,
मणीएज्ज, एज्जा, मणिज्जेज्ज, ज्जेज्जा ।

इत्यादि ।

(कथ्यमे स्तम्)

२ पु०–(तुम) बोलीअमि एमि अमे एमे
बोलिज्जमि, ज्जमि, ज्जम, ज्जेमे

(कथ्यध्वे यूयम्)

(तुम्हे) बोल्लीअह, एह, बोल्लीएइत्था, अइत्था ।

(त्वया अह सूये)	त्वया त्रय सूमहे
१ पु०-(अहं) सूईआमि, एमि, अमि,	(अम्हे) सूईआमो, मु, म,
सूइज्जामि, ज्जेमि, ज्जमि	सूईइमो, मु, म,
सूईएज्ज, एज्जा	सूईएमो, मु, म,
सूइज्जेज्ज, ज्जेज्ज ।	सूईअमो, मु, म,
	सूइज्जामो, मु, म,
	सूइज्जिमो, मु, म,
	सूइज्जेमो, मु, म,
	सूइज्जमो, मु, म,
	सूईएज्ज, ज्जा,
	सूइज्जेज्ज, ज्जा ।

विध्यर्थ

भणीअउ, एउ	भणीअंतु, एंतु ।
भणिज्जउ, ज्जेउ	भणिज्जतु, ज्जेंतु ।
भणीएज्ज, ज्जा भणीएज्जइ	भणीएज्ज, ज्जा, ज्जइ ।
भणिज्जेज्ज, ज्जा भणिज्जेज्जइ	भणिज्जेज्ज, ज्जा, ज्जइ ।

आज्ञार्थ

भणीअउ, एउ	भणीअतु, एतु ।
भणिज्जउ, जेउ	भणिज्जतु, ज्जेंतु ।
भणीएज्ज, ज्जा	भणीएज्ज, ज्जा ।
भणिज्जेज्ज, ज्जा	भणिज्जेज्ज, ज्जा ।

भूत–(ह्यस्तनभूत)

मणीअसी, ही, हीअ ।

मणिज्जसी, ही, हीअ ।

१ जे काळमां सत्त्वभेदसूचक 'ईअ' अने 'इज्ज' प्रत्यय धातुने नथी लागता ते काळमां तेनां सत्त्वभेदी रूपो कर्तरिरूपो जेवां समजवानां छे, जेमके–

(अद्यतन) भूतकाळ–मण–मणीअ ।

भविष्यत्काळ–मण–मणिहिइ, मणिहिए, इत्यादि ।

क्रियातिपत्ति–मण–मणेज्ज, ज्जा, मणंतो, मणमाणो, इत्यादि ।

प्रेरक सत्त्वभेद

१ धातुनुं प्रेरक सत्त्वभेदी रूप करवुं होय त्यारे धातुने प्रेरणा-सूचक एक मात्र ' आवि ' प्रत्यय लगाडी, ते तैयार थएल अंगने सत्त्वभेदसूचक 'ईअ' अने 'इज्ज' प्रत्यय पूर्वोक्त काळमां लगाडी प्रत्येक धातुनुं प्रेरक सत्त्वभेदी अंग बनाववानुं छे

२ प्रेरणासूचक कोइ पण प्रत्यय लगाड्या विना मात्र उपांत्य 'अ' नो दीर्घ करी अने सत्त्वभेदसूचक 'ईअ' अने इज्ज' प्रत्यय पूर्वोक्त काळमां लगाडीने पण प्रत्येक धातुनुं प्रेरक सत्त्वभेदी अंग तैयार थाय छे.

(आ सिवाय बीजी रीते प्रेरक सत्त्वभेदी अंग बनी शकतुं नथी)

ए रीते तैयार थएल प्रेरक सत्त्वभेदी अंगनां रूपाख्यानोनी प्रक्रिया कर्तरि रूपाख्यानोनी प्रक्रिया जेवी छे

प्रे० सह्य० प्रे०स०अग–

कर+आवि–करावि+ईअ– करावीअ– करावीअइ, ए, सि, से, इत्यादि.

कर– कार +ईअ– कारीअ– कारीअइ, ए, सि, से, इत्यादि.

कर+आवि–करावि+ इज्ज–कराविज्ज–कराविज्जइ, ए, सि, से, इत्यादि.

कर– कार + इज्ज– कारिज्ज– कारिज्जइ, ए, सि, से, इत्यादि.

हस+आवि–हसावि+ईअ– हसावीअ– हसावीअइ, ए, सि, से इत्यादि.

हस+ हास +ईअ– हासीअ– हासीअमि, आमि, एमि इत्यादि.

हस+ हसावि+इज्ज–हसाविज्ज–हसाविज्जित्था,-विज्जेह, ज्जह, इत्यादि

हस+ हास + इज्ज–हासिज्ज–हासिज्जाति,न्ते, ज्जइरे, इत्यादि.

ए रीते धातु मात्रना प्रेरक सह्यभेदी अगो तेयार करी सर्व काळना रूपाख्यानो समजी लेवाना छे

ज्या प्रेरक अंगने 'ईअ' अने 'इज्ज' प्रत्यय नथी लागता त्या प्रेरक अगथी सीधा पुरुषबोधक प्रत्ययो लगाडी कर्तरिरूपाख्यानोनी पेठे प्रेरक सह्यभेदी रूपाख्यानो समजवाना छे.

जेमके–भविष्यत्काळ

प्रे०

कर+आवि–करावि–कराविहि-इ, ए, -सि, -से, -मि, विहामि, विस्सामि, विस्स

कर- कार -कारेहि-इ, ए, सि, -से, -मि,
रेहामि, रेस्सामि, रेस्सं

हस+आवि-हसावि-हसाविहि-न्ति, -न्ते, -इरे-स्था, ह,
विस्सामो, विहामो, विस्सामु, विहामु,
विस्साम, विहाम, विहिमो, विहिमु,
विहिम, विहिस्सा, विहित्था

हस- हास -हासेहि-इ, ए, सि, से, मि,
सेहामि, सेस्सामि, सेस्स। इत्यादि

क्रियातिपत्ति

करावेज्ज, ज्जा, करावंतो, करावमाणो।
कारिज्ज, कारिज्जा, कारंतो, कारमाणो। इत्यादि

अनियमित सप्तभेदी अंगो

दृश- [1]दीस- दीसइ, दीसिज्जइ, दीसउ, दीससी, ही, हीअ।
वच- [1]वुच- वुचइ, वुचिज्जइ वुचउ, वुचसी, ही, हीअ।
सप्त० प्रे० प्रे० भ०

चि- चिम्मे- चिम्मइ, चिम्मिहिइ, चिन्माविइ, चिम्माविहिइ, इत्यादि
[2]चि- चिम्म-चिम्मइ, चिम्मिहिइ, चिम्माविइ, चिम्माविहिइ, इत्यादि
हन्- हम्म- हम्मइ, हम्मिहिइ, हम्माविइ, हम्माविहिइ, इत्यादि
खन्- खम्म- खम्मइ खम्मिहिइ, खम्माविइ, खम्माविहिइ, इत्यादि
दुह्- दुब्भ-दुब्भइ, दुब्भिहिइ, दुब्भाविइ, दुब्भाविहिइ, इत्यादि

---

१ वर्तमानमां विध्यर्थमां आज्ञार्थमां अने ह्यस्तनभूतमां ज आ बे आदेशो वपराय छे

२ आ बधा आदेशो वैकल्पिक छे अने मात्र सप्तभेदनी ज गमे ते जातनी रचनामां वपराय छे

लिह्- लिब्भ-लिब्भइ, लिब्भिहिइ, लिब्भाविइ, लिब्भाविहिइ, इत्यादि.
वह्- वुब्भ-वुब्भइ, वुब्भिहिइ, वुब्भाविइ, वुब्भाविहिइ, इत्यादि.
रुध्- रुब्भ-रुब्भइ, रुब्भिहिइ, रुब्भाविइ, रुब्भाविहिइ, इत्यादि.
दह्- डज्झ-डज्झइ, डज्झिहिइ, डज्झाविइ, डज्झाविहिइ, इत्यादि.
बन्ध्-बज्झ-बज्झइ, बज्झिहिइ, बज्झाविइ, बज्झाविहिइ, इत्यादि.
सं+रुध् संरुज्झ-संरुज्झइ, संरुज्झिहिइ, संरुज्झाविइ, संरुज्झाविहिइ, इत्यादि.
अणु+रुध्-अणुरुज्झ-अणुरुज्झइ, अणुरुज्झिहिइ, अणुरुज्झाविइ,
अणुरुज्झाविहिइ, इत्यादि.
उप+रुध्-उवरुज्झ-उवरुज्झइ, उवरुज्झिहिइ, उवरुज्झाविइ,
उवरुज्झाविहिइ, इत्यादि.
गम्- गम्म-गम्मइ, गम्मिहिइ, गम्माविइ, गम्माविहिइ, इत्यादि,
हस्- हस्स-हस्सइ, हस्सिहिइ, हस्साविइ, हस्साविहिइ, इत्यादि.
भण्-भण्ण-भण्णइ, भण्णिहिइ, भण्णाविइ, भण्णाविहिइ, इत्यादि.
छुप्-छुप्प-छुप्पइ, छुप्पिहिइ, छुप्पाविइ, छुप्पाविहिइ, इत्यादि.
रुद्-रुव्व-रुव्वइ, रुव्विहिइ, रुव्वाविइ, रुव्वाविहिइ, इत्यादि,
लभ्-लब्भ-लब्भइ, लब्भिहिइ, लब्भाविइ, लब्भाविहिइ, इत्यादि.
कथ्-कत्थ-कत्थइ, कत्थिहिइ, कत्थाविइ, कत्थाविहिइ, इत्यादि.
भुज-भुज्ज-भुज्जइ, भुज्जिहिइ, भुज्जाविइ, भुज्जाविहिइ, इत्यादि.
हृ- हीर-हीरइ, हीरिहिइ, हीराविइ, हीराविहिइ, इत्यादि.
तृ- तीर-तीरइ, तीरिहिइ, तीराविइ, तीराविहिइ, इत्यादि.
कृ- कीर-कीरइ, कीरिहिइ, कीराविइ, कीराविहिइ, इत्यादि.

[प्राकृतमा 'कृ' ना सह्यभेदी अंगो बे थाय छे-कृ= 'कीर' अने 'करीअ' 'करिज्ज,' त्यारे पैशाचीमा तो 'कृ'नुं 'कीर' अंग ज वपराय छे. कीरते, कीरति]

मृ—मीर—मीरइ, मीरेहिइ, मीराविइ, मीराविहिइ, इत्यादि
अर्म विढप्प-विढप्पइ, विढप्पेहिइ, विढप्पाविइ, विढप्पाविहिइ, इत्यादि
स्रा—णव्व—णव्वइ, णव्वेहिइ, णव्वाविइ, णव्वाविहिइ, इत्यादि
ज्ञा—णज्ज-णज्जइ, णज्जेहिइ, णज्जाविइ, णज्जाविहिइ, इत्यादि
वि+आ—व्या+हृ—वाहिप्प—वाहिप्पइ, वाहिप्पेहिइ, वाहिप्पाविइ,
वाहिप्पाविहिइ, इत्यादि
ग्रह—घेप्प—घेप्पइ, घेप्पेहिइ, घेप्पाविइ, घेप्पाविहिइ, इत्यादि,
स्पृश—छिप्प—छिप्पइ, छिप्पेहिइ, छिप्पाविइ, छिप्पाविहिइ, इत्यादि,
सिच् } सिप्प-सिप्पए, सिप्पेहिए, सिप्पाविइ, सिप्पाविहिइ, इत्यादि,
स्निह् }
आरभ्—आढप्प—आढप्पेइ, आढप्पेहिए, आढप्पाविइ, आढप्पाविहिइ,
इत्यादि
जि—जिव्व—जिव्वए जिव्वेहिए, जिव्वाविइ जिव्वाविहिइ इत्यादि
श्रु—सुव्व—सुव्वए, सुव्वेहिए, सुव्वाविइ, सुव्वाविहिइ, इत्यादि
हु—हुव्व—हुव्वए, हुव्वेहिइ हुव्वाविइ, हुव्वाविहिइ, इत्यादि
स्तु—थुव्व—थुव्वइ, थुव्वेहिइ, थुव्वाविइ, थुव्वाविहिइ, इत्यादि,
लु—लुव्व—लुव्वइ, लुव्वेहिइ, लुव्वाविइ लुव्वाविहिइ, इत्यादि
पू—पुव्व—पुव्वइ, पुव्वेहिइ, पुव्वाविइ, पुव्वाविहिइ, इत्यादि
धू—धुव्व—धुव्वए, धुव्वेहिइ, धुव्वाविइ, धुव्वाविहिइ, इत्यादि

प्रकरण १३

कृदंत

[1]वर्तमानकृदंत

१ धातुना अंगने '[2]न्त' 'माण' अने '[3]ई' प्रत्यय लगाडवाथी तेनु **कर्तरि–वर्तमान–कृदंत** बने छे.

२ धातुना प्रेरक अगने 'न्त' 'माण' अने 'ई' प्रत्यय लगाडवाथी तेनु **प्रेरक–कर्तरि–वर्तमान–कृदंत** बने छे.

३ धातुना सह्यभेदी अगने 'न्त' 'गाण' अने 'ई' प्रत्यय लगाडवाथी तेनुं **सह्यभेदी–वर्तमान–कृदंत** वने छे.

४ धातुना प्रेरक सह्यभेदी अगने 'न्त' 'माण' अने 'ई' प्रत्यय लगाडवाथी तेनुं **प्रेरक–सह्यभेदी–वर्तमान–कृदंत** बने छे.

५ वर्तमान कृदंतना 'न्त' 'माण' अने 'ई' प्रत्यय पर रहेता पूर्वना 'अ' नो विकल्पे 'ए' थाय छे

कर्तरि वर्तमान कृदंत

पु०	न०	स्त्री०
भण्–भणंतो, भणमाणो ।	भणत, भणमाण ।	भणती, भणता ।

(शौ० मा० भणंदो)

---

१ कृदनना रूपाख्यानोनी प्रक्रिया नामनी जेवी छे.

२ पालिमां पण वर्तमान कृदत वनाववा माटे सर्वत्र 'अत' अने 'मान' प्रत्ययनो उपयोग थाय छे —

गच्छतो, गच्छमानो — स्त्री० गच्छती, गच्छती.

करोंतो, कुब्वतो, कुरुमानो, करानो.

खादंतो, खादमानो

—पालिप्र० पृ० २४८–२४९.

३ आ प्रत्ययवाळु रूप स्त्रीलिंगमा ज वपराय छे,

[1]भणेंतो, भणेमाणो। भणेंत, भणेमाणं। भणेंती, भणेंता।
भणमाणी, भणमाणा।
भणेमाणी, भणेमाणा।
भणई, भणेई।

पा— पाअंतो, पाअमाणो। पाअंत, पाअमाणं। पाअंती, पाअंता।
(शौ० मा० पाअंदो)
पाएंतो, पाएमाणो। पाएंत, पाएमाणं। पाएंती, पाएंता।
पांतो, पामाणो। पांत, पामाणं। पांती, पांता।
पाअमाणी, पाअमाणा।
पाएमाणी, पाएमाणा।
पामाणी, पामाणा।
पाअई, पाएई।
पाई।

रु—रवंतो, (शौ० मा० [2]रवंदो) रवमाणो। रवंतं, रवमाणं। रवंती, रवंता।
रवेंतो रवेमाणो। रवेंत, रवेमाणं। रवेंती, रवेंता।
रवमाणी, रवमाणा।
रवेमाणी, रवेमाणा।
रवई, रवेई।

हृ हरंतो (शौ० मा० हरंदो) हरमाणो। हरंत हरमाणं। हरंती, हरंता।
हरेंतो हरेमाणो। हरेंत हरेमाणं। हरेंती हरेंता।
हरमाणी, हरमाणा।
हरेमाणी हरेमाणा।
हरई, हरेई।

---

१ भणंतो— [illegible] पृ० ४
२ रवंतो + [illegible] पृ० १५ [illegible]

वृप्–वरिसंतो, (शौ०मा०वरिसंदो) वरिसमाणो । वरिसंत. वरिसमाण।
वरिसनी,वरिसंता ।
वरिसेंतो.वरिसेमाणो । वरिसेंत वरिसेमाणं । वरिसेंती.वरिसेंता ।
वरिसमाणी,
वरिसमाणा ।
वरिसेमाणी,
वरिसेमाणा ।
वरिसई. वरिसेई ।

नी–नेंतो [2](नेंदो शौ०मा०) नेमाणो। नेंत.नेमाणं । नेंती, नेंता ।
नेमाणी नेमाणा ।
नेई ।

तृस्–तूसतो, (शौ०मा०तूसदो) तूसमाणो । तूसतं, तूसमाण ।
तूसती, तूसंता ।
तूसेंतो, तूसेमाणो । तूसेंत. तूसेमाणं । तूसेंती, तूसेंता ।
तूसमाणी, तूसमाणा ।
तूसेमाणी, तूसेमाणा ।
तूसई, तूसेई ।

दा–[3]देंतो (शौ०मा०देंदो) देमाणो । देंत, देमाण । देंती, देंता ।
देमाणी, देमाणा ।
देई ।

---

१ वरिसतो + वरिशदो – जूओ पृ० २७ स–श
ए प्रमाणे तूशदो,
शुश्शूशदो,
शोशविंदो वगेरे।

२ जूओ पृ० २४६ नि० ६

३ दा+अ+अंतो=दा+ए–न्तो=देंतो ।
दा+अ+माणो=दा+ए+माणो=देमाणो ।

पल्–पलंतो, पल्लमाणो। पलंतं, पल्लमाण। पलंती, पलंता।

(स्त्री० मा० पलंदो)

पलेंतो, पलेमाणो। पलेंतं, पलेमाण। पलेंती, पलेंता।

पल्लमाणी, पल्लमाणा।

पलेमाणी, पलेमाणा।

पलई, पलेई।

सिद्–सिज्जंतो, सिज्जमाणो। सिज्जंत, सिज्जमाण। सिज्जंती, सिज्जंता।

(स्त्री० मा० सिज्जंदो)

सिज्जेंतो, सिज्जेमाणो। सिज्जेंतं, सिज्जेमाण। सिज्जेंती, सिज्जेंता।

सिज्जमाणी, सिज्जमाणा।

सिज्जेमाणी, सिज्जेमाणा।

सिज्जई, सिज्जेई।

स्मर { तुर–[१]तुरंतो, तुरमाणो। तुरंत, तुरमाण। तुरंती, तुरंता।
तूर (स्त्री०मा० तुरंदो)

तुरेंतो, तुरेमाणो। तुरेंतं, तुरेमाण। तुरेंती, तुरेंता।

तुरमाणी, तुरमाणा।

तुरेमाणी, तुरेमाणा।

तुरई, तुरेई।

शुश्रूष्–सुस्सूसंतो, (स्त्री० मा० सुस्सूसंदो) [२]सुस्सूसमाणो।

मानक्ष्य्–माणप्पंतो, (स्त्री० मा० लालप्पंदो) लालप्पमाणो।

(पै० ळाळप्पंतो)

गुरुकाय –गरुभंतो, (स्त्री० मा० गरुभंदो) गरुभमाणो।

---

१ 'तुरंतो' नी पेठे 'तूरंतो' वगेरे रूपो पण करी लेवां

सुस्सूसंतं, सुस्सूसंती वगेरे रूपो पण करी लेवां

३ जुओ पृ २६ म—छ

४ 'गुरुकायते' नामधातुनुं रूप छे ए उपरथी 'गुरुकाय' ए वर्तमान कृदंतनुं अंग बन्युं छे

प्रेरक कर्तरि वर्तमान कृदंत

कर—कारंतो[१], (शौ० मा० कारदो) कारमाणो ।
कारेंतो, कारेमाणो ।
करावंतो, करावमाणो ।
करावेंतो, करावेमाणो ।
शुष—सोसविंतो, (शौ० मा० सोसविंदो) सोसतो, सोसेंतो,
सोसावंतो, सोसावतो
सोसविमाणो, सोसमाणो, सोसेमाणो, सोसावमाणो,
सोसावेमाणो इत्यादि.

सह्यभेदी वर्तमान कृदंत

भण—भणिज्जतो, भणिज्जमाणो, भणीअतो, भणीअमाणो । पु०—
(शौ० मा० भणिज्जंदो) ([२]प० भनिय्यतो)
भणिज्जंतं,–ज्जमाण, भणीअंतं,–अमाण । न०—
भणिज्जंती,–ता, ज्जई, भणीअंती,–ता, –णीअई } स्त्री०—
भणिज्जमाणी–णा, भणीअमाणी, भणीअमाणा । }

पुं०— न०— स्त्री०—

हन्—हम्मतो, हम्ममाणो, हम्मत, हम्ममाण, हम्मती, ता,
हम्ममाणी,णा,हम्मई ।

---

१ ‘ कार ’ अंग उपरथी कारती, कारेई, कारमाणी, कारत वगेरे रूपो उपजावी लेवा

२ जूओ पृ० २९१ पैशाचीनी विशेषता.

३ जूओ पृ० २३ ण–न.

प्रेरक सप्रभेदी कृदंत

(प्रेरक सप्रभेदी अंग बनाववानी प्रक्रिया ' प्रेरकसप्रभेद ' ने जणावतां जणावी छे ')

कर—कराचि + ईअ—करावीअंतो,—अमाणो, इत्यादि ।

(शौ० मा० करावीअंदो) (पै० कराविय्यतो)

कर—करावि + इज्ज— कराविज्जंतो, कराविज्जमाणो, इत्यादि ।

कर—कार + ईअ— कारीअंतो, कारीअमाणो, इत्यादि ।

कर—कार + इज्ज— कारिज्जंतो, कारिज्जमाणो, इत्यादि ।

चि— चिव्व + आवि— चिव्वाविंतो, चिव्वाविज्जमाणो, इत्यादि ।

प्राकृत अने पैशाचीमां वर्तमान कृदंतनां रूपो सरखां थाय छे, शौरसेनी अने मागधीमां जे विशेषता छे ते उदाहरणो सामे जणावी छे, अपभ्रंशमां शौरसेनी अने प्राकृत प्रमाणे समजवानुं छे

शौरसेनी, मागधी के पैशाचीनां उदाहरणो मात्र एक ज लिंगमां मूकेलां छे पण अभ्यासीए एनां त्रणे लिंगी रूपो पोतानी मेळे समजी लेवां

पैशाचीमां सप्रभेदी वर्तमान कृदंतनी विशेषता जणावेली छे

(कोई पण भाषानुं रूप करती वखते ' वर्ण-विकार ' ना नियमो लक्ष्यमां राखवा)

भूतकृदंत

कर्तरि भूतकृदंत—सप्रभेदी भूतकृदंत

---

१ जुओ पृ० ३०४ प्रेरकसप्रभेद

१ धातुना अंगने 'अ' 'द' अने 'त' लागवाथी तेनुं (बन्ने जातनुं) भूतकृदंत बने छे.

२ 'अ' 'द' अने 'त' प्रत्यय पर रहेतां पूर्वना 'अ' नो 'इ' थाय छे. ('द' शौरसेनी, मागधी अने अपभ्रंशमां वपराय छे अने 'त' पैशाचीमा वपराय छे.)

कर्तरि भू०कृ०—गम+अ=गमिओ गमिदो, गमितो (गतः)

चल+अ=चलिओ चलिदो, चलितो(चलितः)इत्यादि.

सह्यभेदी भू०कृ०—कर+अ=करिओ करिदो, करितो कडो (कृतः कटः)

पढ+अ=पढिओ पढिदो, पढितो गथो (पठितो ग्रन्थः) इत्यादि.

हस+अ=हसिअ हसिदं, हसितं (हसितम्)

लस+अ=लसिअ लसिदं, लसितं (लसितम्)

तुर+अ=तुरिअ तुरिदं, तुरितं (त्वरितम्) इत्यादि.

सुस्सूस+अ=सुस्सूसिअ सुस्सूसिदं, सस्सूसितं (शुश्रूषितम्)

चकम+अ=चंकमिअं चकमिदं, चंकमितं (चङ्क्रमितम्)

झा+अ=झाय झाद, झातं (ध्यातम्)

---

१ प्राकृतमा भूतकृदतने माटे मात्र 'त (अ)' प्रत्यय वपराय छे, पालिमा ए 'त' उपरात संस्कृतना 'क्तवतु' नी पेठे बीजो 'तवतु' प्रत्यय पण वपराय छेः

त—हुतो (हुतः)

तवतु-हुतवा (हुतवान्) स्त्री० हुतवती (हुतवती)

—भूतकृदतने लगती पालिनी प्रक्रिया संस्कृतनी प्रक्रिया साथे मळती आवे छे—पालि प्र० पृ० २५१–२५३

सु +अ=सुअ सुर्द, सुत (सूनम्)
हू +अ=हूअं हूर्द, हूत (भूतम्)

प्रेरक भू० कृ०—

१ धातुने प्रेरणासूचक 'आवि' प्रत्यय लगाड्या पछी अथवा धातुना उपान्त्य 'अ' नो दीर्घ कर्या पछी भूतकृदंतनो 'अ' प्रत्यय लगाडवाथी तेनुं प्रेरक भूतकृदंत बने छे

कर– करावि+अ–कराविअं करावित, करावितं (कारितम्)
 कारि+ अ–कारिअं कारिद, कारितं

हस– हसावि+अ–हसाविअं हसाविदं, हसावितं (हासितम्)
 हासि+ अ–हासिअं हासिदं, हासितं इत्यादि

आर्ष प्रयोगोमां के अर्वाचीन प्राकृतमां केटलेक स्थळे संस्कृतमां सिद्धरूपो उपरथी पण भूतकृदंतनां रूपो बनाववामां आव्यां छे

गतम्– गय ।
मतम्– मयं ।
कृतम्– कयं ।
हृतम्– हयं ।
मृतम्– मयं ।
मितम्– मिअं ।
तप्तम्– तत्तं । वगेरे

भविष्यत्कृदंत—

धातुना अगने स्संत' 'स्समाण' अने 'स्सई' प्रत्यय लगा-

१ जुओ धातु ४१–त=द
२ स्स + अंत = स्संत । स्स + माण = स्समाण ।
 स्स + ई = स्सई जुओ पृ २९९ वर्तमानकृदंत

डवाथी तेनुं भविष्यत्कृदंत[1] बने छे

करिष्यन्–करिस्सतो (शौ० मा० करिस्संदो) इत्यादि ।

करिष्यमाणः–करिस्समाणो इत्यादि ।

हेत्वर्थकृदंत

१ धातुना अंगने 'तुं' 'दु' अने 'त्तए' प्रत्यय लगाडवाथी तेनुं हेत्वर्थकृदत[2] बने छे.

२ उपर जणावेला त्रणे प्रत्ययो ('तुं' 'दुं' अने 'त्तए') पर रहेता पूर्वना 'अ' नो 'इ' अने 'ए' थाय छे.

('दुं' शौरसेनी, मागधी अने अपभ्रंशमां वपराय छे अने प्राकृत तथा पैशाचीमा 'तुं' वपराय छे.)

---

१ भविष्यत्कृदंतना पालिरूपो आ प्रमाणे छेः

–गमिस्सं (गमिष्यन्) स्त्री–गमिस्सती
गमिस्संती

करिस्सं (करिष्यन्)
चरिस्स (चरिष्यन्)

'गमिष्यन्' वगेरे सिद्धरूपोने छेडे रहेला 'न्' नो अनुस्वार करवाथी पालिना 'गमिस्स' वगेरे रूपो तैयार थयेला छे–पालिप्र० पृ० २४८–२४९

२ पालिभाषामा हेत्वर्थकृदंत करवाने माटे धातुने 'तु' 'तवे' 'ताये' अने 'तुये' प्रत्ययो लगाडवामा आवे छे

मंतु । कातवे (कर्तुम्) नेतवे (नेतुम्)
दक्खिताये (द्रष्टुम्) गणेतुये (गणयितुम्) वगेरे.

—जूओ पालिप्र० पृ० २५७–२५८.

तुं—दु—

भण्—भण+तुं—भणिउं भणेउं, भणिदु, भनितु (भणितुम्—भणवाने माटे)
हस्—हस+तुं—हसिउं, हसेउ हसिदु, हसितुं (हसितुम्—हसवाने माटे)
हो—होअ—तु—होइउ, होएउं होइदु होइतु (भवितुम्—थवाने माटे)
भण् भणावि+तु—भणाविउं भणाविदु, भनावितु (भणाववा माटे)
कर-करावि+तु—कराविउं कराविदु, करावितुं (कराववा माटे)
कर-कार+तु कारिउं, कारेउ कारिदु, कारितुं (कराववा माटे)
हस्-हास+तुं-हासिउं, हासेउं हासिदुं, हासितुं (हसाववा माटे)
शुश्रूष्-सुस्सूस+तुं—सुस्सूसिउं, सुस्सूसेउ सुस्सूसिदु, सुस्सूसितुं
(शुश्रूषा करवा माटे)
चङ्क्रम्य चंकम+तुं—चंकमिउं, चंकमेउ चंकमिदु, चंकमितुं
(चंक्रमण करवा माटे) इत्यादि

अनियमित हेत्वर्थकृदंत

कृ + तु	—	का	+	उं	=	काउं	(कर्तुम्)
ग्रह् + तु	—	घेत्	+	तुं	=	घेत्तुं	(ग्रहीतुम्)
स्मर् + तु	—	सुर्	+	इउं	=	सुरिउं	(स्मरितुम्)
		सुर्	+	एउं	=	सुरेउं	
दृश् + तु	—	दट्	+	ठुं	=	दट्ठुं	(द्रष्टुम्)
मुच् + तुं	—	मोत्	+	तु	=	मोत्तुं	(मोक्तुम्)
मुष् + तुं	—	मोत्	+	तु	=	मोत्तुं	(मोष्टुम्)
रुद् + तु	—	रोत्	+	तुं	=	रोत्तुं	(रोदितुम्)
वच् + तुं	=	वोत्	+	तुं	=	वोत्तुं	(वक्तुम्)

* प्रेरकहेत्वर्थकृदंतनी रचना प्रेरक भूतकृदंतनी जेवी ज छे

[1]त्तए

[2]कर्	–	कर + त्तए	=	करेत्तए / करित्तए	(कर्तुम्)
सिज्झ्	–	सिज्झ + त्तए	=	सिज्झित्तए	(सेद्धुम्)
उववज्ज्	–	उववज्ज + त्तए	=	उववाज्जित्तए	(उपपत्तुम्)
विहर्	–	विहर + त्तए	=	विहरित्तए	(विहर्तुम्)
[3]पास्	–	पास + त्तए	=	पासित्तए	(द्रष्टुम्)
गम्	–	गम + त्तए	=	गमित्तए	(गन्तुम्)
[4]पव्वज्	–	पव्वज + त्तए	=	पव्वइत्तए	(प्रव्रजितुम्)
आहर्	–	[5]आहार + त्तए	=	आहारित्तए	(आहर्तुम्)
दल्	–	दल + इत्तए	=	[6]दलइत्तए	(दातुम्)
[7]अच्चासाद्	–	अच्चासाद + त्तए	=	अच्चासादेत्तए	(अत्याशातयितुम्)

१ विशेषे करीने आ प्रत्ययनो उपयोग आर्षग्रंथोमा थएलो छे. वैदिक संस्कृतना अने पालिना तुमर्थक 'तवे' प्रत्ययनी साथे आ 'त्तए' प्रत्ययनी विशेष समानता छे (जूओ पाणिनि–३–४–९ वैदिक प्र० तथा पृ० ३०७ नी १ टिप्पणी.

२ " अंत करेत्तए " " सिज्झित्तए "" देवत्ताए उववज्जित्तए " " भुजमाणे विहरित्तए "–भगवतीसू० श० ७, उ० ७ पृ० ३११ स०

३ रूवाइ पासित्तए" देवलोगं गमित्तए "–भगवतीसू० श० ७, उ० ७ पृ० ३१२ स०.

४ " पवजाए पव्वइत्तए " " अप्पणा आहारित्तए " "–सुणयाणं दलइत्तए "–भगवतीसू० श० ३, उ० २ पृ० १७१ स०.

५ आर्षताने लीधे 'हर्' नो 'हार' थयो छे.

६ आर्षताने लीधे अहीं 'इ' आगमरूपे थयो छे.

७ " सयमेव अच्चासादेत्तए "–भगवतीसू० श० ३, उ० २ पृ० १७२ स०.

समभिलोक्— समभिलोय + त्तए = समभिलोएत्तए (समभिलो-
कितुम्)

अपभ्रंश

धातुना अंगने 'एवं' 'अण' 'अणह' 'अणहिं' 'एप्पि' 'एप्पिणु' 'एवि' अने 'एविणु' प्रत्यय लगाडवाथी अपभ्रंशनां हेत्वर्थकृदन्त बने छे

एवं—

चय्	+	एव	=	चएव	(त्यक्तुम्)
दा	+	एव	=	देव	(दातुम्)

अण—

भुंज्	+	अण	=	भुंजण	(भोक्तुम्)
कर	+	अण	=	करण	(कर्तुम्)

अणहं—

सेव्	+	अणहं	=	सेवणहं	(सेवितुम्)
भुंज्	+	अणह	=	भुंजणहं	(भोक्तुम्)

अणहिं—

मुच्	+	अणहिं	=	मुंचणहिं	(मोक्तुम्)
भुज्	+	अणहिं	=	भुंजणहिं	(भोक्तुम्)

एप्पि—

कर्	+	एप्पि	=	करेप्पि	(कर्तुम्)
जि	+	एप्पि	=	जेप्पि	(जेतुम्)

---

८ "तरित्तिरिति समभिलोएत्तए"—भगवतीसू० श० १, उ० २ पृ० ११८ म,

एप्पिणु—

कर्	+	एप्पिणु	=	करेप्पिणु	(कर्तुम्)
चय्	+	एप्पिणु	=	चएप्पिणु	(त्यक्तुम्)

एवि—

कर्	+	एवि	=	करेवि	(कर्तुम्)
पाल्	+	एवि	=	पालेवि	(पालयितुम्)

एविणु—

कर्	+	एविणु	=	करेविणु	(कर्तुम्)
ला	+	एविणु	=	लेविणु	(लातुम्)

केटलेक स्थळे सस्कृतना सिद्ध रूपो उपरथी पण हेत्वर्थकृदंतना रूपोने बनावेला छे.

लब्धुम् — लद्धुं ।
रोद्धुम् — रोद्धुं ।
योद्धुम् — जोद्धुं ।
कर्तुम् — [1]कट्टु । वगेरे

संबंधकभूतकृदंत—

१ धातुना अगने 'तु' 'अ' 'तूण' 'तुआण' '[2]इत्ता'

---

१ जूओ पानु ३५ र्त–ट्ट नि० २९

२ 'इत्ता', 'इत्ताण', 'आय' अने 'आए' प्रत्ययनो उपयोग खास करीने आर्षप्राकृतमा थएलो छे. पालिमा आ अर्थमा 'त्वा' (क्याय 'इत्वा' (आर्षप्रा०–'इत्ता') 'त्वान' (क्याय 'इत्वान') (आर्षप्रा०–'इत्ताण') अने 'तून' (प्रा० 'तून' के 'ऊण') प्रत्ययनो उपयोग थाय छे—

त्वा—कत्वा, करित्वा (आर्षप्रा० करित्ता) (कृत्वा)
गत्वा (गत्वा)

'इत्ताण' 'आय' अने 'आए' प्रत्यय लगाडवाथी तेनुं संबंधक भूतकृदंत बने छे

शौरसेनी अने मागधीमां संबंधकभूतकृदंत करवा माटे धातुने 'इय' अने 'दूण' प्रत्यय लागे छे तथा प्राकृतना 'त'कारादि प्रत्ययो पण 'द'कारादि करीने लगाडाय छे अने 'इत्ता'

हंत्वा (हत्वा)

चइत्ता } (हित्वा)
जहत्ता } (हात्वा)

छिंदित्ता (आर्षमां छिंदित्ता) (छित्वा)

मुंचित्ता (,, मुंचित्ता) (मुक्त्वा)

चिनित्ता (,, चिणित्ता) (चित्वा)

पापुणित्ता (आर्षमां पापुणित्ता) (प्राप्य)

त्वान— कत्वान
गंत्वान
हत्वान
चइत्वान (आर्षमां चइत्ताण)

तून— कतून
गन्तून
हंतून

संस्कृतमां जेम उपसर्गवाळा धातुने माटे 'क्त्वा' ने बदले 'य' प्रत्यय छे तेम पालिमां (पालिमां उपसर्ग होवानो कांई नियम नथी) पण बनेलु छे: उपनीय (नी + त्वा)
अभिवादिय (वन्द् + इत्वा)
अभिञ्ञाय (ज्ञा + त्वा)

आर्षप्राकृतमां पण 'आय' अने 'आए' छेडावाळां जेम भूतकृदंतो मळे छे ते आ पालिनां 'य' छेडावाळां रूपो साथे मळतां आवे छे—पालि प्रा० पृ २५४-२५६

'इत्ताण' प्रत्ययो पण वपराय छे.

पैशाचीमां ए अर्थमा 'तून' प्रत्यय वपराय छे.

अपभ्रशमा ए अर्थमा 'इ' 'इउ' 'इवि' अने 'अवि' तथा 'एप्पि,' 'एप्पिणु,' 'एवि' अने 'एविणु' प्रत्ययनो व्यवहार थाय छे.

२ अपभ्रंश सिवायना उपर जणावेला बीजा प्रत्ययो पर रहेता प्रयोगानुसारे पूर्वना 'अ' नो 'इ' अने 'ए' थाय छे

३ केटलेक ठेकाणे प्राकृतना 'त'कारादि प्रत्ययोना 'त' नो लोप पण थइ जाय छे (जूओ असयुक्त 'कादि' लोप पृ० १० नि० २)

४ उपर जणावेला प्रत्ययोमा जे प्रत्ययो 'ण' छेडावाळा छे तेने अंते विकल्पे अनुस्वार थाय छे.

अपवाद—शौरसेनी

शौरसेनीमा 'कृ' अने 'गम्' धातुनु संबंधक भूतकृदत 'कडुअ' अने 'गडुअ' बने छे: (कृ + अडुअ = कडुअ—कृत्वा (गम् + अडुअ = गडुअ—गत्वा)

अपवाद—पैशाची

'ष्ट्वा' छेडावाळा सस्कृत रूपोनु सबंधक भूतकृदंत करवा माटे पैशाचीमा ए 'ष्ट्वा' ने बदले 'द्धून' अने 'त्थून' वापरवामा आवे छे:

नद्धून, नत्थून (स० नष्ट्वा)

तद्धून, तत्थून (सं० तष्ट्वा) वगेरे

अपवाद—अपभ्रंश

मात्र एक 'गम्' धातुनुं संबंधक भूतकृदत करवा माटे अप-

अंशना उपर्युक्त प्रत्ययो लगाडवा उपरांत 'प्पि' अने 'प्पिणु' प्रत्ययो पण लगाडवाना छे

गम् + प्पि = गम्पि – गत्वा ।
गम् + प्पिणु = गम्पिणु – गत्वा ।

भाषावार उदाहरणो

प्राकृत

हस– हस + तु = हसिउं, हसेउं, (हसित्वा)
हो– होअ + तु = होइउं, होएउं, (भूत्वा)
हस्– हस + अ = हसिअ, हसेअ, (हसित्वा)
हो– होअ + अ = होइअ, होएअ, (भूत्वा)
हस्– हस + तुण = हसिऊण, हसिऊणं, हसेऊण, हसेऊणं (हसित्वा)
हो– होअ + तूण = होइऊण, होइऊणं, होएऊण, होएऊणं (भूत्वा)
हस्– हस + तुआण = हसिउआण, हसिउआणं, हसेउआण, हसेउआणं (हसित्वा)
हो– होअ + तुआण = होइउआण, होइउआणं, होएउआण, होएउआणं (भूत्वा)
भण्– भणावि + तु = भणाविउं (भाणयित्वा)
,, + अ = भणाविअ
, + तूण = भणाविऊण भणाविऊणं
+ तुआण = भणाविउआण भणाविउआणं

१ आ प्रेरक संबंधक भूतकृदंत छे अने एनी रचना प्रेरक मूळ कृदंतनी जेवी छे

भण्–भाण + तुं = भाणिउ, भाणेउ
,, + अ = भाणिअ, भाणेअ
,, + तूण= भाणिऊण, भाणिऊणं, भाणेऊण, भाणेऊणं
,, + तुआण, = भाणिउआण, भाणिउआण, भाणेउआण,
भाणेउआणं

कर–करावि+ तुं = कराविउं (कारयित्वा)
,, + अ = कराविअ
,, + तूण= कराविऊण, कराविऊणं
,, + तुआण,=कराविउआण, कराविउआणं
,, कार + तु = कारिउं, कारेउ
,, + अ = कारिअ, कारेअ
,, +तूण = कारिऊण,कारिऊणं, कारेऊण, कारेऊणं
,, तुआणं,कारिउआण.कारिउआणं,कारेउआण,कारेउआण

शुश्रूष्–सुस्सूस + तुं = सुस्सूसिउं, सुस्सूसेउं
,, + अ = सुस्सूसिअ, सुस्सूसेअ
,, + तूण= सुस्सूसिऊण सुस्सूसिऊणं, सुस्सूसेऊण,
सुस्सूसेऊण
,, +तुआण=सुस्सूसिउआण, सुस्सूसिउआण, सुस्सूसेउआण
सुस्सूसेउआणं.

चङ्क्रम्य–चंकम+ तुं = चंकमिउं, चंकमेउ
,, + अ = चंकमिअ, चंकमेअ
,, + तूण = चकमिऊण, चकमिऊणं, चंकमेऊण, चंकमेऊण
,, +तुआण=चकमिउआण, चकमिउआण, चकमेउआण,
चकमेउआणं.

कर– इत्ता = करित्ता (कृत्वा)
कर– इत्ताण = करित्ताण, करित्ताण
कह– इत्ता = कहित्ता, (कथयित्वा)
कह– इत्ताण = कहित्ताण, कहित्ताण
गम– इत्ता = गमित्ता, (गत्वा)
गम– इत्ताण = गमित्ताण, गमित्ताणं
गह+ आय = गहाय (गृहीत्वा)
सपेह+आए = सपेहाए (सम्प्रेक्ष्य)
आया+आए = आयाए (आदाय)

शौरसेनी, मागधी—

हो + इय = हविय, होत्ता (भूत्वा)
,, + दूण = होदूण ,,
पढ + इय = पढिय, पढित्ता (पठित्वा)
पढ + दूण = पढिदूण ,
रम + इय = रमिय, रत्ता (रन्त्वा)
रम + दूण = रंदूण ,,

पैशाची—

गम् + तून = गतून (गत्वा)
रम् + तून = हसितून (हसित्वा)
पढ + तून = पढितून (पठित्वा)
कथ + तून = कथितून (कथयित्वा)

---

१ भगवतीसूत्र श. ७ उ. २—" रयणाणि गहाय " " पडिग्गाहियं गहाय —पृ. १७–१०१

अपभ्रंश—

लह + इ = लहि (लब्ध्वा)
कर + इउ = करिउ (कृत्वा)
कर + इवि = करिवि (,,)
कर + अवि = करवि (,,)
कर + एप्पि = करेप्पि (,,)
कर + एप्पिणु= करेप्पिणु (,,)
कर + एविणु = करेविणु (,,)
कर + एवि = करेवि (,,)

अनियमित संबंधक भूतकृदंत (प्राकृत)

कृ + तुं = काउं,
,, + तूण = काऊण, काऊणं,
,, + तुआण=काउआण, काउआण
ग्रह् + तु = घेत्तु,
,, + तूण = घेत्तूण, घेत्तूण,
,, + तुआण = घेत्तुआण, घेत्तुआणं.
त्वर् + तु = तुर + उं = तुरिउं, तुरेउ,
,, + अ = ,, + अ = तुरिअ, तुरेअ,
,, + ऊण = ,, + ऊण = तुरिउण, तुरिऊण, तुरेऊण, तुरेऊण.
,, + उआण = ,, + उआण= तुरिउआण, तुरिउआणं, तुरेउ-आण, तुरेउआणं.
दृश् + तुं = दट्ठ + उ = दट्ठु
, + तूण = दट्ठ + ऊण = दट्ठूण, दट्ठूण

,, + तुआण = दट्ठ + उआण=दट्ठुआण, दट्ठुआणं

मुंच् + तुं = मोत् + तुं = मोत्तुं,

,, + तूण = ,, + तूण = मोत्तूण, मोत्तूणं,

,, + तुआण = ,, + तुआण= मोत्तुआण, मोत्तुआण

मुष् + तुं = मोत् + तुं = मोत्तुं

,, + तूण = ,, + तूण = मोत्तूण, मोत्तूणं

,, + तुआण= ,, + तुआण = मोत्तुआण, मोत्तुआणं

रुद् + तुं = रोत् + तुं = रोत्तुं

,, + तूण = रोत् + तूण = रोत्तूण, रोत्तूणं

,, + तुआण = रोत् + तुआण = रोत्तुआण, रोत्तुआणं

वच् + तुं = वोत् + तुं = वोत्तुं,

,, + तूण = वोत् + तूण = वोत्तूण, वोत्तूणं,

,, + तुआण= वोत् + तुआण = वोत्तुआण, वोत्तुआण

वन्द् + तुं = वन्दिउं, वंदिउं

[संस्कृतनां सिद्ध संबंधक भूतकृदंतो पण थोडा फेरफार साथे प्राकृतमां वपरायां छे

आदाय—आयाय	वन्दित्वा—वंदित्ता
गत्वा—गत्ता, गच्चा	विप्रमहाय—विप्पजहाय
ज्ञात्वा—नच्चा	श्रुत्वा—सोच्चा
नत्वा—नच्चा	सुप्त्वा—सुत्ता
बुद्ध्वा—बुज्झा	संहृत्य—साहट्टु
मुक्त्वा—मोच्चा	हत्वा—हंता
मत्वा—मत्ता, मच्चा	

इत्यादि]

[1]विध्यर्थ–कृदंत—

विध्यर्थ कृदंतनी साधना विध्यर्थ कृदतना सस्कृत सिद्ध रूपो उपरथी करवानी छे, तो पण तेने लगता केटलाक प्राकृत प्रत्ययो आ रीते छे.

१ धातुने 'तव्व,' (शौ० 'दव्व') 'अणिज्ज' अने 'अणीअ' [2]'प्रत्यय' लगाडवाथी तेनुं विध्यर्थ–कृदंत बने छे.

२ 'तव्व' अने 'दव्व' प्रत्यय पर रहेतां प्रायः पूर्वना 'अ' नो 'इ' तथा 'ए' थाय छे.

---

१ विध्यर्थ कृदतो सप्तभेदी होय छे.

२ विध्यर्थ कृदत माटे पालिमा 'तव्य,' 'तय्य,' 'य, अने 'अनीय' प्रत्यय वपराय छे:—

तव्य—	भवितव्व	(भवितव्यम्)
	बुज्झितव्व	(बोद्धव्यम्)
	सयितव्व	(शयितव्यम्)
तय्य—	ञातय्य	(ज्ञातव्यम्)
	पत्तय्य	(प्राप्तव्यम्)
	दट्ठय्यं	(द्रष्टव्यम्)
य—	देय्य	(देयम्)
	मेय्यं	(मेयम्)
	कच्च	(कृत्यम्)
	भच्चो	(भृत्यः)
वृद्धिवाळो य	कारिय	(कार्यम्)
	हारिय	(हार्यम्)
अनीय—	भवनीय	
	सयनीयं	
	पापणीयं	(प्रापणीयम्)

—पालिप्र० पृ० २५४

३ विध्यर्थ–कृदंतने लागता संस्कृत 'य' प्रत्ययने स्थाने प्राकृतमां 'ज्ज' पण लागे छे

सिद्ध रूपो उपरथी बनतां विध्यर्थ–कृदंतो–

कार्यम् – कज्जं । वाच्यम् – वज्जं ।
कृत्यम् – किच्चं । वाक्यम् – वक्कं ।
ग्राह्यम् – गेज्झं । मन्यम् – मज्जं ।
गुह्यम् – गुज्झं । भृत्य – भिच्चो ।
वर्ज्यम् – वज्जं । भार्या – भज्जा ।
वध्यम् – वज्झं । अर्य – अज्जो ।
मध्यम् – मज्झं । आर्यम् – अज्जं ।
अवद्यम् – अवज्जं । पाठ्यम् – पढं । इत्यादि ।

तव्य–हस–हसिअव्वं, हसेअव्व, हसितव्वं, हसेतव्वं । हसाविअव्व, हसावितव्वं ।

शौ० हसिदव्वं, हसेदव्व, हसाविदव्वं ।
सुस्सूसितव्वं, सुस्सूसेतव्वं, सुस्सूसिअव्वं, सुस्सूसेअव्वं ।
चंकमितव्वं, चंकमेतव्व, चंकमिअव्वं, चंकमेअव्व ।
हो–होतव्वं, होअव्व । चि–चिणिअव्वं, चिणेअव्वं,
ज्ञा–नातव्व, नायव्वं । चिणितव्व, चिणेतव्व ।

अणिज्ज / अणीअ — हसणिज्जं, हसणीअं, हसावणिज्जं, हसावणीअं,
करणिज्जं, करणीअं,
सुस्सूसणिज्ज, सुस्सूसणीअं,
चंकमणिज्जं, चंकमणीअं,
वय–वयणिज्ज वयणीअ । इत्यादि ।

य–पेयम्–पेज्जं, पेअ । पेया–पेज्जा, पेआ ।
गेयम्–गेज्जं, गेअं । इत्यादि ।

—अनियमित विध्यर्थ कृदंत—

ग्रह्–तव्व–घेत्तव्व ।	रुद्–तव्व–रोत्तव्वं ।
भुज्–तव्व–भोत्तव्वं ।	कृ–तव्व–कातव्व
वच्–तव्व–वोत्तव्वं ।	कायव्व
मुच्–तव्व–मोत्तव्व ।	त्वर–तव्व–तुरिअव्व, तुरेअव्वं ।
दृश्–तव्व–दट्ठव्वं ।	तुरितव्वं, तुरेतव्व ।

विध्यर्थ कृदंत (अपभ्रंश)—

प्राकृतमा वपराता 'तव्व' प्रत्ययने बदले अपभ्रंशमा 'इएव्वउ,' एव्वउ ' अने ' एवा ' प्रत्यय वपराय छे:

कर	+	इएव्वउ	=	करिएव्वउ	–	कर्तव्यम् ।
कर	+	एव्वउं	=	करेव्वउ		
कर	+	एवा	=	करेवा		
मर	+	इएव्वउ	=	मरिएव्वउ	–	मर्तव्यम् ।
मर	+	एव्वउ	=	मरेव्वउ		
मर	+	एवा	=	मरेवा		
सह	+	इएव्वउं	=	सहिएव्वउ	–	सोढव्यम् ।
सह	+	एव्वउ	=	सहेव्वउं		
सह	+	एवा	=	सहेवा		
सो	+	एवा	=	सोएवा	–	स्वसव्यम् ।
जग्ग	+	एवा	=	जग्गेवा	–	जागरितव्यम् ।

कर्तरिकृदंत[1]

धातुने 'इर' प्रत्यय लगाडवाथी तेनुं कर्तृसूचक कृदंत बने छे

हस–इर–हसिरो (हसनार), हसिरा, री (हसनारी), हसिरं (हसनारुं) ।

हसाव–इर–हसाविरो (हसावनार)–रा, री (हसावनारी), रं (हसावनारुं) ।

त्वर–इर–तुरिरो (त्वरा करनार) इत्यादि

कर्तृसूचक कृदंतनी साधना, कर्तृसूचक कृदंतनां संस्कृत सिद्ध रूपो उपरथी पण थाय छे

पाचक –पायगो, पायओ । नायक –नायगो, नायओ । नेता–नेआ। कर्ता–कत्ता । वक्ता–वत्ता । भर्ता–भत्ता । कुम्भकार –कुंभआरो । कर्मकर–कम्मगरो । स्तनधय –थणधयो । परंतप –परतवो । लेखक–लेहओ इत्यादि ।

कर्तरिकृदंत (अपभ्रंश)

प्राकृतमां वपराएला 'इर' ने बदले अपभ्रंशमां 'अणअ' प्रत्यय लगाडवाथी कर्तृसूचक कृदंत बने छे

मार + अणअ = मारणअ = मारणउ – मारकः

बोल्ल + अणअ = बोल्लणअ = बोल्लणउ – वाचक

---

1 कर्तरिकृदंतनुं रूप बनाववा माटे पालिमां प्राकृतना 'इर' ने बदले केटलाक खास धातुथी 'ऊ' प्रत्यय वपराय छे अने एज अर्थनुं भूतकाळनुं रूप साधवा माटे साधारण रीते 'तावी' प्रत्यय वपराय छे–

ऊ – विदू (वेत्ता) स्त्री० विदुनी

तावी– भुत्तावी (भुक्तवान्) स्त्री भुत्ताविनी

–पालिप्र० पृ० १५०–१५१

वज्ज + अणअ = वज्जणअ = वज्जणउ – वादकः

भस + अणअ = भसणअ = भसणउ – भषकः

जा + अणअ = जाणअ = जाणउ – ज्ञायकः

प्रकरण १४

तद्धित

१ ' [1]तेनुं आ ' ए अर्थमा नामने ' केर ' प्रत्यय लागे छे अने अपभ्रंशमा ' [2]आर ' प्रत्यय लागे छे.

अस्मद् + केर = अम्हकेर (अस्माकमिदम् अस्मदीयम्)

अप० अम्हारु, महारु,

युष्मद् + केर = तुम्हकेर (युष्माकमिदम् युष्मदीयम्)

अप० तुम्हारु, तुहारु,

पर + केर = परकेर (परस्य इदम् परकीयम्)

राज + केर = रायकेरं (राज्ञः इदम् राजकीयम्)

२ ' [3]तेमा थएल ' ए अर्थमा नामने ' इल्ल ' अने ' उल्ल ' प्रत्यय लागे छेः

इल्ल—गाम + इल्ल = गामिल्लं (ग्रामे भवम्) स्त्री० गामिल्ली ।

---

१ संस्कृतनी पेठे पालिमा आ अर्थमा ' ईय ' प्रत्यय वपराय छे.

मदनीय (मदनस्य स्थानम्)—

पालिप्र० पृ० २६०

२ आ ' आर ' प्रत्यय प्रायः ' युष्मद् ' ' अस्मद् ' ' त्वत् ' अने ' मत् ' शब्दोने लागे छे.

३ 'तन्निश्रित' अर्थमा पालिमा ' ल्ल ' प्रत्यय वपराय छे

दुट्ठु निश्रितम् = दुट्ठुल्ल

वेदनिश्रितम् = वेदल्ल

पालिप्र० पृ० २६०

पुर + इल्ल = पुरिल्ल (पुरे भवम्) स्त्री० पुरिल्ली।
अधस् + इल्ल = हेट्ठिल्ल (अधो भवम्) स्त्री० हेट्ठिल्ली।
उपरि + इल्ल = उवरिल्ल (उपरि भवम्)

उल्ल—आत्म + उल्ल = अप्पुल्ल (आत्मनि भवम्)
तरु + उल्ल = तरुल्ल (तरौ भवम्)
नगर + उल्ल = नयरुल्ल (नगरे भवम्)

इत्यादि।

३ 'तेनी जेवु' ए अर्थमां नामने 'व्व' प्रत्यय लागे छे
महुरव्व पाडलिपुत्ते पासाया (मधुरावत् पाटलिपुत्रे प्रासादाः)

४ 'पणुं' अर्थमां नामने 'इमा' 'त्त' अने 'त्तण' प्रत्यय लागे छे अने अपभ्रंशमां 'प्पण' प्रत्यय पण लागे छे

पीण + इमा = पीणिमा (पीनत्वम्)
पीण + त्तण = पीणत्तण, पीण + त्त = पीणत्तं।
पुप्फ + इमा = पुप्फिमा (पुष्पत्वम्)
पुप्फ + त्तण = पुप्फत्तण, पुप्फ + त्त = पुप्फत्तं।

अप० वड्ड + प्पण = वड्डप्पणु, वड्डत्तणु वगेरे (वृद्धत्वम्)
विहु + प्पण = विहुप्पणु, विहुत्तणु वगेरे (विभुत्वम्)

---

१ 'जात' अर्थमां पालिमां 'इम' प्रत्यय आवे छेः—
पश्चात् जात = पच्छिमो। उपरि जात = उपरिमो।
पुरा जातः = पुरिमो। अधो जात = हेट्ठिमो।
मध्ये जातः = मज्झिमो—

पालिप्र पृ २५९-२६

२ आ अर्थमां पालिमां 'त्तन (प्रा त्तण) प्रत्यय आवे छेः
पुथुज्जनस्स भावो पुथुज्जनत्तनं (पृथग्जनत्वम्)

पालिप्र पृ० २६१

५ 'वार' अर्थमां नामने '[१]हुत्त' (आर्ष-खुत्त[२]) प्रत्यय लागे छे:

एक + हुत्त = एगहुत्तं (एककृत्व:–एकवारम्)
द्वि + हुत्त = दुहुत्त (द्विवारम्)
त्रि + हुत्त = तिहुत्त (त्रिवारम्)
शत + हुत्त = सयहुत्तं (शतवारम्)
सहस्र + हुत्त = सहस्सहुत्तं (सहस्रवारम्)

६ 'वाळु' अर्थमा आवता नामने लागता 'मतु' प्रत्ययने स्थाने 'आल' 'आलु' 'इत्त' 'इर' 'इल्ल' 'उल्ल' 'मण' 'मंत' अने 'वत' प्रत्यय वपराय छे

आल– रस + आल = रसालो (रसवान्)
जटा + आल = जडालो (जटावान्)
ज्योत्स्ना+ आल = जोण्हालो (ज्योत्स्नावान्)
शब्द + आल = सद्दालो (शब्दवान्)
फटा + आल = फडालो (फटावान्)

---

१ स० कृत्वस्–कुत्त–खुत्त–हुत्त–जुओ खादिनो 'ह' पृ० १९.

२ 'वार' अर्थमा पालिमा 'क्खत्तुं' (स० कृत्वस्) प्रत्यय वपराय छे:

एकक्खत्तु (एकवारम्)
द्विक्खत्तु (द्विवारम्)
तिक्खत्तु (त्रिवारम्)

पालिप्र० पृ० २६१

आर्षप्राकृतमा आ अर्थमा 'खुत्त' (पालि–क्खत्तु) प्रत्यय पण आवे छे तिक्खुत्तो–

" तिक्खुत्तो आयाहिणपयाहिणं करेइ "–
भग० रा० पृ० २३५ प० २

" महावीर तिक्खुत्तो आयाहिणपयाहिण करेइ "–
(सू० द्वि० श्रु० अ० ७ पृ० ४२५ प० २ स०)

" पत्तो अणतक्खुत्तो " जीवविचारनी छेल्ली गाथा.

आलु–	ईर्ष्या	+	आलु	=	ईसालू	(ईर्ष्यावान्)
	दया	+	आलु	=	दयालू	(दयावान्)
	नेह	+	आलु	=	नेहालू	(स्नेहवान्)
	लज्जा	+	आलु	=	लज्जालू	(लज्जावान्)
					स्त्री० लज्जालुआ	(लज्जावती)
इत्त–	काव्य	+	इत्त	=	कव्वइत्तो	(काव्यवान्)
	मान	+	इत्त	=	माणइत्तो	(मानवान्)
इर–	गर्व	+	इर	=	गव्विरो	(गर्ववान्)
	रेखा	+	इर	=	रेहिरो	(रेखावान्)
इल्ल–	शोभा	+	इल्ल	=	सोहिल्लो	(शोभावान्)
	छाया	+	इल्ल	=	छाइल्लो	(छायावान्)
	याम	+	इल्ल	=	जामइल्लो	(यामवान्)
उल्ल–	विचार	+	उल्ल	=	वियारुल्लो	(विचारवान्)
	विकार	+	उल्ल	=	वियारुल्लो	(विकारवान्)
	श्मश्रु	+	उल्ल	=	मसुल्लो	(श्मश्रुमान्)
	दर्प	+	उल्ल	=	दप्पुल्लो	(दर्पवान्)
मण–	धन	+	मण	=	धणमणो	(धनवान्)
	शोभा	+	मण	=	सोहामणो	(शोभावान्)
	भी	+	मण	=	भीहामणो	(भीमान्)
मंत–	हनु	+	मंत	=	हणुमंतो	(हनुमान्)
	श्री	+	मंत	=	सिरिमंतो	(श्रीमान्)
	पुण्य	+	मंत	=	पुण्णमंतो	(पुण्यवान्)
वंत–	धन	+	वंत	=	धणवंतो	(धनवान्)
	भक्ति	+	वंत	=	भत्तिवंतो	(भक्तिमान्)

७ संस्कृतमां आवता 'तस्' प्रत्ययने स्थाने 'त्तो' अने 'दो' विकल्पे वपराय छे

सर्व + तस् = सव्वत्तो, सव्वदो, सव्वओ (सर्वतः)
एक + तस् = एकत्तो, एकदो, एकओ (एकतः)
अन्य + तस् = अन्नत्तो, अन्नदो, अन्नओ (अन्यत.)
किम् + तस् = कत्तो, कुदो, कुओ (कुत)
यत् + तस् = जत्तो, जदो, जओ (यतः)
तत् + तस् = तत्तो, तदो, तओ (तत.)
इदम् + तस् = इत्तो, इदो, इओ (इतः)

८ सस्कृतमा वपराता 'त्रप्' प्रत्ययने स्थाने प्राकृतमा 'हि', 'ह' अने 'त्थ' प्रत्यय वपराय छेः

यत् + त्र = जहि, जह, जत्थ (यत्र)
तत् + त्र = तहि, तह, तत्थ (तत्र)
किम् + त्र = कहि, कह, कत्थ (कुत्र)
अन्य + त्र = अन्नहि, अन्नह, अन्नत्थ (अन्यत्र)

९ 'अङ्कोठ' शब्द सिवाय बीजा शब्दने लागता 'तैल' प्रत्ययने स्थाने 'एल्ल' प्रत्यय वपराय छेः

कटु + तैल = कडुएल्लं (कटुतैलम्)
[अङ्कोठ + तैल = अकोल्लतेल्लं (अङ्कोठतैलम्)]

१० नामने स्वार्थमा 'अ,' 'इल्ल' अने 'उल्ल' प्रत्यय विकल्पे लागे छे :

अ– चन्द्र + अ = चंदओ, चदो (चन्द्रकः)
हृदय + अ = हिअयअं, हिअय (हृदयकम्)
वहुक + अ = बहुअय, वहुअ (वहुकम्)
पल्लव + इल्ल = पल्लविल्लो, पल्लवो (पल्लव)
पुरा + इल्ल = पुरिल्लो, पुरा (पुरा)

पित्तृ + उल्ल = पिउल्लो, पिआ (पिता)
हत्त + उल्ल = हत्युल्लो, हत्यो (हस्त)

विशेषता

पैशाचीमां स्वार्थिक 'अ' ने बदले संस्कृतनी पेठे 'क' वपराय छेः

सं० वदनकम्– प्रा० वयणय– पै० वतनक ।
" वतनके वतनकं समप्पेत्तून "
प्रा० व्या० पा० ४ सू० ३१४ पृ० ७०

अपभ्रंशमां स्वार्थमां 'अ,' 'अड,' 'उल्ल' 'अडअ', 'उल्लअ' अने 'उल्लडअ' प्रत्ययो[1] वपराय छे

दिट्ठ	+	अ	=	दिट्ठउ	(दृष्टक)
दोस	+	अड	=	दोसडु	(दोषकः)
कुडी	+	उल्ल	=	कुडुल्ली	(कुटिका)
हिअय	+	अडअ	=	हिअडउ	(हृदयकम्)
चूड	+	उल्लअ	=	चुडुल्लओ	(चूडकः)
बाहुबल	+	उल्लडअ	=	बाहुबलुल्लडउ	(बाहुबलक)

११ संस्कृतमां वपराता 'पणुं' अर्थवाळा (त्व, तल्) प्रत्ययो नामने लाग्या पछी तैयार थएल ए ज नामने स्वार्थमां एना ए ज प्रत्ययो फरीवार पण लागे छे –

मृदुक + त्व = मउअत्त + ता = { मउअत्तता / मउअत्तया (मृदुकत्वता)

१ प्राकृतरूपावतारमां 'अडड' 'डअअ' 'अड्डल' 'डुल्लअ' 'डडुल्ल' 'डुल्लडड' 'अडडुल्ल' 'अडुल्लडड' 'डडअल्ल' 'डुल्लअडड' 'अड्डुल्लअ' 'डुल्लडअ' आ रीते बार प्रत्ययो पण जणाव्या छे पृ ५–११–म ५.

अनियमित तद्धितांत रूपो

एक + सि = एक्कसि एक + सिअं = एक्कसिअ एक + इआ = एक्कइआ	}	(एकदा)
भ्रू + मया = भुमया भमया	}	(भ्रूः)

शनैः + इअ = सणिअ (शनैः)

उपरि + ल्ल = अवरिल्लो (उपरि)

ज + एत्तिअ = जेत्तिअं ज + एत्तिल = जेत्तिलं ज + एद्दह = जेद्दहं	}	(यावत्)

अप० जेवडु, जेत्तुलो

त + एत्तिअ = तेत्तिअं त + एत्तिल = तेत्तिल त + एद्दह = तेद्दहं	}	(तावत्)

अप० तेवडु, तेत्तुलो

एत + एत्तिअ = एत्तिअ एत + एत्तिल = एत्तिल एत + एद्दह = एद्दहं	}	(एतावत्) (इयत्)

अप० एवडु, एत्तुलो

क + एत्तिअ = केत्तिअं क + एत्तिल = केत्तिलं क + एद्दह = केद्दह	}	(कियत्)

अप० केवडु, केत्तुलो

पर + क्क = परक्क (परकीयम्)
राय + क्क = राइक्क (राजकीयम्)
अम्ह + एच्चय = अम्हेच्चय (अस्मदीयम्)
तुम्ह + एच्चय = तुम्हेच्चय (युष्मदीयम्)
सव्वंग + इअ = सव्वंगिओ (सर्वाङ्गीण)
पह + इअ = पहिओ (पान्थ)
अप्प + णय = अप्पणय (आत्मीयम्)

वैकल्पिक रूपो

नव + ल्ल = नवल्लो, नवो (नवक)
एक + ल्ल = एकल्लो, एक्को (एककः)
मनाक् + अय = मणय
मनाक् + इय = मणियं, मणा } (मनाक्)
मिश्र + आलिअ = मीसालिअं, मीसं (मिश्रम्)
दीर्घ + र = दीहरं, दीहं (दीर्घम्)
विद्युत् + ल्ल = विज्जुल्ला, विज्जू (विद्युत्)
पत्र + ल = पत्तलं, पत्तं (पत्रम्)
पीत + ल = पीअलं
पीवलं, पीअं } (पीतम्)
अन्ध + ल = अन्धलो, अन्धो (अन्ध)

संस्कृतनां सिद्ध तद्धितांत रूपो उपरथी पण प्राकृत रूपो बने छे —

धनिन् = धणी=धणी । तपस्विन् = तवस्सी = तवस्सी ।
आर्थिक = अत्थिओ । रामन्य = रायण्णो ।

आन्तिक = अत्तिओ । आर्षम् = आरिसं ।
कानीन = काणीणो । भैक्षम् = भिक्खं ।
मदीयम् = मईय । वाङ्मयम् = वम्मयं ।
पीनता = पीणया(शौ०पीणदा) कौशेयम् = कोसेयं ।
(पै०पीनता) पितामहः = पिआमहो ।

यदा = जया । तदा = तया ।
कदा = कया । अन्यदा = अण्णया ।
सर्वदा = सव्वया । सर्वथा = सव्वहा ।

इत्यादि.

धातुपाठ (परिशिष्ट)

आठमा अध्यायना चोथा पादमा आचार्य हेमचंद्र प्राकृत धातुओने आ रीते आपे छे.

सूत्रांक	अर्थनी दृष्टिए हेमचंद्रे मूकेलुं मूळ रूप	मूळ रूपना आदेशो
२	कथ् प्रा० कह्	वज्जर
		पज्जर
		उप्पाल
		पिसुण
		संघ
		बोल्ल
		चव
		जंप
३		णिव्वर (दु:खकथने)

४	जुगुप्स् प्रा० जुउच्छ	मुण दुगुच्छ दुगुञ्छ
५	बभुक्ष् प्रा० बुहुक्ख	णीरव
	वीभ	वोज्ज
६	ध्या प्रा० झा	झा
	गै	गा
७	ज्ञा	जाण मुण
८	उत् + ध्मा	धुमा
९	श्रत् + धा	सद्दह
१०	पा प्रा० पि	पिज्ज ल्हक पट्ट घोट्ट
११	उत् + वा प्रा० उव्वा	ओरुम्मा वसुआ
१२	नि + द्रा प्रा० निद्दा	ओहीर उंघ
१३	आ + घ्रा प्रा० अग्घा	आइग्घ
१४	स्ना प्रा० ण्हा	अब्भुत्त
१५	सम् + स्त्या	खा
१६	स्था	ठा थक्क चिट्ठ निरप्प (मा० चिष्ठ) निरप्प

१७	उत् + स्था	उट्ठ उक्कुक्कुर
१८	म्लै प्रा० मिला	वा पव्वाय
१९	निर् + मा	निम्माण निम्मव
२०	क्षि प्रा० झि	णिज्झर
२१	छाद प्रा० छाय	णुम नूम, णूम सन्नुम ढक्क ओम्वाल पव्वाल
२२	नि + वृ—निवार प्रा० निवार	णिहोड
	पात प्रा० पाड	,,
२३	दू	दूम
२४	धवल	दुम, दूम
२५	तुल	ओहाम
२६	विरेच प्रा० विरेअ	ओलुंड उल्लंड पल्हत्थ
२७	ताड	आहोड् विहोड
२८	मिश्र प्रा० { मीस मिस्स	वीसाल मेलव

२९	उत् + धूल प्रा० उद्धूल	गुंठ
३०	भ्राम प्रा० भाम	तालिअंट तमाड
३१	नाश प्रा० नास	विउड नासव हारव विप्पगाम पलाव
३२	दर्श प्रा० दरिस	दाव दस दक्खव
३३	उत् + घाट प्रा० उग्घाड	उग्ग
३४	स्पृह	सिह
३५	सम् + भाव	आसंघ
३६	उत् + नम् प्रा० उण्णाम	उत्थंघ उल्लाल गुलुगुंछ उप्पेल
३७	प्र + स्थाप प्रा० पट्ठव	पट्ठव पेण्डव
३८	वि+ज्ञप प्रा० विण्णव	वोक्क अवुक्क

३९	अर्प प्रा० अप्प	अल्लिव चच्चुप्प पणाम
४०	याप प्रा० जाव	जव
४१	प्लाव प्रा० पाव	ओम्वाल पव्वाल
४२	विकोश प्रा० विकोस	पक्खोड
४३	रोमन्थ	ओग्गाल वग्गोल
४४	कम प्रा० काम	णिहुव
४५	प्र+काश प्रा० पयाम	णुव्व
४६	कम्प	विच्छोल
४७	आ+रोप प्रा० आरोव	वल
४८	दोल	रंखोल
४९	रंज	राव
५०	घट प्रा० घड	परिवाड
५१	वेष्ट प्रा० वेढ	परिआल
५२	क्री	किण
	वि+क्री प्रा० विक्की	विक्के विक्किण
५३	भी	भा बीह
५४	आ+ली	अल्ली

		लम्बने च)
७१	कृ ,,	णीलुछ (निष्पाते आच्छोटने च)
७२	कृ ,,	कम्म (क्षुरकरणे)
७३	कृ ,,	गुलल (चाटुकरणे)
७४	स्मर प्रा० सर	झर झूर भर भल लढ विम्हर सुमर पयर पम्हूह
७५	वि+स्मृ	पम्हुस विम्हर वीसर
७६	व्या+हृ प्रा० वाहर	कोक्क, कुक्क पोक्क
७७	प्र+सृ प्रा० पसर	पयल्ल उवेहल्ल
७८	,,	महमह (गन्धप्रसरणे)
७९	नि+सृ प्रा० नीसर	णीहर नील्ल धाड वरहाड

८०	जागृ प्रा० जागर	जग्ग
८१	व्या + पृ प्रा० वावर	आअड्ड
८२	सं + वृ प्रा० संवर	साहर साहट्ट
८३	आ + दृ प्रा० आदर	सन्नाम
८४	प्र + हृ प्रा० पहर	सार
८५	अव + तृ + ओअर	ओह ओरस
८६	शक	चय तर तीर पार
८७	फक्क	थक्क
८८	श्लाघ	सलह
८९	खच	वेअड
९०	पच	सोल्ल पउल्ल
९१	मुच	छड्ड अवहेड मेल्ल उस्सिक्क रेअव णिल्लुञ्छ धंसाड

९२	,,	णिव्वल (दुःखमोचने)
९३	वञ्च	वेहव वेलव जूरव उमच्छ
९४	रच	उग्गह अवह विडविड्ड
९५	समा + रच	उवहत्थ सारव समार केलाय
९६	सिच	सिंच सिंप
९७	प्रच्छ	पुच्छ
९८	गर्ज	बुक्क
९९	,,	ढिक्क (वृषगर्जने)
१००	राज	अग्घ छज्ज सह रीर रेह
१०१	मस्ज	आउड्ड णिउड्ड बुड्ड खुप्प

१०२	पुम्ज	आरोल कमाल
१०३	लम्न	नीह
१०४	लिम	ओमुक्क
१०५	मृज प्रा० मज्ज	उम्मुस लुंछ पुछ पुस फुस पुस लुह हुल रोसाण
१०६	मज्ज	बेमय मुसुमूर मूर सूर मढ विर पविरम करन मीरंज
१०७	अनु + मज प्रा अणुवर्त	पडिअग्ग
१०८	अर्म	विरव -
१०९	गुम	गुंम गुम्म गुप्प

११०	भुज	भुज जिम जेम कम्म अण्ह समाण चमढ चड्डु
१११	उप + भुज	कम्मव
११२	घट	गढ
११३	सम् + घट	सगल
११४	स्फुट	मुर (हासस्फुटिते)
११५	मण्ड	चिंच चिंचअ चिंचिल्ल रीड टिविडिक्क
११६	तुड	तोड तुट्ट खुट्ट खुड उक्खुड उल्लुक्क णिलुक्क लुक्क उल्लूर

११७ घूर्ण	घुल घोल घुम्म पहल्ल
११८ वि + वृत् प्रा० विवट्ट	ढंस
११९ क्वथ प्रा० कढ	अट्ट
१२० ग्रन्थ	गंठ
१२१ मन्थ	घुसल विरोल
१२२ ह्लाद	अवअच्छ
१२३ नि + सद	णुमज्ज
१२४ छिद् प्रा० छिंद्	दुहाव णिच्छल्ल णिज्झोड णिव्वर णिल्लूर लूर
१२५ आ + छिद् "	ओअंद उद्दाल
१२६ मृद	मल मढ परिहट्ट खड्ड चड्ड मड्ड पन्नाड

१२७	स्पन्द् प्रा० फंद्	चुलुचुल
१२८	निर् + पद् प्रा० निप्पज्ज	निव्वल
१२९	विसं + वद्	विअट्ट विलोट्ट फस
१३०	शद्	झड पक्खोड
१३१	आ + क्रन्द्	णीहर
१३२	खिद्	जूर विसुर
१३३	रुध प्रा० रुंध	उत्थंघ
१३४	नि + षेध	हक्क
१३५	क्रुध प्रा० कुज्झ	जूर
१३६	जन	जा जम्म
१३७	तन	तड तड्ड तड्डव विरल्ल
१३८	तृप	थिप्प
१३९	उप + सृप	अल्लिअ
१४०	सं + तप	झंख
१४१	वि + आप	ओअग्ग
१४२	सम् + आप	समाण

१४३	खिप	गलत्थ
		अड्डक्ख
		सोल्ल
		पेल्ल
		णोल्ल
		छुह
		हुल
		परी
		घत्त
१४४	उत् + क्षिप	गुलुगुञ्छ
		उत्थङ्घ
		अल्लत्थ
		उब्भुत्त
		उस्सिक्क
		हक्खुव
१४५	आ + क्षिप	णीरव
१४६	स्वप	कमवस
		लिस
		लोट्ट
१४७	वेप	आयम्ब
		आयज्झ
१४८	वि + लप	झङ्ख
		वडवड
१४९	लिप	लिंप
१५०	गुप	विर
		णड

१५१	कृप	अवहाव
१५२	प्र + दीप प्रा० पलीव	तेअव संदुम संधुक अब्भुत्त
१५३	लुभ	संभाव
१५४	क्षुभ	खउर पड्डुह
१५५	आ + रभ	आरभ आढव
१५६	उपा + लभ	झख पच्चार वेलव
१५७	जृम्भ	जम्भा
	विजृम्भ (वअम्भ)	
१५८	नम	णिसुढ (भारपूर्वकनमने)
१५९	वि + श्रम प्रा० वीसाम	णिव्वा
१६०	आ + क्रम	ओहाव उत्थार छुंद

		णीण णीलुक्क पदअ रभ परिअल्ल वोल परिअल णिरिणास णिवह अवसेह अवहर
१६३	आ + गम्	अहिपच्चुअ
१६४	सम् + गम्	अभिभड
१६५	अभ्या + गम्	उम्मत्थ
१६६	प्रत्या + गम्	पलोट्ट
१६७	शम	पडिसा परिसाम
१६८	रम	संखुड्ड खेड्ड उब्भाव किलिकिंच कोट्टुम मोट्टाय णीसर वेल्ल

१६९	पूर	अग्घाट अग्घव उद्धुमा अंगुम अहिरेम
१७०	त्वर	तुवर जअड
१७१	क्षर	खिर झर पज्झर पच्चड णिच्चल णिट्टुअ
१७४	उत् + छल	उत्थल
१७५	वि + गल	थिप्प णिट्टुह
१७६	दल	विसट्ट
	वल	वंफ
१७७	भ्रंश	फिड फिट्ट फुड फुट्ट चुक्क भुल्ल
१७८	नश	णिरणास णिवह अवसेह पडिसा अवहर

१७९	अव + काश	ओवास
१८०	सं + दिश	अप्पाह
१८१	दृश	निअच्छ
		पेच्छ
		अवयच्छ
		अवयज्झ
		वज्ज
		सव्वव
		देक्ख
		ओअक्ख
		अवक्ख
		अवअक्ख
		पुलोअ
		पुलअ
		निअ
		अवपास
		पास
१८२	स्पृश	फास
		फंस
		फरिस
		छिव
		छिह
		आलुंख
		आलिह
१८३	प्र + विश	रिअ
१८४	प्र + मृश प्र + मुष	म्हुस

१८१	पिप	णिवड़
		णिरिणास
		णिरिणज्ज
		रोम्म
		चडु
१८१	मप	मुष्ख
१८७	क्रप्	कड्ढ
		साअड्ढ
		अंच
		अणच्छ
		अयच्छ
		आइन्छ
१८८	"	अक्खोड (असिकर्षणे)
१८९	गवेप	ढुंढुल्ल
		ढंढोल
		गमेस
		घत्त
१९०	श्लिप प्रा० सिलेस	सामग्ग
		अवयास
		परिअंत
१९१	म्रक्ष	चोप्पड
१९२	काङ्क्ष	आह
		अहिलंघ
		अहिलंख
		वच्च
		वंफ
		मह
		सिह
		विलुंप

१९३	प्रति + ईक्ष्	सामय विहीर विरमाल
१९४	तक्ष	तच्छ चच्छ रम्प रम्फ
१९५	वि + कस	कोआस वोसट्ट
१९६	हस	गुंज
१९७	स्रंस	ल्हिस डिंभ
१९८	त्रस	डर वोज्ज वज्ज
१९९	नि + अस	णिम णुम
२००	परि + अस्	पलोट्ट पलोट्ट पल्हत्थ
२०१	निः + श्वस	झंख
२०२	उत् + लस	ऊसल ऊसुंभ णिल्लस पुलआअ गुंजोल्ल आरोअ

२०३	भास	भिस
२०४	ग्रस	घिस
२०५	अव + गाह	ओवाह
२०६	आ + रुह	चड वलग्ग
२०७	मुह	गुम्म गुम्मड
२०८	दह	अहिऊल आलुङ्ख
२०९	ग्रह	वल गेण्ह हर पंग निरुवार अहिपच्चुअ
२१६	छिद्	छिन्द
	भिद्	भिन्द
२१७	युध	जुज्झ
	बुध	बुज्झ
	गृध	गिज्झ
	क्रुध	कुज्झ
	सिध	सिज्झ
	मुह	मुज्झ
२१८	रुध	रुन्ध रुम्भ

२१९	सद	सट
	पत	पड
२२०	क्वथ	कड्ढ
	वर्ध	वड्ढ
२२१	वेष्ट	वेढ
२२२	सं + वेष्ट	स + वेल्ल

मागधीना धातु

२९७ प्र + ईक्ष = प्रेक्ष प्रा० पेक्ख मा० पेस्क

आ + चक्ष प्रा० आयक्ख मा० आचस्क

केटलाक अपभ्रंश धातुओ

२९०	भू	हुच्च (पर्याप्तौ)
३९१	ब्रू	ब्रुव
३९२	व्रज	वुञ
३९३	दृश	प्रस
३९४	ग्रह	गृण्ह
३९५	तक्ष	छोल्ल

देश्य धातुओ

खुड्डुक	गू० खटकवु
धुडुक	,, धडकवु
झलक	,, झळकवु
चंप	,, चापवु

છપાય છે

વહિ પાઠાવલી (અનુવાદ સાથે) સં. આ. ર. છો. પરીખ
પ્રાચીન ગુજરાતી ગદ્ય સંદર્ભ સં. મુનિ જિનવિજય
સન્મતિતર્ક ભા. ૨ સં. પં. સુખલાલજી તથા
પં. બેચરદાસ

તૈયાર છે

પુરાતત્ત્વ પુસ્તક ૧ લું.	૫-૧૨-
પુરાતત્ત્વ પુસ્તક ૨ જું.	૫-૧૨-
પુરાતત્ત્વ પુસ્તક ૩ જું.	૫-૧૨-૦